राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 11] चतुर्थ विधान सभा के ग्यारहवें सत्र का तीसरा दिवस [संख्या 3

शुक्रवार,

दिनांक 12-11-1971.

विधान सभा की बैठक म. पू. 11.1 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री निरंजननाथ आचार्य, अध्यक्ष, पदासीन)

तारांकित प्रश्नोत्तर

[जन स्वास्थ्य, सार्वजनिक निर्माण, विद्युत्, खाद्य, कृषि, समाज कल्याण, वन, शिक्षा, पशुपालन, जनसम्पर्क, गृह-विभाग]

श्री **अध्यक्ष** : प्रश्न।

प्रश्न संख्या 34

श्री पृथ्वीराज पटेल।

(अनुपस्थित : कृपया आगे देखिये)

श्री शंकरलाल

जैतारण में गैंग हट का निर्माण

35. श्री **शंकरलाल** (जैतारण) : क्या सार्वजनिक निर्माण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या यह सही है कि जैतारण में पी. डब्ल्यू. डी. विभाग द्वारा जो गैंग हट के नाम पर मकान बनाया गया उसको डाक बंगले में परिवर्तित करने हेतु सार्वजनिक निर्माण मंत्रीजी ने आदेश दिया था ?

(2) क्या यह सही है कि इस मकान को गत फरवरी माह में भारत के वित्त मंत्री जी श्री चव्हाण साहब के आगमन के वक्त और तत्पश्चात् राजस्थान के मुख्य मंत्रीजी के आगमन के वक्त डाक बंगले की तरह काम में भी लिया गया था ?

(3) क्या यह सही है कि अब पी. डब्ल्यू. डी. विभाग के जैतारण के कर्मचारी इस मकान को डाक बंगले के काम में लेने से मनाही करते हैं और किसी को नहीं ठहरने देते हैं ?

(4) क्या जैतारण में ठहरने की अन्य कोई सुविधा न होने से सरकार इस मकान को नियमित डाक बंगले के काम में लिये जाने का स्पष्ट आदेश जारी करेगी ?

सार्वजनिक निर्माण मंत्री (श्री शिवचरण माथुर) : (1) जी हां।

(2) ठहरने की व्यवस्था की गई थी।

(3) यह भवन अभी नियमित डाक बंगले की सूची में नहीं है।

(4) यह प्रश्न राज्य सरकार के विचाराधीन है।

श्री शंकरलाल : क्या यह सही है कि भूतपूर्व मंत्रीजी ने आश्वासन दिया था कि इसकी व्यवस्था की जावेगी। जैतारण में कोई ठहरने की व्यवस्था नहीं है। कोई भी अधिकारी जावे लेकिन किसी प्रकार की ठहरने की व्यवस्था नहीं है।

श्री शिवचरण माथुर : मैंने पहले प्रश्न के उत्तर में कहा, "जी हां"। डाक बंगले में कन्वर्ट करने के लिये उसका फिर मेन्टीनेन्स जरूरी होता है। सरकार के यह मामला विचाराधीन है कि कौन 2 से डाक बंगलों को बनाया जाय, उस समय इस पर भी विचार कर लिया जावेगा।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न संख्या 36।

श्री हंसराज आर्य।

(अनुपस्थित, कृपया आगे देखिये)

श्री फूलचन्द बाफना।

सहायक अभियन्ता फालना के विरुद्ध शिकायत

37. श्री फूलचन्द बाफना (सुमेरपुर) : क्या विद्युत् मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) क्या यह सही है कि फालना स्टेशन (जिला पाली) के समीप ही कालेज के बिलकुल पास वाले एक छात्रावास (जिसमें 125 छात्र हैं) में तारीख 19-4-71 को रात को आठ बजे विद्युत् खराब (पास वाले एक जम्पर के ढीला होने के कारण) होकर अंधेरा हो गया व उसकी शिकायत उसी समय फालना पावर हाउस की शिकायत पुस्तिका में दर्ज करवा दी गयी थी ?

(2) क्या यह सही है कि वह शिकायत हटाई नहीं गई तो संबंधित होस्टल के अधीक्षक ने ता. 20-4-71 को संध्या को 5.00 बजे पुनः यही शिकायत "शिकायत पुस्तिका" में दर्ज करवाई एवं साथ ही सहायक अभियन्ता श्री नारंग को भी फोन पर निवेदन किया गया तब श्री नारंग ने यह उत्तर दिया कि क्या मेरे यही काम है ? यदि हां, तो बताया जावे कि श्री नारंग अपनी ड्यूटी के अलावा क्या क्या और कार्य करते हैं ?

(3) क्या यह सही है कि दिनांक 20-4-71 को देर रात तक भी विद्युत् की खराबी हटाई नहीं गई और असंतुष्ट पचपन छात्रों (जिनकी परीक्षायें चल रहीं थीं और अंधेरे के कारण पढ़ाई नहीं हो पाने से उन्हें अनुत्तीर्ण होने का भय हुआ) ने उक्त श्री नारंग के निवास स्थान के बाहर रात्रि को ग्यारह बजे शान्त प्रदर्शन किया ?

(4) क्या यह सही है कि उपर्युक्त परिस्थिति की सूचना जिलाधीश, पाली तथा उप-जिलाधीश बाली, को उसी रात को दे दी गई और फालना उप-जिलाधीश पाली, ने रात को सवा ग्यारह बजे स्वयम् फालना आकर श्री नारंग से विद्युत् ठीक करवाई तो शान्ति स्थापित हो गयी ?

(5) 'शिकायत पुस्तिका' में शिकायत दर्ज करवाये जाने पर दिनांक 19-4-71 एवं दिनांक 20-4-71 के लगातार दो रात्रि तक श्री नारंग को रूबरू निवेदन पर भी इतनी अव्यवस्था हुई तो सरकार ने

(श्री फूलचन्द बाफना)
श्री नारंग के विरुद्ध क्या कार्यवाही की ? यदि नहीं, तो क्यों ? यदि हां, तो बताया जावे कि इस क्रम में सरकार ने क्या क्या कार्यवाही की और उसका क्या नतीजा आया ?

विद्युत् मंत्री (श्री शिवचरण माथुर) : (1) जी नहीं। 19-4-71 को कोई शिकायत किसी भी होस्टल की दर्ज नहीं कराई गई है।

(2) जैन होस्टल, फालनाकी शिकायत 20-4-71 को 5.50 बजे दर्ज कराई गई व 6.15 पर ठीक कर दी गई फिर उसी दिन रात के 9.50 बजे फिर कराई गई जिसे 11 बजे रात ठीक करवा दी गई थी। श्री नारंग से छात्रावास अधीक्षक की क्या बात हुई इसके बारे में कुछ भी कहना, श्री नारंग का स्थानांतर दिनांक 18-5-71 को होने के कारण संभव नहीं है।

(3) जी हां। कुछ छात्रों ने श्री नारंग के निवास पर करीब 11 बजे रात्रि को प्रदर्शन किया। उससे पहले हमारे कर्मचारी को उस स्थान पर जहां बिजली ठीक करनी थी, बिजली ठीक करने हेतु भेजा जा चुका था। रेकार्ड के अनुसार 11 बजे लाइट ठीक हो चुकी थी।

(4) उप जिलाधीश महोदय को किसने सूचना दी इसका कोई रिकार्ड इस विभाग में नहीं हैं यद्यपि जब उप जिलाधीश वाली छात्रावास पर पहुंचे उस समय विद्युत् मण्डल के आदमी लाइन ठीक करने वहां पहुंच चुके थे।

(5) 19-4-71 को मण्डल के कार्यालय में कोई शिकायत दर्ज नहीं कराई गई थी। यद्यपि दिनांक 20-4-71 को जो शिकायत 5.50 बजे शाम को आई थी उसे 6.15 पर ठीक कर दी गयी थी। फिर रात्रि को जो 9.00 बजे आयी थी व 11 बजे लाइट ठीक करदी गयी थी वह अवधि जिसमें शिकायत दूर कर दी गयी थी कोई अधिक नहीं है अतः सम्बन्धित अधिकारी के विरुद्ध कोई भी कार्यवाही करना उचित नहीं समझा गया।

श्री अध्यक्ष : श्री वृद्धिचन्द्र जैन।

यातायात चार्जेज की बकाया राशि

38. श्री वृद्धिचन्द्र जैन (बाड़मेर) : क्या खाद्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :–

(1) बाड़मेर जिले में सन् 1966–67 से गत वर्ष तक सस्ते अनाज की विभिन्न क्षेत्रों में स्थित दुकानों का कितना यातायात चार्जेज अभी तक बाकी हैं ? ब्योरेवार सूचना सदन की मेज पर रखने की कृपा करें एवं उन चार्जेज को नहीं दिये जाने के क्या कारण हैं एवं उनका भुगतान कब तक कर दिया जायगा ?

(2) बाड़मेर जिले में सस्ते अनाज की राज्य सरकार द्वारा स्टोर करने के लिये विभिन्न स्थानों में स्थित गोदामों का किराया सन् 66–67 से आज तक गोदाम मालिकों का बाकी है का विवरण सदन की मेज पर रखने की कृपा करें। उनका भुगतान अभी तक नहीं किये जाने का क्या

(श्री वृद्धिचन्द जैन)
कारण हैं ? उनका भुगतान कब तक कर दिया जायगा ?

(3) बाड़मेर जिले में सस्ते धान की दुकानें जो व्यक्तिगत व सहकारी समितियों को दी गई थी, उनसे सिक्यूरिटी के रूप में सरकार में जमा राशि सन् 1966–67 से सन् 70–71 की उनके द्वारा वापिस मांगे जाने पर भी नहीं दिये जाने के क्या कारण है ? उक्त जमा राशि की पूर्ण सूची सदन की मेज पर रखने की कृपा करें। उस राशि का भुगतान कब तक कर दिया जायगा ?

खाद्य मंत्री (राव श्री नारायणसिंह) : इसका समुचित उत्तर प्राप्त नहीं हुआ है इसलिये इसको स्थगित करने का निवेदन है।

श्री विजयसिंह (मकराना) : है जितना तो उत्तर दे दीजिये।

श्री वृद्धिचन्द्र जैन : ये जितने ट्रांसपोर्ट चार्जेज कोग्रोपरेटिव सोसाइटीज के रहते हैं और सिक्योरिटी मनी को तो वापिस लौटा दीजिये। एक्शन चाहते हैं उनके लिये क्या कदम उठा रही है सरकार ?

राव **श्री नारायण सिंह** : I have noted it.

श्री अध्यक्ष : प्रश्न संख्या 39

श्री जुझारसिंह।

(अनुपस्थित, कृपया आगे देखिये)

टोंक जिले में ट्रेक्टरों का वितरण

40. **श्री जगन्नाथ पटेल** (टोडारायसिंह): **क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–**

(1) किसानों को राजस्थान में कितने प्रकार के ट्रेक्टर किस किस कम्पनी के सरकार सप्लाई कर रही है ?

(2) अब तक किसानों को टोंक जिले में कितने ट्रेक्टर किस किस कम्पनी के किन किन को सप्लाई किये गये और किस किस रेट से ?

(3) सरकार की ओर से ट्रेक्टर देने की क्या स्कीम रखी गई है ?

(4) क्या सरकार ने ट्रेक्टर लेने के लिये बैंक लौन देने की योजना रखी है ?

(5) क्या यह भी सही है कि ट्रेक्टरों के पुर्जे बनाने का ट्रेक्टर बनाने का कारखाना टोंक में खोला जावेगा और कितने आदमियों को रोजगार मिल सकेगा ?

कृषि मंत्री (**राव श्री नारायण सिंह**): (1) राजस्थान में आयातित ट्रेक्टरों का वितरण राजस्थान राज्य कृषि उद्योग निगम द्वारा किया जाता है। निगम द्वारा जिन जिन ट्रेक्टरों का आवंटन किया गया है उनकी सूची सदन की मेज पर रखी गई है। इसके अलावा स्वदेशी ट्रेक्टर निर्माता कम्पनियां अपने वितरकों द्वारा सीधे किसानों को ट्रेक्टर भेजती है।

(2) एक सितम्बर, 1971 तक टोंक जिले में निगम द्वारा वितरण किये गये विभिन्न प्रकार के ट्रेक्टरों की सूची, जिनमें

Page No 5

(राव श्री नारायणसिंह)

ट्रेक्टरों की कीमत भी दी गई है, सदन की मेज पर रख दी गई है।

(3) राज्य सरकार द्वारा ट्रेक्टरों के देने की कोई स्कीम नहीं है 1 सितम्बर, 1971 से भारत सरकार ने ट्रेक्टर कन्ट्रोल ऑर्डर लागू किया है जिसकी प्रतिलिपि सदन की मेज पर रख दी गयी है।

(4) जी नहीं। रिजर्व बैंक द्वारा लैण्ड डवलपमेंट बैंकों एवं राष्ट्रीयकृत बैंकों के माध्यम से लोन देने की योजना बनी हुई है।

(5) जी नहीं।

(सूची विस्तृत होने के कारण विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)।

श्री जगन्नाथ पटेल : अध्यक्ष महोदयजी, ट्रेक्टर के लिये मैंने अर्ज किया था। ट्रेक्टर के विषय में मंत्री महोदय ने कहा कि सूची सदन की मेज पर रख दी। टोंक जिले के लिये कहता हूं सारे राजस्थान के लिये नहीं। ट्रेक्टरों के लिये किसानों ने दरख्वास्तें कीं लेकिन उनको इनकार हो गये कि कोई ट्रेक्टर नहीं है। मैंने खुद ने भी दरख्वास्त दी। एस. डी. ओ. ने कहा कि ट्रेक्टर नहीं है। इसलिए मंत्रीजी से राज्य सरकार से पूछना चाहता हूं कि टोंक जिले के लिये ट्रेक्टर क्यों नहीं हैं?

राव श्री नारायण सिंह : बारी बारी से ट्रेक्टर दिये जाते हैं। टोंक को क्यों नहीं मिले इसकी जानकारी कर लूंगा।

श्री दिग्विजयसिंह (उनियारा) : हर जिले का परसेन्टेज फिक्स कर रखा है ट्रेक्टर अलाट करने का?

राव श्री नारायणसिंह : परसन्टेज की सूचना नहीं है।

श्री दिग्विजय सिंह : सूची में दिया हुआ है। टोंक जिले के लिये 4 परसेन्ट है। तो क्या गलत है?

राव श्री नारायणसिंह : परसेंन्टेज टोंक जिले के बारे में है?

श्री दिग्विजयसिंह : हर एक जिले के बारे में पहले मंत्री जी ने बताया था कि हर जिले के लिए परसन्टेज है और उसके हिसाब से दिये जायेंगे। टोंक जिले का 4 परसेन्ट रखा है तो वे अलाट हुए या नहीं?

राव श्री नारायण सिंह : इस का पता लगाऊंगा।

श्री दिग्विजयसिंह : यह रिलेवन्ट है क्या?

राव श्री अध्यक्ष : यह आवन्टित किये या नहीं 4 परसेन्ट?

श्री नारायणसिंह : इसकी इस समय मेरे पास जानकारी नहीं है।

श्री पृथ्वीराज पटेल (बामनवास) : एक किसान को 12 साल हो गये रकम जमा कराये।

श्री जगन्नाथ पटेल : मैंने यह पूछा था कि टोंक जिले में कितनी दरख्वास्तें थीं? टोडा रायसिंह के प्रधान ने यह मांग की थी और सौ रुपये पहले जमा कराना

Page No 6

(श्री जगन्नाथ पटेल)
चाहिये था वह भी जमा करा दिये। मनीलाल जी के पास रसीद मौजूद है। 2 साल में कोई जवाब नहीं भेजा इसलिये निवेदन है कि टोंक को दिये जावेंगे या नहीं। टोंक का ऐसा दुर्भाग्य है कि कोई काम ही नहीं हो रहा है। एक उदाहरण पेश करता हूं, हाई वे रोड से आपने जोड़ ली है··

श्री अध्यक्ष : यह अलग से प्रश्न है। हाई वे रोड तो यहां नहीं है ट्रैक्टर है।

श्री दिग्विजयसिंह : ट्रैक्टर चलेगा किस पर ?

श्री जगन्नाथ : मैंने मालपुरा के लिये नहीं मांगा है। मालपुरा, कोटा, बून्दी, पाटन, दिल्ली और बम्बई तक जोड़ लिया।

श्री अध्यक्ष : अब हो चुका दूसरा प्रश्न लें।

श्री दिग्विजय सिंह : ट्रैक्टर कन्ट्रोल ऑर्डर लागू हुआ उसके अनुसार हर जिले वाइज परसेन्टेज कायम हुआ। टोंक जिले का जो परसेन्टेज है उसके अनुसार ट्रैक्टर आवंटित कर दिये क्या ?

राव श्री नारायण सिंह : इस विषय में मैं निवेदन कर चुका हूं कि मेरे पास जानकारी नहीं है, और जो प्रतिशत मुकर्रर किया गया है वह एग्रीकल्चर पोटेन्शियल को देखते हुए किया गया है। अब एक सितम्बर से ट्रैक्टर कन्ट्रोल आर्डर निकल गया है और जो भी गड़बड़ियां इस वक्त प्रतिशत आदि में हुई हैं, वे ट्रैक्टर कन्ट्रोल आर्डर के मातहत ठीक हो जावेंगी।

श्री दिग्विजय सिंह : यह तो अभी हुआ है, अध्यक्ष महोदय, लेकिन पहले जो हुआ है उसका क्या होगा ?

श्री रोशनलाल शर्मा (सलूम्बर): आपने कहा कि गड़बड़ियां हुई हैं, तो वे कौनसी गड़बड़ियां हुई हैं ?

एक माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय;····

श्री अध्यक्ष : श्री रोशनलाल शर्मा।

श्री रोशनलाल शर्मा : अध्यक्ष महोदय, प्रश्न के भाग (2) में स्पष्ट पूछा गया है कि अब तक किसानों को टोंक जिले में किसने ट्रैक्टर किस किस कम्पनी के किन किन को सप्लाई किये गये और किस किस रेट से। लेकिन मंत्री जी कहते हैं कि उनके पास जानकारी नहीं है। यह प्रश्न स्पष्ट है और दूसरी बात, माननीय मंत्री महोदय ने कही कि गड़बड़ियां हुई हैं, तो टोंक जिले में कौनसी गड़बड़ियां हुई हैं ?

श्री दिग्विजय सिंह : आपने कहा कि ट्रैक्टर कन्ट्रोल आर्डर लागू हो गया है। तो क्या यह मानकर चलें कि जो प्रतिशत मुकर्रर किया गया था वह ट्रैक्टर कन्ट्रोल ऑर्डर के बाद फर्स्ट कम फर्स्ट सर्वड के आधार पर आवंटन करेंगे ?

राव श्री नारायण सिंह : यही होगा।

श्री दिग्विजय सिंह : तो मेरा निवेदन यह है कि जो लोग जयपुर के आसपास रहने वाले हैं, जिनको पहले खबर मिल गई थी, उन्होंने अपने नाम लिखवा दिये, लेकिन

(श्री दिग्विजय सिंह)
जालोर और जैसलमेर और दूर रहने वाले लोगों का नाम नीचे चला जायेगा और उनका नम्बर ही नहीं आयेगा।

राव श्री नारायण सिंह : फर्स्ट कम फर्स्ट सर्व्ड भी अकार्डिंग टू परसेन्टेज होगा।

श्री दिग्विजय सिंह : अभी अभी मंत्री महोदय ने कहा कि प्रतिशत का उन्हें ज्ञान नहीं है और अब कहते हैं कि प्रतिशत के आधार पर होगा।

राव श्री नारायण सिंह : मैंने यह कहा कि किस जिले के लिये कितना प्रतिशत है इसका मुझे ज्ञान नहीं।

श्री देवीदत्त गाड़िया (बारां) : क्या यह सही है कि ऐग्रो इन्डस्ट्रीज कार्पोरेशन के पास अभी भी ट्रेक्टर्स मौजूद हैं और उनका अभी तक वितरण नहीं हुआ है? यदि हां, तो मेरा दूसरा प्रश्न यह है...

श्री अध्यक्ष : अलग से प्रश्न।

श्री देवीदत्त गाड़िया : नहीं, यह टोंक जिले में हो रहा है। और दूसरा मेरा प्रश्न यह है कि ट्रेक्टर कन्ट्रोल आर्डर जो लागू हुआ है, तो क्या प्रत्येक जिले में प्रतिशत के आधार पर ट्रेक्टर्स का वितरण होगा? उनका वितरण जिलेवाइज होगा?

राव श्री नारायण सिंह : यही होगा।

श्री प्रद्युम्न सिंह (राजाखेड़ा) : विभिन्न जिले के लिये कोटा निर्धारित करने का कोई प्रावधान ट्रेक्टर कन्ट्रोल आर्डर के मातहत है या नहीं?

राव श्री नारायण सिंह : जैसा मैंने निवेदन किया कि एग्रीकल्चर पोटेन्शियल के मुताबिक प्रतिशत मुकर्रर किया गया है, ऐसे ही ट्रेक्टर कन्ट्रोल आर्डर के मातहत भी उसी के मुताबिक अलाट किये जायेंगे।

श्री रघुनाथ विश्नोई (सांचोर) : वह प्रतिशत तो ठीक नहीं है।

श्री मदन सिंह (दांता रामगढ़) : जिन जिन ट्रेक्टर्स का अलाटमेंट होता है, उन लोगों को क्या आप इत्तिला देते हैं? जैसे टोंक जिले में 20 ट्रेक्टर्स अलाट हुए, तो क्या उन लोगों को नोटिस दिया जाता है कि आपका अलाटमेंट हो गया है? क्या ऐसा कोई नियम है?

राव श्री नारायण सिंह : नोटिस की क्या बात कहो?

श्री मदनसिंह : जैसे ठाकुर मदनसिंह दांता के नाम ट्रेक्टर अलाट हुआ, तो क्या मुझे सूचना मिलेगी ट्रेक्टर्स अलाट होने की?

राव श्री नारायण सिंह : अलाट होने पर सूचना दी जाती है।

श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ़) : जैसा मंत्री महोदय ने जवाब दिया है कि उनको जानकारी नहीं है, तो उनके पास पूरी इन्फर्मेशन होनी चाहिये। तो कृपा करके उनको आदेश दें कि वे पूरा उत्तर दें।

श्री प्रद्युम्न सिंह : यह जो प्रतिशत मुकर्रर किया जायेगा भिन्न भिन्न जिलों के लिये, यह प्रतिशत मुकर्रर करने का

Page No 8

(श्री प्रद्युम्नसिंह)
अख्तियार राज्य सरकार को रहेगा या ऐग्रोइन्डस्ट्रीज कार्पोरेशन को रहेगा ?

राव श्री नारायण सिंह : ट्रैक्टर कन्ट्रोल आर्डर के मुताबिक जिलेवार प्रतिशत इस वक्त नहीं है, लेकिन जो भी प्रतिशत मुकर्रर किया गया है उसमें जो भी तर्मीम की जायेगी वह ट्रैक्टर कन्ट्रोल आर्डर के हिसाब से ही की जायेगी ।

श्री **भैरों सिंह** (किशनपोल, जयपुर) : क्या यह सही है कि ट्रैक्टर कन्ट्रोल आर्डर के अन्दर डिस्क्रीशनरी कोटा का कोई प्रावधान नहीं है ?

राव श्री नारायण सिंह : यह सही है और इसके बारे में गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया से स्पष्टीकरण मांगा गया है ।

श्री भैरोंसिंह : तो क्या यह मानकर चलें कि जब तक भारत सरकार से स्पष्टीकरण नहीं आ जाता है, तब तक डिस्क्रीशनरी कोटा नहीं दिया जायेगा ?

राव श्री नारायणसिंह : नहीं दिया जायेगा ।

श्री मदनसिंह : क्या यह सही है कि कलेक्टर लेवल पर एक समिति बनी हुई है और उनकी डिमाण्ड पर विचार करके ही कोटा निर्धारित किया जाता है ?

श्री जगन्नाथ पटेल : अध्यक्ष महोदय, एक और सवाल अर्ज करूंगा। कल समाज कल्याण विभाग पर बहस में अनुसूचित जातियों के माननीय सदस्यों ने काफी कहा कि यह होना चाहिये, वह होना चाहिये...

श्री अध्यक्ष : भाषण नहीं, माननीय सदस्य ।

श्री जगन्नाथ पटेल : फिर मर्जी आये सो करें । अध्यक्ष महोदय, किसानों के लिये ट्रैक्टर देने के लिये नियम बनाया जाये, और फिर किसानों को ही नहीं दिया जाता है ।

श्री अध्यक्ष : नैक्स्ट, श्री बाढ़दार ।

राजस्थान महिला परिषद्, उदयपुर

41. **श्री दुर्गालाल बाढ़दार** (हवा महल, जयपुर) : क्या समाज कल्याण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) राजस्थान महिला परिषद्, उदयपुर संस्था कितने वर्षों से चल रही है और इसके मंत्री, संयुक्त मंत्री तथा कोषाध्यक्ष कौन हैं और कब से हैं ?

(2) क्या इस संस्था के उपरोक्त पदाधिकारी वैतनिक हैं ? यदि हां, तो वेतन व अन्य अलाउन्स व सुविधा क्या-क्या हैं ? सूची सदन की मेज पर रखें ।

(3) राजस्थान महिला परिषद्, उदयपुर को प्रतिवर्ष राज्य सरकार द्वारा कितना अनुदान व सहायता दी जाती है ? गत 5 वर्षों में कितना-कितना अनुदान व सहायता दी गई ? सूची सदन की मेज पर रखें ।

(4) राजस्थान महिला परिषद् की वर्तमान में चल व अचल सम्पत्ति कितनी है और यह किसके नाम से है ? सूची सदन की मेज पर रखें ।

Page No 9

(श्री दुर्गालाल बाढ़दार)

(5) राजस्थान महिला परिषद् का आडिट क्या प्रतिवर्ष होता है और क्या यह सच है कि आडिट रिपोर्ट में संस्था के पदाधिकारियों के विरुद्ध गबन के आरोप लगाए गए हैं? यदि हां, तो राज्य सरकार ने क्या कार्यवाही की ?

समाज कल्याण मन्त्री (श्री भीखाभाई): (1) राजस्थान महिला परिषद्, उदयपुर की स्थापना 11-9-1947 को हुई थी। 1-4-1971 को निम्न पदाधिकारी थे :—

(क) अध्यक्ष :

श्रीमती गार्गी सोलंकी

(ख) संयुक्त मंत्राणी :

(1) श्रीमती रूपकुमारी मेहता

(2) श्रीमती मालती वशिष्ठ

(ग) कोषाध्यक्ष :

श्रीमती दुर्गादेवी व्यास

(1) इस संस्था का उपरोक्त कोई भी पदाधिकारी वैतनिक नहीं है और न उन्हें कोई अलाउन्स या अन्य सुविधा ही दी जाती है।

(3) राजस्थान महिला परिषद्, उदयपुर, को एक द्वितीय श्रेणी कन्या छात्रावास के लिये अनुदान स्वीकृत किया जाता है। गत 5 वर्षों में स्वीकृत अनुदान का विवरण निम्न प्रकार है :—

वर्ष	रुपये
1966-67	6657.30
1967-68	8542.70
1968-69	10704.55
1969-70	9828.32
1970-71	सूचना प्राप्त नहीं हुई

(4) राजस्थान महिला परिषद् शाखा, उदयपुर, की वर्तमान में कुल चल सम्पत्ति 85000 रुपये की व अचल सम्पत्ति कन्या माध्यमिक विद्यालय तथा पुस्तकालय भवन दोनों को मिला कर अनुमानित 5 लाख रुपये की है। विधान के अनुसार यह सम्पत्ति राजस्थान महिला परिषद् की है और यह इसी संस्था के नाम पर है।

(5) संस्था को विभाग से मिलने वाले अनुदान के हिसाब का चार्टेड अकाउण्टेण्ट द्वारा ऑडिट प्रति वर्ष होता है। इन ऑडिटेड स्टेटमेण्ट्स के आधार पर कोई गबन का केस विभाग के सामने नहीं आया है।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : मंत्री महोदय से यह जानना चाहूंगा कि 1-4-71 के जिन पदाधिकारियों के नाम आपने बताये, ये इलेक्टेड हैं या नामीनेटेड हैं? और यदि इलेक्टेड हैं तो इनका इलेक्शन कब हुआ?

श्री भीखाभाई : अध्यक्ष महोदय, यह सारी जानकारी मैं समझता हूं मेरे पास उपलब्ध नहीं है। जो जानकारी मेरे पास 1971 के आधार पर मिली है, उस पर मैंने जवाब दिया है।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : अध्यक्ष महोदय, ...

श्री भीखाभाई : मेरी बात तो पूरी होने दीजिये।

यह संस्था कई प्रवृत्तियां चलाती है जैसे बाल निकेतन, पुस्तकालय, वाचनालय, महिला उद्योग, महिला क्रीड़ा केन्द्र। यह अनेक प्रवृत्तियां चलाती है। एक एडेड होस्टल भी चलाती है जिसमें रिकरिंग ग्रांट मिलती है जिसके बारे में मैंने निवेदन किया कि हर साल कितना रुपया मिलता है।

श्री अध्यक्ष : माननीय मन्त्री महोदय, मनोनीत हुए हैं या चुनाव में आये हैं यह प्रश्न है।

श्री भीखाभाई : मेरे पास तो जो सूचना है वह यही है। और नहीं है।

श्री दुर्गालाल बाड़वार : एक ही प्रवृत्ति होती तब तो पूछने का प्रश्न ही नहीं पैदा होता, पूछा ही इसीलिये है कि उनकी नाना प्रवृत्तियां हैं। इनसे पूर्व के मन्त्री कौन थे यह बता दीजिये।

श्री अध्यक्ष: प्रश्न पैदा नहीं होता।

श्री भीखाभाई : मेरे पास कोई सूचना नहीं है।

यह शिक्षा विभाग के देखने की बात है।

(शोरगुल)

श्री अध्यक्ष : न आप थकने वाले हैं और न वे थकने वाले हैं।

श्री दुर्गालाल बाड़वार : तो मुकाबले में आ जावें। मेरे प्रश्न का उत्तर देने को वे तैयार नहीं हैं।

श्री अध्यक्ष : और भी कई अन्य प्रश्न हैं।

श्री दुर्गालाल बाड़वार : उत्तर में आपने बताया पांच लाख रुपये की सम्पत्ति है। विधान के अनुसार यह सम्पत्ति महिला परिषद् की है। तो मैं यही तो जानना चाहता हूं कि उनका कोनसा विधान है ?

श्री अध्यक्ष : इसका कोई विधान है क्या परिषद् का ?

श्री भीखाभाई : विधान है, पर हमने इसकी सूचना मांगी नहीं है उनसे।

श्री दुर्गालाल बाड़वार : ये सारी सम्पत्ति को अपने नाम कर रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : सारगर्भित उत्तर तो सुनिये पहले।

श्री भीखाभाई : कौंसिल ने जानकारी दी है। यह तो छोटी सी प्रवृत्ति की बात है।

श्री अध्यक्ष : ये प्रवृत्ति पूछ नहीं रहे हैं। आप अपनी प्रवृत्ति बता रहे हैं।

श्री भीखाभाई : बराबर कई प्रवृत्तियां हैं, होस्टल है।

श्री मदनसिंह : फिक्स्ड माइण्डेड है यह प्रवृत्ति।

श्री भैरोंसिंह : इस संस्था के सचिव कौन हैं।

Page No 11

श्री भीखाभाई : अध्यक्ष तो हैं श्रीमती गार्गिया सोलंकी।

संयुक्त मन्त्राणी हैं श्रीमती महता।

श्री भैरोंसिंह : क्या इसमें शान्ता त्रिवेदी भी कोई हैं ?

श्री भीखाभाई : मेरे पास इतनी ही जानकारी है।

क्योंकि उदयपुर आता जाता रहता हूं इसलिए इतना मैं जानता हूं कि शान्ता त्रिवेदी इस संस्था से सम्बन्धित जरूर हैं। अब वे क्या हैं, फाउण्डर मेम्बर हैं यह मैं नहीं जानता।

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है कि श्रीमती शान्ता त्रिवेदी को इस संस्था से पहले किन्हीं आरोपों के कारण निकाल दिया था पर राज्य सरकार के आदेश से पुनः कोई पदाधिकारी नियुक्त की गई हैं ?

श्री भीखाभाई : इसका मेरे से सम्बन्ध नहीं है।

श्री भैरोंसिंह : क्या सही है कि श्रीमती शान्ता त्रिवेदी के सम्बन्ध में निषेध महता ने राज्यपाल, मुख्यमन्त्री और राज्य सरकार को और शिक्षा मन्त्री को यह लिखकर दिया है कि श्रीमती शान्ता त्रिवेदी की नियुक्ति अवैध है। उनके प्रति जो आरोप हैं उनकी जांच का परिणाम अभी नहीं निकला है और उनको व्यवस्थापक नहीं नियुक्त किया जा सकता।

श्री भीखाभाई : इसकी जानकारी देने में मैं असमर्थ हूं। शिक्षा मन्त्री से पूछ सकते हैं।

श्री भवानीसिंह : अध्यक्ष महोदय, इन आरोपों के बारे में विधायकों को कापियां तक बटी हैं।

श्री दुर्गालाल बाड़वार : आप इतना बता दें कि इनसे पहले मन्त्री इस संस्था के कौन थे ?

श्री अध्यक्ष : उनको जानकारी नहीं है।

श्री दुर्गालाल बाड़वार : दूसरी रिपोर्ट कौनसे साल की है ?

श्री अध्यक्ष : यह भी जानकारी उनको नहीं है।

श्री दुर्गालाल बाड़वार : क्या यह सही है वर्तमान मन्त्री से पूर्व जो मन्त्री थे उन पर फौजदारी मुकदमा राज्य सरकार द्वारा चलाया गया है ? अगर इतनी भी जानकारी इन मन्त्री महोदय को नहीं है तो फिर तो ये मन्त्री पद छोड़कर घर बैठें।

श्री अध्यक्ष : यह भी जानकारी इनको नहीं है।

श्री दुर्गालाल बाड़वार : I want protection of the Chair, Sir. I have a right to ask question from the Minister and if the Chair does not give me protection, then it is infringement of my rights.

श्री अध्यक्ष : आसन आप से जो बहुत कम जानता है।

हिन्दी में।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : मैं यह पूछना चाहता हूं कि हमारे अधिकारों की रक्षा करने वाला शासन है।

श्री भैरोंसिंह : कौन हैं भूतपूर्व मन्त्री, नाम तो बता दें माननीय सदस्य ?

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : मैं तो बता दूंगा।

एक माननीय सदस्य : तो फिर आप ही बता दीजिये कौन थे मन्त्री ?

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : श्री दुर्गाशंकर दुर्गावत थे।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट। श्री मनोहरसिंह मेहता।

जहाजपुर त्रिवेणी संगम सड़क निर्माण कार्य

42. श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ़): क्या सार्वजनिक निर्माण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि जहाजपुर से त्रिवेणी संगम बीगोद तक वाया काछोला मानपुरा सड़क बन रही है ?

(2) यदि बन रही है तो कितने वर्षों से बन रही है इस पर कितने लाख रुपये खर्च हो चुके हैं और कितने माइल तक बन चुकी है तथा अब कितने माइल और बनना बाकी है ?

(3) क्या यह सही है कि पूरी सड़क के नहीं बनने से वर्षा को मौसम में आवागमन बिल्कुल रुक जाता है ? यदि हां, तो फिर अब तक लगे लाखों रुपये का क्या उपयोग है ?

(4) इस सड़क के पूरा होने की कब तक आशा रखनी चाहिए ? क्या हर हालत में इस वर्ष पूरी हो जायेगी ?

सार्वजनिक निर्माण मंत्री (श्री शिवचरण माथुर) : (1) यह कार्य वर्ष 1963 से चल रहा है। सितम्बर, 1971 तक 12,64,650) व्यय हुआ है।

(2) मील 21 तक पक्की सड़क व 5 मील ग्रेवल रोड निर्माण करवा दी गई है और सात मील में कार्य प्रगति पर है।

(3) सड़क के अभाव में यातायात में कठिनाई स्वाभाविक है।

(4) जी नहीं। अर्थाभाव के कारण निश्चित नहीं कहा जा सकता है। इस वर्ष एक लाख रुपया का प्रावधान है जिसमें से 3 मील सड़क का मेटलिंग और पूरा हो जावेगा।

श्री मनोहरसिंह मेहता : यह 12 लाख रुपया 67 से आप थोड़ा थोड़ा करके खर्च करते आ रहे हैं। या तो एक साथ इसको बनवा दीजिये, नहीं तो व्यर्थ में वह 12 लाख ही क्यों खर्च किया हर साल एक दो लाख खर्च करते हैं और वही अगले साल बरसात में साफ हो जाता है, इससे क्या लाभ ? इससे तो अच्छा यही है कि कुछ भी खर्चा न कराया जाय। उसका दूसरी जगह अधिक अच्छा उपयोग हो सकेगा। अब अगर आप कराना ही चाहते हैं तो एक साथ पूरा कराने का आश्वासन दें।

श्री अध्यक्ष : क्या ऐसा आश्वासन देने की स्थिति में है ?

Page No 13

श्री शिवचरण माथुर : आपकी पीड़ा को मैं समझता हूं उससे सहमत हूं प्रावधान जितना रुपया अवेलेबल होता है, उतना ही उसी के मुताबिक तो बांट सकते हैं। इस साल एक लाख का हमने प्रावधान किया है।

श्री मनोहरसिंह मेहता : तो फिर क्या आप यह बता सकेंगे कि कितनी पंचवर्षीय योजनाएं यह सड़क देखेगी ?

श्री शिवचरण माथुर : यह कहना मुश्किल है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर): अध्यक्ष महोदय, लाखों रुपयों का इस सड़क में दुरुपयोग हुआ है। हर साल एक लाख का प्रावधान रखना एक अदूरदर्शिता और मूर्खता की पराकाष्ठा है। हर साल वर्षा आती है और उस एक लाख की डाली हुई मिट्टी को वहाकर नदियों में ले जाती है। एक लाख फिर खर्च करते हैं फिर एक लाख खर्च करते हैं और वह सभी फिर बरसात बहा कर ले जाती है। यह तो एक तरह से रेकरिंग साइकल बन गई। जो दुर्व्यवस्था की पराकाष्ठा है। समझ का पूरा दिवाला निकल गया हो, ऐसा लगता है। इसकी मुझे भी जानकारी है।

प्रश्नकर्ता का प्रश्न महत्वपूर्ण है। सरकार को इस मूर्खतापूर्ण खर्च के बारे में सोचना चाहिए। गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए।

श्री शिवचरण माथुर : इलाज क्या है इसका ?

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : यह तो काम फिर इस तरह से कभी खत्म होगा ही नहीं, और आप हर साल खर्च करते जाओगे।

श्री शिवचरण माथुर : आपके ऐतराज से मैं सहमत हूं पर सवाल रुपयों का है। रुपयों की कमी की वजह से हर साल कम प्रावधान रखा जाता है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : यह तो स्पष्ट बात है कि अगर यही हालत है तो रुपया न रखें यह ज्यादा अच्छा है। इसका बिलकुल सर्वनाश होने दें सड़क का। फिर जो काम करें वह तो स्थायी होना चाहिए। रुपया व्यर्थ बरबाद तो नहीं होने देना चाहिए। काम टिकाऊ होना चाहिए। यह कौनसी बुद्धिमानी का काम आप कर रहे हैं, हर साल एक लाख रुपया खड्डे में डाल रहे हैं, न यह सड़क बनती है और न उस रुपये से दूसरी जगह जो स्थायी लाभ होने वाला था, वह भी हो पा रहा है।

श्री शिवचरण माथुर : जो भी प्रावधान रखा जाता है, कम से कम उससे पूरी रोड को कम्प्लीट जरूर कर दिया जाता है। इस एक लाख में वह सड़क मेटलिंग हो जावेगी। फिर तो उसके बहने का सवाल आवेगा नहीं।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट। श्री भीम सेन।

कृषकों को क्राप पेटॅन सिखाने की व्यवस्था

43. श्री भीमसेन (लूनकरणसर) : क्या कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

—क्या राजस्थान नहर लिफ्ट योजना के अन्तर्गत कृषि विभाग द्वारा कृषकों को क्राप

Page No 14

(श्री भीमसेन)
पैटर्न सिखलाने हेतु अभी तक कोई कदम नहीं उठाये गये हैं ? अगर हां, तो अब विभाग इस सम्बन्ध में क्या कार्यवाही कर रहा है ?

कृषि मन्त्री (राव श्री नारायणसिंह) : राजस्थान नहर क्षेत्र में जो क्राप पैटर्न लागू होगा वही क्राप पैटर्न लिफ्ट इरिगेशन योजना के तहत लागू होगा।

जिन फसलों की सिफारिश की गई है उनकी कृषि क्रियाओं के बारे में पता लगा कर फसल प्रदर्शन किसानों के खेतों पर लगाया गया है एवं उनकी बाबत कैम्प लगाकर प्रशिक्षण भी दिये जाते हैं। इस वर्ष खरीफ में 30 प्रदर्शन लगाये गये हैं। तथा रबी में 90 प्रदर्शन लगाने की योजना है। इस कार्यक्रम के लिये एक शस्य वैज्ञानिक एवं एक प्रशिक्षण अधिकारी की नियुक्ति की गई है।

श्री भीमसेन : अध्यक्ष महोदय, राजस्थान कैनाल क्षेत्र का ही पैटर्न इसमें कैसे हो सकता है ? लिफ्ट इरिगेशन तो उससे मंहगा होगा। इसके लिये अलग से होना चाहिये पैटर्न।

राव श्री नारायण सिंह : दूसरा पैटर्न इस प्रकार की फसल का होगा जो कि ज्यादा कीमत दे सके और कम पानी से उनकी सिंचाई हो सके।...

श्री भीमसेन : उसके लिए क्या व्यवस्था की है ?

राव श्री नारायण सिंह : ...जैसे कपास मूंगफली, सरसों, गेहूं आदि।

श्री भीमसेन : आपने कहीं व्यवस्था की है इस संबंध में ?

राव श्री नारायण सिंह : मैंने निवेदन किया कि 30 प्रदर्शन लगाये गये थे।

श्री भीमसेन : कहीं भी नहीं लगाये गये।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट, श्री बिश्नोई !

हाड़ेचा क्षेत्रीय पेयजल योजना

44. श्री रघुनाथ विश्नोई (सांचोर) : क्या जन स्वास्थ्य मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सत्य है कि तहसील सांचोर में हाड़ेचा क्षेत्रीय पेयजल योजना को संशोधित कर बड़ी योजना बना दी गई है ? और हां, तो कब व कितनी ?

(2) संशोधित योजना के अनुसार कार्य कब तक सम्पूर्ण करा दिया जावेगा ?

(3) क्या संशोधित योजना के अन्तर्गत एक नया जलकूप निर्माण कराया जावेगा ? अगर हां, तो कहां व कब ?

(4) क्या सरकार तहसील सांचोर में अन्य क्षेत्रीय पेयजल योजनायें बनाने का भी विचार रखती है, जहां जहां पीने का पानी बिल्कुल खारा है ? अगर हां, तो कहां कहां ऐसी योजनायें कब तक कार्य रूप में परिणित करा दी जावेगी ?

जन-स्वास्थ्य मंत्री (श्री भीखाभाई) :

(1) जी हां, संशोधित योजना की स्वीकृति दिनांक 2-9-71 को राज्य सरकार द्वारा

Page No 15

(श्री भीखा भाई)
की जा चुकी है योजना की अनुमानित लागत 21,06,400 रु. है।

(2) आवश्यक धनराशि एवं सामग्री की उपलब्धि पर वर्ष 1973 के अन्त तक।

(3) जी हां, गोलिया नलकूप के पास ही, शीघ्र ही।

(4) जी हां, सूची संलग्न है।

(कृपया परिशिष्ट 1 देखिये)

श्री रघुनाथ विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, यह जो आपने संशोधित योजना बनाई उसमें रुपया मन्जूर किया है उसमें सामग्री कौनसी उपलब्ध होने में कठिनाई है?

श्री भीखाभाई : सामग्री अलग चीज है और रुपया अलग चीज है। मैं यह निवेदन करू कि सामग्री के उपलब्ध करने में भी बड़ी कठिनाई होती है। बिजली विभाग के अन्दर भी सामग्री के कारण से काम नहीं हो पाता।

श्री रघुनाथ विश्नोई : यहां तो सीमेन्ट के पाइप चाहिए, बहुत मिलते हैं उसमें सामग्री के मिलने में कोई कठिनाई नहीं है।

श्री भीखाभाई : आप यही तो चाहते हैं कि उनका काम जल्दी हो जाये तो उनका काम जल्दी करा देंगे।

श्री रघुनाथ विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, दूसरी योजना जो आपने बताई है इसकी सर्वे की जा रही है तो यह सर्वे कब तक पूरी होगी?

श्री भीखाभाई : मैंने आपसे निवेदन कर दिया कि सर्वे में जो जनसंख्या के आंकड़े हैं वह आपके नहीं दिये गये हैं लेकिन यह बहुत बड़ी योजना है और उसके अन्दर सोर्स आफ वाटर की उपलब्धि नहीं होती है तब तक सर्वे करना बेकार है और उसके लिए हमारा विभाग प्रयत्नशील है।

श्री रघुनाथ विश्नोई : कब तक सर्वे होगी?

श्री भीखाभाई : माननीय सदस्य यह चाहते हैं कि जल्दी हो जाये तो जल्दी की मैंने कह दी है लेकिन अध्यक्ष महोदय, लम्बा समय लगेगा क्योंकि रीजनल योजना है और रीजनल योजना में सर्वे करने में काफी समय लगता है और यह निर्भर करता है सोर्स आफ वाटर को अवेलेबिलिटी पर। सर्वे कर लेंगे लेकिन सोर्स आफ वाटर नहीं मिलेगा तो बड़ी दिक्कत होगी। इसलिए मैंने निवेदन किया कि क्षेत्रीय योजना का सर्वे करने में जल्दी से जल्दी करने की बात कही गयी है लेकिन अवधि में नहीं बता सकता हूं।

श्री आईदान सिंह (भीनमाल) : मैं राज्य सरकार से अध्यक्ष महोदय, यह पूछना चाहता हूं कि क्या यह सही है कि 1971-72 में केन्द्र से मिलने वाली सहायताओं में अगर कमी हुई तो राज्य सरकार पेय जल के बजट में भारी कमी करने वाली है?

राव श्री नारायणसिंह : सवाल इससे संबंधित नहीं है।

श्री अध्यक्ष : अलग से प्रश्न है, श्री बिश्नोई।

श्री रघुनाथ विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, पानी के सोर्स के लिए बताया तो पहले मम्बर की योजना है उससे ट्यूब वैल बना हुआ है।

श्री भीखाभाई : अध्यक्ष महोदय, सोनवार हैं। जो मुझे इनफर्मेशन मिली है उसमें यह है कि योजना को पांच गांवों में सर्वे की जा रही है और मेरे पास कोई इनफर्मेशन नहीं है कि ट्यूबवैल हैं।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट, श्री रामचन्द्र आर्य।

आयातित ट्रेक्टरों का आवंटन

45. श्री रामचन्द्र आर्य (नोहर) : क्या कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि कृषि उद्योग निगम राजस्थान के चेयरमैन श्री चन्दनमल वैद के विरुद्ध आयातित ट्रेक्टरों के अलाटमेंट में घोटाला करने के आरोप लगे हैं? यदि हां, तो वह आरोप किस प्रकार के हैं? पूरे विवरण सहित सूची सदन की मेज पर रखने का कष्ट करेंगे?

(2) क्या यह सही है कि आयातित ट्रेक्टर काफी मात्रा में राजस्थान में निगम बनने के बाद आये हैं? यदि हां, तो कुल कितने ट्रेक्टर कौन से माडल के आये और उनमें से कितने अलाट किये गये हैं? रिजर्व कोटे से कितने व अन्य कितने ट्रेक्टर अलाट किये? अलग अलग नाम और पते सहित अलाटमेन्ट लिस्ट सदन की मेज पर रखने का कष्ट करेंगे?

कृषि मन्त्री (राव श्री नारायणसिंह) : (1) जी हां, श्री जगदीश प्रशाद तिवाड़ी और श्री रामचन्द्र आर्य ने समाचार पत्रों के माध्यम से निगम के अध्यक्ष श्री वैद के विरुद्ध आयातित ट्रेक्टर के आवंटन के सम्बन्ध में कुछ आरोप लगाये हैं।

(2) निगम के बनने के बाद जितने आयातित ट्रेक्टर आये, कितने आवंटित किये गये उनका स्टेटमेंट सदन की मेज पर रख दिया गया है।

(सूची विस्तृत होने के कारण विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)

श्री रामचन्द्र आर्य : क्या एक से ज्यादा ट्रेक्टर एक आदमी को अलाट किये गये हैं?

राव श्री नारायणसिंह : यह लिस्ट के अन्दर मौजूद है।

श्री रामचन्द्र आर्य : क्या यह सही है कि जांच करने का प्रोसीजर भी मालूम नहीं है कि किस एजेन्सी द्वारा इसकी जांच कराई जाती है और इसकी क्या प्रणाली है इसकी जानकारी दें?

राव श्री नारायण सिंह : किस बात की?

श्री रामचन्द्र आर्य : जो गलत अलाटमेंट हुए हैं उनकी जांच के लिए क्या प्रासीजर है और कौन सी एजेन्सी द्वारा इसकी जांच कराई जाती है?

राव श्री नारायणसिंह : अगर शिकायत आये तो उसकी जांच की जा सकती है। सरकार द्वारा की जा सकती है अथवा पब्लिक

(राव श्री नारायण सिंह)
अण्डरटेकिंग कमेटी भी इस समय में जांच कर रही है। जो भी उनको शंकायें हैं वह पूछ सकते हैं।

श्री रामचन्द्र आर्य : क्या यह सही है कि ट्रैक्टर्स के अलाटमेन्ट में घोटालों के सम्बन्ध में जो शिकायतें आई उनके बारे में आज तक कोई जांच नहीं हुई?

राव श्री नारायण सिंह : इस बारे में मेरे ध्यान में बात आई थी। मैंने चेयरमैन को एक पत्र लिखा था और चेयरमैन ने इसका उत्तर दिया कि श्री जगदीश प्रसाद तिवाड़ी और श्री रामचन्द्र आर्य ने जो आक्षेप लगाये थे उनके विषय में जगदीश प्रसाद जी को तथ्य देने के लिए उन्होंने पत्र लिखा था और तथ्य देने के लिए पत्र लिखा उस का जवाब नहीं आने पर उन्होंने प्रेस में स्टेटमेंट दे दिया और उन्होंने प्रेस में उसका जवाब दिया और अगर स्पष्ट तथ्य उसके सामने लाये जायेंगे वह चेलेन्ज के साथ कहने को तैयार हुए थे कि वह उसका जवाब देने के लिए हमेशा तैयार हैं।

श्री रामचन्द्र आर्य : क्या अध्यक्ष महोदय, जिसके खिलाफ आरोप हो, उसी से पूछा जाये तो यह कोई प्रोसीजर नहीं है। आपने कहा कि जांच की तो सरकार की कौन-सी एजेन्सी से जांच कराई घोटालों के बारे में और नहीं की तो क्यों नहीं की इसके लिए आपके पास क्या उत्तर है?

राव श्री नारायण सिंह : मेरे सामने शिकायत आई और मैंने चेयरमैन को पत्र लिखा और उसका जवाब आया मेरे पास में कि अगर चेयरमैन को तथ्य दिये जायं कि कहां अनियमिततायें हुई, कहां घोटाले हुए तो उस विषय में जानकारी वे देंगे। लेकिन जब तक तथ्य नहीं आयें तब तक जांच किस आधार पर कराई जाय?

श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़) : क्या यह सही है कि सदन के अन्दर बजट अधिवेशन के मौके पर कृषि निगम के ट्रैक्टर्स अलाटमेंट के बारे में, घोटालो के बारे में और अनियमितताओं के सम्बन्ध में बहस हुई थी और माननीय कृषि मन्त्रीजी ने जांच का आश्वासन दिया था।

राव श्री नारायण सिंह : इसकी मुझे जानकारी नहीं है।

श्री मदन सिंह : उन्होंने आश्वासन दिया था।

श्री दौलतराम सारण : अध्यक्ष महोदय, अनेक माननीय सदस्यों ने अपनी अपनी जानकारी से आरोप लगाये थे और कृषि मन्त्रीजी ने आश्वासन दिया था कि इसकी जांच की जायेगी और अब आप कह रहे हैं मुझे इसकी जानकारी नहीं है और यह प्रश्न फिर पूछा है और फिर कह रहे हैं कि जानकारी नहीं है।

श्री नारायण सिंह : अध्यक्ष महोदय, पब्लिक अण्डरटेकिंग कमेटी ‥

श्री देवीदत्त गाड़िया : अध्यक्ष महोदय, ये पब्लिक अण्डरटेकिंग का बार बार नाम ले रहे हैं इससे क्या तात्पर्य है? क्या आपको यह ध्यान नहीं है कि उस समय सदन के अन्दर माननीय सदस्यों ने आरोप लगाये थे कि राजस्थान में आये हुए ट्रैक्टर्स हरियाणा और मध्यप्रदेश में चले गये और

(श्री देवीदत्त गाडिया)
लाखों रुपयों का घोटाला हुआ है और माननीय कृषि मन्त्री जी ने कहा था कि जांच करायेंगे और नये मन्त्री कह रहे हैं कि मुझे जानकारी नहीं है तो फिर अध्यक्ष महोदय, यह तो परम्परा बन जायेगी कि पहले तो मन्त्री महोदय आश्वासन दे जायेंगे और आने वाले मन्त्री कहेंगे कि मुझे जानकारी नहीं है · · ·

श्री अध्यक्ष : हो गया, प्रश्न हो गया।

श्री देवीदत्त गाडिया : इसके साथ यह है कि एक आदमी को दो दो और तीन-तीन बार ट्रैक्टर दिया गया क्या यह नियमों के विपरीत नहीं है ? क्या यह भ्रष्टाचार नहीं है ? इसके लिए आपने क्या कार्य–वाही की ?

श्री दौलतराम सारण : अध्यक्ष महोदय, मैं यह निवेदन कर रहा हूं कि माननीय मंत्री महोदय जो यह कह रहे हैं कि पब्लिक अण्डरटेकिंग कमेटी जांच कर रही है । इस सदन की कोई समिति अपना फंक्शन कर रही है यह सरकार का विषय नहीं है। उनका फंक्शन है वह अपने तरीके से काम करते हैं और इस हाउस में अपनी रिपोर्ट पेश करते हैं । इसलिए मंत्री महोदय कमेटी का नाम लेकर अपनी जिम्मेदारी से बच नहीं सकते। सरकार के बिहाफ पर भूतपूर्व मंत्री ने आश्वासन दिया था जांच का तो क्या जांच हुई यह बताया जाना चाहिए।

राव श्री नारायणसिंह : अगर इस प्रकार के तथ्य हमारे सामने लाए जायेंगे तो जरूर जांच कराई जाएगी। इस प्रकार के कोई तथ्य इस वक्त नहीं है ।

श्री मदनसिंह दांता : अध्यक्ष महोदय, मैंने मंत्री महोदय के सामने दांता का ही एक मामला रखा था। एक केस में एक मुसलमान को ट्रैक्टर अलाट किया गया था लेकिन अलाटमेंट करने के बाद चेयरमैन ने वापिस कागज फेंक दिए और माननीय मंत्री महोदय ने भी माना था कि वाकई में यह अन्याय हुआ है, लेकिन उस पर क्या कार्यवाही हुई ?

राव श्री नारायण सिंह : इस विषय में जो भी तथ्य मेरे सामने आए हैं या आयेंगे, एग्रीकल्चर प्रोडक्शन सेक्रेट्री के मार्फत जांच कराई जावेगी।

श्री कृष्ण कुमार गोयल : क्या यह सही है कि डिस्क्रिशनरी कोटा में से ट्रैक्टर अलाट करने के लिए कोई रूल्स बने हुए हैं ?

श्री जयकृष्ण शर्मा (धानागाजी) : क्या यह सही है कि श्री चन्दनमलजी ने माननीय सदस्य श्री रामचन्द्र आर्य और श्री त्रिवेदी को यह लिख कर भेजा था कि यदि कोई एलीगेशन उनके पास हों तो वे लिखकर भेजें ?

श्री रामचन्द्र आर्य : उन्होंने मुझे लिखा था लेकिन मैं उनसे इन्क्वायरी कराना उचित नहीं समझता।

श्री जयकृष्ण शर्मा : आपने कोई तथ्य भिजवाए हैं ?

(शोरगुल–अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज, आर्डर।

Page No 19

(भारी शोरगुल–अश्रव्य)

श्री प्रद्युम्नसिंह : इस प्रकार के झूठे आरोप लगाये गए हैं···

(शोरगुल–अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : अंकित न हो।

श्री प्रद्युम्नसिंह : ××××××

अनेक माननीय सदस्य×××

श्री भगवानदास शास्त्री (अजमेर पश्चिम) : क्या यह सही है कि श्री प्रद्युम्न सिंहजी ने अपने बच्चों के नाम ट्रेक्टर लिए हैं ?

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज, आर्डर।

(भारी शोरगुल)

अंकित न हो।

श्री प्रद्युम्न सिंह : ×××

अनेक माननीय सदस्य : ×××

श्री अध्यक्ष : अगर माननीय सदस्य एक के बाद एक कोई प्रश्न पूछना चाहें तो मैं उसका उत्तर देने के लिए आदेश दे सकता हूं। बाकी सारे सदस्य एक साथ इधर से भी और उधर से भी साथ साथ खड़े होकर बोलते रहे तो इससे निर्णय तो कुछ नहीं निकल सकता। इसलिए माननीय सदस्यों से निवेदन करूंगा कि मैं इसके लिए फिर समय दे सकता हूं। माननीय सदस्य एक एक प्रश्न पूछ लें।

श्री रामचन्द्र आर्य : चोर की दाढ़ी में तिनका।

श्री जयनारायण सालोदिया (निवाई) : माननीय अध्यक्ष, एक सप्लीमेंट्री।

श्री देवीदत्त गाडिया : व्यवस्था का प्रश्न।

श्री अध्यक्ष : मैं अपने पैरों पर खड़ा हूं।

श्री देवीदत्त गाडिया : मेरा व्यवस्था का प्रश्न है माननीय अध्यक्ष।

श्री अध्यक्ष : पहले एक प्रश्न आने दीजिये।

श्री गोयल।

श्री कृष्णकुमार गोयल : क्या यह सही है कि डिस्क्रयेशनरी कोटा से ट्रेक्टर अलाट करने के लिए कोई रूल्स बने हुए हैं ?

राव श्री नारायण सिंह : डिस्क्रिशनरी कोटा से ट्रेक्टर देने के लिए मेरी जानकारी में कोई रूल्स नहीं है।

श्री कृष्णकुमार गोयल : तो अब तक डिस्क्रिशनरी कोटा से जो ट्रेक्टर दिए गए हैं उनको कैसे रेगुलेट कर रहे हैं ?

राव श्री नारायण सिंह : जहां तक मेरी जानकारी है, डिस्क्रियेशनरी कोटा से जो ट्रेक्टर दिए जाते है वे जो अति आवश्यकता वाले शख्स हों और जिनको बारी से ट्रेक्टर सुगमता से नहीं मिल सकते हैं य

×××××× अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार अंकित नहीं किया गया।

(राव श्री नारायण सिंह
कोई विशेष कारण इस प्रकार के हों कि जिनके आधार पर उनको ट्रेक्टर दिया जाना चाहिए तो दिए जाते हैं और इन्हीं आधार पर दिए गए हैं।

श्री कृष्णकुमार गोयल : क्या यह सही है कि जिस व्यक्ति के पास भूमि है वही डिस्क्रिशनरी कोटा से ट्रेक्टर लेने का अधिकारी बन सकता है ?

राव श्री नारायणसिंह : यह ठीक है कि जिसके पास में भूमि है, चाहे खातेदारी हो, चाहे गैर खातेदारी हो उसी को डिस्क्रिशनरी कोटा से ट्रेक्टर मिल सकता है।

(व्यवधान)

श्री कृष्णकुमार गोयल : क्या यह सही है कि डिस्क्रियेशनरी कोटा से जितने ट्रेक्टर अलाट किए गए हैं उनमें अधिकांश लोग ऐसे हैं जिनके पास एक बिस्वा भी जमीन खाते की या कानून की नहीं है ?

राव श्री नारायणसिंह : इस प्रकार की जानकारी मेरे पास नहीं है।

श्री कृष्णकुमार गोयल : क्या यह सही है कि राज्य सरकार के पास इस प्रकार के आरोप पहुंचे हैं कि जो डिस्क्रिशनरी कोटा से ट्रेक्टर अलाट किए गए हैं उनमें पक्षपात किया गया है, नियमों की अवहेलना की गई है और एक व्यक्ति को एक से अधिक ट्रेक्टर दिए गए हैं जिनके पास भूमि ही नही है ?

राव श्री नारायण सिंह : इस प्रकार की कोई स्पेसिफिक शिकायत नहीं है।

श्री देवीदत्त गाड़िया : व्यवस्था का प्रश्न।

श्री अध्यक्ष : श्री प्रद्युम्नसिंह।

श्री देवीदत्त गाडिया : पहले मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष : पहले प्रद्युम्नसिंह प्रश्न पूछ लें।

श्री देवीदत्त गाडिया : मैं पहले इसीलिए लेना चाहता हूं। व्यवस्था के प्रश्न की महत्ता इसी में है। उनके (श्री प्रद्युम्नसिंह) बोलने से पहले ही व्यवस्था का प्रश्न लेना चाहता हूं वरना इसका महत्व समाप्त हो जावेगा।

श्री गिरधारीलाल व्यास : यह व्यवस्था का प्रश्न प्रश्नोत्तरकाल में खड़ा ही नहीं हो सकता है, यह नियमों के खिलाफ है।

श्री देवीदत्त गाडिया : मेरा व्यवस्था का प्रश्न यह है कि किसी भी माननीय सदस्य के रिलेटिव या निकटतम रिश्तेदार के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार के या अन्य प्रकार के मसले विधान सभा में चल रहे हों तो उस समय माननीय सदस्य को उस सम्बन्ध में बोलने का अधिकार नहीं है और उन्हें नहीं बोलना चाहिए। मेरी यह व्यवस्था है। माननीय सदस्य प्रद्युम्नसिंहजी यहां पर बोल रहे हैं, ये चन्दनमल जी के निकट सम्बन्धी हैं और उन पर लाखों रुपयों के घोटाले के आरोप हैं, उनको बचाने के लिए यह उनकी वकालात कर रहे हैं। यह मेरा व्यवस्था का प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष : यह व्यवस्था का प्रश्न नहीं है। श्री प्रद्युम्नसिंह।

श्री प्रद्युम्नसिंह : मैं जानकारी हासिल करना चाहता हूं माननीय मंत्री महोदय से कि जिस समय·······

श्री मदनसिंह दांता : पोइन्ट आफ आर्डर।

श्री अध्यक्ष : नो पोइन्ट आफ आर्डर।

श्री प्रद्युम्नसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानकारी करना चाहता हूं कि जिस समय ट्रैक्टर अलाट किया जाता है, चाहे डिस्क्रिशनरी कोटा से हो चाहे रेगुलर कोटा से अलाटमेंट किया जाता हो, अलाटमेंट करते वक्त तहसीलदार का यह सर्टीफिकेट इस प्रकार का होना चाहिए कि उसके पास पन्द्रह एकड़ जमीन है और उसी अवस्था में ट्रैक्टर अलाट किया जाता है।

श्रीमति सुमित्रासिंह : पन्द्रह एकड़ नहीं, पन्द्रह बीघा।

श्री प्रद्युम्न सिंह : पन्द्रह एकड़ या पन्द्रह बीघा जो भी हो। लेकिन तहसील-दार का सर्टीफिकेट होना चाहिए और उस सर्टीफिकेट के आधार पर ही ट्रैक्टर दिया जा सकता है। क्या मंत्री महोदय की जानकारी में कोई ऐसा मामला है कि जहां पर बिना तहसीलदार का सर्टीफिकेट प्राप्त किए कारपोरेशन ने कोई ट्रैक्टर आवटित किया हो ?

राव श्री नारायण सिंह : ऐसी कोई शिकायत नहीं है।

श्री नत्थीसिंह (भरतपुर) : अभी माननीय मंत्री जी ने कहा कि पब्लिक अण्डरटेकिंग जांच कर रही है। मैं आपके माध्यम से पब्लिक अण्डरटेकिंग कमेटी के चेयरमैन से यह जानकारी चाहूंगा कि उन्होंने इस सम्बन्ध में क्या जांच की है।

श्री अध्यक्ष : यह प्रश्न अभी नहीं आता है।

श्री भरोंसिंह शेखावत (किशनपोल) : अध्यक्ष महोदय, इस सम्बन्ध में अभी दो-तीन दिन पहले ही विभाग से सारी पत्रा-वलियां मंगा कर देखी है और सदन की परसों या सोमवार को जो मीटिंग होगी उस समय जो भी जांच रिपोर्ट या तथ्य पब्लिक अण्डरटेकिंग कमेटी के सामने आए हैं उन्हें मैं सदन में प्रस्तुत कर दूंगा। एक निवेदन और कर दूं वैसे आप इजाजत दें तो और मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि मंत्री महोदय को इस बात का बिल्कुल ज्ञान नहीं है। मैं सदन को पूरी जानकारी दे सकता हूं।

श्री जयनारायण सालोदिया : एक सप्लीमेंट्री।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न काफी हो चुके हैं।

श्री जयनारायण सालोदिया : एक सप्लीमेंट्री, अध्यक्ष महोदय। मेरे क्षेत्र में भी इस प्रकार का मामला हुआ है और यह बात मेरे ध्यान में अभी अभी लाई गई है। मुझे मालूम हुआ है कि सूरज का खेडा नामक ग्राम में किसी आदमी को ट्रैक्टर अलाट हुआ। जिस आदमी को ट्रैक्टर अलाट हुआ उस नाम का कोई आदमी

(श्री जयनारायण सालोदिया)

उस गांव में नहीं रहता। तहसीलदार की रिपोर्ट भी झूंठी है और उसमें जो खसरा नम्बर दिए गए हैं, वे भी झूंठे हैं। उस नाम का कोई आदमी गांव में नहीं है। इस बात का पता तब पड़ा जबकि मेकेनिक उस गांव में ट्रेक्टर ठीक करने के लिए गया तो गांव वालों ने कहा कि इस नाम का कोई आदमी नहीं है और उसके नाम ट्रेक्टर दिया गया है। तब हमें पता पड़ा कि जो पटवारी की रिपोर्ट है, तहसीलदार की रिपोर्ट है वह झूंठी है, जो मोहर लगी है और साइन किए गए हैं वे सब झूंठे हैं। इस तरह का केस मेरे क्षेत्र का है।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। नेक्स्ट।

श्री रामचन्द्र आर्य : अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानकारी करना चाहूंगा कि प्रश्न एक में यह पूछा गया है कि कौन कौन से आरोप इस सम्बन्ध में निगम के चेयरमेन के खिलाफ हैं, उसको स्पष्ट नहीं किया गया है। अभी केवल चिट्ठी का हवाला दिया गया है। इसके अलावा उन्होंने एक भी आरोप के बारे में जानकारी नहीं दी है। वे कौन से आरोप हैं? क्या इस सम्बन्ध में आडिट आक्षेप हैं निगम के घोटाले के सम्बन्ध में और सरकारी रिकार्ड से यह सही बात है? क्या यह सही है कि व्यापारियों को ट्रेक्टर अलाट किये गए हैं? नोहर में कुशलचन्द पी. डब्ल्यू. डी. ठेकेदार को, डूंगरमल अनाज के व्यापारी को ट्रेक्टर नहीं दिये गये हैं? हनुमानगढ़ में भूतपूर्व डिप्टी मिनिस्टर बृजप्रकाश गोयल के भाई ने प्राइवेट एग्रो-इन्डस्ट्री बना कर 100 से ज्यादा ट्रेक्टर गाजियाबाद से लाकर पंजाब और हरियाणा में बेच दिये हैं···

श्री प्रद्युम्नसिंह : इससे क्या? यह अलग है।

श्री रामचन्द्र आर्य : आप बीच में क्यों उछल रहे हैं? चोरी करते हैं और सीना-जोरी? अध्यक्ष महोदय, क्या यह सही है कि इसी राजस्थान की राजधानी में एक होटल में बैठकर तहसीलदारों के नाम डिलीवरी की गई? क्या यह सही है कि ट्रेक्टरों के एलाटमेन्ट के लिए लाटरी निकाली जाती है और वह एक ही आदमी के नाम से बार बार आ जाती है क्योंकि राजस्थान में जो भी लाटरी सिस्टम है···

श्री देवीदत्त गाड़िया : कौन से आदमी के नाम आई है, किस के नाम बार बार आई है लाटरी?

श्री रामचन्द्र आर्य : ऐसी शिकायत है कि जिसके नाम से लोटरी निकाली जाती है वह बार बार उसी आदमी के आ जाती है। क्या यह किसी के सामने निकाली जाती है? कौन कौन आदमी इसमें बैठते हैं और इसकी जो प्रोसिडिंग्स लिखी जाती है क्या वह नहीं लिखी जाती है? अलाटमेन्ट कमेटी की कोई भी कार्यवाही नहीं लिखी जाती है। इसके अलावा जो रजिस्टर हैं वह मुकम्मिल नहीं हैं। यह भी नहीं मालूम कि कितने ट्रेक्टर हैं और किस तरह के हैं इसके अलावा जो ट्रेक्टर गंगानगर जिले में गये हैं उनके अन्दर पहले जो लिस्ट दी गई गई है उसमें कोई तारीख नहीं है कि कौनसी तारीख को अलाटमेन्ट हुआ है। आज भी गंगानगर में दस प्रतिशत से ज्यादा ट्रेक्टर

(श्री रामचन्द्र आर्य)
नहीं हैं। सारे के सारे पंजाब और हरियाणा में 10·12 हजार का ब्लेक लेकर बेच दिये गए हैं। उदाहरण के तौर पर बताना चाहता हूं कि एक हरिजन एम. एल. ए. हैं उन्होंने बेचा है। आप इसकी इन्क्वायरी करवाइये। इसके अलावा जितने भी ट्रेक्टर यहां से जाते हैं उनकी बिक्री यहां से सीधी ही हो जाती है। हालत यह है कि शिकायतें करते हैं तो चेयरमेन चिट्ठी लिखता है और जवाब आ जाता है कि रामचन्द्र आर्य ने कोई उत्तर नहीं दिया है। इसके अलावा मैं यह भी जानना चाहता हूं कि निगम कार्यालय में जितने भी कर्मचारी हैं, उनकी नियुक्ति भी पक्षपातपूर्ण तरीके से और गलत तरीके से की गई है। उन कर्मचारियों ने, काफी आदमियों ने झोटवाड़ा में जमीन खरीदी है···

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य स्थान ग्रहण करें।

श्री कृष्ण कुमार गोयल।

श्री रामचन्द्र आर्य : एक और जानकारी करना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष : अब समय नहीं है।

श्री रामचन्द्र आर्य : इसके अलावा गंगानगर में रामनाथ चौधरी के लड़के के नाम से ट्रेक्टर दिया गया है। एक एक परिवार को चार चार ट्रेक्टर दिये गए हैं। इस प्रकार की धांधलेबाज़ी इस पार्टी के लोगों ने मिल कर जनता के खजाने पर डाका डाला है और इस तरह से यहां पर इस बात को छिपाना चाहते हैं। इसकी जांच होनी चाहिये।

श्री अध्यक्ष : श्री गोयल। मुख्य मन्त्री महोदय।

आर्डर प्लीज।

कोटा में राजपत्रित अधिकारियों की सम्पत्ति

46. **श्री कृष्ण कुमार गोयल** (कोटा) : क्या मुख्य मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :–

(1) कोटा नगर व कोटा जिले में किस किस राजपत्रित अधिकारी ने स्वयं अथवा अपने निकटतम सम्बन्धित रिश्तेदार के नाम से कब 2 मकान बनवाये हैं व उनका अनुमानतः कितना मूल्य बताया है ?

(2) कोटा नगर व कोटा जिले में किस किस राजपत्रित अधिकारी ने कब कब कितनी 2 कृषि भूमि व आवास हेतु प्लाट स्वयं अथवा अपने निकटतम रिश्तेदारों के नाम से क्रय किए हैं ? व अनुमानतः उनका क्या मूल्य दिखाया है ?

(3) क्या इस प्रकार राजपत्रित अधिकारियों द्वारा अर्जित सम्पत्ति की कोई जानकारी नियमानुसार दी जाती है ?

(4) क्या राज्य सरकार ने इ। अर्जित सम्पत्ति के सम्बन्ध में कभी जांच की है ?

मुख्य मंत्री (श्री बरकतुल्ला खां) : अध्यक्ष महोदय, इस सम्बन्ध में पूरी जानकारी नहीं है। माननीय सदस्य को जैसे ही मेरे पास जानकारी मिलेगी सूचना दे दूंगा।

Page No 24

श्री कृष्ण कुमार गोयल : अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि केवल इसी सत्र में यह प्रश्न नहीं आया हैं। गये सत्र में भी यह प्रश्न उठाया गया था। मैं मुख्य मन्त्री महोदय को यह कहना चाहता हूं कि एक ओर तो आपने भ्रष्टाचार को मिटाने का बीड़ा उठाया है और यह सीधा सादा सा प्रश्न है कि किस तरह से आज गजेटेड आफिसर्स ने प्रापर्टी अर्जित की है। आज कोटा के अन्दर किसने मकान नहीं बनाया है ?

श्री बरकतुल्ला खां : मैं कह रहा हूं कि जवाब नही आया है। जवाब आते ही मैं आपको पत्र मे लिख दूंगा और आपको इन्फरमेशन दे दूंगा।

श्री देवीदत्त गाड़िया : कब तक ?

श्री बरकतुल्ला खां : एक महिने के अन्दर।

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, ट्रेक्टर के सम्बन्ध में जो प्रश्न है उसके सम्बन्ध में माननीय भैरोंसिंह जी परसों सूचना देंगे। सभी माननीय सदस्य इसमें इन्टरेस्टेड है। इसलिये इसको पोस्टपोन रखा जाये।

श्री अध्यक्ष : मैं इस पर विचार कर लूंगा।

श्री केसरीसिंह हाड़ा।

पेड़ों की कटाई

47. **श्री केसरीसिंह हाडा (हिण्डौली):** क्या वन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या यह सही है कि 23-10-70 को शाम 5–30 बजे मयूर गेट के नाका चूंगी नगरपालिका, बूंदी पर वन विभाग के फोरेस्ट गार्ड व जकाती ने वन में से हरी लकड़ी काट कर लाती औरतों व आदमियों को लकड़ियां ले जाने से रोका था ?

(2) क्या यह सही है कि वन विभाग के फोरेस्टरों ने रेंजर, जो कि इस वक्त डी. एफ. ओ. का कार्य कर रहे हैं, उन्हें इसकी जानकारी दी थी ? यदि हां तो रेंजर ने उस पर क्या कार्यवाही की ?

(3) क्या यह सही है कि मोली लाने वालियों ने एफ. जी. से कहा कि पं० बृजसुन्दरजी ने उनको 23 और 24-10-70 को गीली लकड़ी लाने की आज्ञा प्रदान कर दी है ?

(4) दिनांक 23 और 24-10-70 में कुल कितने धोकड़े के व खेजड़े के हरे भरे पेड़ कटे सूची सदन को मेज पर रखें ?

(5) तत्कालीन चिकित्सा मंत्री श्री बृजसुन्दर शर्मा द्वारा नगरपालिका चुनाव के दो दिन पूर्व इस प्रकार के आदेश देने का क्या प्रयोजन था ?

वन मंत्री (श्री भीखाभाई) : (1) जी हां।

(2) फोरेस्टर ने रैन्जर को जानकारी दी थी। यद्यपि रेन्जर उस समय डी. एफ. ओ. बून्दी का कार्य तो नहीं कर रहे थे किन्तु उन्होंने पुलिस विभाग को पुलिस सहायता हेतु लिखा था। व्यवस्था में व्यस्त होने से पुलिस फोर्स न मिल सक

(श्री भीखाभाई)
तथा अन्य नाकों से स्टाफ लेकर वन की सुरक्षा हेतु कार्यवाही को।

(3) इसकी कोई जानकारी विभाग को नहीं है।

(4) दिनांक 23–10–70 को 94 तथा 24–10–70 को 76 सिर पर बोझा लाने वाले व्यक्तियों ने मिलकर 3478 हरे वृक्ष काटे। सूची सदन के पटल पर रख दी गई है।

(5) भूतपूर्व चिकित्सा मंत्रीजी द्वारा दिये गये आदेश की जानकारी इस विभाग को नहीं है।

(कृपया परिशिष्ट 2 देखिये)

श्री केसरीसिंह हाडा : अध्यक्ष महोदय, मैं यह जानना चाहूंगा कि भूतपूर्व, मन्त्री श्री बृजसुन्दर शर्मा अब मंत्रिमण्डल में नहीं है और अब उनको बचाने की कोशिश नहीं करें और स्पष्ट रूप से सारा वाकया सदन के सामने रखें। उन्होंने कहा था कि जंगल काट लो उस समय नगरपालिका के चुनाव सामने थे। उन्होंने कहा था कि चाहे जितना काट लो परन्तु वोट कांग्रेस को देना। लकड़ी ले जाने वाले ठेले में ले गये हैं। इस माफिक जंगलों को बर्बाद किया गया है। मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि यह सरकार वन महोत्सव मनाती है वह नहीं मनाना चाहिये क्योंकि यह वन उगा नहीं रही है बल्कि उनको कटवा रही है।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न यह है कि क्या यह सही है?

श्री भीखाभाई : अध्यक्ष महोदय, मैंने नकारात्मक उत्तर दिया है।

श्री केसरीसिंह हाड़ा : मन्त्री महोदय असत्य बोल रहे हैं। मैं मौके पर स्वयं मौजूद था।

श्री अध्यक्ष : वे कह रहे हैं कि सही नहीं है।

श्री केसरीसिंह हाड़ा : अधिकारियों ने कहा कि पुलिस सुनती नहीं है, कलेक्टर सुनता नहीं है। हम क्या करें।

श्री अध्यक्ष : यह समाप्त हो गया। इन्होंने इन्कार कर दिया है। दूसरा प्रश्न पूछिये।

श्री केसरीसिंह हाड़ा : मैं मुख्य मंत्रीजी से कहूंगा कि इसकी जांच करायें और भ्रष्टाचार को दूर करने की कृपा करें।

श्री लाभचन्द वैद (सुजानगढ़) : मंत्री महोदय जो कि वहां के नहीं, वह जो उत्तर दे रहे हैं वह तो ठीक है और जो वहां के स्थानीय एम. एल. ए. कह रहे हैं वह ठीक नहीं है।

श्री अध्यक्ष : नेक्स्ट।

टोंक जिले में सड़क निर्माण कार्य

48. **श्री दिग्विजयसिंह** (उनियारा) : क्या सार्वजनिक निर्माण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) जिन वर्षों में अकाल रहा उन वर्षों में सार्वजनिक निर्माण विभाग को कुल कितनी धनराशि सड़क निर्माण हेतु दी

(श्री दिग्विजयसिंह)
गई ? कृपया सालवार आंकड़े सदन की मेज पर रखें।

(2) क्या जिला टौंक में भी वर्ष 69-70, 70-71, 71—72 के अन्तर्गत सड़कों का निर्माण हुआ है ? यदि हां, तो किन—किन सड़कों पर कार्य किया गया और एक—एक पर कितनी धनराशि खर्च की गई ? सूची मय नाम सड़क व वर्ष प्रति सड़क सदन की मेज पर रखें।

(3) क्या विभाग द्वारा जिन काश्तकारों की भूमि पर सड़क का निर्माण कराया गया है उन्हें मुआवजा दिया गया है या उनकी भूमि अवाप्ति के कागजात तैयार कर लिये गये था ? यदि हां, तो कुल कितना मुआवजा देना पड़ेगा ? आंकड़े सदन की मेज पर रखें।

(4) क्या यह सही है कि नियमानुसार सड़क निर्माण करने से पूर्व भूमि अवाप्ति करना आवश्यक था ? यदि हां, तो क्या यह कार्यवाही करली गई है ?

सार्वजनिक निर्माण मंत्री (श्री शिवचरण माथुर) : (1) सहायता विभाग द्वारा इस विभाग को सड़क निर्माण हेतु दी गई धनराशि के खाते के आकड़ों की सूची (अ) सालवार प्रस्तुत है।

(2) जी हां, सूची (ब) प्रस्तुत है। 1971—72 मे कोई सहायता कार्य नहीं कराया गया।

(3) सहायता कार्यों में बनी सड़कों की भूमि अवाप्ति के मुआवजे के भुगतान का दायित्व इस विभाग का नहीं है।

(4) यह इस विभाग से सम्बन्धित नहीं है।

(कृपया परिशिष्ट 3 देखिये)

श्री दिग्विजयसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय मंत्री से जानना चाहूंगा कि आपको 68 से लेकर 70 तक 65,20,74,500 रु. सड़क निर्माण के लिए मिले थे तो एक भी सड़क बता दें जिसको कि आपने मेटल्ड किया हो पूरी तरह से ?

श्री शिवचरण माथुर : सारे राजस्थान का आप कह रहे हैं ?

श्री दिग्विजयसिंह : सारे राजस्थान में कोई भी सड़क बता दें।

श्री शिवचरण माथुर : बड़ा अजीब सवाल है इसका अभी बताना बड़ा मुश्किल है।

श्री दिग्विजयसिंह : रैलेवेन्ट है।

श्री अध्यक्ष : रेलेवेन्ट तो हैं लेकिन सूचना नहीं है इस वक्त इनके पास।

श्री दिग्विजयसिंह : 65 करोड़ रुपया आपने खर्च किया और रोड्स की हालत यह है कि एक भी कम्प्लीट नहीं है और बार बार यह सवाल आता है तो आप कहते हैं कि अर्थाभाव के कारण कम्प्लीट कैसे करें, लेकिन जब पैसा आया है तो उसका उपयोग नहीं हुआ। तो कम से कम एक सड़क तो बता दें राजस्थान में जिसको कि 65 करोड़ रुपया खर्च करने के बाद आपने पूरी करदी हो ?

श्री शिवचरण माथुर : कौन सी सड़क पूरी है इसकी जानकारी मेरे पास अभी

(श्री शिवचरण माथुर)
नहीं है। आप चाहेंगे तो जानकारी आपको दे दूंगा।

श्री **दिग्विजयसिंह** : मैंने प्रश्न 3 में पूछा है:—

"क्या विभाग द्वारा जिन काश्तकारों की भूमि पर सडक का निर्माण कराया गया है उन्हें मुआवजा दिया गया है या उनकी भूमि अवाप्ति के कागजात तैयार कर लिये गये हैं ?"

यह प्रश्न यहां बार बार उठाया गया है तो आखिर में जब सड़क के लिए आप उनकी भूमि लेते हैं तो उनको मुआवजा देने की जिम्मेदारी आपकी नहीं है तो किसकी है ? उनसे उनकी जमीन का हांसिल ले रहे हैं और जमीन उनके पास से निकल गई और आप मुआवजा भी नहीं दे रहे हैं····

श्री **अध्यक्ष** : आप समझ गये हैं।

श्री **शिवचरण माथुर** : जहां पर विभाग के द्वारा सड़कों का निर्माण होता है तो उसके मुआवजे की कार्यवाही की जाती है गांवों में सड़कें बनाने के लिए पहले राज्य सरकार ने घोषणा की थी कि जहां तक हो वह खेती की जमीन में से न लें और दूसरी जो सिवाय चक की जमीन है उनमें से निकाली जाय। इसमें काफी टाइम लग गया····

श्री **अध्यक्ष** : प्रश्न समाप्त हुए। स्थगित प्रश्न।

श्री **देवीदत्त गाड़िया** : अध्यक्ष महोदय, प्रश्न संख्या 50 को ले लें। यह बडा महत्वपूर्ण प्रश्न है मैं निवेदन करूंगा कि राज्य सरकार ने श्री कुरावत को ज्वाइन्ट डाइरेक्टर बनाकर···

श्री **अध्यक्ष** : माननीय सदस्य मैंने प्रश्न समाप्त कर दिये। फिर समय रहेगा तो मैं ले लूंगा।

श्री **प्रेमसिंह सिंघवी** (छावडा) : माननीय अध्यक्ष, प्रश्न संख्या 49 को ले लें।

श्री **अध्यक्ष** : स्थगित प्रश्न, श्री बाढदार।

स्थगित प्रश्न

(10-11-71)

इन्टक एवं महिला विद्यालय, उदयपुर के मंत्री के विरुद्ध मुकदमा

37. श्री **दुर्गालाल बाढ़दार** : (हवा-महल, जयपुर): क्या गृह मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) इन्टक के मंत्री तथा महिला विद्यालय, उदयपुर के मंत्री श्री दुर्गाशंकर दुर्गावत के विरुद्ध सी. बी. आई. के द्वारा क्या कोई मुकदमा धारा 409 व 420 भा. दं. सं. के अन्तर्गत दर्ज कराया गया ?

(2) यदि हां, तो क्या उस मुकदमें का चालान संबंधित मुन्सिफ मजिस्ट्रेट के न्यायालय में पेश कर दिया गया और अब वह मुकद्दमा किस स्टेज पर है ?

(3) उपरोक्त मुकदमें की पैरवी सरकारी पक्ष की ओर से कौन कर रहा है

(श्री दुर्गालाल बाढ़दार) और कितने साक्षी अब तक बयान दे चुके है ?

(4) उपरोक्त मुकदमे में कुल अभियुक्त कितने हैं और क्या अभियुक्त जमानत पर हैं ? यदि हां, तो कौन अभियुक्त की किस किसने कितने कितने की जमानत दी है ?

मुख्य मंत्री (श्री बरकतुल्ला खां): (1) जी हां। मुकद्मा नं. आर. सी. 63-66। धारा 120 बी, 420।468। 406 आई. पी. सी. आई. द्वारा दर्ज किया गया था।

(2) उपरोक्त मुकद्मे में दिनांक 19–7–68 को चार्ज शीट अदालत में पेश की जा चुकी है। मुकदमा अभी जेरे तजवीज है।

(3) उपरोक्त मुकदमें में सरकारी पक्ष की ओर से पब्लिक प्रोसीक्यूटर, एस. पी. ई. जयपुर पैरोकारी कर रहे हैं। मुकदमें से सम्बन्धित 58 गवाहानों में से अब तक 33 गवाहियां दी जा चुकी हैं।

(4) उपरोक्त मुकदमें में कुल दो मुलजिमान श्री डी. दुर्गावत व कुमारी पी. वी. मेनन के खिलाफ चालान पेश अदालत किया गया। दोनों मुलजिमान 20,000) रु. के व्यक्तिगत मुचलके तथा 10,000) 10,000) रु. की जमानत पर हैं। मुलजिम दुर्गावत की जमानत सर्व श्री रोशनलाल गेलडा. नि. सी. स्कीम, जयपुर व चन्दूलाल गुप्ता नि., अलवर तथा कुमारी मेनन की जमानत सर्व श्री श्यामसुन्दर व्यास नि. सी. स्कीम, जयपुर व चन्दूलाल गुप्ता नि. अलवर द्वारा दी गई है।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : जो 468 की धारा लगाई गई है उसमें जाली दस्तावेज तैयार करने का आरोप लगाया गया है तो क्या जाली दस्तावेजात तैयार किये गये हैं, मंत्री महोदय बता दें ?

श्री बरकतुल्ला खां : जहां तक एन्क्वायरी हुई है उसमें यही बताया गया है कि इन्होंने बैठकर जयपुर, उदयपुर और दिल्ली में यह कान्स्पीरैसी की और फोर्ज्ड डाक्युमेन्ट्स से होस्टल के कम्पलीट करने का निर्णय लिया।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : मैं यही तो पूछना चाहता हूं कि जाली दस्तावेज तैयार किये गये है वे क्या हैं मंत्री महोदय बतायेंगे।

श्री भैरों सिंह : क्या यह सही है कि श्री दुर्गाशंकर दुर्गावत की पैरवी करने के लिये इस संस्थान की तरफ से जिसको राज्य सरकार की ओर से जो ग्रान्ट–इन–एड दी जाती है उसी ग्रान्ट–इन–एड के रुपये से पैरवी करने के लिए रुपया खर्च किया जा रहा है ?

श्री बरकतुल्ला खां : जहां तक पहले प्रश्न का सवाल है उसके अन्दर जो एलिगेशन्स लगाये गये हैं जो कि कोर्ट के सामने हैं वह कान्स्पीरेसी के हैं, फोर्ज्ड डाक्यूमेंट्स के हैं।

श्री दुर्गालाल बाढ़दार : कान्स्पीरेसी क्या है ?

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। उत्तर आने दें।

श्री बरकतुल्ला खां : फोर्ज्ड डाक्युमेंट बनाये हैं और युनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन से और गवर्नमेन्ट आफ इंडिया के शिक्षा विभाग से उन्होंने रुपया लिया है।

श्री देवीदत्त गाडिया : भैरोंसिहजी के प्रश्न का क्या उत्तर है ?

श्री बरकतुल्ला खां : जहां तक इस शिक्षा संस्था का सम्बन्ध है मुझे मालूम नहीं है। शिक्षा मंत्रीजी इसका ज्यादा अच्छी तरह से जवाब दे सकते हैं, लेकिन चूंकि सारे मामले के अन्दर मैं जवाब दे रहा हूं तो शिक्षा मंत्रीजी से पूछकर मैं आपको बता सकूंगा कि क्या है।

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है कि जयपुर में सी. बी. आई. के भूतपूर्व एस. पी. श्री पिलानिया जिन्होंने श्री दुर्गाशंकर के मामले की तफतीश की थी और उनके मुकदमें का चालान अदालत में पेश किया था उन्होंने राजस्थान के गृह मंत्रीजी को इस संबंध में एक चिट्ठी लिखी है कि यह पैरवी जो ग्रान्ट-इन-एड के रुपयों से की जा रही है इसको बन्द करवाया जाय ?

श्री बरकतुल्ला खां : यह सारी तफतीश इस मुकदमे की पहले सी. बी. आई. को भेजी गई थी और सी. आई. बी. ने ही प्रोसीक्यूशन तय किया है और जो भी प्रोसीक्यूशन हो रहा है वह सी. बी. आई. की ओर से हो रहा हैं, और राजस्थान सरकार से जो मदद मांग रहे हैं वह दे रहे हैं।

श्री भैरोंसिंह : मेरे प्रश्न का जवाब नहीं आया। मेरा प्रश्न यह है कि सी. बी. आई. के भूतपूर्व एस. पी. श्री पिलानिया जो इस समय राजस्थान में रेल्वे पुलिस में लगे हुए हैं इन श्री पिलानिया ने राजस्थान के गृह मंत्रीजी को एक चिट्ठी लिखकर दी है कि ग्रान्ट—इन-एड के रुपयों में से इस प्रकार से केस की पैरवी करने के लिए पैसा खर्च किया जा रहा है उसको रोका जाय।

श्री बरकतल्ला खां : इसकी मुझे जानकारी नहीं है।

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है कि यहीं चिट्ठी अलवर से आने वाले माननीय सदस्य ने विधान सभा के गत सत्र में इस सदन में प्रस्तुत की थी ?

श्री बरकतुल्ला खां : जहां तक मुझे याद पड़ता है इस चिट्ठी का कुछ रेंफरेन्स आया था, लेकिन मैंने अभी चिट्ठी फाइल में देखी नहीं। मैं इस केस की पूरी तैयारी करके लाया था, जो चार्जशीट थी वह लाया था, प्रोसीक्यूशन जो हो रहा है उसके डिटेल्स लाया था।

श्री भैरोंसिंह : तब, अध्यक्ष महोदय, इसको पोस्टपोन कर दिया जाय। पिछली फाइल के संबंध में माननीय मुख्य मंत्रीजी को पूरी जानकारी नहीं है। हम चाहते हैं कि पूरी जानकारी दी जाय कि उस चिट्ठी पर क्या कार्यवाही की गई। आप चाहें तो वह चिट्ठी भी दे दूंगा, और भी कागज कहें तो दो मिनिट में ला दूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : क्या यह सही है कि श्री दुर्गाशंकर दुर्गानत जो इतने संगीन केस में इन्वाल्ड हैं उनको सरकार की तरफ से कुछ सरकारी उद्योगों में डाइरेक्टर नियुक्त किया हुआ है ?

श्री बरकतुल्ला खां : वे राजस्थाव इलेक्ट्रिसिटी वोर्ड में डाइरेक्टर हैं।

श्री भैरोंसिंह : क्या डाइरेक्टर के लिए इस क्वालिफिकेशन की जरूरत है ?

श्री बरकतुल्ला खां : जी नहीं यह क्वालिफिकेशन जरूरी नहीं है।

श्री मनोहरसिह मेहता : क्या आप उनको वहां से हटाने के लिए सोच रहे हैं ?

श्री रामानन्द अग्रवाल : जब उनके खिलाफ ऐसा संगीन केस चल रहा है, यदि सरकारी अधिकारी भी हों तो उनको सस्पेंड किया जाता है तो क्यों नहीं इनको वहां से रिमूव किया जाय जिनके खिलाफ इस तरह से रुपये गबन करने के आरोप हैं।

श्री बरकतुल्ला खां : इनके खिलाफ जो भी चार्ज शीट है उसका मुकद्दमा अदालत में चल रहा है और मुकद्दमें का अदालत से फैसला हो जाने के बाद भी जो भी कार्यवाही होना चाहिए वह हो जायगी, और इस दरम्यान में जो आपने यह कहा है कि जब तक इस तरीके से संगीन चार्जशीट लगाये गये हैं तो इलेक्ट्रीसिटी बोर्ड में रहना चाहिए या नहीं रहना चाहिए इसके ऊपर में पुनः विचार करके अपनी राय बनाऊंगा।

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है कि राजस्थान विधान सभा के गत सत्र में तत्कालीन विधि मन्त्री श्री बरकतुल्ला खान साहब ने इस सदन में यह कहा था कि इस प्रकार का सदस्य इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड का मेम्बर नहीं बनना चाहिए। क्या इस सम्बन्ध में राज्य सरकार विचार करेगी ?

श्री बरकतुल्ला खा : जब तक टर्म खत्म नहीं हो जाए···

श्री देवीदत्त गाडिया : वह लक्ष्मण रेखा खींची है क्या ? इस प्रकार की बात कर रहे हैं··

श्री बरकतुल्ला खां : वह लक्ष्मण रेखा तो नहीं खींची गई है···

(व्यवधान-अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : प्रश्नकर्त्ता।

श्री दुर्गालाल बाढदार : माननीय अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है केवल दो प्रश्न हैं।

श्री अध्यक्ष : वह पूछ लें।

श्री दुर्गालाल बाढदार : (व्यवधान के कारण अस्पष्ट) एक ओर दुर्गावत दूसरी ओर बरकत, जो छुपा रहे हरकत।

श्री बरकतुल्ला खां : आप ने कहा है कि फोर्ज डाकूमेन्ट पर हस्ताक्षर किये हैं।

श्री अध्यक्ष : अब आप प्रश्न पूछ लें।

श्री देवीदत्त गाडिया : क्या माननीय मुख्य मन्त्री जी यह आश्वासन देंगे कि श्री दुर्गाशंकर दुर्गावत को वकालत और पैरवी के लिए राजस्थान सरकार के अनुदान से, शिक्षा संस्थान से पैसा दे रहे हैं वह रोक दिया जायेगा ?

श्री बरकतुल्ला खां : जहां तक मुझे मालूम है, शिक्षा विभाग का रुपया उनको बचाने में नहीं लगाया है····

श्री देवीदत्त गाडिया : (अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : उत्तर आने दीजिये।

श्री बरकतुल्ला खां : लेकिन अगर ऐसा हो रहा है, जिस परपज के लिए दिया गया है, उस में नहीं लगाया जाये तो····

श्री रामानन्द अग्रवाल : तो इस प्रकार का आश्वासन देंगे कि जो उनका खर्चा हुआ है, वह व्यक्तिगत हुआ है। वह उनसे वसूल किया जाये।

श्री बरकतुल्ला खां : टैक्निकल क्वेश्चन है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : if you accept this principle, then he should not be allowed to spend that money,

श्री अध्यक्ष: That may be examined.

श्री भैरोंसिंह : क्या यह सही है कि ग्रान्ट-इन-एड रूल्स के मुताबिक ऐसी किसी संस्था को ग्रान्ट–इन–एड नहीं दी जा सकती है जिसके व्यवस्थापक के खिलाफ ऐसे मुकदमें लगे हुये हों। इसके उपरान्त भी इस संस्था का निरन्तर ग्रान्ट-इन-एड दी जा रही है।

श्री बरकतुल्ला खां : दो व्यक्तियों की गलती से पूरी संस्था को सजा नहीं दी जा सकती हैं।

श्री भैरोंसिंह : संस्था को सजा नहीं दी जा सकती लेकिन क्या उन दो व्यक्तियों को हटाया नहीं जा सकता?

श्री बरकतुल्ला खां : जैसे ही कार्यवाही पूरी होगी, उन को हटा दिया जायगा।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न समाप्त हुये।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : अध्यक्ष महोदय मुझे भी कुछ पूछना है।

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : यह तो पक्षपात है। अध्यक्ष महोदय ...

श्री अध्यक्ष : आप भी वही कह रहे है? मैं बहुत ही उदार रहा हूं, इसका मतलब यह नहीं है कि आप इस प्रकार का व्यवहार करें।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : उनको टाइम दिया जाएगा।

श्री अध्यक्ष : आप नियम से बोलें।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : मैं बिलकुल नियम से बोल रहा हूं।

श्री गिरधारीलाल व्यास : (मुख्य सचेतक) : अपने पीछे वालों से पूछ लें।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज। मैं चाहूँगा कि आप शालीनता का व्यवहार करें।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : मैं क्या कह रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री प्रेमसिंह सिंघवी : तो ठीक है।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : अध्यक्ष महोयय, एक प्रश्न है ...

श्री अध्यक्ष : माननीय नेता महोदय, अब मैंने दूसरा प्रश्न ले लिया।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : पार्लियामेंट में पी. ए. सी. के द्वारा गम्भीर आरोप लगाये गये हैं। jo fraudulent activities mai involved hai ऐसे व्यक्ति को संरक्षण देना, मैं समझता हूं कि उसको फोरन सस्पेण्ड न किया जाये, ये कैसा सस्पेंस है। मुख्य मन्त्री जी कुछ कह सकते हैं।

श्री देवीदत्त गाडिया : सुना ही नहीं मुख्य मन्त्री ने। बोलिये।

श्री बरकतुल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, राजस्थान सरकार की पालिसी रही है– No innocent man should be punished. इस बात की कोशिश करते हैं

(श्री बरकतुल्ला खां)
और इस बात का ख्याल रखते हैं कि हमारा जो डेमोक्रेटिक तरीके का समाज है, उसके अन्दर जब तक कोई गिल्टी प्रूव न हो जाये। हम उसे तब तक गिल्टी नहीं मानते हैं।

श्री मनोहरसिंह मेहता : अध्यक्ष महोदय, आधा मिनिट दे दें।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : पी. ए. सी. कमेटी द्वारा प्राइमाफेसी केस बनाया गया है। ऐसे व्यक्ति को सस्पेण्ड किया जाय। अगर सरकार नहीं करती है तो यह आशंका होगी कि यह सरकार की लेतलाली है। पक्षपात की नीति है। मुख्यमंत्री जी को मैं इतना ही कहूँगा।

श्री बरकतुल्ला खां : कोई पक्षपात की नीति नहीं अपना रहे हैं। आपके जो सवाल हैं, उनका बराबर जवाब दे रहे हैं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : क्या राज्य सरकार अपने अन्य कर्मचारियों के बारे में भी यह नीति अपनाने जा रही है और इसकी घोषणा करना चाहती है कि जब तक गिल्टी प्रूव नहीं हो जाएगा तब तक उसे सस्पेण्ड नही करेंगे।

श्री दुलीलाल बाढ़दार : बहुतों को सस्पेण्ड कर दिया है।

श्री मनोहरसिंह मेहता : गलती करें तो हमको रोकना चाहिए।

श्री अध्यक्ष : श्री भैरोंसिंह।

श्री बरकतुल्ला खां : राजस्थान स्टेट इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड का टर्म खत्म हो गया है।

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह : मैं ध्यान आकर्षण करना चाहूंगा कि भूतपूर्व ब्रिटिश राज्य में बड़े से बड़ा महाराजा होता था, अगर उसके ऊपर प्राइमाफेसी केस हो जाता था तो कमीशन आफ इन्क्वायरी आता था और उसके साथ साथ उसके पावर भी सस्पेण्ड हो जाते थे। ऐसे राजा को अपने घर के अन्दर रहने की इजाजत नहीं होती थी। उसको बाहर जाना पड़ता था। यह स्वस्थ परम्परा नहीं मानते और छोटे मोटे व्यक्तियों का पक्षपात करें, यह बड़ी दुर्भाग्यपूर्ण व्यवस्था है। व्यक्तिगत रूप से आप से मुझे यह आशा नहीं है।

श्री बरकतुल्ला खां : माननीय अध्यक्ष महोदय, इलेक्ट्रिसिटी बोर्ड के बारे में कह दिया, प्रासीक्यूशन के बारे में कह दिया ...

एक माननीय सदस्य : संस्था के बारे में.....

श्री बरकतुल्ला खां : संस्था के बारे में शिक्षा मन्त्री जी कहेंगे।

श्री अध्यक्ष : शिक्षा मन्त्री जी।

श्री भैरोंसिंह : एक प्रश्न ...

क्या यह सही है कि झूठे वाउचर्स बनाकर पैसा लिया और सार्वजनिक निर्माण विभाग के एक इन्जीनियर ने झूठे सार्टिफिकेट बनाकर दिये हैं? इस बारे में उन पर कार्यवाही की जाये।

श्री मनोहरसिंह मेहता : वह कौन है, पी. डब्ल्यू डी. का इन्जीनियर जिसने झूठे सर्टिफिकेट्स दिये हैं?

एक माननीय सदस्य : यह अलग प्रश्न है

श्री मनोहरसिंह मेहता : अलग कैसे है?

श्री दिग्विजय सिंह : सभी कह दें तो पोल खुल जाये।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : There are too many skeletons in your....

शिक्षा मंत्री (श्री पूनमचन्द विश्नोई) : मुझे पूरी जानकारी नहीं है। रजिस्ट्रेशन आफ सोसाइटीज के नियम बने हुये हैं। उसमें, कौन हटाया जा सकता है, इस बारे में नियम हैं। मैं समझता हूं कि जब तक आदमी दिवालिया न हो जाये या सजा न हो जाये, किसी रजिस्टर्ड सोसायटी की सदस्यता से अलग नहीं होता है। यह तो एक कानूनी प्रश्न है। ऐसा कहीं भी हो सकता है, कम्पनीज में हो सकता है। जिनके डायरेक्टर्स पर मुकदमा हो सकता है अगर गहराई से देखेंगे। प्रश्न यह है कि मेम्बर के ऊपर मुकद्दमा चलाने से वह अयोग्य हो जाता है तो राज्य सरकार के हाथ में नहीं है कि किसी व्यक्ति को सदस्यता से वहां हटा दे।

श्री रामानन्द अग्रवाल : जब पैसे का दुरुपयोग···

श्री पूनमचन्द विश्नोई : रजिस्ट्रेशन आफ सोसाइटीज एक्ट आप देख लीजिये, किसी बिना पर अयोग्य घोषित कर दिया गया, उस पर मुकदमा····

श्री अध्यक्ष : मजिस्ट्रेट द्वारा।

श्री रामानन्द अग्रवाल : आप प्रशासक नियुक्त कर सकते हैं।

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह : वह प्रश्न अलग है। पी. ए. सी. के गम्भीर आरोप है, तो सामान्य बुद्धि की बात है।

श्री भैरोंसिंह : डाइरेक्टली इन्टरफिअर नहीं कर सकते।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : उस पर सरकार एक्शन नहीं लेना चाहती है और ढीली, लांग रोप देना चाहती है, यह मेरी समझ में नहीं आता है।

The man should be brought to book and should be punished. एलीमेन्ट्री एडमिनिस्ट्रेशन का एप्रोच यह हो सकता है।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : The man is being brought to book and he is being prosecuted.

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल (जौहरीबाजार जयपुर) : सस्पेन्शन की मांग कर रहे हैं, नेता महोदय, वह कांग्रेस के ऊंचे नेता हैं, वह फ्राड करते हैं तो फ्राड कांग्रेस का आदमी नहीं करेगा तो करेगा क्या।

श्री बरकतुल्ला खां : जो फ्राड करेगा, वह उसकी सजा पायेगा।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अफसोस इसी बात का होता है·······

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : वक्त आन्सर देगा।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : पांच लाख का फ्राड करके अपने उपयोग में ले लिये, वह जितना सुरक्षित भूतपूर्व मुख्य मंत्री सुखाड़िया के समय में रहा, उसके साथ में क्या हो सकता है। कोई एक्शन नहीं ले सकते हैं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : मैं जानना चाहूंगा, मुख्यमंत्री जी से, आपने भ्रष्टाचार समाप्त करने की घोषणा की थी। जब से आपने पद सम्भाला है, तब से भ्रष्टाचार में यदि अन्तर है तो जो पीछे के मामले हैं चाहे दुर्गाशंकर दुर्गावत का है, उन पर एक्शन नहीं लेने की क्या कसम ले ली है ?

श्री बरकतुल्ला खां : पुराने हो या नये हों—जो भी आयेंगे उन पर एक्शन लिया जायगा, जैसे विधि मंत्री जी ने बताया·····

श्री देवीदत्त गाड़िया : यह विधि मंत्री नहीं, शिक्षा मंत्री हैं इस समय।

श्री बरकतुल्ला खां : विधि मंत्री भी हैं।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज, माननीय सदस्य।

श्री बरकतुल्ला खां : वह भी है। उन्होने जैसा बताया, अन्डर द एक्ट क्या पावर गवर्नमेंट यूज कर सकती है। सोसाइटीज एक्ट में रजिस्टर हुई है तो उसमें क्या पावर दी हुई है इसका अध्ययन कर लें।

श्री मनोहरसिंह मेहता : उसका क्या हुआ, मैंने पूछा था, इसमें कौन इंजीनियर इन्वाल्व थे।

श्री मदनसिंह : मेरा एक प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न समाप्त हुए।

श्री दिग्विजयसिंह : मैं एक निवेदन करना चाहता हूं······

श्री मनोहरसिंह मेहता : मैंने एक प्रश्न पूछा था, इंजीनियर कौन है, यह मालूम तो हो जाय।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न समाप्त हुए, माननीय सदस्य!

श्री मदनसिंह : मेरा एक पाइन्ट है।

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण करें। स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था।

(शेष तारांकित प्रश्नोत्तर के लिये कृपया परिशिष्ट 4 देखिये)

अनुपस्थित सदस्यों के तारांकित प्रश्नोतर

ग्राम बामनवास की नल योजना

34. श्री पृथ्वीराज पटेल (बामनवास) : क्या जन स्वास्थ्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सत्य है कि ग्राम बामनवास (सवाईमाधोपुर) की नल योजना के अन्तर्गत पानी की टंकी, नलों की बिछावट, स्टाफ क्वार्टर और रिजरवोयर का कार्य हो चुका है लेकिन कुओं का कार्य अब तक पूर्ण नहीं हुआ है।

(2) कुओं का निर्माण कार्य अब कब तक पूर्ण हो जावेगा और इस वर्ष में इसके अन्तर्गत कितनी धनराशि स्वीकृत की गई है?

उत्तर

(1) जी हां,

(2) मार्च 72 तक 1.30 लाख रुपये।

पशु मेला इंचार्ज गोगामेड़ी के विरुद्ध दर्ज मामला

36. श्री हंसराज आर्य (भादरा): क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि गंगानगर जिले की नोहर तहसील में मेला गोगामेड़ी के पशु मेला के इन्चार्ज श्री पी. के. गांगूली के खिलाफ 161–342 का केस पुलिस में दर्ज हुआ था?

(2) क्या यह भी सही है कि उक्त मामले में गवाहियां पूर्ण हो चुकी थीं इसके बावजूद कार्यवाही नहीं हो रही है?

(3) क्या अब सरकार इस मामले में शीघ्र कार्यवाही करने का विचार रखती है? अगर हां, तो कब तक?

उत्तर

(1) जी हां।

(2) जी नहीं। मुकदमें में अभी तफतीश तकमील नहीं हुई है।

(3) जी हां। मुकदमें की तफतीश तकमील की जाकर शीघ्र ही अग्रिम कार्यवाही की जायेगी।

अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति के कृषकों को ऋण की व्यवस्था

39. श्री जुझार सिंह (रामगंज मंडी): क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(श्री कुम्भार सिंह)

क्या यह सही है कि किसी भी ऋण-दाता द्वारा जिनमें बैंक भी शामिल है अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति वाले कृषकों की भूमि मोर्टगेज नहीं की जा सकने के कारण चम्बल व दूसरे क्षेत्रों में इन जातियों के व्यक्तियों को बैंक से ऋण उपलब्ध करवाने में अड़चन महसूस होती है ? यदि हां, तो इस प्रकार के कृषकों को राज्य सरकार ने बैंकों से ऋण उपलब्ध कराने की क्या व्यवस्था की है ?

उत्तर

दीर्घकालीन व मध्य कालीन ऋण प्राप्त करने के लिये ऋण लेने वाले काश्तकारों को भूमि रहन करनी पड़ती है। जैसे काश्तकार चाहें वे अनुसूचित जाति जन जाति के हों अथवा नहीं।

उपनिवेशन क्षेत्रों में राज्य सरकार द्वारा अस्थायी रूप से जिनको भू-आवंटन (Temporary allotment of land) किया गया है उनको भूमि आवंटन से 7 वर्ष पश्चात् जमीन रहन रख कर कर्जा लेने का अधिकार केवल उन कृषकों के लिये स्वीकृति जिलाधीश दे सकते हैं जिन्होंने सरकार की देय रकम अदा कर दी है, अन्यथा नहीं। राज्य सरकार इस कठिनाई के निवारण हेतु जागरूक है तथा शीघ्र ही कानून में इस आशय का संशोधन किया जा रहा है जिससे कि 7 वर्ष से पूर्व भी कृषकों को दीर्घ व मध्यकालीन ऋण प्राप्त करने में सुविधा हो सके।

अतारांकित प्रश्नोत्तर

छात्रों को सहायता

21. श्री जयनारायण सालोदिया (निवाई): क्या समाज कल्याण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सत्य है कि विभाग में सफल छात्रों को दो सौ रुपये तक की सहायता दिये जाने का प्रावधान है ? यदि हां, तो किस किस छात्र को गत पांच सालों में कितनी कितनी सहायता दी गई ?

(2) क्या छात्रों की आर्थिक हालत की जांच की जाकर यह सहायता दी गई है ? यदि हां, तो छात्रों के नामवार मय आर्थिक जानकारी के सूची सदन की मेज पर रखें ?

उत्तर

(1) वर्तमान में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है। अलबत्ता वर्ष 1969-70 से पूर्व विभागीय उद्योग प्रशिक्षण केन्द्रों के सफल प्रशिक्षणार्थियों को दो सौ रुपये तक के मशीन, औजार आदि अनुदान स्वरूप देने का प्रावधान था। अब वर्ष 1969-70 से ऐसे सफल प्रशिक्षणार्थियों को 1000) रू. तक ब्याज मुक्त ऋण देने का प्रावधान है।

(2) सहायता का आधार उद्योग प्रशिक्षण कोर्स सफलता पूर्वक पूरा करना रखा गया था न कि आर्थिक। अतः आर्थिक हालत की जांच करने का प्रश्न ही नहीं उठता है।

तहसील डूंगरगढ के गांवों में पानी का अभाव

22. श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ): क्या जनस्वास्थ्य मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या सरकार को यह जानकारी है कि जैतासर, तोलियासर, धोलिया, टुकरियासर, उदरासर, जालपसर, बीरमसर,

(श्री दौलतराम सारण)
तहसील डूंगरगढ के गांवों में पानी का भारी अभाव हैं ?

(2) क्या यह सरकार को पता है कि डूंगरगढ़ तहसील के केऊ पुरानी, केऊ नई, जाखासर जाखासरवास, कूनपालसर, रानासर में भी पानी का भयंकर अभाव है ?

(3) क्या डूंगरगढ़ तहसील के ग्राम इन्द्रपालसर के सब बासों धर्मास, मेगूसरिया, नोसरिया, बाडेंला में भी पानी की भयंकर कमी है ?

(4) क्या विभाग प्रश्न के भाग (1) के गांवों को पानी देने हेतु डूंगरगढ़ के हनुमान धोरे से और भाग दो के ग्रामों को बरजागसर से तथा प्रश्न 3 के गांवों को धनेरू से सामुदायिक क्षेत्रीय जल योजना बनाकर पानी उपलब्ध कराने की व्यवस्था करेगी जहां बोरिंग द्वारा विभाग ने जल की उपलब्धि मालूम करली है ? यदि हां, तो कब तक यदि नहीं तो क्यों नहीं ? इनकी सर्वे कब तक करवाली जायेगी ?

उत्तर

1– जी हां ।

2– जी हां ।

3– जी हां ।

4– प्रश्न के भाग (1) के गांवों के लिये क्षैत्रीय जल प्रदाय योजना जिसकी कि अनुमानित लागत 13.76 लाख रुपये है बनाई जा चुकी है । तथा रूरल वर्क्स प्रोग्राम में सम्मिलित है रूरल वर्क्स प्रोग्राम की स्वीकृति प्राप्त होने पर आगे कार्यवाही की जावेगी इस योजना के लिये जल स्रोत तोलियासर में चुना गया है ।

प्रश्न के भाग 2 व 3 के बारे में विस्तृत सर्वेक्षण के बाद ही निश्चय किया जा सकता है ।

जिला पाली के रेन्ज क्षेत्र के सुरक्षित कूप

23. श्री फूलचन्द बाफना (सुमेरपुर) : क्या वन मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :–

(1) देसूरी, जोजावर, सेवाड़ी एवं सादड़ी (जिला पाली) के रेन्ज क्षेत्रों में प्रत्येक में एक एक कूप कितने वर्ष सुरक्षित रखे जाते हैं ?

(2) उपर्युक्त प्रत्येक क्षेत्र में कौन कौन से कूप की उपर्युक्त समय सीमा कब कब समाप्त हो गई है परन्तु अभी तक उन्हें क्यों खुला नहीं छोड़ा गया है ?

(3) उपर्युक्त प्रत्येक क्षेत्र में किस 2 सुरक्षित कूप की समय सीमा कब कब समाप्त होने वाली है ?

उत्तर

(1) कूप कटने के पश्चात् सामान्यतः 10 वर्ष तक ऐसे क्षेत्र चराई से सुरक्षित रक्खे जाते हैं ।

(2) वर्तमान वर्किंग प्लान के अनुसार 1960-61 में कटे हुए निम्नलिखित कूपों की अवधि 1970-71 में समाप्त हो जाने पर भी उन्हें चराई हेतु नहीं खोला जा सका :

(वन मंत्री):

नाम रेन्ज	नाम कूप	क्षेत्रफल (एकड़ में)
सादड़ी	लाटडा नं. 14	75 एकड़
	सेवाड़ी नं. 13	94 एकड़
	बीजापुर नं. 12	111 एकड़

इन तीनों कूपों के कटे हुए वृक्षों की ठीक-ठीक बढ़ोतरी को दृष्टि में रखते हुए गत वर्ष नहीं खोला गया इस वर्ष खोल लिया जावेगा।

(3) सूची संलग्न है।

(सूची विस्तृत होने से विधान सभा, पुस्तकालय में रखी गई)

पौष्टिक आहार योजना

24. श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़): क्या शिक्षा मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) राज्य में पौष्टिक आहार योजना के अन्तर्गत किस किस प्रकार कितना व्यय प्रति वर्ष होता है ? इस सम्बन्ध में अब तक क्या कार्यक्रम चला है ?

(2) इस योजना को कब अमल में लाया गया ? इस पर अब तक कुल कितना व्यय हो चुका है ?

(3) इस योजना के परिणाम क्या रहे ? क्या इस सम्बन्ध में कोई जांच पड़ताल अथवा अन्वेषण किया गया है ? योजना की एक प्रति सदन की मेज पर रखें।

उत्तर

(1) पौष्टिक आहार योजना के अन्तर्गत बम्बई से शाला स्तर तक केयर द्वारा दिया गया पौष्टिक आहार पहुंचाने में ट्रान्सपोर्टेसन चार्जेज प्राप्त सामग्री को स्टोर करने एवं केयर संस्था का प्रशासनिक व्यय प्रति वर्ष निम्न प्रकार से हुआ :—

1664–65	6,3,250–00
1965–66	8,23,852–00
1966–67	6,30,000–00
1967–68	6,49,999–00
1968–69	7,00,000–00
1969–70	12,78,650–00
1970–71	14,00,000–00

राजस्थान में यह योजना 1962 में अपनाई गई जिसके अन्तर्गत ग्रामीण क्षेत्र को समस्त प्राथमिक एवं माध्यमिक शालाओं के प्राथमिक वर्ग के बालक एवं बालिकाओं को सम्मिलित किया गया। 1963 के अन्तर्गत राज्य को समस्त 232 पंचायत समितियों के प्राथमिक शालाओं के छात्र, छात्राओं को दूध पिलाने का निर्णय लिया गया। दूध चूर्ण अमेरिका से प्राप्त होता था और समस्त शालाओं को भेजने का खर्चा राजस्थान सरकार वहन किया करती थी।

जनवरी 1966 से दूध के साथ गेहूं के दलिये का भी प्रावधान रखा गया था वो केवल 82 पंचायत समितियों की शालाओं को बांटा गया। जुलाई 1968 से दूध के स्थान पर सी0एस0एम0 तीन औंस व आधा औंस सोयाबीन का तेल प्रति छात्र के लिए खाद्य पदार्थ बनाने हेतु 45 पंचायत समितियों को शाला में बांटा गया। 1969–70 से केयर का प्रोग्राम लगभग 70 पंचायत समितियों में लागू कर दिया गया। 1970–71 में इनके अतिरिक्त 42 पंचायत समितियों

Page No 38

(शिक्षा मन्त्री)

में इस कार्यक्रम को चलाने का विचार किया गया।

(2) इस योजना को राजस्थान में अक्टूबर 1962 से प्रारम्भ किया गया एवं इस पर अब तक 70,45,751) रु. व्यय हो चुका है।

(3) अभी तक राज्य सरकार ने इस योजना का मूल्यांकन नहीं किया है। योजना की एक प्रति सदन की मेज पर रखदी गई है।

जिला सवाई माधोपुर में खाद व बीज की बकाया

25. **श्री रिद्धिचन्द पल्लीवाल** (गंगापुर) : क्या कृषि मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

खाद तथा बीज के कितने कितने रुपये जिला सवाई माधोपुर की कौन कौनसी पंचायत समितियों पर 31 मार्च सन् 1971 तक बकाया है? यह राशि कब से है, इसकी वसूली की क्या कार्यवाही चल रही है?

उत्तर

सवाई माधोपुर जिले की पंचायत समितियों पर खाद तथा बीज के हिसाब में निम्नलिखित राशि बकाया है।

नाम पंचायत समिति	रकम बकाया .1952-53 से 31-3-71 तक
1. सवाई माधोपुर	97,865,71
2-हिण्डौन	157,384) 65
3-करोली	96,902) 48
4-गंगापुर	2,61,964) 15
5-बामनवास	47,146) 62
6-महुआ	51.154) 51
7-टोडाभीम	74,223(13
8-बोंली	3,305) 16
9-खण्डार	714) 16
	7,62,844) 53

रु. 10,602) 45 पैसे के केसेज लैण्ड रैवेन्यु एक्ट के तहत रेवेन्यु विभाग को भेजे जा चुके हैं तथा बकाया की वसूली के लिए पंचायत समितियों से पत्र व्यवहार किया जा रहा है।

गंगानगर जिले की कृषि उपज मण्डियां

26. **श्री हंसराज आर्य** (भादरा) : क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि गंगानगर जिले में नोहर, भादर कृषि उपज मण्डी समितियों की कार्य अवधि समाप्त हो चुकी है?

(2) अगर हां, तो इनके चुनाव कराने में विलम्ब का क्या कारण है?

(3) उक्त दोनों मण्डी समितियों की अवधि कौनसी तारीख को समाप्त हुई और अब किस तिथि तक इनके चुनाव करवा दिये जायेंगे?

(4) कृषि विपणी अधिनियम व नियमों में क्या कोई परिवर्तन किया गया है? अगर हां, तो कौनसी धाराओं में?

(श्री हंसराज आर्य)

(5) क्या यह सही है कि कृषि उपज मण्डियों के चुनाव में सारी तहसील के वोटरों को 50–50 माइल से चलकर तहसील हैड क्वार्टर पर आना पड़ता है जबकि ग्राम चुनाव में वोटरों को तीन माइल से अधिक दूरी पर नहीं जाना पड़ता ? यदि हां, तो क्या सरकार मतदाताओं की सहूलियत के लिए एक ही स्थान की बजाय कई स्थानों पर पोलिंग स्टेशन (बुथ) कायम करने का विचार रखती है ?

(स्थगित किया गया)

पंचायत समिति दूदू के गामों का विद्युतिकरण

27. श्री **घुवालाल चौधरी** (दूदू) : क्या विद्युत मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) क्या यह सही है कि जिला उत्पादन समिति, जयपुर ने पंचायत समिति दूदू के ग्राम गोपालपुरा, कापड़ियावास खुर्द आदि का विद्युतिकरण प्राथमिकता के आधार पर किये जाने का प्रस्ताव विद्युत बोर्ड को भेजा था ? अगर हां, तो क्या वह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया है ?

(2) क्या यह सही है कि पंचायत समिति दूदू के ग्राम गोपालपुरा कापड़ियावास खुर्द का विद्युतिकरण करने सम्बन्धी प्रस्ताव अध्यक्ष विद्युत बोर्ड के कार्यालय में विचाराधीन है ? अगर हां, तो क्या सर्वे व प्रोजेक्ट रिपोर्ट विभागीय इंजीनियर से प्राप्त हो चुकी है ? यदि नहीं, तो इस सम्बन्ध में रिपोर्ट प्राप्त करने के आदेश अध्यक्ष विद्युत बोर्ड के कार्यालय से कौन-कौन सी तारीख को दिये गये हैं ?

(3) क्या यह सही है कि जिला उत्पादन समिति, जयपुर के विद्युतिकरण के प्रस्ताव को मान्यता नहीं दी गई है ? अगर दी गई है तो पंचायत समिति दूदू के प्रस्ताव के आधार पर कौन-कौन से ग्राम का विद्युतिकरण सन् 1970–71 में किया गया है ? गांवों की सूची सदन की मेज पर रखने का कष्ट करें।

उत्तर

(1) जिला कृषि उत्पादन समिति जयपुर ने अपनी 5–8–70 को हुई बैठक में, जिसकी सिफारिशें सचिव, जिला कृषि उत्पादन समिति के पत्र दिनांक 2–11–70 के द्वारा मण्डल कार्यालय में प्राप्त हुई, कापडिया तथा कापड़ियावास खुर्द को वर्ष 1970–71 में विद्युतीकरण हेतु प्रस्तावित किया था। ग्राम गोपालपुरा को जिला कृषि उत्पादन समिति ने इस वर्ष अपनी 17–4–71 को हुई बैठक में विद्युतिकर हेतु प्रस्तावित किया है।

इन ग्रामों के सर्वेक्षण प्रतिवेदनव नाने के आदेश दिये जा चुके हैं।

जी नहीं।

(2) जी हां, सर्वेक्षण प्रतिवेद बनाया गया था परन्तु अलाभप्रद पाये जाने के कारण इन पर विचार नहीं किया जा सका। अब पुनः मण्डल के संशोधित आदेशों के अनुसार दूसरा सर्वेक्षण प्रतिवेदन बनाने के आदेश मण्डल सचिवालय से दिनांक 17–9–71 को दे दिये गये हैं। प्रश्न नहीं उठता।

(विद्युत मंत्री)

(3) जी नहीं।

मण्डल, पंचायत समितियों से प्राप्त प्रस्तावों पर ही निर्णय नहीं करता और न ही ग्रामों का विद्युतिकरण करते समय पंचायत समिति को ही इकाई माना जाता, अपितु यह जिला कृषि उत्पादन समिति की सिफारिशों को मुख्य आधार मानता है। वर्ष 1970–71 में पंचायत समिति दूदू के 2 ग्राम–दूरसोली तथा पडासोली को विद्युतिकरण हेतु स्वीकार किया था जिन्हें 29–3–71 को विद्युतिकरण किया जा चुका है।

मांगरोल खातोली सड़क

28. श्री देवीदत्त माडिया (बारां): क्या सार्वजनिक निर्माण मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) मांगरोल से वाया अयाना, इटावा से खातोली मार्ग पर डाम्बर सड़क बनाए जाने पर जो तकमीना बनाया गया है उस पर कुल कितना रुपया खर्च होगा?

(2) क्या यह सही है कि मांगरोल वाया अयाना खातोली सड़क की हालत खराब है? यदि हां, तो किस किस स्थान पर सड़क की हालत खराब है?

(3) उक्त सड़क पर डाम्बर व ग्रेवल सड़क बनाने का ठेका किस–किस स्थान का कितने–कितने रुपयों का किस–किस ठेकेदार को कब कब दिया और किस किस स्थान पर सड़क निर्माण का कार्य चल रहा है? सूची सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

4. क्या यह सही है कि उक्त सडक के बीच तालाब ग्राम के पास एक मील लम्बा मार्ग नीचा होने के कारण उस पर नहरी व बरसाती पानी फैला रहता है जिसके कारण यातायात में बाधाएं आती है? यदि हां, तो क्या डाम्बर सड़क बनने से पूर्व इस पर मिट्टी डलवाकर इस स्थान को ऊंचा किया जाना सरकार आवश्यक समझती है?

उत्तर

1. जी नहीं।

2. कार्य प्रगति पर हैं।

3. डाम्बर कार्य का ठेका नहीं दिया है। पक्की गिट्टी रोड का ठेका निम्न प्रकार दिया गया।

मील सं	ठेकों की धनराशि	ठेकों की तारीख	ठेकेदार का नाम
3 से 4	96075/-	10-12-68	श्री सुवालाल
5.	67727/-	16-11-70	श्री मदनमोहन गोयल
6.	68668/-	16-11-70	श्री मदनमोहन गोयल
7.	70842/-	12-3-70	श्री मदनमोहन गोयल
9 से 12	28543/-	29-3-71	श्री केवल प्रकाश

4. ऐसा कोई स्थान नहीं है जहां एक मील लम्बाई में पानी भरा रहता हो।

बैंक कर्मचारियों की पिटाई

श्री रामप्रसाद बोहरा (झालरापाटन): क्या गृह मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

1. क्या यह सही है कि ग्राम मूल्याखेड़ी, थाना भवानी मन्डी, जिला झालावाड में तारीख 14-6-71 को सहकारी भूमि विकास बैंक झालावाड़ के सदस्य श्री नारायण सुपुत्र देवा अहीर आदि ने भूमि विकास बैंक झालावाड़ के कर्मचारियों की जो कर्ज वसूल करने आये थे काफी मारपीट की ?

2. क्या यह भी सही है कि इस घटना की रिपोर्ट थाना भवानी मन्डी में समय पर कर दिये जाने पर भी मुलजिमान को गिरफ्तार कर चालान नहीं किया गया ? यदि हां, तो इसका क्या कारण है ?

3. क्या यह सही है कि इन 6 सदस्यों के जिम्मे 13000 रु. भूमि विकास बैंक झालावाड़ का एक अर्से से बकाया चला आ रहा है ?

उत्तर

1–2. दिनांक 14-6-71 को इस मामले की रिपोर्ट थाना भवानी मन्डी में होते ही मुकदमा नं. 41।धारा 332।147 ता. हिं. दर्ज किया जाकर तफतीश शुरू की गई थी। बाद तफतीश जुर्म साबित होने पर मुलजिम नारायण पुत्र देवा अहीर व उसके पांच साथियों को गिरफ्तार किया जाकर दिनांक 31-7-71 को मुलजिमानों के खिलाफ धारा 332। 353।148 ता. हि. के तहत अदालत में चालान पेश किया गया जो अभी तक जेर तजवीज अदालत है।

3. इसका सम्बन्ध भूमि विकास बैंक से है जो सरकारी संस्था नहीं है।

जाखम बांध पर पुलिस चौकी की स्थापना

30. श्री हरलाल मीणा (प्रतापगढ़): क्या गृह मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

1. क्या जिला चित्तौड़गढ, तहसील प्रतापगढ में जाखम बांध पर हजारों मजदूर व सिंचाई विभाग के लोग काम करते हैं।

2. क्या यह सही है कि जहां बांध बनाया जा रहा है वह स्थान बियाबान जंगल है ? यदि हां, तो क्या वहां की सुरक्षा के लिये कोई पुलिस चौकी नहीं है ? यदि हां, तो कब तक पुलिस चौकी कायम की जायगी ?

उत्तर :

1. इस समय इस बांध पर लगभग 1000 मजदूर कार्य कर रहे हैं।

2. जी हां। अभी वहां कोई पुलिस चौकी या थाना नहीं है। वहां पर पुलिस थाना या चौकी स्थापित करने का प्रस्ताव विचाराधीन है।

मंत्रियों के दौरे

श्री जुझारसिंह (रामगंजमंडी) : क्या मुख्य मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

दिनांक 26 दिसम्बर, 1970 से 9 जुलाई, 1971 तक कौन कौन से मन्त्री ने किन किन क्षेत्रों का कितने कितने दिन

(श्री जुझारसिंह) का दौरा किया व कितना कितना टी.ए. व डी. ए. उठाया ?

उत्तर

वांछित सूची सदन की मेज पर रख दी है।

सूची विस्तृत होने से विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई।

मंत्रियों के टेलिफोन खर्च

32. श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडल गढ़) : क्या मुख्य (मंत्रीमण्डल सचिवालय) मन्त्री यह बताने की कृपा करेंगे:—

(1) राज्य के हर मन्त्री, राज्यमन्त्री तथा उपमन्त्री के टेलीफोन पर 1 अप्रेल 1970 से आखीर जनवरी सन् 1971 तक कुल कितना खर्च हुआ ? हर मंत्री का खर्च अलग अलग बताने की कृपा करें तथा पूरी फहरिस्त सदन की मेज पर रखने का कष्ट करें ।

(2) हर मन्त्री ने 1 अप्रेल 1970 से आखीर जनवरी सन् 1971 तक दस महिनों में कितना कितना यात्रा भत्ता उठाया ?

उत्तर

(1) वांछित सूचना सदन की मेज पर रख दी है।

(2) वांछित सूचना सदन की मेज पर रख दी है।

(कृपया परिशिष्ट 5 देखिये)

स्थगन प्रस्तावों पर व्यवस्था

श्री अध्यक्ष : मैं माननीय सदस्यों को सूचित करना चाहता हूं कि निम्नांकित पेंडिंग स्थगन प्रस्तावों के सम्बन्ध में मैं सम्बन्धित मन्त्री महोदय से निवेदन करना चाहूंगा कि वे स्थिति को स्पष्ट करते हुए, वक्तव्य देने की कृपा करें ।

1. जिला कोटा की तहसील मांगरोल, शाहबाद, किशनगंज, बारां, अटरू, दिगोद व पीपल्दा आदि में इस वर्ष अतिवृष्टि से क्षति पहुंचने तथा बाढ़ पीड़ितों में भुखमरी, बीमारी आदि के सम्बन्ध में श्री देवीदत्त गाड़िया तथा श्री बालसिंह सोढ़ा द्वारा स्थगन प्रस्ताव।

2. ब्यावर में एडवर्ड मिल को मुख्य मंत्रीजी की घोषणा के बावजूद अब तक चालू नहीं किये जाने के सम्बन्ध में श्री रामानन्द अग्रवाल, सदस्य विधान सभा द्वारा स्थगन प्रस्ताव ।

मैं उपरोक्त दोनों स्थगन प्रस्तावों को सदन में प्रस्तुत किये जाने की अनुमति देने में असमर्थ हूं ।

इनके अतिरिक्त निम्नांकित स्थगन प्रस्तावों की भी सूचनाएं प्राप्त हुई हैं ।

श्री शंकरलाल जैतारण, श्री जसराज, श्री दौलतराम देसूरी, श्री पृथ्वीसिंह चौहान व श्री विट्ठलभाई, सदस्य विधान सभा ने एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है जिसमें कहा गया है कि एक अध्यापक श्री मेघाराम, जो कि वेतन केन्द्र विशनपुरा पंचायत समिति रानी के केन्द्र

Page No 43

(श्री अध्यक्ष)

प्रभारी थे, वेतन वितरण हेतु जा रहे थे कि उन्हें रास्ते में किन्हीं हत्यारों द्वारा दिनांक 6-9-71 को मार डाला गया।

2. श्री वृद्धिचन्द जैन, श्री भीमसेन, श्री हुकमसिंह, श्रीमती मदनकोर व श्री रघुनाथ विश्नोई ने बाड़मेर, जैसलमेर, बीकानेर, जालौर एवं जोधपुर सीमावर्ती जिलों के अधिकांश गांवों एवं राजस्थान के अन्य जिलों में अकाल की स्थिति होने पर भी अकाल राहत कार्य नहीं खोले जाने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

3. श्री बालसिंह सोढ़ा, श्री पृथ्वीसिंह चौहान व श्री आईदानसिंह, सदस्य विधान सभा ने पश्चिमी पाकिस्तान से आने वाले शरणार्थियों को शिव व चौहटन में भूमि आवंटन नहीं किये जाने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

4. एक अन्य स्थगन प्रस्ताव की सूचना श्री श्रवण लाल व श्री गंगा सहाय, सदस्य विधान सभा से प्राप्त हुई है जिसमें राजस्थान लोक सेवा आयोग द्वारा चयन नहीं किये गये कृषि स्नातक पुराने कर्मचारियों को सेवा से विमुक्त कर नई नियुक्तियां किये जाने का उल्लेख किया गया है।

5. श्री दौलतराम सारण, श्री हरजी राम बुरड़क व श्री चुन्नीलाल, सदस्य विधान सभा ने बीकानेर जिले के लूणकरणसर तहसील और कोलायत तहसील के जिन गांवों को उपनिवेशन कानून के अन्तर्गत उपनिवेशन क्षेत्र में घोषित किया गया था उन ग्रामों के हजारों किसानों को भूमि पर उनके वाजिब अधिकारों से वंचित किये जाने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

उपरोक्त सभी स्थगन प्रस्तावों के सम्बन्ध में राज्य सरकार से जानकारी प्राप्त की जा रही है। जानकारी मिलने पर उन पर निर्णय लेकर मैं माननीय सदस्यों को सूचित कर दूंगा।

इनके अतिरिक्त और भी स्थगन प्रस्तावों की सूचनायें मिली है जो इस प्रकार हैं:

1. श्री मोहन लाल मोदी, श्री सुरेन्द्र प्रसाद व्यास व श्री सांवरमल बासोतिया ने सार्वजनिक निर्माण विभाग के एक वरिष्ठ अभियन्ता पर लगाये गये आरोपों की राज्य सरकार द्वारा जांच न कराने के कारण एक भूतपूर्व विधान सभा सदस्य द्वारा भूख हड़ताल पर बैठने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

2. श्री रामचन्द्र आर्य, सदस्य विधान सभा ने तहसील नौहर भादरा क्षेत्र में नई नहरें निकालने की योजना कई वर्षों से पेंडिंग पड़ी है किन्तु उन नहरों का निर्माण कार्य चालू न करने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

3. श्री रामचन्द्र आर्य व केदार नाथ, सदस्य विधान सभा ने जिला गंगानगर में स्थित सिंचाई विभाग के अधिकारियों में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अनियमितताओं के कारण काश्तकारों को समय पर पानी नहीं मिलने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

(श्री अध्यक्ष)

4. श्री पृथ्वी सिंह चौहान व श्री आइदान सिंह, सदस्य विधान सभा ने पाली जिले में निर्माणाधीन से ही फीडर योजना के अन्तर्गत फीडर केनाल के सर्वे स्टाफ ने जान-बूझ कर 200 कुओं की सिंचित भूमि के अन्दर फीडर कैनाल निकालने हेतु सर्वे किये जाने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

5. श्री विजय सिंह मकराना, सदस्य विधान सभा ने राजस्थान में नशा बन्दी हलकों में सरकारी तौर पर पुलिस व आबकारी अधिकारियों की मदद से शराब बिकने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

6. श्री मोहनलाल मोदी, सदस्य विधान सभा ने राजस्थान में हजारों बी. एस. टी. सी. प्रशिक्षण प्राप्त छात्र अभी तक बेरोजगार रहने तथा लगभग 10 हजार प्रशिक्षण अध्यापक बेरोजगार बैठे रहने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

7. श्री मदन सिंह दांता, सदस्य विधान सभा ने ग्राम बाय एवं जीवपाम बाजी में भूतपूर्व उप शिक्षा मन्त्री द्वारा दिये गये आश्वासन के उपरान्त भी स्कूल न खोले जाने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

8. इन ही माननीय सदस्य ने एक और स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है जिसमें ग्राम दांता उच्च राजकीय विद्यालय में दो अध्यापकों द्वारा संस्था विरोधी कार्यवाही करने एवं परीक्षाओं में अनियमिततायें करने पर भी कोई कार्यवाही न करने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

9. श्री मदन सिंह दांता, सदस्य विधान सभा ने ग्राम लोसल में बाढ़ पीड़ित हरिजनों के लिए 80 हजार रुपये की राशि मुख्य मन्त्री महोदय द्वारा घोषित किये जाने के उपरान्त भी राहत न पहुंचाये जाने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

10. श्री देवीदत्त गाड़िया, सदस्य विधान सभा ने जिला कोटा की शाहबाद पंचायत समिति क्षेत्र में आदिवासी (सहरियां) एवं अनुसूचित जाति के निर्धन व अशिक्षित व्यक्तियों के नाम पर कुछ पूंजीपतियों एवं बड़े व्यक्तियों द्वारा सहकारी फार्मिग व कलवाड़ा गुड़ खण्डसारी सोसाइटी का निर्माण करके नाजायज तौर पर लाभ कमाने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

11. बारां नगरपालिका क्षेत्र में नगरपालिका के स्वास्थ्य एवं खाद्य निरीक्षक को अधिकार न देने के कारण खाद्य में मिलावट के मामलों की जांच न होने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना श्री देवीदत्त गाड़िया, सदस्य विधान सभा से प्राप्त हुई है।

12. इन ही माननीय सदस्य ने झुंझुनू केन्द्रीय सहकारी बैंक लि. में गबन आदि फर्जी कार्यवाही करने के सम्बन्ध में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है····

श्री देवीदत्त गाड़िया : झुंझुनू!

श्री अध्यक्ष : (13) श्री देवीदत्त गाड़िया, सदस्य विधान सभा ने राजस्थान विद्युत् मण्डल द्वारा राजस्थान के विद्युत् से सम्बन्धित डिग्री होल्डर्स एवं डिप्लोमा होल्डर्स को न लिये जाकर राजस्थान के बाहर के व्यक्तियों की नियुक्तियां किये जाने की सम्भावना के बारे में एक स्थगन प्रस्ताव की सूचना दी है।

उपरोक्त स्थगन प्रस्ताव इतने अविलम्बनीय लोक महत्व के नहीं हैं कि सदन की पूर्व निश्चित कार्यवाही को स्थगित की जाकर इन पर आज विचार किया जावे। अतः मैं इनको सदन में प्रस्तुत किये जाने की अनुमति देने में असमर्थ हूं।

निम्नांकित पैंडिग स्थगन प्रस्तावों के सम्बन्ध में राज्य सरकार से जानकारी प्राप्त हो गई है :

1. बंगला देश को भारत सरकार द्वारा मान्यता प्रदान न करने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल, श्री सुरेन्द्र प्रसाद व्यास, श्री रामनारायण चौधरी व श्री भैरोंसिंह द्वारा स्थगन प्रस्ताव।

2. राजस्थान राज्य कर्मचारियों द्वारा चलाये जा रहे आन्दोलन से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में श्री रामानन्द अग्रवाल द्वारा स्थगन प्रस्ताव।

3. राजस्थान के सीमावर्ती प्रदेशों में पाक सैनिक गतिविधियों से उत्पन्न स्थिति के बारे में श्री दौलतराम सारण, सदस्य विधान सभा द्वारा स्थगन प्रस्ताव। इस विषय में आज ही माननीय मुख्य मंत्री जी द्वारा वक्तव्य दिया जावेगा।

4. राजस्थान में स्थित विश्वविद्यालयों में व्याप्त अव्यवस्था के सम्बन्ध में श्री सुरेन्द्र प्रसाद व्यास, श्री रामनारायण चौधरी, श्री भैरोंसिंह शेखावत, श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल व श्री रामानन्द अग्रवाल द्वारा स्थगन प्रस्ताव।

5. राजस्थान विश्वविद्यालय द्वारा शारदा सदन कालेज मुकुन्दगढ़ को विश्वविद्यालय परीक्षाओं का केन्द्र तोड़ने से उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में श्री रामनारायण चौधरी व श्री सांवर मल बासोतिया द्वारा स्थगन प्रस्ताव।

राजस्थान के विश्वविद्यालय से सम्बन्धित मामलों पर सदन में कल ही चर्चा की जावेगी और उस समय उपरोक्त माननीय सदस्यों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर उपलब्ध हो सकेगा।

राज्य सरकार से प्राप्त उत्तर तथा सदन में होने वाले वाद विवाद की दृष्टि में मैं इन सभी पैंडिग स्थगन प्रस्तावों को प्रस्तुत किये जाने की अनुमति देने में असमर्थ हूं।

अनुपस्थिति के लिए अनुमति

श्री अध्यक्ष : सभा की कार्यवाही प्रारम्भ होने से पूर्व मैं माननीय सदस्यों को सूचित करना चाहता हूं कि कुंवर श्री सुरेन्द्रसिंह ने दिनांक 10 नवम्बर, 1971 से सत्र के अंत तक अनुपस्थित रहने की अनुमति प्रदान

(श्री अध्यक्ष) करने के लिए प्रार्थना पत्र प्रस्तुत किया है

क्या सदन की अनुमति है कि आज्ञा प्रदान की जाय ?

(स्वीकृत)

(आज्ञा प्रदान की गई)

स्थगन प्रस्तावों पर अध्यक्षीय व्यवस्था

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, मैंने एक स्थगन प्रस्ताव दिया था, उसे आपने अस्वीकार कर दिया। यह तो मान लिया, पर उस पर एक स्टेटमेंट देने के लिए उद्योग मन्त्री जी तैयार हो गये थे, उसके लिए आप समय निश्चित करदें।

श्री अध्यक्ष : मैंने उसको एनलिस्ट करने को कह दिया है। एक दो दिन में हो जायेगा।

श्री रामानन्द अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय मेरा निवेदन है

श्री अध्यक्ष : अब दूसरा प्रश्न नहीं।

श्री विजयसिंह (मकराना) : अध्यक्ष महोदय, मैंने एक स्थगन प्रस्ताव दिया था कि राजस्थान में नशा बन्दी हलकों में सरकारी तौर पर पुलिस व आबकारी अधिकारियों की मदद से शराब की बिक्री सरे आम होती है। मुझे अफसोस के साथ कहना है कि जिन ऐरियाज में पूर्ण नशा बन्दी लागू है वहां आबकारी अधिकारियों के साथ मिल कर शराब बेची जाती है और उन लोगों के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं की जाती है। मैं आपको अध्यक्ष महोदय, बाड़मेर, जैसलमेर, जालोर और सिरोही के क्षेत्र के लोगों के नाम बता सकता हूं जो कि अवैध रूप से शराब की बिक्री करते हैं और उसका मुनाफा सरकार के आबकारी विभाग के भ्रष्ट अधिकारी और पुलिस को मिलता है। अध्यक्ष महोदय, जो शराब बिक रही है वह खुले बाजार में बिकती है। सरकार ने कहने को तो पूर्ण नशाबन्दी लागू कर रक्खी है पर वहां ऐसी कोई बात नही है। आप सिरोही में वाबूलाल से, सिरोही रोड में हीरालाल से, पिन्डवाड़ा में हीरा जेठा से, स्वरूप गंज में वस्तीराम, से शिवगन्ज से, मलचन्द महाजन से, जावल में भंवरलाल से और मोहब्बत नगर में मिश्रीलाल से, और रेवधर में मोहनलाल से खरीद सकते हैं। इसी प्रकार वहीं के भ्रष्टाचारी आवकारी विभाग के अधिकारियों की मिली भगत से अनादरा में भी शराब विकती है। अध्यक्ष महोदय, यह तो हाल सिरोही डिस्ट्रिक्ट का है और अब आगे सुनिये। बाड़मेर में एक सिन्धी है और बालोतरा में भी जहां पूर्ण नशाबन्दी है वहां नशाबन्दी फोर्स व पुलिस की मदद से यह कार्य आज चल रहा है फिर शराब बेचने वाले लोगों के खिलाफ कोई कार्यवाही नहीं हो रही है। इसी प्रकार दूसरा डिस्ट्रिक्ट में आपको निवेदन करता हूं वह जालोर है जहां भी राज्य सरकार ने पूर्ण नशाबन्दी चालू की थी वहां आज भी हरजी, आहोर, भीनमाल, सांचोर, सायंल, बागरा, बाकरा, रामसीण, रानीवाड़ा और सान्चोर में, जो जालोर डिस्ट्रिक्ट के बड़े-बड़े गांव हैं वहां भी आबकारी विभाग के नशाबन्दी फोर्स की मदद से सरे आम शराब की बिक्री होती है। अध्यक्ष महोदय, यही हाल है जैसलमेर का जहां पर कि पूर्ण नशाबन्दी

Page No 47

(श्री विजयसिंह)

लागू है वहां एक मारियरीदार्स सुनीर है वह शराब का नाजायज व्यापार करता है। इसी प्रकार, अध्यक्ष महोदय, पोकरण में एक खटीक है जो इस प्रकार शराब बेचने का व्यापार करता है। तो अध्यक्ष महोदय, जब सरकार की यह नीति है कि वह पूर्णतया इन क्षेत्रों में शराबबन्दी करें, तो फिर इन लोगों के खिलाफ आज तक कार्यवाही क्यों नहीं की गयी। मैंने आपसे निवेदन किया था स्थगन प्रस्ताव देकर और आपने इसे अविलम्बनीय लोक महत्व का नहीं माना है। अध्यक्ष महोदय, यह तो अविलम्बनीय लोक महत्व का है और उसको राज्य सरकार द्वारा तुरन्त रोका जाना चाहिये। मैं आपसे निवेदन करूंगा अध्यक्ष महोदय····

श्री रामचन्द्र आर्य : अध्यक्ष महोदय, मैंने एक स्थगन प्रस्ताव दिया था कि जिला गंगानगर की तहसील नोहर भादरा क्षेत्र में नयी नहरें निकालने की योजना कई वर्षों से पेन्डिंग है किन्तु उन नहरों का निर्माण कार्य अभी तक शुरू नहीं किया है। अध्यक्ष महोदय, ये कई वर्षों से पेन्डिंग है। 3-4 योजनायें विचाराधीन हैं, जिसकी सूची बनी हुई है, राजस्थान कैनाल से नहर निकालने तथा उनको ब्रान्चेज इन ऐरियाज में लाने के लिये अभी तक कोई कार्यवाही नहीं की गयी है। अध्यक्ष महोदय, इस जिले के सिंचाई विभाग के अधिकारी एवं मंत्री इतने भ्रष्ट हैं कि आज तेरह साल पहले जो योजना बनी थी, उसे भी पूरी नहीं किया है। आज उस कैनाल का पानी, अध्यक्ष महोदय, हरियाणा और पन्जाब के लोग इस्तेमाल कर रहे हैं पर गंगानगर जिले के काश्तकार उस पानी से महरूम हैं। लोगों को पीने को पानी नहीं मिलता है, आज तहसील नोहर भादरा में अकाल की स्थिति है, लोग पीने के पानी के लिये प्यास से मर रहे हैं पर, अध्यक्ष महोदय आज तक कोई कार्यवाही नहीं की जा रही है। राजस्थान की जनता को पीने को पानी नहीं मिल रहा है। और दूसरी तरफ राजस्थान सरकार की नीति की निकम्मापन है कि लोग भूख प्यास से तड़फ रहे हैं। इसलिए अध्यक्ष महोदय, आप सिचाई मन्त्री से एक स्टेटमेन्ट दिलवायें इसके बारे में।

(समय समाप्ति सूचक घन्टी)

अध्यक्ष महोदय, लोगों में बहुत ही असंतोष है। लोगों का विश्वास उठा जा रहा है। सरकार की योजना बनी हुई है लेकिन पानी पास से दूसरे प्रान्तों में जा रहा है और राजस्थान की जनता पानी को रो रही है। अध्यक्ष महोदय, इस भ्रष्टाचारी सरकार के अधिकारियों का यही रवैया है। जब नये मुख्य मंत्री बने थे तो उन्होंने बड़ी लम्बी लम्बी घोषणायें राजस्थान में भ्रष्टाचार को समाप्त करने की की थी। लोगों को कुछ उम्मीद हुई थी पर आज तीन चार महीने हो गये हैं कुछ भी नहीं हुआ। भ्रष्टाचार आज उसी तरह पनप रहा है। रिश्वत देओ तो काम हो सकता है। गरीब काश्तकारों के पास पैसे देने को नहीं है इसलिए काम नहीं हो रहा है। इसलिये मेरा निवेदन है, अध्यक्ष महोदय, जनता परेशान है उसके लिये जो योजनायें सरकार ने बना रखी हैं उन्हें तुरन्त पूरी करवा कर लोगों को वहां जमीन वहां के लोगों को अलोट की

(श्री रामचन्द्र आर्य)
जावे नहीं तो वह लोग आन्दोलन करेंगे और राजस्थान से अलग होने के लिये बाध्य होंगे।

श्री अध्यक्ष : अब माननीय सदस्य, पर्याप्त हो गया है, समाप्त करें।

श्री रामचन्द्र आर्य : अध्यक्ष महोदय, मैं यह आश्वासन चाहूँगा कि जो योजनायें बनी हुई हैं गंगानगर जिले की उन्हें पूरा किया जाय।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य समाप्त करें। स्थान ग्रहण करें।

श्री रामचन्द्र आर्य : अध्यक्ष महोदय, मेरा इसके बारे में निवेदन है कि इसके लिये जो दोषी अधिकारी है उनके विरुद्ध जांच की जानी चाहिये और इसकी जांच हेतु एक कमेटी बनानी चाहिये जिसमें विधान सभा के सदस्य सम्मिलित हों....

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण करें माननीय श्री आर्य। स्थान ग्रहण करें।

श्री रामचन्द्र आर्य : अध्यक्ष महोदय, दोषी अधिकारियों के खिलाफ जांच हो और उन्हें दण्ड दिया जाय।

श्री अध्यक्ष : स्थान ग्रहण करें, अंकित न हो।

श्री रामचन्द्र आर्य : XXXX

श्री अध्यक्ष : कुछ भी अंकित नहीं हो।

श्री मदनसिंह दांता: ये नये मुजीबुर्रहमान कहां से पैदा हो गये ?

श्री लाभ चन्द जैन (सुजानगढ़): अध्यक्ष महोदय, मैं अगर आपका हुक्म हो तो निवेदन करूं।

श्री अध्यक्ष : करिये।

श्री प्रेमसिंह : अध्यक्ष महोदय, मेरा एक निवेदन है कि जब हम वक्त मांगते हैं तो आप हमें वक्त नहीं देते हैं और दूसरे लोग यों ही बोल रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : आपने मांगा ही कब है ?

श्री लाभचन्द वैद्य : अध्यक्ष महोदय, मैंने एक स्थगन प्रस्ताव रखा है कि सरदार शहर में....

श्री मोहनलाल मोदी (नीमकाथाना) : अध्यक्ष महोदय, मैंने एक स्थगन प्रस्ताव दिया था, कि आज राजस्थान में 10 हजार बी. एस. टी. सी. ट्रेन्ड शिक्षक बेकार घूम रहे हैं कि उन्हें कोई नौकरी की व्यवस्था नहीं है। आज स्थिति यह है, अध्यक्ष महोदय, कि जिन लोगों ने 65–66 में बी. एस. टी. सी. की ट्रेनिंग पास की थी उनका तो एपोइन्टमेंट नहीं हुआ पर जिन लोगों ने 69–70 में ट्रेनिंग की थी उनका एपोइन्टमेन्ट हो गया। अध्यक्ष महोदय, यह तो हालत है आज पढ़े लिखे ट्रेन्ड लोगों की। दूसरी तरफ जो बिना पढ़े लिखे लोग हैं वह भी इसी तरह से और इससे ज्यादा खराब हालत में हैं। लोग

XXX माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार भाषण अंकित नहीं किया गया।

Page No 49

(श्री मोहनलाल मोदी)

की नौकरियों का प्रावधान" नहीं है जिन लोगों ने रिश्वत दी उन्हें नौकरियां मिल गयी हैं। आज इन्सपेक्टर आफ स्कूल्स, सीकर हैं उसने 500—500 रुपये लेकर लोगों को टीचर्स का एपोइन्टमेन्ट दे दिया है। अध्यक्ष महोदय, लोग 65—66 के ट्रेन्ड बैठे हैं लेकिन 69—70 में जिन्होंने पास किया वह आज सरविस में हैं, उन्हें अध्यापक पद पर एपोइन्टमेन्ट मिल गया है। ये खुले आम भ्रष्टाचार आज सीकर के इन्सपेक्टर ऑफ स्कूल्स ने कर रखा है···

श्री अध्यक्ष : आर्डर, आर्डर। आपने तो पूरा भाषण ही देना शुरू कर दिया।

श्री मोहनलाल मोदी : अध्यक्ष महोदय, यह सही है कि 65—66 के ट्रेन्ड टीचर्स बैठे हुए हैं और 69—70 के बी. एस. टी. सी. ट्रेन्ड जो थे उन्हें लिया गया है। उसके लिये जांच की जाय और उसे दण्ड दिया जाय·····

श्री अध्यक्ष : वह तो ठीक है पर बगैर किसी को डिफेन्स का मौका दिये आप आरोप लगा रहे हैं। स्थान ग्रहण करें।

श्री मोहनलाल मोदी : सरकार जांच कराये। शिक्षा मन्त्रीजी को आश्वासन तो देना चाहिये कि 65-66 के ट्रेन्ड लड़के हैं उनको पहले लेंगे।

श्री पूनमचन्द विश्नोई : अध्यक्ष महोदय, आपकी आज्ञा हो तो मैं निवेदन कर दूं।

श्री अध्यक्ष : मैंने उनको काग्नीजेन्स नहीं दिया है।

श्री देवीदत्त गाडिया : डूबत और गबन के कारण सहकारी विभाग ने जिन संस्थाओं को डिफाल्ट करार घोषित कर दिया, ऋण देने की व्यवस्था समाप्त कर दी उसके नियंत्रक मेमोरिया है। झुंझुनूं जिले की 301 सहकारी संस्थाओं में 25-30 हजार काश्तकार सदस्य हैं। उनको ऋण न मिलने के कारण काश्तकार ऋण लेने से वंचित हो रहे हैं। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि इस प्रश्न पर पुनर्विचार करके सम्बन्धित मन्त्री जी से वक्तव्य दिलाया जाय।

दूसरा यह है।·····

श्री अध्यक्ष : दूसरा नहीं। एक स्थगन प्रस्ताव एक माननीय सदस्य का लिया जावेगा।

श्री मदनसिंह (दांता रामगढ़) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैंने एक स्थगन प्रस्ताव रखा था लोसलपुरा हरिजन मोहल्ला दो-तीन वर्ष से पानी में डूबता है। पुरानी सरकार ने कई आश्वासन दिये थे कि व्यवस्था करेंगे। मुख्यमन्त्री जी बरकतुल्ला खां जी ने आश्वासन दिया था कि व्यवस्था करेंगे, मैं स्वयं मौजूद था। मुख्यमन्त्री जी ने 80 हजार रुपये का आश्वासन दिया। अब तक लोसल के हरिजनों को कोई जवाब नहीं दिया है। 80 हजार का अनाउन्समेन्ट क्या पोलिटिकल अनाउन्समेन्ट था या वाकई हरिजनों को राहत देने के लिये था? इसलिये मुख्यमन्त्री जी ने लोसल में जाकर आश्वासन दिया था वह पोलिटिकल आश्वासन था या सही? कलेक्टर कहता है कि पांच दस बार लिख दिया लेकिन जवाब नहीं आया है। फिर बारिश होगी। लोसल के नागरिक यदि 80 हजार आप आश्वासन

(श्री मदनसिंह)
के अनुसार दे देंगे तो एक लाख रुपया वे इकट्ठा कर लेंगे।

श्री मोहनलाल मोदी: खौसल के हरिजनों को बड़ी कठिनाई है।

श्री अध्यक्ष : एक माननीय सदस्य एक स्थगन प्रस्ताव पर बोलें। तीन चार रख दिये तो एक पर इजाजत होगी।

श्री मोहनलाल मोदी : मुख्यमंत्री जी पधारे थे और आश्वासन दिया था।

श्री मदनसिंह **:** मुख्यमन्त्री जी जबाब दे रहे हैं।

माननीय मुख्यमन्त्री जी।

श्री अध्यक्ष : मुख्यमन्त्री जी, नहीं अभी नहीं।

श्री मदन सिंह : अध्यक्ष महोदय, वे कह रहे हैं। यह हरिजनों का प्रश्न है।

श्री अध्यक्ष : मैं निवेदन करना चाहता हूं कि आप उनसे मिलकर इजाजत ले लीजिए। जिसको मैंने स्वीकार नहीं किया है उसका यहां उत्तर नहीं होगा।

श्री **मदनसिंह** : यह हरिजनों का भला होने का है। शायद मुख्य मन्त्रीजो आज अनाउन्स करें। मैं चाहूंगा मुख्य मन्त्रीजी आप निवेदन कर दें कि वे अनाउन्स कर दें। वे निवेदन कर रहे थे···

श्री **अध्यक्ष :** आप स्थान ग्रहण करें, कृपया।

श्री **वृद्धिचन्द्र जैन (बाड़मेर) :** अध्यक्ष महोदय, जैसलमेर बाड़मेर, ये सीमावर्ती इलाके हैं। बाड़मेर जिले में भी अधिकांश गावों में अकाल है। हिन्दुस्तान पाकिस्तान के रिलेशन्स की दृष्टि से भी स्थिति टैन्स है। यहां के लोगों का मनोबल बनाना आवश्यक है। भयंकर अकाल छाया हुआ है। इसके लिये उनकी रोजी मिलना बहुत आवश्यक है। कोई अकाल का अभी तक डिक्लेरेशन नहीं किया है। पीने के पानी का भी बड़ा संकट है। ट्यूब वेल्स शुरू नहीं कराये। इसलिये यह एडजोनेमेन्ट मोशन बहुत ही आवश्यक है। आदेश हुआ है कि जानकारी प्राप्त की जाय।

जानकारी हुई होगी, स्टेटमेन्ट दिलाया जाय।

श्री **अध्यक्ष :** जानकारी के लिए भेजा है। कृपया स्थान ग्रहण करें।

श्री लाभचन्द वैद : मैंने दो स्थगन प्रस्ताव रखे हैं।

श्री **अध्यक्ष** : जानकारी के लिए रखे हुये हैं ?

श्री लाभचन्द वैद : आपने अनाउन्स नही किया है।

श्री **अध्यक्ष :** राजस्थान सतर्कता आयोग का पंचम प्रतिवेदन।

भूतपूर्व सहकारी मंत्री द्वारा भूखंड संबंधी फाइल को नष्ट करने सम्बन्धी प्रश्न

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : यह प्रतिवेदन प्रस्तुत हो उससे पूर्व मैं एक निवेदन करना चाहूंगा कि मैंने एक प्रश्न उठाया था भूतपूर्व सहकारी मंत्री श्री अमृतलाल जी।

Page No 51

(श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल)

के विरुद्ध। उनके दामाद के नाम पर भूखण्ड का आवंटन इस दृष्टि से किया कि उन्होंने शिड्यूल्ड कास्ट की लड़की से शादी की। उस सम्बन्ध में जो फाइल थी उस पर चीफ मिनिस्टर ने दस्तखत किये उस फाइल को श्री अमृतलालजी यादव ने अपने मंत्रित्व काल में मंगवाकर उसके सारे पेपर्स को डेस्ट्रॉय कर दिया। यह फाइल उनके नाम से इश्यूड है मुख्य मंत्रीजी ने आर्डर्स किये हैं कि पुट अपटू माई सक्सेसर। यह बहुत ही सीरियस मामला है। मंत्री महोदय ने मंत्री पद छोड़ते 2 वह फाइल मंगवाकर डेस्ट्रॉय कर दी और फाइल का कोई ट्रेस नहीं हैं जो कि उनके नाम से इश्यूड है। सुखाड़ियाजी के आर्डर्स मौजूद हैं। नोटिस मौजूद है। एक्चुअली फाइल अमृतलालजी यादव ने मंगायी, उनके नाम से इश्यूड है। उसको मंगाया और डेस्ट्रोय कर दिया इसकी जानकारी की और यह पता चला है। मैं बार बार खड़ा होकर पूछता नहीं हूं।

श्री अध्यक्ष : सतर्कता आयोग का प्रतिवेदन।

सदन की मेज पर रखा जाने वाला पत्र

राजस्थान सतर्कता आयोग का पंचम प्रतिवेदन

श्री बरकतुल्ला खां (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं राजस्थान सतर्कता आयोग के पंचम प्रतिवेदन (अप्रेल 1969 से मार्च 1970) को सदन की मेज पर रखता हूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : यह प्रतिवेदन राज्य सरकार को कब प्राप्त हुआ।

श्री बरकतुल्ला खां : काफी समय हो गया। जैसे ही मुझे पहला मौका मिला मैने इसको पेश कर दिया है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : 24 मई को बजट अधिवेशन समाप्त हुआ। पूर्व राज्य सरकार को प्राप्त हो गया था तो बजट अधिवेशन में इसको क्यों नहीं रखा जब कि इसकी मांग की गई थी।

श्री बरकतुल्ला खां : मुझे जानकारी नहीं है। मुझे ज्योंहीं पहला मौका मिला मैंने इसको रख दिया।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : क्या प्रिडिसेसर सरकार के आप जिम्मेदार नहीं हैं ?

श्री बरकतुल्ला खां : मैं बिलकुल जिम्मेदार हूं।

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय, कल विधान सभा के सामने लाठी चार्ज हुआ उसके सम्बन्ध में आप मुख्य मंत्रीजी को वक्तव्य देने के लिये कहें।

श्री अध्यक्ष : आज स्टेटमेन्ट दे रहे हैं उसके साथ प्रकाश डाल देंगे।

श्री भैरोंसिंह : उससे इसका क्या सम्बन्ध है दो मिनिट का काम है।

श्री अध्यक्ष : ध्यान आकर्षण प्रस्ताव

श्री हरजीराम बुरडक :

सरकारी अस्पताल, लाडनूं में अव्यवस्था सम्बन्धी

श्री हरजीराम बुरडक (लाडनू) : अध्यक्ष महोदय, मै प्रक्रिया तथा कार्य संचालन

Page No 52

(श्री हरजीराम बुरड़क)
सम्बन्धी नियमों के नियम 131 के अन्तर्गत सरकारी अस्पताल लाडनूं में अव्यवस्था सम्बन्धी मामले की ओर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री का ध्यान आकर्षित करता हूं।

अध्यक्ष महोदय, लाडनूं अस्पताल में जो अव्यवस्था हो रही है उसके सम्बन्ध में निवेदन करना चाहूंगा कि मरीजों को भरती कर लिया जाता है लेकिन उनको खाना नहीं दिया जाता है। मैंने सरकारी अधिकारियों से बात की तो उत्तर मिला कि इस साल का बजट खतम हो गया इसलिये आगे मरीज भी नहीं लिये जावेंगे। जब नया बजट आगया तो आज भी मरीजों को खाना नहीं दिया जाता है लाडनूं का काफी बड़ा अस्पताल है और मरीज भी काफी आते हैं। खाने की बड़ी परेशानी उठानी पड़ती है। सरकार को बार बार निवेदन किया तो खाने के टेन्डर भी निकाल दिये थे। टेन्डर मंजूर होने के बाद सप्लायर को आर्डर नहीं दिया डाक्टर ने। मेरी जानकारी के अनुसार जिला अधिकारी ने मंजूर कर लिया। डाक्टरों के बीच में वह रखा है। वे कहते हैं कि मेरा कमीशन तय नहीं हुआ है इसलिये मैं आर्डर नहीं देता हूं। राज्य सरकार को बार बार कहा गया और अधिकारियों ने मिल कर विचार विनिमय किया लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला। इसके अलावा इस अस्पताल में दवाइयां नाम मात्र की नहीं हैं। पट्टियां तक नहीं दी जाती, घर से लेकर आना पड़ता है।

एक एक्सरे मशीन है। जब से वह लगी है उनको आपरेट करने के लिये टैकनिशियन नहीं है। थोड़े दिन शुरू में रखा, फिर वह भी गायब। इस कारण इसका लाभ लोगों को नहीं मिल रहा है।

गैस सिलण्डर का भी यही हाल है। खाली पड़े रहते हैं। इससे कोई लाभ नहीं मिलता।

इतनी गम्भीर शिकायतें होने के बावजूद अभी तक निदेशालय ध्यान नहीं दे रहा है, न सचिवालय दे रहा है ध्यान। एक अयोग्य व्यक्ति को इन्चार्ज बनाकर बिठा रखा है।

जिले का यह एक महत्वपूर्ण अस्पताल है। पर आज किसी काम का नहीं रह गया है। हाल ही में अनिल बोर्दियाजी ने भी डी. एम. एच. ओ. को इसके बाद में चिट्ठियां लिखीं। पर अभी तक कुछ नहीं हुआ। संचालक ने सचिव महोदय का आज तक कोई जानकारी नहीं दी, न जांच करने के लिये किसी अधिकारी को अस्पताल में भेजा। इसलिये मैं चाहूंगा कि राज्य सरकार इस सम्बन्ध में तत्काल कुछ करे और इस प्रकार की धांधली और अव्यवस्था और ढिलाई जिन जिन अधिकारियों ने भी बरती हो, उनके खिलाफ सख्त से सख्त कार्यवाही करने का आश्वासन दिया जाना चाहिये, तभी कुछ आशा इसके सुधार की हो सकती है।

श्री रामकिशोर व्यास (चिकित्सा मंत्री): अध्यक्ष महोदय, लाडनूं जिला नागौर की जनसंख्या जनगणना सन् 1971 के अनुसार 28,200 है। यहां पर राजस्थान सरकार की ओर से सेठ गणपतराय सरावगी व श्रीमती केशर देवी अस्पताल है। जिनमें

(श्री रामकिशोर व्यास)

क्रमश: 30 और 20 रोगी । शैयाओं की व्यवस्था है । इन अस्पतालों की अव्यवस्था के बारे में जनता द्वारा इस निदेशालय को कोई सूचना प्राप्त नहीं हुई है ।

"उक्त अस्पताल के सम्बन्ध में श्री हरजीराम बुरडक, सदस्य, राजस्थान विधान सभा द्वारा उठाये गये मुद्दों की सूचना निम्न प्रकार हैं :

(1) सरकारी अस्पताल लाडनूं में सन् 1971–72 के लिए टेण्डर आमन्त्रित किये गये जिसकी स्वीकृति निदेशालय के पत्र क्रमांक 601 लेखा 46 (361) 71/72 दिनांक 1–7–71 द्वारा दिनांक 30–6–72 तक के लिए दी गई । स्वीकृत किये गये ठेकेदारों से ही खाद्य सामग्री ली जा रही है। वर्तमान समय में लाडनूं अस्पताल के जरूरतमन्द रोगियों को सरकार की ओर से खाना दिया जा रहा है ।

(2) उक्त अस्पताल के लिये वर्ष 1970-71 के दवाइयों के मद में 6800) रुपये स्वीकृत किए गए एवं 15913.95 की दवाइयां सप्लाई की गई । सन् 1971-72 में 16500) रुपये की धनराशि स्वीकृत की गई जिनमें से रुपये 5971.86 पैसे की सप्लाई दिनांक 6-11–71 तक की गई है । जहां तक पट्टियों का अभाव दर्शाया गया है उसके सम्बन्ध में निवेदन है कि उक्त अस्पताल में दिनांक 9–11–71 को स्टाक में 28 दर्जन पट्टियां एवं 74 पेकेट काटन के मौजूद हैं । अस्पताल की आवश्यकतानसार स्वीकृत वजट राशि के अलावा भी मांग आने पर दवाइयों का वजट और दिया जा सकता है ।

(3) उक्त अस्पताल में एक्स-रे तकनीशियन का एक पद स्वीकृत है। ट्रेण्ड एक्स-रे टेकनीशियन के अभाव में यह पद रिक्त है । फिर भी कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए श्री रामस्वरूप शर्मा कम्पाउण्डर श्रेणी 2 को नियुक्त कर रखा है । जो इस कार्य के लिए प्रशिक्षण प्राप्त है । वर्तमान समय में विभाग के अन्तर्गत आठ एक्स-रे टेकनीशियनों के पद क्रमशः खेतड़ी, डीडवाना, बांसवाड़ा, पोकरण, रायसिंहनगर, लाडनूं, जालौर एवं बारां में ट्रेन्ड व्यक्तियों के अभाव में रिक्त हैं। ट्रेन्ड एक्सरे टेकनीशियन उपलब्ध होने पर ही रिक्त स्थानों की पूर्ति करना सम्भव होगा । वर्तमान में 16 प्रशिक्षार्थी एक्स-रे की ट्रेनिंग प्राप्त कर रहे हैं । माह मई, 1972 तक ट्रेण्ड व्यक्ति उपलब्ध हो सकेंगे ।

(4) उक्त अस्पताल में चार ऑक्सीजन सिलेण्डर हैं उनमें से एक तो अभी भरा हुआ है तथा एक दिनांक 11-10-71 को भरने वास्ते भेजा गया है । कम से कम एक आक्सीजन सिलेण्डर भरा हुआ हर समय उपलब्ध रहा है ।

(5) वर्तमान समय में उस अस्पताल में डाक्टर बी. एस. चौहान एम. बी., बी. एस. योग्यता प्राप्त सीनियर सी. ए. एस. के पद पर कार्यरत हैं । उसके खिलाफ एक श्रीयुत् पूनमचन्द जैन ने अपने रिश्तेदार एक क्षय-रोगी की बीमारी के रोगी के इलाज के बारे में शिकायत की थी जिसके लिए श्री पूनमचन्द को जिला चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, नागौर ने सलाह

(श्री रामकिशोर व्यास)

दी है कि वे चिकित्सा अधिकारी क्षय निवारण केन्द्र से उनके लाडनूं दौरे के समय इलाज वास्ते सम्पर्क स्थापित करें। चिकित्सा अधिकारी, क्षय निवारण केन्द्र, नागौर को भी इसके लिए आवश्यक निर्देश दिये गये हैं।

श्री हरजीराम बुरड़क : मैं इतना कह दूं आप से कि जो उत्तर आपने दिया है वह सरासर गलत है।

श्री रामकिशोर व्यास : मैं समझ रहा हूं आपकी बात। आप सुन लें पहले मुझे। 1971–72 के टेण्डर आये हैं। उसके अनुसार खाना दिया जा रहा है। पर आप यह चाहते हैं कि पहले के पीरियड का क्या हुआ। ऐसी आपकी मन्शा है कि पहले के पीरियड में क्या था तो उसमें शायद कमी रही होगी। मेरा खुद का अनुमान है कि क्योंकि पहले के टेण्डर जो लिये थे उनमें किसी का मन्जूर हुआ नहीं था। उस पीरियड में कुछ खामी रही होगी। बाकी अब शिकायत नहीं है इसकी।

आगे के लिये मैं आपको इतमीनान दिला सकता हूं कि आइन्दा शिकायत का मौका नहीं दिया जावेगा चाहे खाने के सम्बन्ध में हो, चाहे दवाइयों के सम्बन्ध में हो। अगर दवाइयों के लिये और मदद मांगी जावेगी पैसे की तो इसके लिये पैसा और दिया जावेगा। जितनी दवाइयां चाहेंगे दी जावेंगी। सिलेण्डर के लिये एक सिलेण्डर हर समय तैयार रहेगा।

श्री हरजीराम बुरड़क : 7-1-71 को यह मन्जूर हुआ टेण्डर तो चालू साल में कितने रुपये की सामग्री खरीदी गई, यह और बता दें।

श्री रामकिशोर व्यास : यह सूचना नहीं है।

श्री हरजीराम बुरड़क : यही तो मामला है। इस साल एक पैसे की सामाग्री नहीं खरीदी गई। सैंकड़ों रोगी भोजन से वंचित रहते हैं। बाजार से जैसा तैसा लाकर खाना पड़ रहा है। मैं पिछले सन्डे को ही वहां जाकर आया हूं। आज तक भी एक पैसे की सामग्री नहीं खरीदी गई है और आप कह रहे हैं कि अब कोई दिक्कत नहीं है, अब खाना दिया जा रहा है, मैं कहता हूं अब भी नहीं दिया जा रहा है, साल भर से बिलकुल बन्द है। आपको आपके अधिकारी गलत जानकारी देकर आपको तो धोखा देते ही हैं, सदन को भी धोखा दे रहे हैं।

श्री रामकिशोर व्यास : मुझे जो जानकारी मिली है उसी के आधार पर कहता हूं। अब आपने जो फरमाया है उसे पूरा वजन देकर गलत सूचना देने वाले को सजा दी जावेगी। मैं इसकी जांच करवा लूंगा।

श्री हरजीराम बुरड़क : एक्शन आप क्या लेंगे? यह तो बिल्कुल स्पष्ट बात है। एक पैसे का सामान नहीं खरीदा गया है, एक पैसे का पेमेन्ट किसी को नहीं किया गया है आर्डर भी नहीं दिया गया है। साल भर से खाना बिल्कुल बन्द है। इतना स्पष्ट मैं कह रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : प्रश्न समाप्त हुए।

श्री हरजीराम बुरड़क : अध्यक्ष महोदय, इसका स्पष्टीकरण होना चाहिए। सरकार ने सरासर गलत जवाब दिया है।

भूतपूर्व सहकारी मंत्री द्वारा व्यक्तिगत स्पष्टीकरण

श्री अमृतलाल यादव (राजसमन्द) : परसनल एक्सप्लेनेशन पर कुछ कहना चाहता हूँ।

श्री अध्यक्ष : कह दीजिये।

श्री अमृतलाल यादव : अध्यक्ष महोदय, मैं सदन में नहीं था उस समय जनसंघ दल के माननीय सतीशचन्द्रजी ने मेरे बारे में यहां कुछ बताया कि भूतपूर्व मुख्यमन्त्री कोई प्लाट मेरे दामाद को दिया बताया और उस फाइल को मैंने अपने पास मंगवा ली और कहा कि वह प्लाट नहीं दिया जाना चाहिये और इस तरह से इस केस को दवा दिया। मैं इस पर अध्यक्ष महोदय, निवेदन करना चाहता हूं कि यह कहना सरासर गलत और झूठी बात है। इसमें कोई तथ्य नहीं है। ऐसा मैंने कभी नहीं किया और न मैं ऐसा किसी के लिए कर सकता हूं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : अध्यक्ष महोदय, मैं समझता हूं कि केवल किसी से सुनी सुनाई बात के आधार पर किसी माननीय सदस्य को स्पष्टीकरण देने की इजाजत सदन में देना और स्पष्टीकरण देना दोनों गलत हैं।

फिर भी मैं माननीय सदस्य से यह पूछना चाहूंगा कि क्या आपने अपनी लड़की के नाम से प्लाट देने के लिए नहीं कहा किसी को। कुसुमलता के नाम से प्लाट दिया जावे क्या आपने ऐसा नहीं किया? सुखाड़िया जी यहीं बैठे हैं। वे कह सकते हैं यह सारा क्या मामला है।

अजीत भारद्वाज को इसलिए प्लाट दिलाया गया था कि चूंकि इन्होंने शिड्यूल्ड कास्ट लड़की से शादी की है इसलिये इनको प्लाट दिया जावे और इस पर सुखाड़ियाजी ने मन्जूरी भी दे दी। पर बाद में जब पति पत्नी में मतभेद हुए तो उनको प्लाट देने से वंचित किया गया। आर्डर नहीं जाने दिया! कहां गई वह फाइल? यू. आई. टी. से आपने आर्डर करवाये।

श्री अमृतलाल यादव : नहीं करवाये।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : यह बात मैं सरकार से जानना चाहता हूँ। आपसे नहीं।

श्री अमृतलाल यादव : आप झूठ बात कहते हैं!

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : इसी पर एक एडजोर्नमेन्ट मोशन दिया है चार दिन पहले।

श्री अध्यक्ष : यह प्रश्न विचाराधीन पड़ा है।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : मैं निवेदन करना चाहता हूं कि मैं जिन अजीत भारद्वाज की बात कहता हूं, वे अमृतलालजी यादव के दामाद हैं। टाउन प्लानिंग बोर्ड से प्लाट कह सुनकर अलाट करवाया, सुखाड़ियाजी ने दिया। मैं पूछता हूं अब कहां है वह फाइल?

Page No 56

श्री अमृतलाल यादव : जहां तक मेरा सम्बन्ध है। न यह विवाद मेरे पास था और न वह फाइल मेरे पास थी। बिलकुल झूठ कह रहे हैं कि वह फाइल मेरे पास आई थी ये हमेशा से झूठी बातें मेरे बारे में कहते आये हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : यह तो कहने की जरूरत नहीं है। मैं पहले भी सही बात कहता आया हूं, कहता हूं, और कहता रहूंगा और इसी का फल है कि आज आप पीछे जाकर बैठा दिये गये हो। इस घमण्ड में मत रहना। अगर मेरा चेलेन्ज स्वीकार करते हैं तो देखें श्री अमृतलाल यादव, श्री मोहनलाल जी सुखाडिया, भूतपूर्व मुख्यमंत्री भी यहीं बैठे हैं, बरकतुल्ला साहब भी बैठे हैं. यह हाउस है, इस हाउस में अगर वे फेस करने की हिम्मत रखते हों तो मैं चेलेंज के साथ कहता हूं कि यह श्री अमृतलाल यादव, इनके ये ये कारनामे मैं बताऊंगा कि ये यहां नहीं बैठ सकेंगे, जेल के सीखचों के बीच बन्द होंगे।

श्री अमृतलाल यादव : ऐसी धमकियां बहुत देखी हैं।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : बुलाओ पुलिस के आफिसर्स को और मैं पकड़वाता हूं माल। करो चेलेन्ज स्वीकार। यहां हाउस में नहीं बैठोगे जेल के सीखचों में बैठोगे।

श्री अमृतलाल यादव : इस तरह से धमकाते हो।

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : घर की इज्जत तो बेच दी और लगे मंत्री बनने।

श्री बरकतुल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, जो अभी कहा गया कि पुराने साथियों को नहीं लिया तो उसका सबब यह था कि छोटी केबिनेट बनानी थी।

श्री अध्यक्ष : (कई माननीय सदस्यों के बोलने पर) आर्डर प्लीज ! माननीय मुख्य मंत्री जी।

(शोरगुल—व्यवधान)

माननीय सदस्य····

श्री सतीशचन्द्र अग्रवाल : आप को तो गर्व के साथ कहना चाहिये कि प्रधान मंत्री की नीति यह है कि भ्रष्टाचारी व्यक्तियों को मंत्रि-मण्डल में नहीं लिया जायेगा इसमें शर्म और संकोच की क्या बात है? आपने बहुत अच्छा काम किया है।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज, मुख्य मंत्री महोदय वक्तव्य देंगे।

श्री मदनसिंह : छोटी केबिनेट बनानी थी तो अमृतलाल जी को जगह श्री ओंकारलाल को क्यों बनाया ?

श्री रामकिशन : अध्यक्ष महोदय, इस प्रसंग पर मैं भी एक बात कह दूं। हम यह चाहते हैं कि मोहनलालजी सुखाडिया भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी को यह चाहिये था कि इस सदन में वे अपना स्पष्टीकरण पेश करते और वक्तव्य देते और वे इस सदन को अवगत कराते कि किन कारणों से उन्होंने मंत्रि-मण्डल बदला और किन कारणों से श्री बरकतुल्लाखां ऊपर से टपक पड़े ? यह स्थिति बतानी चाहिये थी इस के बजाय लम्बा चौड़ा भाषण आया····

Page No 57

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य देखिये महत्वपूर्ण प्रश्न आपके सामने आ रहा है मुख्य मंत्री महोदय...

राजस्थान पाक सीमा स्थिति पर मुख्य मंत्री द्वारा वक्तव्य

श्री बरकतुल्ला खां (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान ने हमारी सीमाओं के ऊपर अपनी फौजें भेजी। जब से पाकिस्तान बना है और हमारा देश आजाद हुआ है हमने ईमानदारी से यह कोशिश की कि हमारी पाकिस्तान से कोई दोस्ती हो जाये। हमने आफिशियली इस पालिसी को हमेशा माना था और आज भी इसके लिए कोशिश कर रहे हैं कि पाकिस्तान डेमोक्रेटिक हो, मजबूत रहे और एक रहे लेकिन इसके खिलाफ पाकिस्तान ने हर वक्त इस मौके को देखा कि कोई न कोई रास्ता निकाल कर हमारे देश के अन्दर कुछ गड़बड़ियां पैदा करे। उसने हमेशा इस बात की कोशिश की कि हमारे अन्दरूनी मामलों में यह दखल दे और मैं जब पार्लियामेन्ट का मेम्बर था तो मैंने कहा था कि अब पाकिस्तान और हमारा रिश्ता बड़े और छोटे भाई का नहीं रहा है और वह अलग मुल्क हो गया है। यह सिम्बोलिज्म है वह भूल जाना चाहिए क्योंकि जब पाकिस्तान को छोटा भाई समझते हैं तो अपने ऊपर यह अधिकार मानते हैं कि वह गलती करे तो उसको माफ कर दिया जाये। मैंने उस समय पार्लियामेन्ट में यह भी कहा था कि कश्मीर भारत का एक अंग है। मैंने उस समय भी कहा था कि कितनी मर्तबा कश्मीर के लोगों का इम्तिहान लेना चाहते हो। उन्होंने कान्स्टीट्यूट असेम्बली बना दी, इलेक्शन जितवा दिया और उसके बाद पाकिस्तान को यह मौका दिया है इसका मतलब यह है कि वहां पर अनडेमोक्रेटिक हालात पैदा हो गये हैं और आज भी मैं महसूस करता हूं कि हमारे सब्र का पैमाना लबरेज हो चुका है। पाकिस्तान में दिसम्बर में इलेक्शन हों, इलेक्शन होने के बाद अवामी पार्टी जीते और 99 फीसदी सीट्स लेकर आ जाये और उसके बाद पाकिस्तान नरसंहार करे। हमने इसको यह माना कि यह नहीं करना चाहिए लेकिन पाकिस्तान ने किया।

उसके बाद पाकिस्तान ने इस बात की कोशिश की कि हजारों आदमी शुरू में और लाखों आदमी बाद में और इस तरीके से 1 करोड़ आदमियों को हमारे देश में धकेल दिया और करीब करीब एक करोड़ आदमी आये हैं। उनके ऊपर 3 करोड़ रुपया रोज का हमारा खर्चा होता है। पाकिस्तान ने इस चीज को मुनासिब समझा था कि हमारे देश के अन्दर एक करोड़ आदमियों को भेजकर हमारी आर्थिक स्थिति को खराब कर दे। उसने यह समझा था कि हमारे यहां इनफ्लेशन हो जाये। उसने यह समझा था कि डवलपमेन्ट के कार्य रुक जायें और उसने यह भी समझा था कि बंगला देश में और वेस्ट पाकिस्तान में जो आबादी का फर्क है उसको इस तरह से मिटा दिया जाये। यह पाकिस्तान ने सोचा था। हम उस वक्त इस बात की तरफ बार बार कहते रहे, दुनियाभर में जाते रहे, दुनिया के लोगों को कहा और इसको समझाया कि दुनियां के अन्दर क्या कोई मुल्क आज तक इतने सारे शरणार्थियों को अपने देश में किसी ने कभी लिया है ? हमने यह भी याद दिलाया कि बाड़फरा और कटेरा में जो

(श्री बरकतुल्लाखां)

हुआ था उससे हजार गुना तजुर्बा यहां हुआ। इसके बाद हमने भी यह कोशिश की कि बांगला देश के लोगों को पाकिस्तान अपने देश के अन्दर इज्जत के साथ आने दे और वह उसी वक्त हो सकता था जब पाकिस्तान एक डेमोक्रेटिक गवर्नमेन्ट बनाये जो कि चुने हुए नुमाइन्दे हैं उनको मौका दे कि गवर्नमेन्ट बनाओ और जो लोग हमारे देश में आये हुए हैं बाइज्जत तरीके से अपने देश में जायें। लेकिन पाकिस्तान ने हमेशा की आदत के मुताबिक यह समझा और हिन्दुस्तान को ललकारा। उसने यह समझा कि हमेशा मैं गलती करता हूं तो मुझे माफ कर दिया जाता है। आजादी के फौरन बाद उन्होंने कश्मीर पर हमला किया, उसके बाद कच्छ पर हमला किया, उसके बाद कश्मीर पर और पूरे भारत के ऊपर जो उससे सीमा मिलती थी उसने वहां हमला किया और छम्ब जोंरया के अन्दर जो हमने सबक सिखाया कि उनके बड़े बड़े पेटर्न टैंक्स को हमने उड़ा दिया, वह सेन्चुरियन टैंक वगैरह लेकर आये थे यू.एस.ए. के और उसको इस तरह से तोड़कर बता दिया कि हमारे देश का जवान टैंकों को तोड़ सकता है और हमारे जवानों ने सेबर जैटों को तोड़कर बताया।

अब पाकिस्तान ने फिर इस बात की कोशिश की कि वह हमारे देश की सीमा पर अपनी फौजें भेजे, भेजकर हमें ललकारे, हमें डराये, हमें धमकाये और हमारे स्वाभिमान को धक्का लगाये। आखिर बरदाश्त की एक हद्द होती है। कहां तक इन्सान बरदाश्त कर सकता है। रोज झूठा प्रचार करे, रोज रेडियो पर बुरे से बुरे अल्फाज इस्तेमाल करे। यही नहीं बल्कि एक प्रेसीडेन्ट एक स्टेट का इस तरीके की किसी महिला के लिए बात कह सकता है जैसा कि हमारे प्रधान मंत्री के लिए कहा कि 'लेडी शटअप यही नहीं पाकिस्तान के इरादे क्या हैं अगर किसी ने प्रेसीडेन्ट अय्यूब की किताब पढ़ी हो 'फ्रेन्ड्स नाट मास्टर' तो उसमें लिखा है श्री अय्यूब ने साफ कि जब पानी का मामला तय नहीं हो रहा था, जब नहरों का झगड़ा तय नहीं हो रहा था तो हमने तय कर लिया था कि हिन्दुस्तान पर हमला कर लो--यह अयूब ने अपनी किताब में लिखा था। तो उनका यह जो कन्टोनुअस प्रोसेस चल रहा है कि किसी तरीके से लड़ाई की जाये--हमने बार बार कहा और आज भी यह है कि हम पाकिस्तान के ऊपर हमला करना नहीं चाहते हैं।

लेकिन शर्ते दो हैं। एक शर्त यह है कि बांगला देश के अन्दर हुकूमत बननी चाहिए जिसकी वजह से बांगला देश के लोग बाइज्जत तरीके से और भरोसे के साथ अपने देश में जा सकें। दूसरी बात यह है कि अगर पाकिस्तान हम पर हमला करेगा तो उस हमले का मुंहतोड़ जवाब दिया जाएगा। अब अगर पाकिस्तान हमला करेगा तो जो डिफेंस की हमेशा से पोलिसी रही है कि अगर कोई हमारे ऊपर हमला करेगा तो हम अपने देश में नहीं लड़ेंगे, जहां तक पहुंच सकते हैं वहां पर जाकर लड़ेंगे। हमारे कण्ट्री की डिफेंस की डिमाण्ड करती है और दुनिया में ऐसा कौन आदमी होगा, कौन बेवकूफ आदमी होगा कि तुम मेरे पर हमला करते रहो और मेरी धरती पर आकर

(श्री बरकतुल्लाखां)

लड़ो, यह चाहेगा। जब लड़ाई होती है तो टोटल लड़ाई ही होगी। तो याह्याखां को यह बात समझनी पड़ेगी, क्योंकि पहले वह जिस आवाज से, जिस जोर से बोलते थे उनकी आवाज में काफी फर्क आया है। पहले वे बहुत जोर से बोलते थे मानो भारत की पचपन करोड़ जनता को ललकार रहे हों। पहले वे जिस तरीके से बोलते थे मानो हम बहुत कमजोर लोग हों और वे बड़े भारी लोग हों, बड़े ताकतवर लोग हों। आखिर हमें भी अपने देश की रक्षा के लिए तैयारी करनी पड़ी। हमने अपनी सीमाओं पर फौजें भेजीं। पाकिस्तान की फौजें सीमाओं पर आ जाने के बाद अपनी फौज भेजी पाकिस्तान की फौज सीमाओं पर आने के पहले हमने अपनी फौजें सीमाओं पर नहीं भेजी लेकिन पाकिस्तान की जब फौजें पहुंच गई तब हमने अपनी फौजें भेजीं और हमने जब फौजें भेज दीं तो फौजें भेजने के बाद प्रेसीडेंट याह्याखां ने इस बात को वर्ल्ड प्रेस को कहने की कोशिश की कि हम भारत से बात करने को तैयार हैं। जहां चाहे वहां बात करने को तैयार हैं, जिस जगह चाहें वहां बात करने को तैयार हैं और जिस प्रकार चाहें वैसे बात करने के लिए तैयार हैं। उनकी बोली में इतना फर्क हुआ। और इतना फर्क आना जरूरी भी था। वह भी फौजी जनरल हैं, वे खुद भी जानते हैं कि उनकी ताकत क्या है और हमारी ताकत क्या है। इतना होने पर भी यह नहीं बतलाया कि आपके और हमारे बीच में झगड़ा क्या है? हमारे और आपके बीच में जो सिचुएशन है उसको इण्टरनेशनलाज करने की जरूरत क्या है? हमारे और पाकिस्तान के बीच में पुराने झगड़े हो सकते हैं लेकिन नई चीज पैदा क्यों हो कि एक करोड़ इंसानों को हमारे देश में भेज कर झगड़ा खड़ा करें। हमने कहा कि इन करोड़ों इंसानों को, आप ऐसी गवर्नमेंट बनाइए जिसमें इन करोड़ों लोगों को विश्वास हो और उस गवर्नमेंट के जरिए वे अपने देश में वापिस जाकर इज्जत से रह सकें। जो हमारे ऊपर आर्थिक भार आ गया है वह हटना चाहिए लेकिन याह्याखां इस बात के लिए तैयार नहीं हुए। उस बात के झगड़े को तय करने के लिए तैयार नहीं हुए। वे अपने घर के झगड़े को तय करने को तैयार नहीं हुए। पहले तो वह यह कहते रहे कि बांगला देश आजाद हो गया तो भारत के खिलाफ टोटल वार होगी। अब यह कहने लगे हैं कि वह भारत से बैठ कर बात करेंगे। मतलब यह है कि उस मसले को सुलझाना नहीं चाहते हैं, इण्टरनेशनलाइज करना चाहते हैं और उसके जरिए हमारे देश के अन्दर उन तमाम लोगों को भेजने की कोशिश कर रहे हैं जो उनसे नाराज हैं। पाकिस्तान में लाखों लोगों को मारा गया, हजारों लाखों औरतों को बेवा किया, उनकी इज्जत छीनी और इस तरह से जो इम्पीरियलिस्ट पावर में भी किसी जमाने में ऐसे बेगुनाह लोगों के साथ बर्ताव नहीं किया वैसा बर्ताव पाकिस्तान में अपने नागरिकों के साथ किया गया। जिन लोगों ने अपनी मांओं, अपनी बहिनों की बेइज्जती देखी, जिन लड़कों ने अपने बाप को मरते देखा, जिस लड़के ने अपने भाई को गोली लगते देखा, उन लोगों में अपनी आजादी हासिल करने का सिलसिला शुरू हुआ और आज वहां मुक्ति

(श्री बरकतुल्ला खां)

वाहिनी तैयार हुई है। वे सारे लोग जो पाकिस्तान से भाग कर हिन्दुस्तान में आए हैं उनमें हिन्दु भी हैं, उनमें मुसलमान भी आए हैं, उनमे क्रिश्चियन और बौद्ध भी आए हैं। आज वे लोग आजादी की लड़ाई लड़ना चाहते हैं अपनी आजादी को हासिल करने के लिए। पाकिस्तान ने पहले भारत को यह डाट दी कि टोटल वार हम करेंगे लेकिन अब हमारी तरफ से आज यह जवाब है कि तुम टोटल वार या वार करोगे तो हम टोटल वार करेंगे और तुम्हारी टेरीटोरी पर जाकर कब्जा करेंगे।

अब तक हमने क्या किया है। हमने कारगिल पर कब्जा किया, हमने हाजीपीर पर कब्जा किया और उनको छोड़ दिया और दूसरी जगहों पर कब्जा किया और उनको छोड़ दिया। लाहौर पर हम बम्बार्डमेंट कर सकते थे लेकिन हमने उसको बख्श दिया, उसके मुकाबले हमारे जोधपुर शहर के साथ उन्होंने क्या किया। हमने लाहौर पर रहम किया जब कि हम उस पर हमला कर सकते थे। लेकिन रहम की भी हद होती है, मेहरबानी करने की भी हद होती है। इसके बाद आज भारत की जनता किसी तरीके से और भारत की सरकार भी इस बात को मानने को तैयार नहीं है। अगर तुम हम पर हमला करोगे तो फिर इस पर पूरी लड़ाई होगी, जम कर लड़ाई होगी और जो भी कीमत देनी पड़े वह कीमत हम देंगे लेकिन अपनी आजादी को बरकरार रखेंगे, सीमाओं की सुरक्षा करेंगे और किसी गैर आदमी को हमारे देश में घुसने नहीं देंगे। जैसा कि आप जानते हैं राजस्थान जो कि भारत का अंग है, उसका इलाका 644 मील पाकिस्तान से मिला हुआ है और उस पर पाकिस्तान ने खास तौर से जिस तरह से कोशिश की है और वहां अपनी फौजें भेजी हैं। पहले उसने गंगानगर की ओर फौजें भेजीं। उसके बाद उसने बाड़मेर की ओर फौजें भेजी और जो मेरी अब तक जानकारी है उसके हिसाब से दो फुल डिविजन राजस्थान के बोर्डर पर रख छोड़ी है। वह यह भी समझते थे कि हमारे देश के अन्दर ....

श्री मदन सिंह (दांतारामगढ़) : माननीय अध्यक्ष होदय, फौजें कितनी हैं इसके सम्बन्ध में कोई ऐलान नहीं करें।

श्री बरकतुल्ला खां : पाकिस्तान की बात कह रहा हूं। मैं अपनी फौज के बारे में नहीं कह रहा हूं। पाकिस्तान ने जो फौजें भेज रखी हैं अपनी सीमा पर वह बात कह रहा हूं, अपनी फौज की बात नहीं कर रहा हूं।

तो मैं यह कह रहा था कि पाकिस्तान ने दो डिविजन रख कर हमें घबराने की कोशिश की। मैं भी इस समय दो दफा बोर्डर पर होकर आया हूं। जवानों से मिला हूं और फ्रंट लाइन के जवानों से मिला हूं। 400 गज की दूरी तक जो चौकियां हैं पाकिस्तान की सीमा से वहां तक गया हूं। मैं कह सकता हूं कि हमारी फौजें हमारा आर्म्ड फोर्सेज बिल्कुल तैयार हैं। पाकिस्तान अगर हमला करेगा तो उसका बड़ी ताकत और सख्ती से जवाब दिया जाएगा (करतल ध्वनि) हमारी एयर फोर्स तैयार है, हमारी लैंड फोर्स तैयार है। लेकिन उसके साथ साथ सिविल एडमिनिस्ट्रेशन का भी जिम्मा होता है त

(श्री बरकतुल्ला खां)

उसके लिए एडमिनिस्ट्रेशन भी जागरुक है। और उसके लिए सबसे पहला कदम हमने यह उठाया है कि बोर्डर कमिश्नर की पोस्ट जो खत्म हो गयी थी उसको रिन्यू करके उसके ऊपर एक सीनियर आई. ए. एस. आफिसर को हमने बोर्डर कमिश्नर लगाया है। इसके साथ साथ हमने यह भी किया है कि सिविल डिफेंस परपजेज के लिए डिस्ट्रिक्ट एडमिनिस्ट्रेशन को भी स्ट्रेंग्थन किया है एडीशनल कलेक्टर और असिस्टेंट कलेक्टर की पोस्टें सिविल डिफेंस के लिए क्रियेट की हैं जो हमारी सीमा पर हमारे डिस्ट्रिक्ट्स हैं उनमें। उसके साथ साथ हमने यह भी किया है कि जो फौज को जिस किसी चीज की जरूरत होगी उसको हम प्रायोरिटी देंगे। और मैं सदन को आपके जरिए विश्वास दिलाना चाहता हूं कि जो भी फौज ने हमसे चाहा है हमने पूरा किया है। योजनाओं के लिए चाहे हमारे पास पैसा न हो हमारे यहां पर ओवर ड्राफ्ट की सिचुएशन चल रही है लेकिन जो कुछ भी फौज ने हमसे चाहा हमने पूरा किया है। इसकी डिटेल में जाने की जरूरत नहीं है कि हमने क्या किया हो लेकिन जो भी हमारी फौज को जरूरत थी बिना साधनों की परवाह किए हमने उनको वह मुहैया कराया है इसी तरीके से हमने इस बात का भी ख्याल रखा है कि जो हमारी सिविल डिफेंस है उसके अन्दर बोर्डर होम गार्ड्स और, डिस्ट्रिक्ट अरबन होम गार्ड्स और बोर्डर अरबन होम गार्डस को भी रेज किया है और चूंकि पाकिस्तान ने मुजाहिदों को ट्रेनिंग देकर इस बात के लिए तैयार किया था कि हमारे देश के ऊपर हमला करके वह लोग मार करें और इसलिए उन मुजाहिदों के मुकाबले में जो हमारी बोर्डर सिक्योरिटी फोर्स है और जनता को जो मेरे पास हथियार उपलब्ध थे मैंने वह दिए है और जैसे 2 आते जायेंगे वह मैं सीमा तक देता जाऊंगा। मैंने गवर्नमेंट आफ इंडिया से बात की है और जितने भी हथियार मुझे मिल सकेंगे, मैं सीमा पर उनको बाटूंगा। मैं जानता हूं कि इन रेंजर्स के मुकाबले में हमारी बोर्डर सिक्योरिटी फोर्स है, हमारी जनता है, हमारी एयर फोर्स है हमारी लैंड फोर्स है और हमारी नेवी हैं यह सब उनके मुकाबले के लिए तैयार है। इस बात का जिकर मैंने वहां पर भी किया था और पाकिस्तान रेडियो ने काफी चर्चा इस बात का किया था लेकिन मैं जानता हूं कि जो इर्रेगुलर हैं उनके साथ इर्रेगुलर है उनके साथ इर्रेगुलर लड़ेंगे और जो रेगुलर हैं उनके साथ रेगुलर है उनके साथ रेगुलर लड़ेंगें। हमारी जनता भी उनका मुकाबला करना चाहती है मुझे इस बात की खुशी है कि हमारे नेता मजबूती के साथ अपने 2 इलाके में खड़ी हैं। कोई भी भाई जाकर देख सकता है कि बोर्डर पर जो लोग हैं उनका मनोबल कितना ऊंचा है। इसको आंखों से देखकर ही अन्दाज हो सकता है अगर जबान से कहें तो मान नहीं सकते हैं क्योंकि आज के दिन हर शक्श यह जनता हैं कि उस के देश की आजादी खतरे में हैं। बिलकुल ही सीमा पर लगे हुए क्षेत्र हैं वहां पर लोग खेती कर रहे हैं। जहां सीमा से लगे हुए क्षेत्र हैं वहां पर रूई चुगी जा रही है। वहां पर हमारी बहन, माताएं बैठकर रूई चुग रही है। जवान हंसते हुए जा रहे हैं।

(श्री बरकतुल्ला खां)

मैंने उनसे पूछा, कि तुम्हारी क्या तैयारी है उन्होंने कहा, हमारे पास लाठियां हैं। मैंने कहा, क्या लाठियों से पाकिस्तान से लड़ोगे ? उनका उत्तर था ऐसी क्या बात है ? लाठियों से लड़ेंगे और उनकी राईफलें छीनकर उनका मुकाबला करेंगे। तो लोगों का मनोबल कितना ऊंचा है। एक चीज है वह सामने आती है। वह यह है कि रुई और नर्मा इसके भाव काफी गिरे हैं। इसकी वजह से काश्तकारों को नुकसान होने का डर है। इसके लिये भारत सरकार से बात की थी, डिफेन्स मिनिस्टर से बात की थी और और लोगों से टेक्सटाइल बोर्ड से, उसके एसोसिएशन से बात की हैं और अब मैं समझता हूं यह मामला जल्दी ही तय हो जायेगा।

जैसा कि आप जानते हैं ट्रान्सपोर्ट की कमी है, रेलगाड़ियों की कमी है। ट्रक्स की कमी है। जहां तक जरूरत है उसको पहले लेते हैं। इसकी तरफ मैं कुछ और निवेदन करना चाहता था कि पाकिस्तान ने खास तौर से अपने रेन्जर्स थे उनको 3" मोर्टर की ट्रेनिंग दी है। पाकिस्तान उनको एम.जी जी. और एल.एम.जी. की ट्रेनिंग दे रहा है। इसके साथ साथ राकेट जांच करने की भी उनको ट्रेनिंग दे रहा है। इस तरीके से पाकिस्तान अपनी ओर से पूरी तरह से तैयार है। इसी तरीके से हमारे यहां भी सिविल डिफेन्स को ब्लैक आउट के लिए तैयार होना चाहिये। सीमा पर जो हमारे डिस्ट्रिक्ट्स हैं उनमें पूरी तैयारी है। जो हमारे टेलिफोन और वायरलैस के कम्युनिकेशन थी उसको ठीक कर लिया गया है। इसी तरीके से सीमा के अन्दर तहसीलदार और पुलिस अधिकारियों को हमने जीपें दी हैं ताकि वे पैट्रोलिंग कर सकें। इसके साथ साथ हम यह भी जानते हैं कि हमारे जिस इलाके से यह टेलिग्राफ लाइन जा रही है, टेलिफोन लाइन जा रही है वे काफी पुराने इलाके हैं इसलिये पंचायत समितियों और दूसरी स्वायत्त शासन संस्थाओं से हमने इस बात को कहा है और उन्होंने माना है कि उनके लोग इसकी ओर पूरा ध्यान देकर पैट्रोलिंग करेंगे और इसके साथ साथ जो हमारे इम्पारटेन्ट ब्रीजेज हैं, इम्पारटेन्ट जगह हैं उसका भी पैट्रोलिंग करेंगे। जो रूरल होम गार्डस् तैयार कर रहे हैं उसका परपज एक है कि वे इस कार्य को देख सके। इसके साथ साथ जैसा कि मैं पहले निवेदन कर चुका था कि आर्मी के बड़े बड़े आफिसर ने हमको पत्र लिखा है और उन्होंने कहा है कि राजस्थान का सिविल एडमिनिस्ट्रेशन से उनको सहयोग मिला है वैसा उन्हें किसी जगह पर नहीं मिला है। उन्होंने इस बात को सराहना की है जो मैं उनके लफ्जों में ही कहता हूं कि उन्होंने यह कहा है। कोई आर्मी को जब डिमाण्ड की जरूरत पड़ी उसको हमने पूरा किया। हमारे बोर्डर डिस्ट्रिक्ट्स में फायर फाईटिंग मशीन नहीं थी उसका हमने भिजवा दिया है। अस्पतालों को स्ट्रेन्ग्थ कर दिया है। मोबाइल अस्पताल तैयार हैं। इस तरीके से सिविल पापुलेशन के लिये जो भी किया जाना चाहिये उसकी पूरी तैयारी है। और जैसा कि आप पाकिस्तान में देख रहे हैं, पाकिस्तान के शहर और जो उनके सरहद के इलाके हैं लोग उनको छोड़कर भाग रहे हैं। उसके मुकाबले में राजस्थान और बोर्डर के सारे इलाकों में

(श्री बरकतुल्ला खां)
जो हमारे लोग हैं, मैं पंजाब भी गया था और वहां पर आर्मी के सीनियर आफिसर्स से भी मिला था, वहां पर भी हमारी जो जनता है जो हमारे किसान मजदूर हैं, वे जमे हुए हैं, डटे हुए हैं और अपने इलाके को छोड़कर नहीं जा रहे हैं......

श्री मदनसिंह : यह गलत कर रहे हैं। उनको यह कहना कि तुम्हारे ऊपर बम नहीं पड़ेगा यह गलत है......This is very wrong.

पाकिस्तान की बम्बार्डमेन्ट के लिये पूरी तैयारी है और हम यह कह रहे हैं....

(शोरगुल)

श्री यशवन्तसिंह नाहर : पहले स्टेटमेन्ट तो होने दीजिये।

श्री अध्यक्ष : माननीय सदस्य ?

श्री बरकतुल्ला खां : अध्यक्ष महोदय, मैं यह अर्ज कर देना चाहता हूं कि हमने किसी को भूठा वरगलाया नहीं है। बल्कि जनता घबराहट में नही है। जनता इस बात के लिये तैयार है कि आखिर पाकिस्तान की तरह हम भाग जायेंगे तो दुनिया क्या कहेगी। वह यह भी समझती है कि हमारे यहां पर जब जरूरत होगी, करेंगे। जब आर्मी किसी एरिया को चाहेगी, तो उसको खाली करेंगे। उसके लिये प्लान है। बल्कि भागदौड़ का तरीका, डरने का तरीका नहीं है। जब आर्मी को जरूरत होगी उसको प्लाण्ड वे में लायेंगे।

इसके साथ साथ हमने यहां पर कोशिश की है कि जो हमारे आर्मी में, फोर्सेज में हमारे नौजवान हैं उनको यह फीलिंग न हो कि हमें किसी ने भुला दिया हो। इस मारे हमने कलक्टर्स को आदेश दे दिये हैं कि जो फौज के अन्दर हैं, और आज सीमा पर हैं, उनके घर वालों की देखभाल हो और जो हमारे सिपाही, राजस्थान के जिस जिस इलाके से गये हैं उनको हमारी तरफ से चिट्ठी लिख दें कि उनके घर वाले आराम से हैं, सुखी हैं और कोई बीमार है तो मुस्तिकील तरीके से खबर कर दे। और इस तरीके से उसकी सारी जितनी फैमिली है, सर्विस में है उनकी सेन्सस कर रहे हैं।

मैं अब ज्यादा समय नहीं लेना चाहता हूं। मैंने सिटीजन कोउन्सिल राजस्थान की बनायी है और उसके अन्दर हमने विचार किया है। उसके अन्दर सभी वर्गों के लोग, सभी संस्थाओं के लोग और सभी राजनैतिक दल उसके अन्दर रिप्रिजेन्टेड हैं। इसी तरीके से हमने हमारे जो सीमावर्ती डिस्ट्रिक्ट्स हैं उसके अन्दर भी सिटीजन कौउन्सिल बनायी है और उसके द्वारा जनता को और डिफेन्स परपज है उस में हम अपने तरीके से काम करना चाहते हैं। मैं समझता हूं कि बगैर डिटेल में जाये हुए सदन को यह विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हमारे ऊपर कोई हमला करेगा उसके लिये कि हम पूरी तरह से तैयार हैं। मैं यह भी विश्वास दिलाना चाहता हूं राजस्थान सरकार अपनी जिम्मेदारी के लिए जागरुक है और विश्वास दिलाना चाहता हूं कि अब जो भी लड़ाई होगी वह दो दो टूक लड़ाई होगी, फैसला कुन्द लड़ाई

(श्री बरकतुल्ला खां)

होगी। उसका जो परिणाम होगा उसको पाकिस्तान को भुगतना पड़ेगा, यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूं।

आखिर में, जैसा आप जानते हैं सारे सदस्यगण चिन्तित हैं और यह मैं जानता हूं। आप जो सुझाव देंगे, जो कन्स्ट्रक्टिव सुझाव होंगे उन पर मैं विचार करूंगा और विश्वास दिलाता हूं कि जो भी राय देंगे उसको ध्यान से सुनूंगा और अपनी ओर से पूरी कोशिश करूंगा कि आप जो भी राय दें उनका कहीं न कहीं बैठ कर रास्ता निकाला जा सके। मैं यह भी विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि सिविल एडमिनिस्ट्रेशन पूरी तरह से तैयार है और सिविल एडमिनिस्ट्रेशन आर्मी आथोरिटी के साथ कम्प्लीट कोआपरेशन कर रहा है और जो हम डिफेन्स कार्य के लिये, अपने देश के अन्दर और खासतौर से प्रान्तों के लिये जो भी तैयार सिविलियन पापूलेशन के लिये करना चाहिये थी वह की है और राजस्थान की जनता ने जो विश्वास हिम्मत और ताकत दिलाई है उसका कोई जवाब नहीं मिल सकता है और दुनिया वाले देखें तो उनको खुद अन्दाज हो जायेगा। प्रेस के लोगों को भी मैंने कहा कि आप स्वयं जाकर देखो। जिसने भी देखा कहा, जनता का मनोबल ऊंचा है और यह जो मनोबल है वही हमारी शक्ति है, उनको हमें कायम रखना है एक दूसरे को सहयोग देना है और जैसा पहले कहा था, आज भी अर्ज करता हूं कि हमारे पोलिटिकल राजनैतिक मतभेद कुछ भी हो सकते हैं। हम भारत के लोग हैं, पहले, इस देश के रहने वाले हैं, इस देश के नागरिक हैं। हमारी सब की जिम्मेवारी है कि जहां तक पाकिस्तान का खतरा है उस वक्त तक हमारे मतभेद रहते हुए भी हम एक दूसरे के साथ रहें एक कामन काज के लिए, और उसके बाद अपने अपने क्षेत्र के मतभेद जैसी जरूरत पड़े इस खतरे के बाद जाहिर कर सकते हैं। मैं खासतौर से यह कहना चाहता हूं कि आज किसी हिन्दू, मुस्लिम, सिख या ईसाई का सवाल नहीं है, इस देश की आजादी का सवाल है, इस देश की इज्जत का सवाल है, इस देश के गौरव का सवाल है। उसके लिए आज हम सब को एक साथ मिल कर पाकिस्तान की ओर से जो भी हमला हो उसकी हमें तैयारी करनी पड़ेगी और ताकत से उसका जवाब देना पड़ेगा। जनता में पूरा मनोबल है और जनता के लोग इस बात के लिए तैयार हैं कि जो भी फैसला हो जाय।

हमारे बीच में पहले छोटे छोटे झगड़े हो जाते थे वह किसी बड़े परिवार में सम्भव है, लेकिन जिस तरह से पाकिस्तान आज इस बात की कोशिश कर रहा है कि हमारे घर में झगड़े हों, देश में झगड़े हों, हमारे घर में हिंसा का वातावरण फैले उसको आज पूरे तरीके से देखने की जरूरत है, क्योंकि पाकिस्तान रेडियो के प्रोपेगण्डे के जरिये अपने कुछ एजेन्टों के जरिये ऐसी कुछ शरारत करवा सकता है, लेकिन शरारत के अन्दर हमें अपने दिमाग के संतुलन को नहीं खोना है। जो शरारती लोग हैं उनको पकड़ना है और उनको पकड़ कर सजा दिलानी है। मैं समझता हूं कि पाकिस्तान दुनिया भर में कहता फिरता है कि

(श्री बरकतुल्ला खां)
भारत हिन्दुओं का देश है उसको आज कोई नहीं मानता है, और पाकिस्तान यह भी कहता है कि मैं इस्लामिक देश हूं उसके लिए भी काफी लोगों ने मानने से इन्कार कर दिया है। लोग यह समझते हैं कि यह इस्लामिक देश है जो कि अपने ही देशवासियों पर गोलियां चलाता है, यह भी एक इस्लामिक मुल्क है जो कि अपने छोटे बच्चों, औरतों और मर्दों को अपने खिलाफ करता हुआ चला जा रहा है। जो पाकिस्तान ने आज तक सारा प्रोपेगेण्डा किया था कि मैं एक मुस्लिम राज्य हूं और इस्लामिक हुकूमत चलाना चाहता हूं उसका भण्डा फूट गया है, और जो मि. जिन्ना ने दो देश की थ्योरी की थी उसको मुजीब साहब ने और याह्या ने दोनों ने मिल कर दफन कर दिया है। मजहब से कोई कोमियत नहीं होती है। कौमियत कल्चर, जबान से होगी और कामन कस्टम से होगी'। इसलिए आज कौमियत मजहब से अलग हो चुकी है। पाकिस्तान का एक्सपेरीमेंट फैल हो गया है, और आज हमारी सब की जो तैयारी है उसके मुकाबले में पाकिस्तान चाहे जितना भी जोर लगा ले, चाहे जितनी भी कोशिश कर ले वह 55 करोड़ इन्सानों को हरा नहीं सकता। वह अब खुद कहने लगा है कि मेरा मुल्क छोटा है, मेरी फौज भी छोटी है, तो, भाई, तेरा मुल्क छोटा था और तेरी फौज छोटी थी हमने कब कहा कि तू हम पर हमला कर दे। खुद हमले की तैयारी करे और उसके बाद कहे कि मैं छोटा हूं तो यह चीज खत्म हो चुकी है।

आज के दिन हम सब की यही तैयारी होनी चाहिए कि ताकत के साथ जो हमला करे उसका मुकबला करें और सख्ती से उसका जवाब दें। अब के पाकिस्तान की जमीन पर लड़ाई होगी, भारत की भूमि पर एक-दो दिन हो सकती है, लेकिन हम उनको उनके घरों में ले जायेंगे और वहां जाकर हम लड़ाई करेंगे। धन्यवाद।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह (डूंगरपुर): अध्यक्ष महोदय, इस विधान सभा के सत्र को प्रारम्भ हुए आज तीसरा दिन है। पहले दिन जब हम यहां पर एकत्रित हुए थे तो बहुत सारे सदस्यों के मन में और मेरे मन में भी यह भावना हुई कि सम्भवतः सरकार इस सदन को नहीं चलाना चाहती।

(1.36 म. प.)

(श्री रामनारायण चौधरी, उपाध्यक्ष, पदासीन)

सरकार यह चाहती है कि जितना जल्दी हो यह सदन समाप्त कर दिया जाय उतना ही अच्छा है। वैधानिक प्रावधानों की पूर्ति करने हेतु अगर दो घन्टे के लिए भी सदन 6 महीनों के अन्दर एक बार बुला लिया जाय तो वह पर्याप्त है। मुझे इस पर आश्चर्य भी हुआ और दुःख भी हुआ, और उसके साथ-साथ मेरे मन में यह भी भावना हुई कि एक तरह से हम लोगों को अपमानित किया जा रहा है। हम लोगों को एक स्पष्टता यह अन्दरूनी भावना व्यक्त की जा रही है कि जितना जल्दी हम यहां से विसर्जित हो जायं उतना ही अच्छा है। बिजिनेस एडवाइजरी कमेटी में जो कुछ भी बातचीत हुई उस सम्बन्ध में मैं, उपाध्यक्ष महोदय, कुछ भी निवेदन नहीं करना

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

चाहूंगा, और अन्ततोगत्वा जो सरकार ने यह निर्णय लिया कि इस महत्वपूर्ण विषय के ऊपर चर्चा की जाय, उसका मैं स्वागत करता हूं। माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जो बयान दिया है देश की अन्दरूनी स्थिति के सम्बन्ध में, हमारी स्थिति के संबन्ध में, प्रशासन के सम्बन्ध मे, सुरक्षा के सम्बन्ध में, और पाकिस्तान और हमारे आपसी तनाव के सम्बन्ध में जो भूमिका दी और जो विचार व्यक्त किये उसको मैं एक हद तक कद्र करता हूं। उपाध्यक्ष महोदय, हम जिम्मेदार लोग हैं। राजस्थान एक सीमावर्ती प्रदेश है। हम यह चाहेंगे और यह स्वाभाविक भी है कि आज राजस्थान का हरेक नागरिक उत्सुक होगा इस सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए कि देश की दशा क्या है, सीमा सुरक्षा के सम्बन्ध में क्या व्यवस्था है, आदि आदि। हम कन्स्ट्रक्टिव, रचना-सुझाव देना चाहेंगे। आपको अधिकार है आप जो चीज चाहें मन की करें लेकिन आप सब की सुन कर मन की करें तभी जनतन्त्र में स्वस्थ परम्परा कायम रह सकती है, अन्यथा जो राजस्थान का वतीरा पहले का मैंने देखा है 'सूनर यू गो इज दी बेटर' की भावना मेरे मन के अन्दर जो उत्पन्न हुई उसके लिए मैं विशेष नहीं कहते हुए इतना ही कहूंगा कि उसके पश्चात् जो राजस्थान सरकार ने भूल की थी, इस विधान सभा की अवहेलना की थी उसको सुधार लिया। उसका मुझे सन्तोष है।

श्री **रामकिशन** : पूरी तैयारी नहीं है अभी तक।

महारावल श्री **लक्ष्मणसिंह** : मैं यह समझता हूं कि यह देश एक संकटापन्न स्थिति के अन्दर से गुजर रहा है। संकटकाल की स्थिति की घोषणा भले से ही नहीं हुई, लेकिन संकट तो है ही। गत बजट के अन्दर 3 करोड़ के टैक्सेज जनता के ऊपर लगाये गये। आर्डिनेन्स के द्वारा हमारे राष्ट्रपति ने 70 करोड़ के टैक्सेज जनता के ऊपर लगाये। अभी माननीय मुख्य मंत्रीजी के द्वारा यह स्पष्टीकरण किया गया कि ढाई-तीन करोड़ रुपये रोज इन शरणार्थियों के ऊपर खर्च किया जा रहा है। आखिरकार मैं यह मानता हूं कि देश की प्रभुसत्ता और देश की सुरक्षा के लिए हम बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए तैयार हैं, नागरिक मोर्चे की पहली बैठक में भी मैंने यह आश्वासन दिया था और यह आश्वासन देना कोई मेहरबानी नहीं कर रहा हूं। मैं एक नागरिक के नाते अपने पुनीत कर्तव्य को अदा कर रहा हूं। जहां तक मेरा और मेरे दल का सम्बन्ध है, सरकार की सुरक्षा सम्बन्धी जो कुछ रीति-नीति होगी उसके लिए हम पूर्णतया सरकार के साथ हैं। हमारा विशाल देश जनतान्त्रिक सिद्धान्तों के अनुसार प्रशासित है। मत मतान्तर हो सकते हैं। वह स्वाभाविक है। लेकिन मत-मतान्तर व्यक्त करने के लिए कोई दूसरा समय आ सकता है। आज का समय भावनात्मक एकता का है। हम सब को साबित करना चाहिए कि जो कुछ सरकार की रीति-नीति होगी, उसके लिए हम पूर्णतया साथ होंगे और बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिए हम तैयार हैं। मैं यह समझता हूं कि पाकिस्तान की मजाल नहीं है कि वह हम पर आक्रमण करे। यह कहावत मशहूर है कि जो गरजते हैं वह बरसते नहीं हैं। भूसता कुत्ता काटता

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

नहीं है। हाथी के दांत दिखाने के और होते हैं और चबाने के और होते हैं। यह देश पाकिस्तान से कम से कम पांच गुना बड़ा है। आज हमारी सरकार ने जो सहनशीलता व्यक्त की है, वह प्रशंसनीय है। बहुत से राष्ट्र इस सहनशीलता को देख कर हमारी सरकार और हमारी प्रधान मन्त्री की प्रशंसा किये बिना नहीं रहे हैं। मुख्य मन्त्री महोदय ने प्रशासन के सम्बन्ध में जो चर्चा की है, उसकी डिटेल में मैं नहीं जाना चाहता हूं। लेकिन उन्होंने जो रूपरेखा सदन में प्रस्तुत की है, वह मैं समझता हूं कि असन्तोषजनक नहीं है। मैं समझता हूं कि सरकार अगर दृढ़ संकल्प होकर हमारी हमदर्दी को कायम रखती है तो यह हमारे लिए बहुत बड़ी नैतिकता की जीत होगी। हमारी बहुमूल्य वस्तु मैं समझता हूं कि उपाध्यक्ष महोदय, हमारा सेकुलरिज्म है। बहुत से देश देख रहे हैं कि हमारी सेकुलरिज्म की नीति 20 वर्ष हमने निभाई है। पाकिस्तान अपने को इकानामिक मुल्क घोषित करे या डिक्टेटोरियल स्टेट हो, उससे हमको लेना–देना नहीं है। लेकिन जिस रूप में बंगला देश ने, ईस्ट पाकिस्तान या ईस्ट बंगाल कहिये, उसमें जो चुनाव हुये उसमें उनकी जो अवहेलना की गई, और उसके बाद जो वहशियाना तरीका मारामारी का पाकिस्तान की ओर से प्रदर्शित किया गया है, यह तरीका वहशियाना तरीका है। जाहिल तरीका है, जानवरों का तरीका है। इसकी जितनी भी निन्दा की जाये उतनी ही कम है।

हमें हमारी फौजों को पूर्णतया आश्वासन देना चाहिए कि सारा देश उन के साथ है। उसको तत्परता से राहत और सहूलियत देना हमारा पुनीत कर्तव्य है। इसके साथ साथ किसानों और सेना के जवानों का मोरल ऊंचा रखना हमारा कर्तव्य है। मुख्यमन्त्रीजी ने अभी गंगानगर की समस्या पर प्रकाश डाला है मैं इतना समझता हूं कि ट्रांसपोर्ट की दिक्कतें हैं। लेकिन इसके साथ साथ उपाध्यक्ष महोदय, सरकार से निवेदन करना चाहता हूं कि रूई अबकी गंगानगर में बहुत हुई हैं। रूई के भाव 400 रु. क्विण्टल थे जो कि 200 रु. क्विण्टल आकर घट गये हैं। हमने सुना है, अभी सुरक्षा मन्त्रीजी और मुख्य मन्त्रीजी गंगानगर में गये थे तो उनसे गंगानगर के किसानों का शिष्टमण्डल मिलने आया था। तो मैं निवेदन करूंगा कि सरकार को काटन कारपोरेशन के द्वारा रुई खरीदने की व्यवस्था की जाये। तो इससे किसानों को राहत मिलेगी। हमारी अर्थ-व्यवस्था भंग नहीं होने देनी चाहिए। चाहे जितना भी हम करें। अर्थ-व्यवस्था अगर भंग होती है तो हमारे देश की जनता और सीमा की जनता के मोरल के अन्दर फर्क आता है। मैं इस गंगानगर की समस्या को खास तौर से मुख्य मन्त्रीजी से निवेदन करना चाहूंगा।

शरणार्थियों की समस्या के सम्बन्ध में भी मैं कुछ निवेदन करना चाहूंगा। मुख्यमन्त्रीजी ने कहा है कि 1 करोड़ शरणार्थी इस देश के अन्दर आये हैं। सम्भव हो, 1 करोड़ आये हों। पाकिस्तान कहता है कि 20 लाख ही आये हैं। पाकिस्तान बहुत घटा कर कह सकता है। हम बढ़ाकर कह सकते हैं। लेकिन 50–70 लाख भी आये हैं तो आखिर कब तक रहेंगे। हमारी बर-

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)
दाश्त की सीमा होनी चाहिए या फिर सीमा बन्द कर देनी चाहिए। अगर पाकिस्तान हमला नहीं करना चाहता है तो आखिर यह कब तक रहेगा। बड़े राष्ट्र इस मामले को खटाई में डाले बैठे हैं। मैं संक्षेप में कहूंगा कि पाकिस्तान ने एक हद तक अपनी मंशा को पूरा किया है। पाकिस्तान जिन लोगों को नहीं चाहता है, उनको उसने निकाल दिया है। आज पूरे के पूरे बंगला देश के ऊपर याहियाखां इस हद तक सर्वेसर्वा बन सकता है। वह कल तक विश्व में यह कह सकता है...

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : यह सही नहीं है। मुक्ति वाहिनी ने 35 पुल उड़ा दिये हैं। पूरी सूचना आपके पास नहीं हैं। आप अखबार नहीं पढ़ते हैं।

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : उपाध्यक्ष महोदय, मैं अखबार भी पढ़ता हूं। वैसे इतिहास की बात...

श्री मदनसिंह (दांताराम गढ़) : अखबार नहीं पढते हैं। लेकिन इन्दिराजी आग लगा कर उसको मान्यता नहीं दे रही है, उनका दुःख है।

श्री रामानन्द अग्रवाल ; पाकिस्तान कह रहा है यू. एन. ओ. में, हमारा पूरी तरह से कब्जा है, उनका कुछ नहीं है। हमारा पूरी तरह से शासन है और इस तरह से कह कर आप उनका समर्थन कर रहे हैं। यह बात सही नहीं है।

श्री कृष्ण कुमार गोयल (कोटा) : नेता महोदय ने कहा, वह मानते हैं मुक्ति वाहिनी को पूरी तरह से विजय हो।

श्री उपाध्यक्ष : सुनने की कोशिश कीजिये।

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह : उपाध्यक्ष महोदय, रामानन्दजी को अधिकार है, वह अपने विचार व्यक्त करें और मैं जो कह रहा हूं, उसमें उनको अधिकार है सुझाव देने का, मुझे कहने का। मैं उनका स्वागत करता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : धन्यवाद !

महारावल श्री लक्ष्मणसिंह : विश्व का इतिहास इस बात का द्योतक है कि जहां जहां जनता के ऊपर दमन चक्र हुआ है और जनता ने बगावत पैदा करके अपनी स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए संघर्ष किया है तो शासन को नीचा देखना पड़ा है, और हमेशा जनता का झण्डा ऊंचा रहा है। मैं चाहूंगा यह कहना कि यह अतिशयोक्ति नहीं होगी कि बंगला की जनता अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकेगी। लेकिन उसके साथ साथ जो आशंकाएं हैं और जो हमारे रास्ते के अन्दर कांटे और हर्डल आ सकते हैं उस सम्बन्ध में विचार व्यक्त करने का मुझे अधिकार था। इसलिए मेरी आशंकाओं को सदन के समक्ष रखते हुए मैं इस बात को दृढ़ता के साथ यहां कह सकता हूं कि वह दिन दूर नहीं है कि जब बंगला देश अपने लक्ष्य को प्राप्त करे और यदि बंगला देश अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है तो मेरे ख्याल में हमारा सक्युलरिज्म का झण्डा ऊँचा रहते हुए, हमारे सिद्धान्त की हम पूर्ति करके, यह जो विभाजन, जो हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की बांगी है, बबल है, इसे हम एक्स्प्लोड कर देंगे। तो मैं यह निवेदन करते हुए आपके समक्ष एक

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

उदाहरण प्रस्तुत करना चाहूंगा कि मेरी सहानुभूति है। प्रधान मन्त्री नहीं मिलाना चाहें चीन के साथ हाथ तो वह नहीं मिलायें लेकिन हमको यह भी सोचना चाहिए, कोई न कोई डाइलाग हम पाकिस्तान के साथ आरम्भ करें। अगर यह नेगेटिव एटीट्यूड हम अख्तियार करते हैं और सम्भवतः इस नेगेटिव एटीट्यूड के साथ साथ बोर्डर को सील नहीं करते हैं तो एक करोड़, डेढ़ करोड़ आदमी आये हैं, डेढ़ करोड़, दो करोड़ आदमी आयेंगे तो हमारी अर्थ व्यवस्था के अन्दर हम एक हजार करोड़ कहां से लायेंगे। आज की कीमतें दिन पर दिन बढ़ती जा रही हैं यह सामान्य बुद्धि की बात है। मैं नाजुक समस्या को लेकर बहुत ज्यादा चर्चा नहीं करना चाहता लेकिन जब आर्थिक रूप से जनता गिरी होती है तो वह मारेल के रूप से भी गिरती है, उसका आल-राउण्ड डाउन-फाल होता है। यह सबसे बड़ा दुश्मन जो देश के मारेल को चोट पहुँचाने वाला है यह दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। मंहगवारी है और सरकार प्राइसेज के ऊपर, कीमतों के ऊपर कन्ट्रोल नहीं कर पाती है तो मेरे ख्याल से यह हमारे मारेल को डाउन करने के लिए भी एक भयंकर विस्फोट उत्पन्न कर सकता है। मैं चाहूंगा, यह शरणार्थियों की समस्या किसी न किसी तरह से हल हो। मैं यह भी अनुभव करता हूँ, स्पष्टतया कि सबके सब शत-प्रतिशत शरणार्थी बंगला देश वापिस नहीं जा सकते हैं लेकिन आधे भी वापिस चले जाते हैं तो हम अपने लक्ष्य की पूर्ति समझ सकते हैं...

श्री वृद्धिचन्द जैन (बाड़मेर) : सबके सब जायेंगे।

श्री रामानन्द अग्रवाल : सबके सब जायेंगे, एक एक जायेंगे।

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह : आपको कहने का अधिकार है। बंगला देश अलग होता है तो सब जायेंगे।

कई माननीय सदस्य : होगा, अलग होगा।

महारावल श्री लक्ष्मण सिंह : होगा या नहीं–यह भविष्य बतायेगा। मैंने कहा, होगा, होकर रहेगा। अगर नहीं होता है और आखिरकार होने में छः महिने, बारह महीने लगते हैं तो मेरा अधिकार है और सम्माननीय सदस्य आपको भी अधिकार है जो कुछ चाहें वह कह सकते हैं। मेरी आशंकायें हैं। यह मतलब नहीं, मैं बिल्कुल फ्रस्ट्रेटेड होकर, हताश होकर कह रहा हूं। मेरी भी राष्ट्र के प्रति भावनायें हैं, लायलिटी है, लेकिन रीजन्ड लायलिटी है, आंख मींच कर ब्लाइन्ड लायलिटी नहीं है। मेरी जो आशंकायें हैं वह व्यक्त नहीं करता हूं तो मेरे ख्याल में मैं अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता हूं। मैं, उपाध्यक्ष महोदय, विशेष समय नहीं लूंगा। मैं केवल यह कहूंगा इजेराइल और ईजिप्ट के बीच में समस्या उत्पन्न हुई है उस सम्बन्ध में कई अफ्रीकन देशों के डाइलाग हुए हैं, इन्टर-सेशन हुए हैं, और मध्यस्थता हुई है। तो किसी न किसी अरब राष्ट्र या हमारे पड़ौसी मित्र राष्ट्र–बड़े राष्ट्रों पर मैं विश्वास नहीं करता, के द्वारा कोई न कोई डाइलाग का कोई न कोई वातावरण ऐसा उत्पन्न किया

Page No 70

(महारावल श्री लक्ष्मणसिंह)

जाय जिससे यह समस्या सुलझ सके तो सोने में सुहागा होगा। मैं इतना ही निवेदन करते हुए पुनः सरकार का हर तरह से समर्थन करने के लिए मेरे दल की ओर से, मेरी ओर से आश्वासन देता हूं।

श्री उपाध्यक्ष : श्री भैरोंसिंह !

श्री भैरोंसिंह (किशनपोल, जयपुर) : उपाध्यक्ष महोदय, सबसे पहले मैं बंगला देश की मुक्तिवाहिनी के उन वीर जवानों के प्रति, जिन्होंने बंगला देश की आजादी के लिए अपने सर्वस्व की कुर्बानी की है, अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करना चाहूंगा। उसके साथ ही, उपाध्यक्ष महोदय, उन लोगों को भी नहीं भूला जा सकता जिन लोगों ने पाकिस्तान के नृशंस अत्याचार के कारण अपने घर बार को छोड़ कर भारत में आकर शरण ली है। इसके अतिरिक्त जिन दस लाख व्यक्तियों को पाकिस्तान की सेना ने बंगला देश में मार दिया उनको भी आज के दिन हम नहीं भुला सकते और इस आधार पर इस प्रश्न के ऊपर कि बंगला देश आजाद होगा या नहीं–किसी भी प्रकार के अविश्वास की गुंजाइश नहीं रहती। यह हमारा दुर्भाग्य रहा है कि 25 मार्च, 1971 को, जिस समय पाकिस्तान के सैनिक तानाशाह ने बंगला देश में नर-संहार आरम्भ किया, शेख मुजीबुर्रहमान की गिरफ्तारी की उस समय जिस आजाद बंगला देश का गठन हुआ, अगर उस सरकार को मान्यता देकर उस मान्यता के आधार पर आवश्यक सैनिक सहायता देते तो न एक करोड़ शरणार्थियों की समस्या होती, न पाकिस्तान का कोई साहस होता कि वह इतना अन्याय करने के उपरान्त भी हिन्दुस्तान के मुकाबले हमला करने का सोच भी सकता। अभी माननीय मुख्य मन्त्री ने कहा कि हमारे देश की जनता का मनोबल ऊंचा है। यह निर्विवादित बात है कि हर संकट के समय इस देश का, जनता का मनोबल ऊंचा रहा है। जनता का मनोबल ऊंचा है। सेना का मनोबल ऊंचा है। सवाल यह हमारे सामने आया कि जनता और सेना का मनोबल ऊँचा रहने के अनुपात में हमारी सरकार का मनोबल कितना ऊँचा है? यदि इस सम्बन्ध में पाकिस्तान के निर्माण की भूमिका से लेकर आज तक के घटना क्रम को देखें तो स्पष्ट होता है, उपाध्यक्ष महोदय, कि 1947 के पहले पाकिस्तान के निर्माण में जो लोग भागीदार थे, द्विराष्ट्रवादी के सिद्धान्त को लेकर उन्होंने भारत की आजादी में सब प्रकार का विघ्न पैदा किया। अगर पाकिस्तान के निर्माण का प्रश्न 1947 के पहले उत्पन्न नहीं होता तो अंग्रेज 19.7 तक हिन्दुस्तान में राज्य नहीं करते उससे पहले ही हिन्दुस्तान से कूंच कर जाते। पाकिस्तान बना। पाकिस्तान बनने से लेकर आज तक का घटना क्रम यदि हम अपनी आंखों के सामने लायें तो एक ही परिणाम निकलता है कि हमारी सरकार ने पाकिस्तान के सम्बन्ध में सदा से ही निर्णय लेने में विलम्ब किया है। 1947 में जब महाराजा काश्मीर ने हिन्दुस्तान के प्रति अपनी वफादारी प्रकट की तो हम शेख अब्दुल्ला को प्रधान मंत्री बनाया जाय–इस शर्त को मनवाते रहे। इस बीच में पाकिस्तान ने आक्रमण किया और 45 हजार स्क्वायर मील भूमि पर

(श्री भैरोंसिंह)

कब्जा कर आज पाकिस्तान बैठा है। अगर उस समय काश्मीर की वेल्यू को स्वीकार कर हमारी सेनाओं को समय पर काश्मीर की रक्षा करने के लिए भेज देते तो भारत की 45 हजार स्क्वायर मील धरती आज पाकिस्तान के कब्जे में नहीं रहती। जब हमारी सेनाओं ने डट कर पाकिस्तान को इस क्षेत्र से खदेड़ना शुरू किया, उस समय युद्ध विराम का प्रस्ताव माना और संयुक्त राष्ट्र में चले गये। उसका परिणाम है कि काश्मीर की भूमि आज अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का क्रीड़ा–स्थल बना हुआ है और यह हमारे लिए स्थाई संकट बन गया है उसके बाद उपाध्यक्ष महोदय, आपको ज्ञात होगा कि वहां से शरणार्थी काफी मात्रा में आना शुरू हो गये और वो आज तक वापिस नहीं गये। उपाध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान सरकार की यह नीति रही है कि वह पाकिस्तान निर्माण के पश्चात् किसी न किसी बहाने अल्पसंख्यकों को खदेड़ता रहता है। यह उसकी हमेशा से नीति रही है। उपाध्यक्ष महोदय, आपको यह भी ध्यान होगा कि जब पाकिस्तान इस प्रकार ज्यादा संख्या में अल्पसंख्यकों को इधर खदेड़ता रहा तो उस समय के हिन्दुस्तान के गृह मन्त्री ने उसे विरोध पत्र नहीं भेजा बल्कि उसे चुनौती के रूप में स्वीकार किया और उसने हिन्दुस्तान की सेनाओं को सीमा पर तैनात कर दिया ताकि अल्पसंख्यकों को इधर पाकिस्तान द्वारा नहीं खदेड़ा जा सके। इसके परिणामस्वरूप उस वक्त के तत्कालीन पाकिस्तान के प्रधान मन्त्री श्री लियाकतअली खां दौड़े दौड़े दिल्ली आये और बाद में नेहरू लियाकत पैक्ट हुआ उसके बाद में अल्पसंख्यक आने उत्तरोत्तर बन्द हो गये। इस तरह से पाकिस्तान को सबक सिखाने से ही होगा। उपाध्यक्ष महोदय, आपको याद होगा कि हमने आज तक जब से हिन्दुस्तान आजाद हुआ है हमेशा पाकिस्तान की भेंट पूजा की है और मैं समझता हूं उपाध्यक्ष महोदय, कि आज भारत को आजाद हुए 20 साल हो चुके हैं जब भी कोई मौका आता है तो पाकिस्तान के पास कुछ न कुछ भेंट पूजा के स्वप्न में पहुंच जाता है इसके लिए भारत सरकार की निन्दा किये बिना नहीं रह सकता। आज भारत को आजाद हुए 20 साल हो गये हैं और हम अपने आपको कहते हैं कि खूब प्रगति की है लेकिन आज जो हमारे हिन्दुस्तान का काश्मीर टुकड़ा है हमारे हिस्से के एक भाग को पाकिस्तान दबाये बैठा है उपाध्यक्ष महोदय इतना हिस्सा लेकर ही पाकिस्तान सन्तुष्ट नहीं हुआ और सन् 1960 में जब सिंधु नदी के जल का समझौता हुआ तो पाकिस्तान को नहर निर्माण करने के लिए 83 करोड़ रुपया दिया गया और जो पानी हमारे हरियाना, पन्जाब और राजस्थान की जनता को नहीं मिल सका उसका कारण यह सिन्धु नदी के जल का समझौता है। हमारे पन्जाब, हरियाणा की जनता चाहे पानी से व्याकुल रहे पर पाकिस्तान को तो दस वर्ष के लिए पानी दे दिया गया। उपाध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान के निर्माण के समय भारत सरकार ने उसे 55 करोड़ रुपया उधार दिया था वो भी आज तक पाकिस्तान सरकार ने भारत सरकार को वापिस नहीं किया। उपाध्यक्ष महोदय, उस 55 करोड़ के बदले

(श्री भैरोंसिंह)

में आपको सुन कर आश्चर्य होगा कि उसने एक भी कोड़ी वापिस नहीं की। इसी प्रकार, उपाध्यक्ष महोदय, सन् 65 में भारत पाक युद्ध के समय जो पाकिस्तानी हिस्सा हमने जीता था वह भी ताशकन्द समझौता हुआ उसके अन्तर्गत उसे वापिस दिया गया। तो, उपाध्यक्ष महोदय, इसका आरम्भ से ही यही रवैया रहा है और हिन्दुस्तान सरकार इसको कुछ न कुछ भेंट पूजा चढ़ाती रही है। उपाध्यक्ष महोदय, आपको याद होगा कि जब सन् 1947 में शरणार्थी आये और उसके बाद में भारत सरकार और पाकिस्तान सरकार के बीच में समझौता हुआ उसके अनुसार पाकिस्तान को भारत सरकार को 500 करोड़ रुपये की देनदारी थी उसे भी पाकिस्तान ने आज तक हिन्दुस्तान को नहीं दिया तो, उपाध्यक्ष महोदय, अभी जो मुख्य मन्त्रीजी ने हाउस में कहा था कि पाकिस्तान हिन्दुस्तान का छोटा भाई है तो मैं उस रूप में तो नहीं लूंगा कि वह छोटा भाई है लेकिन इस रूप में छोटा भाई कह कर उसे ऐसा मानता हूँ कि भारत सरकार ने सांप को दूध पिलाया है। आज बंगला देश के एक करोड़ शरणार्थी यहां आये हुये हैं उनका खर्चा भी हमारी सरकार पर है। उपाध्यक्ष महोदय, अगर सबसे पहले ही जब पाकिस्तान सरकार ने हमारे 55 करोड़ उधार लिये रुपये वापिस नहीं दिये तो मैं तो इसे पाकिस्तान की हिन्दुस्तान को चुनौती के रूप में ही लेता है। उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करूंगा कि अगर 25 मार्च 71, को ही हिन्दुस्तान सरकार बंगला देश को मान्यता दे देती और बंगला देश को सहायता देती तो आज हमें पाकिस्तान के हमले के बारे में और शरणार्थियों के बारे मे इस विधानसभा में बैठ कर चर्चा करने की आवश्यकता नहीं होती। उपाध्यक्ष महोदय, पहले मैं स्वीकार करूंगा कि बंगला देश एक देश हैं। बंगला देश की एक आजाद सरकार है और पाकिस्तान वहां एक इन्ट्रूडर के रूप में खड़ा है। उपाध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन यह है कि सरकार को चाहिये कि पहले वह संकल्प ले कि बंगला देश एक आजाद देश है और भारत सरकार को चाहिये कि वह मुक्तिवाहिनी सेना को सहायता दे और वहां से पाकिस्तान को खदेड़े। हमें उसे वहां से खदेड़ना पड़ेगा और मुक्तिवाहिनी को किसी भी प्रकार की सहायता जो भी वह चाहे उसको सहयोग तब तक दिया जाय जब तक की बंगला देश से पाकिस्तान की फौजें नहीं हट जायं। लेकिन उपाध्यक्ष महोदय, चूंकि हमने मुक्ति वाहिनी की मदद उस वक्त नहीं की इसलिये यह सब हुआ है। तो अब प्रश्न यहां आकर खड़ा होता है, उपाध्यक्ष महोदय, कि आखिर क्या बात है कि पाकिस्तान बार बार आकर खड़ा हो जाता है। क्या कारण है कि पाकिस्तान भारत को चुनौती देता है। इसका एक कारण है वह यह है कि पाकिस्तान जानता है कि चाहे टोटल वार हो चाहे कोई और बात पाकिस्तान जानता है कि आज कल हर जगह अन्तर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप हो जायेगा और, उपाध्यक्ष महोदय, अन्तर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप हुआ है। जब सन् 65 में भारत-पाक युद्ध हुआ तो भी अन्तर्राष्ट्रीय हस्तक्षेप हुआ और ताशकन्द समझौता हुआ उससे जो हमारे जवानों ने जमीन जीती थी उसे हमने ताशकन्द समझौता के अनुसार वापिस दी जो हमारे जवानों ने अपना खून बहा कर

(श्री भैरों सिंह)

जीता था उसे हमें वापिस देना पड़ा जो हाजीपीर, टिथवाल और गाजिया के दर्रे हमारे जवानों ने अपने अधिकार में ले लिये थे और, उपाध्यक्ष महोदय, इसमें कोई शक नहीं कि उस वक्त हमारी फौजें लाहोर पर भी कब्जा कर लेती पर हमें उसे पाकिस्तान को वापिस देना पड़ा। उपाध्यक्ष महोदय, इसी तरह पाकिस्तान की फौजों ने कच्छ के अन्दर गड़बड़ की तो हमारी फौज ने उन्हें वहां से भगा दिया और फिर ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री ने बीच बचाव किया और कच्छ पेक्ट हुआ और उसके अनुसार पाकिस्तान को कच्छ एवार्ड के अनुसार कुछ भारत का भूभाग मिला और हिन्दुस्तान ने पाकिस्तान की भेंट पूजा की। और पाकिस्तान यह अच्छी तरह समझता है कि जो अगर लड़ाई होगी तो हिन्दुस्तान से वापिस मिल जायेगा और अगर हम कुछ ले लेंगे तो हम उसे वापिस देने वाले नहीं हैं। तो मेरा निवेदन यह है कि, उपाध्यक्ष महोदय, सिर्फ इस बात का ध्येय लेकर ही चलें कि अगर पाकिस्तान हमारी सीमा जो कि जैसलमेर या बाड़मेर या जहां जहां पर हमारी पाकिस्तान से सीमा लगती है केवल उसकी ही रक्षा करना नहीं बल्कि मैं तो कहूंगा कि भारत सरकार को चाहिये कि वह बंगला देश की सहायता करे, उसे मान्यता दे और उसे हर प्रकार से सहायता देकर पाकिस्तान को वहां से हमेशा के लिये खदेड़ दे। इसके अलावा मैं एक बात और निवेदन करना चाहूंगा कि आज पाकिस्तान ने जो हमारे भारतवर्ष के हिस्से को जो कि काश्मीर का हिस्सा है उसको दबाये बैठा हुआ है, उपाध्यक्ष महोदय, यह एरिया 45 हजार स्क्वायर मील है जिस पर पाकिस्तान ने अवैधानिक रूप से कब्जा कर रक्खा है उसको पाकिस्तान से वापिस लिया जाय। उपाध्यक्ष महोदय, इसके लिये मैं मुख्य मन्त्रीजी से यह निवेदन करूंगा कि इस सदन से एक प्रस्ताव पास करके भारत सरकार को भेजा जाय कि जो पाकिस्तान ने हमारे हिस्से को ले लिया है उसे वापिस लिया जाय और मैं आपसे निवेदन करूं, उपाध्यक्ष महोदय, कि भारत का हर नागरिक सैनिक की तरह इस कार्य में आपको मिलेगा।

हमारा लक्ष्य क्या है? हमारा लक्ष्य है पाकिस्तान हम पर हमला करे उससे हम अपनी सुरक्षा करना चाहते हैं। सुरक्षा का कोई लक्ष्य नहीं होता है। सुरक्षा कमजोर करती है। सुरक्षा का सबसे बड़ा लक्ष्य होता है आफेन्स। यह वर्ल्ड में माना हुआ सिद्धान्त है। "ओफेन्स इज़ दी बेस्ट डिफेन्स। लेकिन हमारी सरकार ओफेन्स के नाम से चिढ़ती है। हमारी अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बदनामी होगी यह थोड़ा हमको भय लगता है। हमारी प्रधान मन्त्री विदेशों में गई हैं, और मुख्य मंत्रीजी भी विदेशों में जाकर आये। मंत्रि-मंडल की फौज भी विदेशों में चक्कर लगा कर आयी है। पाकिस्तान में जब साइक्लोन आया उसका विदेशों से 77 करोड़ की सहायता मिली जब कि उस साइक्लोन से दस लाख व्यक्ति ही प्रभावित हुए थे। आज हिन्दुस्तान में एक करोड़ तो शरणार्थी पड़े हैं और अब तक भारत सरकार को उनकी सहायता के लिये विदेशों से 28 लाख की सहायता मिली है। साइक्लोन आया तब पाकिस्तान को विदेशी सहायता मिली और उसके बाद भी उसके खर्चे की पूर्ति विदेशी सहायता

(श्री भैरों सिंह)

से होती है लेकिन हमें विदेशों से हमारे खर्चे के मुकाबले में कुछ भी सहायता नहीं मिली, हम जितना खर्चा करते हैं उतनी भी सहायता नहीं मिली। इस स्थिति में हमें विदेशी सहायता पर निर्भर करने की जरूरत नहीं है। विदेशी लोग हिन्दुस्तान के हित को नहीं सोचते हैं वे तो अपने हित को सोचते हैं। अमेरिका सोचेगा कि पाकिस्तान को सहायता मिले वह उसके हित में है या नहीं। इसी प्रकार रूस सोचेगा कि हिन्दुस्तान को सहायता दी जाय वह उसके हित में है या नहीं। वे लोग अपने फायदे के लिये सोचते हैं न कि सहायता प्राप्त करने वाले देश के हित में। बंगला देश को पाकिस्तान ने अमेरिकी हथियारों से रौंद डाला उसकी सब ने निन्दा की लेकिन अमेरिका पर इसका कोई असर नहीं हुआ और अमेरिका उस असर की चिन्ता भी नहीं करेगा वह तो अपने हित की चिन्ता करता है। अमेरिका का हित पाकिस्तान को मदद देने में है, उसको सहायता देने में है तो वह उसको सहायता देगा और दूसरों के हित की नहीं सोचेगा। अमेरिका बिजनेस कन्ट्री है। वह पाकिस्तान को मदद करेगा क्योंकि वह उसके हित में है।

इसलिये हमारी स्वयम् की ताकत ऐसी होनी चाहिये कि कई पाकिस्तान की ताकत हमारे मुकाबले में खड़ी न रह सके। हिन्दुस्तान की जनता एक तरफ है और यदि संसार की ताकतें भी एक तरफ खड़ी हो जावेंगी तो भी उसके लिए हम तैयार हैं इस प्रकार का संकल्प लेकर चलें।

दुनियां जानती है कि हिन्दुस्तान पाकिस्तान से बड़ा है, पाकिस्तान की सेना की संख्या से बड़ी संख्या है हिन्दुस्तान की सेना की और हिन्दुस्तान ताकतवर भी ज्यादा है यह सब दुनियां जानती है। आज पाकिस्तान जिस प्रकार से सैनिक तैयारी करके चल रहा है उसके पीछे कारण हैं। कुछ देश उसको मदद कर रहे हैं। अमेरिका भी मदद कर रहा हैं और दूसरे देश भी कर रहे हैं। छोटा सा इजराइल है। 9 अरब देशों को थोड़े से अर्से में इस प्रकार हथियारों से हमला करके चुप कर दिया। अरब कन्ट्रीज कहते हैं इजराइल को खत्म कर देंगे, अरब धरती पर इजाराइल का कब्जा पसन्द नहीं करते, उसको चुनौती रोज देते हैं लेकिन इजराइल अपनी धरती पर जमा बैठा है। किसी देश ने इजराइल को बुरा कहा या भला कहा लेकिन न अमेरिका इजराइल का कुछ बिगाड़ सका और न जर्मनी ने उसको नुकसान पहुंचाया। अरबों को अपने पक्ष में करने वाले अवश्य यह कहते रहते हैं कि अरब भूमि को मुक्त करायेंगे, वह मुक्त होगी। युद्ध के पहले इजराइल एक इंच भूमि भी नहीं छोड़ने वाला है। इस दृष्टि से हमें जो अन्तर्राष्ट्रीय भय है कि हमारी बुराई होगी जब कि आज हमारी तारीफ हो रही है उसमें किसी प्रकार की कमी आवेगी, इसकी हमें चिन्ता नहीं करनी चाहिये।

उपाध्यक्ष महोदय, यह बात सही है कि 65 के मुकाबले इस समय हमारी सीमाओं पर जबर्दस्त तैयारी है। 65 में इस सदन के कई माननीय सदस्यों ने सीमावर्ती क्षेत्रों में देखा कि उस समय हमारी आर. ए. सी. लड़ रही थी उधर पाकिस्तान के रेन्जर्स लड़ रहे थे और पाकिस्तान के मुजाहिद लड़ रहे थे बाद में पाकिस्तान की फौजें आयीं। उस समय जो तैयारी थी उसके

(श्री भैरों सिंह)

मुकाबले में कहीं अधिक आज तैयारी है। उसका विश्लेषण करने की न आवश्यकता है और न ही मैं उसके लिये अधिकृत हूं। किन्तु मैं विश्वास के साथ कह सकता हूं कि पहले से इतनी जबर्दस्त तैयारी है कि हम कल्पना भी नहीं कर सकते हैं कि हमारी धरती पर पाकिस्तान के नापाक पांव रखे जा सकते हैं। जनता का मनोबल ऊंचा है इसमें भी कोई शक नहीं है।

जहां तक एडमिनिस्ट्रेशन का सवाल है मुख्य मंत्री जी ने कहा कि हम सब तरह से सजग हैं। समाचार पत्रों में हमने देखा कि पाकिस्तान राजस्थान की सीमा पर जनरल टिक्का खां को भेज रहा है और जनरल टिक्का खां ने यह कमान सम्हाल ली है तो हमारे मुख्य मन्त्री जी भी, उपाध्यक्ष महोदय, पीछे नहीं रहे हैं। हमने भी चार सेक्टर कमाण्डरों की नियुक्ति की है। उधर टिक्का खां की बात है तो इधर हमारे राम–किशोर जी भी किसी प्रकार से कम नहीं हैं, फिर पूनमचन्दजो विश्नोई, ये भी कम नहीं हैं, शिवचरणजी माथुर और परसरामजी मदेरना। एक के मुकाबले चार हैं।

एक माननीय सदस्य : वह फौजी कमाण्डर हैं ?

श्री भैरोंसिंह : सेक्टर कमाण्डर मानता हूं। वह प्रमोशन दे देंगे मैं कह नहीं सकता अब तक तो सेक्टर कमाण्डर के रूप में काम कर रहे हैं।

मैं यही मानने के लिये तैयार हूं कि सब प्रकार की पहले से अधिक अच्छी व्यवस्था की गई है। पहले के मुकाबले सिविल डिफेन्स की भी तैयारियां अच्छी हैं। मुझे स्वीकार करने में आपत्ति नहीं होगी कि प्रशासनिक दृष्टि से भी पहले कमियां रहीं उनको दूर करने की चेष्टा की लेकिन मैंने जैसी बुनियाद में एक बात कही कि पाकिस्तान हम पर बार बार हमला करने की चेष्टा क्यों करता है यह जानते हुए कि हिन्दुस्तान की संख्या ज्यादा है, उसके रिसोर्सेज ज्यादा है यह जानते हुए भी कि हिन्दुस्तान की मिलिट्री की स्ट्रेंथ ज्यादा हैं उसके बावजूद वह हमला क्यों करता है ? उसका कारण मेरी जानकारी के अनुसार यह है कि पाकिस्तान यह समझ कर बैठा है कि हिन्दुस्तान में बहुत लोग बैठे है जो पाकिस्तान के समर्थक हैं जो उसको गुप्त सूचनायें देते हैं जो पाकिस्तान के साथ हमदर्दी रखते हैं। पाकिस्तान इस बात से अपने हौसले बुलन्द रखता है कि भारत की सीमा पर सेना कहां कहां है, हवाई अड्डे कहां कहां पर हैं, सामरिक सड़कें कहां कहां पर हैं, पानी के रिजरवायर कहां कहां हैं, वीक स्पोट्स भारत की सुरक्षा की दृष्टि से कौन कौन से है, मैं समझता हूं, पाकिस्तान को इसकी पूरी जानकारी है। और प्रमाण में इतना ही बताना चाहता हूं कि पिछली बार अगस्त सितम्बर और अक्टूबर के महीने में काफी गुप्तचर सीमा पर पकड़े गये, उनके बयान हुए और सामग्री मिली। हिन्दुस्तान के उनके पास से नक्शे मिले, हिन्दुस्तान की सेना कहां कहां है, उन स्थानों की पूरी जानकारी मिली, हिन्दुस्तान में किस जगह रास्ते बने हुए हैं, कौनसी सड़कें हैं, उनके नक्शे उनके पास से मिले। एक गुप्तचर के पास एक किताब भी मिली "सी ओ राजस्थान" इसमें सारे राजस्थान की डिटेल्स बताई हुई थी और डिटेल्स देने के

(श्री भैरों सिंह)
बाद उसको हिन्दुस्तान में खोज करने के लिये भेजा कि तुझे हैदराबाद में ट्रेनिंग दी है उसके मुकाबले में प्रेक्टिकल एक्सपीरियेन्स करके आओ। इस प्रकार के गुप्तचर काफी संख्या में पकड़े गये। मैं सरकारी सूत्रों से जानना चाहूंगा कि पाकिस्तान में भी भारत गुप्तचर गिरफ्तार किये गये हैं क्या ? आज तक कोई भारत का गुप्तचर पकड़ा नहीं गया। इसका एक मतलब यह है कि हमने गुप्तचर नहीं भेजे।

श्री सुरेन्द्र व्यास : वह बहुत होशियार हैं।

श्री भैरोंसिंह : आप भी जानते हैं कि कितने होशियार हैं। वहां कोई गुप्तचर नहीं है। यह ठीक है होशियारी के कारण नहीं पकड़े गये।

श्री मदनसिंह : होशियार हैं इसलिये बिना पैसे कमर तोड़ दी पाकिस्तान की।

श्री भैरोंसिंह : उसका प्रमाण-पत्र भी पाकिस्तान को भेज देना चाहिये।

हमारे क्षेत्र में पांच गुप्तचर गिरफ्तार होते हैं तो पहले इस समस्या पर विचार करना पड़ेगा कि हमारे गुप्तचर प्रवेश नहीं कर सकते हैं तो उनके गुप्तचर काफी संख्या में यहां प्रवेश पाते हैं। मैं इस सदन को याद दिलाना चाहूंगा खास तौर से माननीय राजस्व मंत्रीजी को जो उस क्षेत्र का चप्पा चप्पा जानते हैं, 65 के युद्ध के समय जैसलमेर में तनोट की ओर बढ़े और सिख लाइट इन्फन्ट्री ने कैम्प लगाया तब माननीय सदस्य गये उसकी जानकारी उसी समय मिली उसको और पाकिस्तान इस हमले को झेल गया। इसका परिणाम है कि हम भटवालों और बाकू के क्षेत्र से जहां पाकिस्तान को निकालना चाहते थे, नहीं निकाल सके।

राजस्थान के राजस्व मन्त्रीजी को यह भी अच्छी तरह से जानकारी होगी कि उत्तरलाई के पास हमारी सेना को उत्तरलाई के पास फंसी देखकर पाकिस्तान को सूचना मिली और उत्तरलाई के हवाई अड्डे का चक्कर लगाकर पाकिस्तान के हवाई जहाजों ने बम्बार्डमेन्ट किया। अगर गुप्तचर यह सूचना पाकिस्तान को नहीं देते तो हमारी सेना जो बोर्डर पर थी उसका एम्यूनिशन को जला देना सम्भव नहीं था।

तो सरकार की ओर से सदन से निवेदन करूंगा कि समस्या पर विचार करने से पहले दो बातों पर विचार करना पड़ेगा। एक पाकिस्तान की राजनैतिक स्थिति और दूसरी, किस प्रकार के तत्व हमारे यहां काम कर रहे हैं और उनका क्या हमारे लोगों से सम्बन्ध है।

अगर यह जानकारी कर ले तो, उपाध्यक्ष महोदय, इस समस्या के निदान में हमें सहायता मिलेगी।

पाकिस्तान में पीर पगारों हैं, जिनकी चर्चा आये दिन अखबारों में होती है। उन पीर पगारों की बारह चौकियां हैं पाकिस्तान में 11 और एक राजस्थान में है। उस एक चौकी के खलीफा हमारे हिन्दुस्तान के नागरिक श्री गाजी फकीर हैं। पीर पगारों की व्यवस्था के अनुसार 12 महीनों में एक महीना का जो खर्चा पीर पगारों का एक हाउस करांची में है उसका है उसे पूरा करने का इन्तजाम करना पड़ता है और उस चौकी में जो गाजी फकीर हैं उसकी दरगाह है

(श्री भैरोंसिंह)

उसका प्रबन्ध पूरा ही इनको करना पड़ता है और उस हाउस पर उनको पहरा भी देना पड़ता है। यह मैं नहीं कहना चाहता। माननीय मुख्य मंत्री स्वयं अपनी पुलिस का रिकार्ड देख लें। उनको इन सब बातों का पता लग जावेगा।

बिना पासपोर्ट के हजारों की संख्या में आदमी पीर पगारो के कोट पर और करांची के हाउस पर पहरा देते हैं उसका खर्चा वे स्वयं वहन करते हैं और उसका सारा खर्चा भारत के सीमावर्ती इलाकों के लोगों से इकट्ठा किया जाता है। पीर पगारों का खलीफा मुहम्मद आकिन पाकिस्तान के कोट का निवासी है और मुजाहिद फोर्सेज का कमाण्डर है। पाकिस्तान की सरकार ने मोहम्मद आकिन को मुजाहिदों का कमाण्डर नियुक्त किया है। इससे आप अनुमान लगा सकेंगे कि पीर पगारो के प्रति लोगों का अन्ध विश्वास कितना है। आज पीर पगारों के लिये पैसा जाता है, ऊंट और घोड़े आदि जानवर भेजे जाते हैं।

पीर पगारों के साथ मोहम्मद अयूब ने सन् 64 में पाकिस्तान के सिन्ध इलाके में सक्खर डिस्ट्रिक्ट में दौरा किया। सरकार के प्रयत्नों के बावजूद जनता ने अयूब के ही नारे नहीं लगाये पीर पगारों के भी लगाये।

जिस समय पीर पगारों की यात्रा होती है लोग उसके दर्शन करने जाते हैं। धर्म में पागल होकर औरतें भेंट देती हैं। भेंट में कान की बालियां निकाल निकाल कर नहीं देतीं, बल्कि कानों में से खींच खींचकर पीर पगारो पर फेंकती हैं। आज इस प्रकार का धार्मिक विश्वास उसके प्रति है।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा (बीकानेर): यह तो तारीफ की बात है। अपने अपने धर्म में सभी को विश्वास होता है।

श्री भैरोंसिंह: मैं भी वही कह रहा हूं। तारीफ ही कर रहा हूं। पर आप पीर पगारो नहीं हैं। सुनते नहीं हैं। कुछ दिनों में बेकार हो जावेंगे।

मैं उनकी इस धार्मिक श्रद्धा और विश्वास के आधार पर कोई किसी प्रकार की चर्चा नहीं करना चाहता। मैं यह इस लिये बताना चाहता हूं कि पीर पगारो क्या है। पीर के पिताजी शाह सिकन्दर अली जब सिन्ध में आये तो उनका छोटा लड़का उनके साथ मोटर में बैठ गया। उनके अनुयायियों ने उस लड़के को मोटर में से खींचकर नीचे उतार लिया और जान से मार दिया यह कह कर कि पीर के बराबर कोई नहीं बैठ सकता। न मिनिस्टर बैठ सकता है न कोई और, और बिना हाथ जोड़े भी कोई उनके सामने खड़ा नहीं रह सकता। यह तो है पीर पगारों की स्थिति और उनके अनुयायियों का हाल और अन्ध विश्वास।

इस सदन के कई माननीय सदस्य जानते होंगे कि सांगोर जिले में पीर के इलाके में हूरों की लड़ाई हुई थी। उस लड़ाई में पीर पगारो के अनुयायियों ने हूरों के प्रधान को पकड़ कर फांसी दे दी और हूरों को पकड़ा दिया। फिर जो हूर निकले तो पाकिस्तान के अन्दरूनी हिस्सों में नहीं गये। राजस्थान के बोर्डर पर बाड़मेर की सीमा पर आकर बस गये। आज भी वहां पीर की मान्यता है।

(श्री भैरोंसिंह)

इसलिये निवेदन करूंगा कि अगर इस सीमा पर रहने वाले लोगों के लिये पीर के आदेश पाकिस्तान के समर्थन में आते हैं तो उस पर चिन्ता करनी पड़ेगी । इसकी राजनैतिक आधारों पर अवहेलना नहीं की जा सकती ।

श्री खेतसिंह (शेरगढ़) : चुनावों के समय आपने भी उससे आदेश लिया था । मध्यावधि चुनावों में ।

श्री भैरोंसिंह : माननीय खेतसिंह जी यह आप ही कह सकते हैं । कोई बुद्धिमान आदमी, आप में तो कोई है नहीं, पर कोई भी बुद्धिमान आदमी इसके लिये तो विचार ही नहीं कर सकता कि मैं पीर के पास जा सकता हूं ।

(श्री निरंजननाथ आचार्य, अध्यक्ष पदासीन)

और पीर मेरे लिये ऐसा फतवा दे सकता है । मैं एक बात और बताऊं । अखबारों में अगर यह आ जावे किसी व्यक्ति के लिये कि उसका बाप यह नहीं है, तो क्या इसका कन्ट्राडिक्शन देना पड़ेगा कि यह मेरा बाप नहीं है ।

श्री कृष्णकुमार गोयल : अलवर वाले यह कह दें कि भैरोंसिहजी शेखावत को यस फतवा मिल सकता तो और बात है ।

श्री रामानन्द अग्रवाल : यह बात तो दुनिया में सभी जानते हैं कि जनसंघ और अकाली दल ने मिलकर मिनिस्ट्री बनाई ।

श्री भैरोंसिह : यह सही है जैसे केरल में कम्यूनिस्ट और मुस्लिम लीगी एक ही घेरे में आ गये । एक थैली के चट्टे बट्टे हो गये ।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : यह तो एण्टी डोट है ।

श्री भैरोंसिह : तो यह मैं इसलिये निवेदन करना चाहता हूं कि ऐसी स्थिति में खेतसिंहजी से मैं निवेदन करना चाहता हूं कि कभी तो बुद्धि से काम ले लिया करो । नहीं है आपके खुद के पास तो गंगारामजी और हादी से उधार ले लो । असलियत का पता लग जावेगा ।

इसलिये निवेदन करना चाहता था, उपाध्यक्ष महोदय, कि पीर पगारो के ये शिष्य हैं और इस बात के पुख्ता और विश्वसनीय प्रमाण हैं । 65 की लड़ाई में कोई हिन्दुस्तान का नागरिक पाकिस्तान नहीं गया । पाकिस्तान के ही आये । तो फिर पीर पगारो के मुरीद आये और पीर पगारो को मानने वाले 18 हजार लोग पाकिस्तान गये । अध्यक्ष महोदय, उनके बारे में निवेदन करना चाहूंगा कि पीर पगारों ने अपने इलाके में तीन लाख एकड़ भूमि हिन्दुस्तान से जो मुरीद उसके भागकर पाकिस्तान गये या जावेंगे उनके लिए सुरक्षित रखी है । वह तीन लाख एकड़ जमीन घाट बैराज के पास है । यहां से आने जाने वालों को वहां बसाया जाता है जितने भी वहां बसाये जा सकें । उनको काफी संख्या में वहां बसाया गया, और यहां से गये हुए 18 हजार के लगभग मुरीदों को वहां गुरिल्ला वार की ट्रेनिंग उनको दी गई । मुख्य मन्त्री महोदय ने भी यहां कहा है कि मुजाहिदों को हर प्रकार की शिक्षा युद्ध की वहां दी गई है । मैं यह सदन की जानकारी में लाना चाहूंगा कि उन मुजाहिदों में 18

(श्री भैरोंसिंह)

हजार ये लोग भी हैं जो 65 की लड़ाई में हिन्दुस्तान से भागकर पाकिस्तान में चले गये थे और ये वे ही 18 हजार मुजाहिद हैं ट्रेनिंग पाये हुए गुरिल्ला युद्ध की पाकिस्तान की सरकार से पीर पगारो की छत्र छाया में, जिनको हिन्दुस्तान की संसद के सदस्य श्री अमृतलाल नाहटा वापिस हिन्दुस्तान में उनके पुराने स्थानों पर बसाना चाहते हैं।

मैं भारत सरकार से, राजस्थान की सरकार से और इस सदन के सदस्यों से यह पूछना चाहता हूं कि क्या कोई यह कहने को तैयार है कि जो 18 हजार आदमी गुरिल्ला युद्ध में ट्रेंड होकर हिन्दुस्तान पर हमला करने के लिए तैयार बैठे हैं, उनमें से एक को भी हिन्दुस्तान में बसा दिया जावे ? मैं समझता हूं कि इस देश का देशभक्त नागरिक तो कोई तैयार नहीं होगा यह कहने के लिए।

इन 18 हजार आदमियों ने पाकिस्तान में युद्ध की ट्रेनिंग ली, गुरील्ला युद्ध की ट्रेनिंग ली और जिनमें से पहले हिन्दुस्तान में रहते हुए अपने सीमावर्ती गांवों को पाकिस्तान की फौजों से मिलकर जलाया, उन गांवों के निवासियों को लूटा, बरबाद किया। ये वे ही लोग हैं जिन्होंने पाकिस्तानी फौजों के अगुआ बन कर 65 के युद्ध में यहां लाये और कई गांवों को लुटवाया और काफी जमीन पर कब्जा करवाया क्योंकि उन लोगों को यहां के चप्पे चप्पे जमीन की जानकारी थी।

आज इसी प्रकार के पीर पगारों के मुरीद हजारों की संख्या में हिन्दुस्तान की सीमा पर बैठे हैं जो पीर के इशारे पर कुछ भी करने को, कैसी भी कुर्बानी करने को तैयार बैठे हैं।

मैं निवेदन करूंगा, मैं व्यक्तिगत मामलों में किसी के जाना नहीं चाहता केवल इतना ही कहना चाहूंगा कि सरकार के पास अपने रिकार्ड पड़े हैं। सरकार उसे एक बार शुरू से आखिर तक देख ले। एक आदमी लगातार सन् 52 से 71 तक पाकिस्तान को लगातार यहां की गुप्त से गुप्त बातों तक की खबरें देता रहा और देता आ रहा है। इस मामले में जिलाधीश कार्यालय के कागज, एस. पी. के कागज पहले के एस. पी. जितने पहले गये सभी, श्री वास्तव ही नहीं जितने गये सभी ने स्पष्ट सरकार को सूचना दी है, ये सब प्रमाण हैं पर राजनैतिक आधार पर उस व्यक्ति के खिलाफ इतना सब होने के बाद भी सरकार एक्शन लेना नहीं चाहती। यह शर्मनाक बात है। देश के साथ गद्दारी की बात है।

मैं माननीय मन्त्रीजी से, मुख्य मन्त्रीजी से कहना चाहूंगा, मैं अभी बाड़मेर गया था आपका इरादा है या नहीं, यह तो मैं नहीं जानता, इरादा हो तो भी आपत्ति नहीं, आज कुछ तत्व वहां ऐसे हैं जो यह प्रचार करके जिन्दा रहना चाहते हैं कि सन 72 के चुनावों में राजस्थान के मुख्य मन्त्री जी जोधपुर से चुनाव नहीं लड़कर चौहटन से चुनाव लड़ना चाहते हैं। मैं समझता हूं कि मैंने आपको पत्र लिखने का भी विचार किया था और आज आप इन्कार कर देंगे तो कम से कम वह तत्व जो आज सिर उठाने की कोशिश कर रहे हैं वह कभी नहीं उठायेंगे।

श्री बरकतुल्ला खां : मैं तो बाड़मेर से नहीं लड़ रहा हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : आपकी पार्टी को जोधपुर की सीट पर लड़ना होगा, यही कहना चाहते हैं।

श्री भैरोंसिंह : कम्युनिस्ट पार्टी के महामंत्री श्री एच. के. व्यास लड़े तो उनकी जमानत तो कम से कम जोधपुर में जब्त करा देंगे।

श्री रामानन्द अग्रवाल : आज कल वे महामंत्री नहीं हैं।

श्री भैरोंसिंह : तो क्या आप हैं ? जमानत जब्त होगी तब बनेंगे ? आप खड़े होकर तो देखें जमानत जब्त होती है या नहीं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : वह तो भैरोंसिंह शेखावत खड़े हों तो भी होगी।

श्री भैरोंसिंह : भैरोंसिंह के खिलाफ भी उनकी जमानत जब्त हुई थी और यहीं जयपुर में हुई तो इस बीच में तो मत पड़ो रामानन्दजी।

मैं यह कहना चाहता हूं अध्यक्ष महोदय, कि ऐसी स्थिति में हमें राजस्थान में गुप्त चरों की कार्यवाहियों के ऊपर पूरी निगरानी रखनी पड़ेगी। आज हम कई दिनों से मांग करते आ रहे हैं। राजस्थान के राज्यपाल महोदय ने इसकी मांग की, राजस्थान की सरकार ने बहुत पहले इस बात की मांग की थी कि सीमावर्ती क्षेत्र की 10 मील की पटरी को खाली कराया जाये। अध्यक्ष महोदय, मैंने उस सम्बन्ध में जानकारी की है कि वहां पर केवल 5 हजार आदमी ही बसे हुए हैं और उन 5 हजार आदमियों को उस जगह से शिफ्ट करना पड़ेगा। आज हमारे फौजी अधिकारी भी इस बात की मांग करते हैं लेकिन सिविल एडमिनिस्ट्रेशन एग्री नहीं करता। बरकत साहब ने कहा था कि हम जो चाहें मांग मंजूर कर लेंगे लेकिन मैं कहता हूं कि हिन्दुस्तान की फौज ने कहा कि यह 10 मील की पटरी को खाली कराया जाय लेकिन हमारी सरकार इस काम के अन्दर रोड़े अटका रही है। मैं नहीं कहता कि जिस प्रकार की हमारी सीमाओं पर चौकियां बनेंगी वहां पर उनके रहते हुए हमारे सारे राष्ट्र की लूपहोल को लेने की कोशिश की है यह कार्यवाही केवल इसलिये चाहते हैं कि ताकि हमारे यहां पर गुप्तचर न जा सकें। वहां पर अधिकारी केवल एक ही बात कहते हैं कि हमारे विभाग में एक एप्रीहैन्शन बना रहता है कि हम किस जगह मोर्चा लगा रहे हैं उस चीज को जानकारी पाकिस्तान को तो नहीं मिल जायेगी, हमें इस बात का एप्रीहैन्शन बना रहता है और इसलिए हम असली स्थान का इरादा बनाते रहते हैं लेकिन मोर्चा नहीं बना सकते हैं क्योंकि हमारी सब गुप्त बातें मालूम होती रहती हैं। मैं समझता हूं कि सरकार को इसके बारे में विचार करना पड़ेगा और मैं मुख्य मंत्री जी से कहना चाहूंगा कि इसमें हिन्दु और मुसलमान का भेदभाव नहीं है। वहां पर हिन्दु और मुसलमान दोनों ही बसे हुए हैं और यदि दोनों ही जातियों का नुकसान होगा तो हिन्दुओं का भी होगा और मुसलमानों का भी होगा। लेकिन देश की सुरक्षा के नाम पर, देश के प्रति कुर्बानी करने के नाम

(श्री भैरोंसिंह)

पर यदि 6 माह भी लगें और दूसरी जगह चले जायें तो राजस्थान की सारी जनता उनके खर्च की व्यवस्था करेगी और इस संकट को जो उनके सामने आ सकता है उसे राजस्थान की जनता को अपने ऊपर लेकर फौज के लिए रास्ता साफ करना चाहिए। मैं अध्यक्ष महोदय, सरकार से मांग करूंगा कि इस प्रश्न के ऊपर राजस्थान सरकार गम्भीरता से विचार करे।

अध्यक्ष महोदय, माननीय मुख्य मंत्री जी ने कहा कि मेरे पास जितने हथियार हैं वह सारे जनता में बांट दिये जायें। हथियार बंट रहे हैं लेकिन हथियार वापिस भी लिये जा रहे हैं और मुख्य मंत्री जी जरा ध्यान से सुनियें कि हथियार जिन लोगों से वापिस लिये जा रहे हैं मैं नाम नहीं लेना चाहता लेकिन एक जाति विशेष के लोगों से हथियार वापिस लिये जा रहे हैं जो कि जन्मजात से प्रशिक्षित हैं, जो हथियार चलाने में माहिर हैं और जिन्होंने 65 की लड़ाई में सब तरह की कुर्बानियां कीं। उनके हाथों में हथियार देकर केवल राजनीति के आधार पर उनसे हथियार वापिस लिये जा रहे हैं। मैं आपको फिर भी कहता हूं कि आप हथियार ले लें यह चिन्ता की बात नहीं है, आप चाहे जैसे उनको परेशान करें इसकी चिन्ता नहीं है लेकिन जिन लोगों से हथियार लिये वह लोग आज भी देश के लिए हर तरह की कुर्बानी करने के लिए तैयार हैं। मैं तो सरकार का जो दायरा है सोचने का, विचार करने का जो दायरा है उसकी ओर निवेदन करना चाहता हूं और यह हथियार वापिस क्यों लिये जा रहे हैं, ये उनके इशारे पर वापिस लिये जा रहे हैं जो कि हिन्दुस्तान के प्रति वफादार नहीं हैं, जो कि देश के प्रति निष्ठा नहीं रखते हैं, जो कि पाकिस्तान में मकान बनाकर बैठे हैं, जो कि पाकिस्तान में अपनी जायदाद लेकर बैठे हैं। (श्री अध्यक्ष से) क्या कहा आपने ?

श्री अध्यक्ष : मैंने बीच में कुछ नहीं कहा। आप थोड़ा सा विश्राम लेना चाहें तो मैं दे सकता हूं।

श्री भैरोंसिंह : मुख्य मंत्री जी लाहौर पहुंच रहे हैं और मैं पेशावर जा रहा हूं।

श्री अध्यक्ष : आपके दल में से आप ही बोलेंगे ?

श्री भैरोंसिंह : हां, मेरे दल से मैं ही बोलूंगा।

अब उस स्थिति में, अध्यक्ष महोदय, मैं मुख्य मंत्री जी से निवेदन करूंगा कि जिन लोगों को पहले हथियार दिये थे, बिना जाति पांति के भेदभाव के दिये थे उनके ऊपर यह आरोप लगाना कि हथियार तो ले जाओ लेकिन हथियारों का दुरुपयोग करेंगे। मैं कहना चाहूंगा कि हथियार में दोष नहीं होता बल्कि हथियार के चलाने वालों में दोष होता है। अगर किसी ने कोई लक्ष्य बना लिया तो वह हथियार कहीं से भी प्राप्त कर लेगा। अगर आप सन्देह की दृष्टि से देखेंगे, हथियार वापिस लेंगे, उनको खुराफात करनी है तो आप हथियार दो या नहीं लेकिन वह कभी भी क्राइम कर देगा। आज उनके सामने क्राइम करने का सवाल नहीं है, आज उनके सामने डिफेन्स का सवाल है। डिफेन्स के मामलों के बारे में राजस्व मंत्री जी आप बाड़मेर

(श्री भैरोंसिह)

जायें इसकी चिन्ता नहीं लेकिन राजनीति के आधार पर हथियारों को आप मत छिनवाओ। अध्यक्ष महोदय, मैं सरकार को चुनौती देकर कहता हूं कि बाड़मेर और जैसलमेर में 65 के अन्दर जिन लोगों में हथियार बांटे गये आप एक शिकायत भी रख दें कि उन्होंने उन हथियारों का दुरुपयोग किया है। एक भी उदाहरण आप बता दें तो मैं मान जाऊंगा। आज स्मगलिंग की बात करें कि बोर्डर पर स्मगलिंग होता है लेकिन हथियार लेकर लोग स्मगलिंग करेंगे यह बात भी नहीं हो सकती। आज स्मगलिंग कौन करता है सारा सदन जानता है। स्मगलर के साथ गाड़ियों में बैठकर जाते हैं और जनता का मनोबल ऊंचा करने कौन जाता है। मैं श्री नाहटा का जिक्र नहीं करता, वह स्मगलर तो कम से कम नहीं हैं। मैं कहना चाहूंगा कि जैसलमेर के प्रमुख और जैसलमेर पचायत समिति के प्रधान इनको गाड़ियों में लेकर घूमे और वहां जाकर भाषण दें कि तस्कर व्यापार राष्ट्रद्रोह है, तो मैं कहूंगा कि लोग मजाक करेंगे आपकी और भाषण देने वाले की। राजस्व मंत्री जी जानते हैं और नाम बताने की आवश्यकता नहीं है···

श्री परसराम मदेरणा : मेरा क्या मजाक बनायेंगे मैं बात नहीं समझा।

श्री मदनसिंह : मैं समझाऊंगा आप दोनों बोर्डर पर साथ साथ घूमे थे।

श्री परसराम मदेरणा : तस्करी वाली बात नहीं समझा।

श्री भैरोंसिह : मैं समझा कि आप रामकिशोर जी पालीवाल को जानते हैं, गोपाल सिंह को भी जानते हैं और उनको साथ लेकर आप भाषण दें कि तस्कर व्यापार मत करो यह राष्ट्रद्रोह है तो लोग क्या समझेंगे ? इतना सा ही कहना चाहता हूं। तस्कर व्यापार करने वाला कहीं से भी हथियार प्राप्त करेगा और वह तस्कर व्यापार कर सकता है। इसलिए तस्कर व्यापार के नाम पर लोगों से हथियार छीने जायें इसकी आवश्यकता नहीं है।

अध्यक्ष महोदय, मैं यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि मैंने सिविल डिफेंस की कमेटी में यह स्पष्ट रूप से निवेदन किया कि चाहे किसी प्रकार के भी राजनैतिक मतभेद हों, किसी प्रकार की कोई भी स्थिति क्यों न हो हम सब लोग पाकिस्तान के मुकाबले में एक हैं। जो भी, आप जिस आदमी से भी जिस प्रकार की कुर्बानी चाहेंगे, जिस प्रकार की कुर्बानी की आवश्यकता होगी वह कुर्बानी की जायगी। इस आधार पर मैंने निवेदन किया माननीय अध्यक्ष महोदय, कि जनता का मनोबल ऊंचा करना है तो कम से कम बोर्डर डिस्ट्रिक्ट्स में तो प्रशासन ऐसा होना चाहिये कि लोगों को तसल्ली हो जाय कि यह सरकार किसी भी सरकार से प्रशासनिक आधार पर हमारी समस्याओं के निदान को इग्नोर नहीं करना चाहती है। अध्यक्ष महोदय, सदन जानता है कि बाड़मेर और जैसलमेर जिलों में सात आठ वर्ष से अकाल पड़ता रहा है। लोगों के पास टोपधारी बन्दूके हैं उनका हर साल लाइसेंस रिन्यू कराना पड़ता है। अकाल के कारण लाइसेंस रिन्यू नहीं हुए। हथियार

(श्री भेरोंसिंह)

उनके पास पड़े हैं उनका रिन्यूअल कराना पड़ेगा। अब रिन्यूअल कराते हैं तो पचास रुपये का एक हथियार पर जुर्माना होगा। बन्दूक की कीमत दस रुपये और जुर्माना पचास रुपये। लोग हथियार होते हुए रिन्यू नहीं करा पाते हैं मैं सरकार से कहना चाहूंगा कि जिस प्रकार से सन् 65 में उस समय तत्कालीन सरकार ने न केवल हथियारों को रिन्यूअल किया बल्कि जिनके पास प्रोहिबिटेड बोर के हथियार जो बरसों अण्डर ग्राउण्ड और अन-रजिस्टर्ड पडे हुए थे उनको भी लाइसेंस दिये। हथियार जमीन से बाहर निकले। सरकार ने बाद में उनको जब्त कर लिया, सरकार उस स्थिति में आ गई, मुझे उस सम्बन्ध में चर्चा नहीं करना है, लेकिन आज मैं राजस्थान सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि जिनके हथियार रिन्यू नहीं हुए हैं उनके लाईसेंस बिना जुर्माने के रिन्यू करें। जिनके पास कारतूसी बन्दूकें हैं उनको सस्ती दर पर कारतूस उपलब्ध कराए।

इसके साथ साथ, माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि वहां पर भयंकर भ्रष्टाचार है। आज के दिन बाड़मेर से आने वाले सदस्य कह रहे हैं कि बाड़मेर में भयंकर अकाल है। बाड़मेर के कुछ क्षेत्र में अकाल है उसमें मुझे मतभेद नहीं है। लेकिन मैं तो यह निवेदन करना चाहता हूं कि सदन यह जानकर ताज्जुब करेगा कि अकाल को तो पटका भगवान ने और सरकारी कर्मचारी अकाल बेच रहे हैं। और कोई चीज बिके या नहीं लेकिन बाड़मेर में अकाल बिक रहा है। रेवेन्यू आफिसर घूम घूम कर कह रहे हैं कि जिसको अकाल खुलवाना हो तो हर घर के हिसाब से पांच पांच रुपये लाओ और इस प्रकार पांच पांच सौ रुपये लेकर गिरदावरी में अकाल लिखा जाता है। मैं सरकार से कहना चाहूंगा कि सिविल डिफेंस में जनता कुर्बानी करेगी, पाकिस्तान का मुकाबला करने में जनता कुर्बानी करेगी लेकिन इन भ्रष्टाचारियों से जनता को छुड़ावो। इन भ्रष्टाचारियों से भी मैं निवेदन करना चाहूंगा कि उमर भर से रिश्वत खाते आए हो, इस पाकिस्तान की लड़ाई के मौके पर तो इस चीज को थोड़े से दिनों के लिए स्थगित कर दो। यह सरकार यहीं पर रहने वाली है, फिर खा लेना लेकिन अभी तो कुछ दिनों के लिए रिश्वत छोड़ दो। चौहटन का बी.डी.ओ. चौहटन का थानेदार, चौहटन के दूसरे अधिकारी जनता का खून चूस रहे हैं। वहां का बी.डी.ओ. पाकिस्तानी तत्वों से मिला हुआ है। आज वहां पर बी.डी.ओ. की जीप में पाकिस्तान के गुप्तचर यात्रा करते हैं। पाकिस्तान के गुप्तचर उसके साथ मिल कर हिंदुस्तान के समाचार लिखकर पाकिस्तान भेज रहे हैं। लेकिन हादी साहब चाहते हैं कि बी.डी.ओ. वही रहना चाहिए, तहसीलदार वही रहना चाहिए और कोपरेटिव बैंक का अकाउन्टेंट है वह भी वही रहे ताकि एक आदमी तीन तीन जीपों में बैठ कर घूम सके। तहसील की जीप उनके डिस्पोजल पर रहे बी. डी. ओ. की जीप उनके डिस्पोजल पर रहे और कोआपरेटिव की जीप उनके डिस्पोजल पर रहे और ये सारी जीपें उनके डिस्पोजल पर हों। मैं सरकार से कहना चाहूंगा कि

(श्री भैरोंसिंह)

जनता का सहयोग लेना है तो पहले इन भ्रष्टाचारियों को वहां से निकालो। बालोतरा में लूट मच रही है। पाकिस्तान तो लूटने की तैयारी कर ही रहा है लेकिन ये हिन्दुस्तान के प्रशासनिक अधिकारी उस लूटमार का हिस्सा पहले ही ले लेना चाहते हैं ताकि पाकिस्तान किसी भी प्रकार से कोई चीज नहीं ले जा सके। आप ट्रांसफर नहीं कर सकते हैं। मुख्य मंत्रीजी से कहा गया तो वे कहते हैं कि मैं ट्रांसफर सोच समझ कर करूंगा। ट्रांसफर्स के बारे में बड़ी घोषणाएं की गई। यहां पर 26 पुलिस सुपरिन्टेंडेंट्स के ट्रांसफर किए गए। मैं मुख्य मंत्रीजी से पूछना चाहूंगा कि वह ट्रांसफर सोच समझ कर किए थे या नहीं या सुबह नींद में उठ कर उन पर दस्तखत कर दिए थे। इतने सारे ट्रांसफर्स में से 2—3 को छोड़कर बाकी के सब कैंसिल हो गए। बाड़मेर के एस. पी. को निकलवाया, केवल इसलिए कि वह पाकिस्तान के गुप्तचरों पर कण्ट्रोल रख कर सरकार को समय समय पर सूचना देता था? बाड़मेर के एस. पी. का ट्रांसफर कैंसिल हुआ। 26 में से 23 के ट्रांसफर कैंसिल हो गए। पुलिस आफिसर्स के सामने एक नक्शा रखा गया। उनसे कहा गया कि ट्रांसफर कैंसिल उसी हालत में होंगे जब हमारा हुकुम मानो। सरकार का हुकुम नहीं हमारा जो लोकल नेता है उन नेताओं का हुकुम मानो। जब तक लोकल नेता सिफारिश नहीं करेगा ट्रांसफर कैंसिल नहीं होगा। तो मैं यह कहना चाहता हूं कि यह वर्तमान सरकार तो आप तो उस पुराने वाली सरकारों से भी आगे बढ़ गए आज जिस प्रकार से लोगों के ट्रांसफर हुए और बाद में कैंसिल हुए उनका उदाहरण नहीं मिल सकता है। हम लोगों ने भी कहा कि इस बाडमेर के एस.पी. को रहने दो...

श्री मोहनलाल मोदी (नीम का थाना) : लोकल नेताओं में क्या जनरलों सबको ले लिया ?

श्री मदनसिंह (दांतारामगढ़) : आप तो सबसे पहले नेता हैं जो पोलिटिकल बेसिस पर सबसे ज्यादा ट्रांसफर करवाते हैं।

श्री मोहनलाल मोदी : यह तो आप भी जानते हैं।

श्री मदनसिंह : आज तो आम जनता आपका ट्रांसफर सबसे पहले करवाना चाहती है।

श्री मोहनलाल मोदी : यह तो 72 का चुनाव बतायेगा और अभी भी एम. पी. के चुनाव में भी ठाकुर साहब ने देख लिया कि उनकी क्या हालत हुई है।

श्री मदनसिंह : आपके भाई मेरे दोस्त थे इसलिए छोड़ दिया।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज।

श्री भैरोंसिंह : मोदीजी आप चिन्ता न करें...

श्री रामचन्द्र आर्य (नोहर) : पहले भी आपकी कौनसी सरकार बनी थी। पहले भी खरीद 2 कर सरकार बनाई थी। इन्दिराजी की जय बोल बोल कर काम चलाते हो।

श्री भैरोंसिंह : मोदीजी ज्यादा नाराज न हों। उनके मुकाबले में अब कपिलदेवजी

(श्री भैरोंसिंह)
के लड़के चुनाव लड़ रहे हैं, आप तो वैसे भी आने वाले नहीं हो।

श्री अध्यक्ष : आप आरम्भ रखें।

श्री भैरोंसिंह : ऐसी स्थिति में मैं इस सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि यह मौका कोई इन्क्वायरी करने का नहीं है, किसी से कम्पलेंट लेने का नहीं है। माननीय राजस्व मंत्रीजी भी मन में जानते हैं, गंगारामजी भी मन में जानते हैं, विरदीचन्दजी भी मन में जानते हैं और किसी से भी ईमानदारी से घर में बैठ कर पूछें तो वह इस बात को स्वीकार किए बिना नहीं रहेगा कि कुछ अधिकारी भ्रष्ट हैं। मैं तो सरकार से इस समय यही निवेदन करना चाहूंगा कि इन भ्रष्टाचारी अधिकारियों को इन जिलों से बाहर निकालो। अगर आपको वे इतने ही अच्छे लगते हैं तो उनको सेक्रेट्रियेट में लाकर बिठा दो..

श्री वृद्धिचन्द जैन (बाड़मेर) : ये तो सारे राजस्थान में है।

श्री भैरोंसिंह : भ्रष्टाचारी सारे राजस्थान में हैं इसलिए उनके एवज में फिर ऐसे ही न चले जाय उसकी भी सावधानी बरतना चाहते हैं। तो मैं यह निवेदन करना चाहूंगा माननीय अध्यक्ष महोदय कि ऐसी स्थिति में हमें जिले के प्रशासन को बिलकुल शुद्ध रखना चाहिये। आज सारा सिविल एडमिनिस्ट्रेशन इस फौज के काम में लगा हुआ है और सिविल प्राबलम्स की कोई सुनवाई नहीं है। मैंने माननीय मुख्य मंत्रीजी से निवेदन किया था कि एक अधिकारी को, जैसे आपने सेक्रेट्रियट में पब्लिक ग्रिविसेज आफिसर के रूप में लगा रखा है, उसी तरह से डिस्ट्रिक्ट में भी ऐक ऐसे अधिकारी को लगाना चाहिये जिसका इस लड़ाई की बातों से मतलब न हो और केवल जो जनता की शिकायतें आती हैं उन्हीं को रफा दफा करने की कोशिश करे। मैं यह भी निवेदन करना चाहता हूं कि आप दो तीन आफिसर लगावें एण्टी करप्शन आफीसर के रूप में ताकि भ्रष्टाचारियों को भी डर रहे कि हमारे खिलाफ भी कार्यवाही हो सकती और भ्रष्टाचार की शिकायतें भी रफा दफा की जा सकें और भ्रष्टाचारियों को भी किसी प्रकार का सबक मिले। अध्यक्ष महोदय, इसी सारी स्थिति में मैं यह निवेदन करना चाहूंगा राज्य सरकार से कि इस प्रकार से अपने एडमिनिस्ट्रेशन को सुधारना है। मैं साथ ही यह भी निवेदन करना चाहूंगा कि मुख्य मंत्रीजी ने एक नई बात बताई कि फौजियों का सर्वे करा रहे हैं।

श्री बरक्ततुल्ला खां : फौजियों के परिवारों का।

श्री भैरोंसिंह : मैं समझता हूं कि खेतसिंह जी भी इसको ज्यादा जानते हैं...

श्री फतेहसिंह (ब्यावर) : यह धोखा है।

श्री भैरोंसिंह : यही बात हमारे भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी ने भी कही थी कि

(श्री भैरोंसिंह)

हम सर्वे करा रहे हैं, यह बात उन्होंने सदन में कही थी कि सर्वे करा रहे हैं और खेतसिंह जी ने भी इसी सदन में कहा था कि सर्वे हो रहा है। अब मैं यह जानकारी करना चाहूंगा कि वह सर्वे जो खेतसिंहजो ने और भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी ने शुरू किया था वह सर्वे हो रहा है या यह नया सर्वे शुरू हुआ है। मैं तो आपसे एक बात कहना चाहता हूं और वह बात पहले भी कह चुका हूं कि आप फौजियों के बारे में घोषणा मत करो। लम्बे चौड़े कागज मत बनाओ। रेडियो के ऊपर प्रचार मत कराओ। आपको जो कुछ देना है गम्भीरता से उस पर विचार करो और फिर निर्णय लेने के बाद सारी मशीनरी को कह दो कि इसका इम्प्लीमेंटेशन नहीं हुआ तो आर्टीकल 311 के अन्दर तुम्हारी बरखास्तगी की जायगी, तब तो कुछ समझ में आए।

भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी ने घोषणा की एक्स सोल्जर्स को इतनी जमीन देंगे। लोगों को जमीन का अलाटमेंट मिल गया, अलाटमेंट के बाद कब्जा नहीं मिला है। मैं मुख्य मंत्रीजी एक बात कहना चाहूंगा आज फौजियों पर मुकदमें चल रहे हैं उन पर या तो स्टे करवा दीजिये या कोई गवर्नमेंट से एडवोकेट नियुक्त करके फैसला करवा दीजिये। आप परिवारों के पास जाय, उनके सुख दुःख की बात सुनें। मुझे बहुत खुशी है इस बात की लेकिन जिस तरह के आज उन पर मुकदमें चल रहे हैं उसमें कम से कम राजस्थान की सरकार यह तो करे कि एक सीनियर आफिसर नियुक्त करके सारे राजस्थान के आंकड़े इकट्ठे करें कि फौजी भाइयों के किस प्रकार के मामले चल रहे हैं, उनके मुकदमें किस तरह के हैं और उनका निपटारा किस प्रकार हो सकता है।

(समय समाप्ति सूचक घंटो)

एक मिनिट और, ऐसी हालत में मैं एक ही निवेदन करूंगा थोथी घोषणायें यह राजस्थान की सरकार न करे। आज फौजी भाई कहते हैं सरकार घोषणायें तो करती है लेकिन जमीन मिलती नहीं है। सरकार घोषणायें करती हैं जयपुर में उनको प्लाट अलाट करेगी, जोधपुर में फौजी भाइयों को प्लाट अलाट करेगी, फौजी भाइयों के लिये शैतान सिंह कालोनी में आवास की व्यवस्था की जायगी। मैं मुख्य मंत्रीजी आपसे निवेदन करना चाहता हूं। एक दिन बैठ जाय और हम लोगों को भी बुला लें और यह तय कर लें कि 1962 से लेकर आज तक फौजी भाइयों के लिये कितनी घोषणायें की और उनको देखा जाय कि उनका कितना इम्पलीमेन्टेशन हुआ तो थोड़ा इम्पलीमेन्टेशन के बारे में विचार कर लें। मै अन्त में मुख्य मंत्री महोदय से एक निवेदन और करूंगा......

श्री खेतसिंह : अध्यक्ष महोदय, मै यह निवेदन करूंगा कि यह बात तो नहीं है कि इम्पलीमेन्टेशन नहीं हुआ। यह हो सकता है कुछ केसेज रह गये।

श्री भैरोंसिंह : मैं आपकी मजबूरी को तो जानता हूं। फौजियों के बारे में तो कोई बात करानी होती है तो मुझ से ही

Page No 87

(श्री भैरोंसिंह)
कहते हैं टेलीफोन करें कि इनकी यह समस्या है........

(व्यवधान, अश्रव्य)

मेरे से तो खेतसिंहजी का टेलिफोन जुड़ा है लेकिन आपका तो बरकत साहब से जुड गया। मैं कहता हूं एक विधायक और विधायक के नाते मैं एक पार्टी को नहीं मानता। मैं किशनपोल क्षेत्र से निर्वाचित होकर आया हूं लेकिन जनता की समस्या कहीं की भी आती है और कोई विधायक भी आते हैं तो उनका काम करना भी मैं अपना कर्तव्य समझता हूं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : मंत्री मण्डल के सदस्य भी कोई बात करवाना चाहते हैं तो यह भी ओवलाइज करना चाहते हैं।

श्री भैरोंसिंह : इस प्रकार का ख्याल तो एच. के. व्यास के लिये भी था।

श्री खेतसिंह : अध्यक्ष महोदय, आज तो भैरोंसिंह जी बहुत ही धर्मराज बन रहे हैं। ऐसे मामले तो नहीं हुये हैं कि मैं इनके पास जाकर टेलीफोन कराऊं और फिर आखिर मैं भी रूलिंग पार्टी का काफी वजनदार आदमी रहा हूं ...

एक माननीय सदस्य : वजनदार, तभी यह हालत हो रही है।

श्री मदनसिंह (दांता) : घर पर आकर रिक्वेस्ट करते हुये मैंने भी देखा है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : खेतसिंह जी पर कोई ऐडवर्स असर नहीं होना चाहिये।

श्री भैरोंसिंह : अभी अध्यक्ष महोदय, इन्होंने कोई 3-4 दिन पहले आकर मुझ से कहा है कि बरकत साहब से कहकर मुझे उप मंत्री तो बनवा दें।

श्री खेतसिंह : आप इस बात पर विश्वास कर सकते हैं ?

एक माननीय सदस्य : आप सौगन्ध खाकर कह दें।

श्री अध्यक्ष : दोनों पक्ष पर विश्वास और अविश्वास का प्रश्न नहीं उठता है।

श्री शिवचरण सिंह (महुआ) : रामानन्द जी की बात सच्ची होगी, आपकी सिफारिश तो उलटी पड़ती है।

श्री भैरोंसिंह : मैंने निवेदन किया एक तो सरकार से एश्योरेन्स चाहिये। भारत सरकार ने 70 करोड़ के आर्डिनेन्स जारी करके टैक्स लगाये हैं। हरियाणा सरकार ने भी टैक्स लगाये हैं, पंजाब सरकार ने भी टैक्स लगाये हैं, मध्य प्रदेश की सरकार मे भी टैक्स लगाये हैं। मैं राजस्थान की सरकार से निवेदन करना चाहूंगा कि सरकार स्पष्ट रूप से भारत सरकार को कह दें कि पिछले वर्षों से राजस्थान में अकाल पड़ रहा है। राजस्थान के ऊपर अकाल का जो खर्चा है उसमें भारत सरकार ने 30 करोड़ का खर्चा नहीं दिया....

एक माननीय सदस्य : 32 करोड़।

श्री भैरोंसिंह : 30, 32 जो भी हो, वह हमें नहीं मिला। राजस्थान के ओवरड्राफ्ट की पोजीशन खराब है। राजस्थान एक सीमावर्ती प्रान्त है इसलिये इस सरकार को डिफेन्स पर भी खर्च करना पड़ रहा

(श्री भैरोंसिंह)

है। राजस्थान पर जबरदस्त कर्जा है। राजस्थान की कर्ज देने की शक्ति नहीं है फिर राजस्थान में बाढ़ से अभी काफी नुकसान हुआ है तो मैं सरकार से निवेदन करना चाहूंगा और मुख्य मंत्री जी से निवेदन करना चाहूंगा कि इस सदन को आश्वस्त करें कि आर्डिनेन्स से किसी प्रकार के राजस्थान में कर नहीं लगाये जायेगे और इसी के साथ में निवेदन करना चाहूँगा पंजाब की सरकार ने बोर्डर पर रहने वाले किसानों की क्राप्स को इन्श्योरेन्स की स्कीम लागू की है। मैं राजस्थान की सरकार से इसलिये निवेदन करना चाहता हूं कि हमारे कुछ किसान भाई सन् 1962 में बाड़मेर से खड़ी फसलों को छोड़कर आये थे और वे किसान भाई फौजियों के कहने पर अपने खेत व खलिहानों को और मकानों को छोड़कर आये थे, राजस्थान की सरकार ने उनको कोई मुआवजा नहीं दिया। पंजाब की सरकार ने मुआवजा देकर किसानों को सन्तुष्ट किया। मैं कह सकता हूं वह स्थिति फिर आ सकती है। राजस्थान को चाहिये कि क्राप इन्श्योरेन्स की स्कीम चालू करे और जो लोग रह गये हैं उनको आजाद करने की चेष्टा करे।

श्री अध्यक्ष : अब बहुत हो चुका।

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय, मैं बहुत थोड़े में निवेदन करूंगा। मैंने एक एडजोर्नमेंट मोशन भी इस पर दिया है। अगर आप कहें तो बोलू...

श्री अध्यक्ष : न कहें तो बहुत अच्छा।

श्री भैरोंसिंह : आपका हुक्म चलेगा।

श्री अध्यक्ष : कह दीजिये।

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय.....

एक माननीय सदस्य : यह बहुत अच्छा तरीका है।

श्री भैरोंसिंह : अध्यक्ष महोदय, सन् 1965 में 71 परिवार पाकिस्तान से आये 28 या 27 फरवरी को चोहटन तहसील में बावनी गांव है। उनका नेतृत्व लक्ष्मण सिंह नाम का एक व्यक्ति है...

श्री खेत सिंह : 3 फरवरी को आये हैं। आप गलत बोल रहे हैं।

श्री भैरोंसिंह : फरवरी ही तो बोल रहा हूं।

श्री गिरधारी लाल व्यास (मुख्य सचेतक) : आपने 27–28 फरवरी बोला है।

श्री भैरोंसिंह : फरवरी की जो तारीख ये बता रहे हैं मान लें। मुझे तो खुशी है कि इनको भी जानकारी है हम तो कुछ और ही समझ रहे थे। खैर, आप जानकारी रखते हैं, यह खुशी की बात हैं।

श्री गिरधारीलाल व्यास : माननीय अध्यक्ष महोदय, ये गलत बोल रहे थे इसलिये कहना पड़ता हैं।

श्री भैरोंसिह : तो अध्यक्ष महोदय, 71 परिवार आये इनमें 72 परिवारों में सब जाति के लोग हैं पुरोहित भी हैं चारण भी हैं.....

श्री रामकिशन : व्यास हैं या नहीं ?

श्री भैरोंसिह : मैं देखता हूं। वजीर 14, मेघवाल 4, पुरोहित 2, नागर 12, सुनार 4, भील 1, राजपूत 30 और अन्य 4।

श्री गिरधारीलाल व्यास : इनकी जात के भी हैं।

श्री भैरोंसिह : इस प्रकार के 71 परिवार आये थे। लक्ष्मणसिंह सोढ़ा के बारे में इतना ही कह सकता हूं कि अय्यूब के शासन में वे पार्लियामेन्टरी सैक्रेटरी थे।

अय्यूब के शासन में ही पाकिस्तान की सरकार ने एण्टी नेशनल एक्टीविटी के कारण मन्त्री मण्डल से निकाला, गिरफ्तार किया, डेढ़ वर्ष तक कैद रखा, जेल में जितनी भी यातनाएं उस वक्त दी जा सकती थी, दी गई। याह्या की सरकार ने भी इनके साथ वैसा ही व्यवहार किया। सम्पत्ति को जब्त किया, इन लोगों को दुनियां भर की पीड़ायें दी गई। वहां से भागकर ये लोग हिन्दुस्तान में आ गये और बावरी गांव में ठहरे। पिछली विधान सभा में यह सवाल आया था और श्री जयकृष्ण शर्मा ने इसका उत्तर दिया था कि इन लोगों के लिए कैम्पस् खोलेंगे। कैम्प्स खुले हैं उनके लिए निवास आदि की व्यवस्था भी की गई है। मुझे इसके बारे में कोई शिकायत नहीं है। व्यवस्था कमी बेशी हुई हो तो भी वहां पर कैम्प्स चल रही है। परन्तु शिकायत इस बात की है अध्यक्ष महोदय, कि जब इन लोगों को जमीन के अलाटमेन्ट का सवाल पैदा हुआ कि इन लोगों को जमीन दी जाये तो राजस्थान की सरकार ने एक हुक्म निकाला कि चौहटन और शिव तहसील में इनको जमीन नहीं दी जाये। मैं बहुत वर्षों से कहता आया हूं कि सीमा के ऊपर ऐसे व्यक्तियों को बसाया जाये जो एक्स सोलजर हों, जिनकी निष्ठा में किसी प्रकार का सन्देह न हो। परन्तु इन लोगों के खिलाफ यह प्रचार किया गया कि ये लोग पाकिस्तान के लिए गुप्तचरी करने के लिए आये हैं। मैं समझता हूं कि यह हम सब के लिये और इस सरकार के लिए लज्जाजनक है। ये लोग पाकिस्तान की पीड़ा से बचते हुए यहां पर आये हैं और बरकत साहब और परस राम जी जानते हैं कि ये ही वो लोग हैं × × × ×

राजस्व मन्त्री (श्री परसराम मदेरणा) : अध्यक्ष महोदय, अगर यह तथ्य वास्तव में सही है तो मैं निवेदन करना चाहूंगा कि यह बात नहीं कहना चाहिये। मैं समझता हूं माननीय सदस्य जिम्मेदारी से कहेंगे। इसलिए ऐसी बात को एक्सपन्ज किया जाना चाहिये।

श्री भैरोंसिह : आप कहेंगे तो एक्सपंज नहीं होंगे। आप स्वयं गैर जिम्मेदार हैं।

श्री परसराम मदेरणा : आप यहां पर जो बात कह रहे हैं वह बात अगर सही है तो ऐसी बात को यहां पर नहीं करना चाहिये आप जिम्मेदारी से नहीं बच सकते हैं। आप जो इस तरह से वकालत करते हैं उसके पीछे राजनैतिक कारण हैं।

× × × × माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार शब्द कार्यविवरण से हटाये गये।

श्री भैरोंसिंह : इससे किसी को ज्यादा नुकसान होगा तो वह लक्ष्मणसिंह को होगा । परन्तु वह हिन्दुस्तान के लिए कुर्बानी देने के लिए तैयार हैं । इसमें कोई शक नहीं है।

मेरे शब्द एक्सपंज कर दें, परन्तु इनके कहने से नहीं।

श्री अध्यक्ष : जो भी × × × के सम्बन्ध में हैं।

श्री भैरोंसिंह : मैं यहां पर डिसक्लोज नहीं करना चाहता। मैं डिसक्लोज करूंगा कि राजस्थान सरकार की इस सम्बन्ध मे क्या नीति रही है। जो व्यक्ति हिन्दुस्तान के लिए कुर्बानी देने के लिए तैयार है उनको आज तक नागरिकता के अधिकार नहीं दिये गये हैं । उसे चौहटन मे जमीन नहीं दी जा रही है । मैं पूछना चाहता हूं।

श्री अध्यक्ष: जो शब्द जिसके सम्बन्ध में कहा गया है कि × × × वे शब्द एक्सपंज कर दिये जायं और प्रेस के लिए एक्सपंज किये जायें।

श्री भैरोंसिंह : और भी बातें कहूंगा और अपनी तरफ से कहूंगा । आप इनको एक्सपंज कर दें। परन्तु मैं अपना कर्तव्य समझता हूं ।

श्री वृद्धिचन्द जैन (बाड़मेर) : आपको मदेरणा साहब का सुझाव मानना चाहिये।

श्री मदनसिंह (दांता) : मुख्य मन्त्री के भाषण में भी खामियां थीं। उन्हें भी कुछ बातें नहीं कहनी चाहिए थीं।

श्री भैरोंसिंह : अगर मैं चाहूं तो उनको एक्सप्लाइट कर सकता हूं । खैर, मैं यह निवेदन करना चाहता हूं कि माननीय मुख्य मन्त्री महोदय रेड टेपिज्म को रोकना चाहते हैं। मैंने 15 जुलाई, 1971 को उनको एक पत्र लिखा । उनका जो रेड टेपिज्म है उसका यह नमूना है। इसका उत्तर मुझे मिला है 8 सितम्बर, 71 को जिसमें लिखा है कि पश्चिमी पाकिस्तान से आये हुए शरणार्थियों के सम्बन्ध में सम्बन्धित विभाग से जानकारी प्राप्त की जा रही है। यह उनका आदेश है कि कोई भी कागज का उत्तर 7 दिन के अन्दर-अन्दर जाना चाहिए। और अगर नहीं जाता है तो इसके लिए सम्बन्धित सेकेट्री और विभागाध्यक्ष जिम्मेदार होंगे। परन्तु मुख्य मन्त्री जी आपने इसका उत्तर नहीं दिया । यह किस के ऊपर जिम्मेदारी है । मैंने पत्र लिखा लेकिन आपने काफी देर तक उत्तर नहीं दिया इस आधार पर अध्यक्ष महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि लक्ष्मणसिंह और उनके साथियों को जमीन न मिलने का कारण, उनके नागरिकता के अधिकार न दिये जाने का कारण, वहां के लोगों में असन्तोष है और इसकी जानकारी आपको केवल एक ही बात से हो सकती है । मेरे पास कई सरपंचों की चिट्ठी हैं, आनन्दसर के सरपंच की चिट्ठी है, कोटिया के सरपंच की चिट्ठी है, चौहटन के सरपंच की चिट्ठी है, पेरने के सरपंच की चिट्ठी है।

श्री अध्यक्ष : और कुछ अन्य सरपंचों की है...?

× × × माननीय अध्यक्ष के आदेशानुसार कार्य विवरण से हटाये गये।

श्री भैरोसिंह : उठावा के सरपंच, सावरा के सरपंच, नेतवा के सरपंच, वनाड के सरपंच, इन सब लोगों की चिट्ठियां हैं, इन लोगों के इन पर दस्तखत हैं। ये चिट्ठियां मुख्य मंत्री के पास भी पहुंची हैं और इनकी प्रतियां मेरे पास भी आई हैं। मैं उनसे निवेदन करना चाहूंगा, मेरे इन शब्दों को चाहे एक्सपंज कर दें, आपको विश्वास न हो तो आप फौजियों से पूछ लें कि क्या इसकी इन्टीग्रिटी या किसी प्रकार का शक शुबहा हो। इस प्रकार आप इनके विभाग में किसी प्रकार का फ्रस्ट्रेशन पैदा न होने दें। आप सारी दुनिया से जानकारी कर लें यदि आपको किसी प्रकार का शक, शुबहा हो। वहां के सरपंच यह बात कह रहे हैं। वे पाकिस्तान में सीनियर पोस्ट पर थे और वहां से भागकर आये हैं और हम यहां पर केवल राजनैतिक आधार पर इनको बसने नहीं दें, तो यह गलत है। इस सदन को जानकारी होगी कि चौहटन तहसील में जमीन की कमी नहीं है, काफी जमीन है, लेकिन दुर्भाग्य से लक्ष्मणसिंह साथ में आ गया है इस कारण उनको जमीन नहीं दी जा रही है। मैं सरकार की निन्दा करूंगा और निवेदन करूंगा कि राजस्थान सरकार तत्काल इनको नागरिकता के अधिकार दें। राजस्थान सरकार चौहटन तहसील में जहां पर कि ये बसे हुए हैं, जहां पर कि जमीन पड़त पड़ी है, वहां पर इनको भूमि का आवंटन करें।

अन्त में मैं मुख्य मन्त्री महोदय को आश्वासन देता हूं कि चाहे दुनियां भर की प्रशासन में कमी हो, चाहे आपस में मतभेद हों, पाकिस्तान से मुकाबला करने के लिये कांग्रेस, जनसंघ, सोशलिस्ट किसी भी पार्टी से कोई मतभेद, राजनैतिक मतभेद होते हुए भी हम इस मामले में एक हैं। जवानों के लिये भारतीय जनसंघ का एक एक स्वयं सेवक अपना खून देने के लिये तैयार है। किसी भी जनसंघ के कार्यकर्ता को आप चाहेंगे तो वह हर प्रकार की कठिन से कठिन सर्विस करने के लिये हमेशा तैयार रहेगा। पाकिस्तान भी यह समझ ले कि हिन्दुस्तान की जनता तैयार है और हिन्दुस्तान की जनता ने सेना को तैयार किया है, कमांडर्स को तैयार किया है, और सेना को तैयार किया है। जनता जाग रही है, सेना जाग रही है और कमाण्डर जाग रहा है और तीनों जागकर पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिये तैयार हैं। यही कहता हुआ मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

श्री अध्यक्ष : माननीय सुखाड़िया जी।

श्री मोहनलाल सुखाड़िया (उदयपुर) : अध्यक्ष महोदय, अभी प्रश्न इस सदन के सामने मुख्य मन्त्री महोदय के वक्तव्य के बाद विचारार्थ है, मैं समझता हूं कि उसकी गम्भीरता आने वाले दिनों में और ज्यादा बढ़ती हुई चली जायेगी।

यहां पर इस बात का जिक्र किया गया है कि पाकिस्तान को शक्तिशाली क्यों बनने दिया गया ? क्यों पाकिस्तान की इतनी शक्ति बनी। आज इस तथ्य को हम सब और सारा भारत जानता है कि पाकिस्तान की शक्ति उसकी खुद की शक्ति

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

नहीं है। हमारा देश तो अपने आप शस्त्र, हवाई जहाज बनाता है लेकिन पाकिस्तान के पास जो कुछ भी वार अपराट्स हैं या शक्ति है वह अमेरिका की दी हुई शक्ति है। आज बंगला देश के अन्दर भी जो कुछ हो रहा है उसके सम्बन्ध में अगर सबसे ज्यादा किसी को दोषी ठहराया जा सकता है तो दरअसल में अमेरिका को दोषी ठहराया जा सकता है (करतल ध्वनि) कि जिनके शस्त्रों के जरिये आज लाखों व्यक्तियों की हत्या की गई जनतन्त्र की हत्या की गई, और उन्हीं के शस्त्रों को लेकर हमारी सीमा पर पाकिस्तान खड़ा हुआ है। भारत ने हमेशा इस बात को स्पष्ट किया है कि भारत सरकार या भारत के रहने वाले बंगलादेश को भारत का अंग नहीं बनाना चाहते। प्रश्न तो मूल रूप से यह है कि याह्या खां साहब ने खुद ने एक चुनाव करवाया और चुनाव करवाने के बाद जो बहुमत में सारे पाकिस्तान में जीत कर के पार्टी आई है उसके हाथ में हुकुमत सौंपने के बजाय और बंगला देश में जहां की करीब 99 प्रतिशत के आसपास जो पार्टी जीतकर आई उस जनमत को दबाये जाने के लिए आज जो कार्यवाही की जा रही है उसका भारत विरोध करता है। भारत ने हमेशा इस बात को शुरू से कहा है कि हम चाहते हैं कि जो वहां के नेता शेख मुजीबुर्रहमान हैं उसके साथ बातचीत की जाय, लेकिन भारत की हमदर्दी का जवाब पाकिस्तान ने लाखों की तादाद में शरणार्थियों को भारत में भेजकर दिया है। इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता है कि जैसा कि हमारे प्रधान मंत्री ने कहा है कि लड़ाई तो पाकिस्तान की तरफ से है और वह हिन्दुस्तान के खिलाफ छेड़ी जा चुकी है। मेरी यह निश्चित मान्यता है, अध्यक्ष महोदय, कि संसार के किसी दूसरे देश में एक करोड़ के करीब क्या अगर 10 लाख शरणार्थी भी दूसरे देश में गये होते तो कभी का युद्ध छिड़ गया होता, क्योंकि कोई भी अपने यहां इस स्थिति को बरदाश्त करके नहीं चलता है, लेकिन हमारी शान्ति की नीति है और आखिर में जाकर युद्ध की जैसी स्थिति न बने उसके लिए भारत सरकार ने जिस संयम से काम लिया है, मैं समझता हूं कि उसकी विश्व के कुछ देशों को छोड़कर इस बात का असर तो है ही कि भारत सरकार युद्ध की कार्यवाही करने के लिए स्वयं उत्सुक है या अग्रसर है इस प्रकार की बात नहीं है। लेकिन भारत की इकोनामी को डिस्टर्ब कर दिया जाय, भारत को हर प्रकार से परेशान करने का प्रयत्न किया जाय वह लगातार चालू है। आज, अध्यक्ष महोदय, जैसा कि विरोधी दल के नेता महोदय ने कहा कि प्रश्न यह नहीं है कि पाकिस्तान के साथ भारत बातचीत करे या भारत किसी और राष्ट्र को बीच में डाल कर हमारे यहां से शरणार्थी वापिस कैसे जायं उसके बारे में पाकिस्तान के साथ बात करे। प्रश्न यह है कि भारत में जो शरणार्थी आये हुए हैं वे किस हालत के अन्दर वापिस जाना चाहते हैं। उन हालात का हल पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के बात करने से नहीं होगा। मैं समझता हूं कि सारा ससार जानता है कि जब तक बंगला देश के अन्दर शेख मुजीबुर्रहमान की इच्छा के अनुसार वहां का निर्णय नहीं होता है तब तक शरणार्थी यहां से वापिस नहीं जाने वाले हैं। इस चीज को हमें ध्यान में रख कर चलना होगा, और

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

इसके जो गम्भीर परिणाम सामने आते हैं उसें भी मानकर हमें चलना होगा।

यह हम सब जानते हैं कि अमेरिका इंग्लेण्ड और दूसरे देश यह नहीं चाहते कि बंगला देश आजाद हो। बंगला देश आजाद हो कोई इसका प्रस्ताव भारत ने पेश नहीं किया है। बंगला देश आजादी चाहता है। यह कोई हिन्दू या किसी दूसरे धर्म के मानने वालों ने पेश नहीं किया है। यह मांग कहीं से अगर उठी है तो खुद बंगला देश से उठी है उस हिस्से से उठी है जो पाकिस्तान में बहुमत रखने वाला हिस्सा है। उस आवाज को शान्त करने के लिए, इसका भारत को भी अनुभव है कि जब अंग्रेजों के साथ में आजादी की लड़ाई चली थी उन्होंने कइयों को जेलों में भेजकर फांसी पर लटका कर और गोलियां चलाकर उसको जितना दबाने का प्रयत्न किया हैं उतनी ही वह लड़ाई ज्यादा उग्र होती हुई चली गई। तो संसार का कोई बड़े से बड़ा देश हो, चाहे वह अमेरिका ही हो, नहीं रोक सकता। अमेरिका पूरी ताकत के साथ चाइना को यू. एन. ओ. में लेने से इन्कार करता रहा और कई राष्ट्र इन्कार करते रहे, लेकिन अमेरिका की बात नहीं चल पाई और चाइना को यू. एन. ओ. का सदस्य बनाना पड़ा। तो निश्चित तौर से यह भविष्य आने वाला है कि चाहे अमेरिका नहीं चाहे, चाइना नहीं चाहे बंगलादेश आजाद होकर रहेगा। (करतल ध्वनि) यह एक ऐतिहासिक तथ्य है इसको ज्यादा अर्से तक नहीं दबाया जा सकता है।

मैं समझता हूं दुनिया के इतिहास में अद्वितीय बात है कि एक फौजी हुकूमत में चुनाव हुए, याह्या की हुकूमत में हुए, यह नहीं है कि किसी और हालत के अन्दर हुए हों, वहां पर इतनी बड़ी ताकत के अन्दर जीत कर जो आया है मैं समझता हूं कि इस प्रकार का नेता दुनिया के अन्दर मुश्किल से पैदा होता है। उसने सारा जो बंगला देश का नेतृत्व हाथ में लिया है तो आज अमेरिका अगर दबाव डाले, चाइना अगर दबाव डाले या इंग्लेण्ड अगर दबाव डाले, और पाकिस्तान युद्ध को चलाना चाहता है तो मैं समझता हूं कि केवल एक रास्ता है कि शेख मुजीबुर्रहमान को रिहा करके साथ समझौता किया जाय, तो इस सारी परिस्थिति के अन्दर अन्दर आ सकता है, वर्ना वह कितनी ही फौजी ताकत का प्रदर्शन करे, इस ताकत के प्रदर्शन से न तो बंगला देश बचने वाला है, न भारत को हराने के अन्दर कामयाब होने वाला है। (करतल ध्वनि)

आज हमारी पॉलिसी संसार के अन्दर कई देशों को पहले समझ में नहीं आती थीं वह समझ में आने लगी है कई बार यह प्रश्न उठता है कि शुरूआत में हमने अपनी ताकत से कब्जा कर लिया होता तो इस तरह से शरणार्थियों की समस्या खड़ी नहीं होती, लेकिन आज ज्यादा देश ऐसा समझते हैं कि भारत सरकार ने जिस संयम, धैर्य के साथ इस सारे काम के अन्दर कदम उठाये हैं उससे जो दिखती हुई तकलीफ हमें मिलती है वह ज्यादा मालूम हो सकती है, लेकिन युद्ध से क्या तकलीफ खड़ी होती है वह नहीं दिखती हैं, इसलिए यदि उस वक्त कार्यवाही कर देते तो ज्यादा अच्छा होता

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

यह कहते हैं। लेकिन आज संसार का जनमत यदि कोई साफ तौर से न कहे या किसी डिप्लोमेटिक रीजन्स या अपने स्वार्थ की वजह से न कहे लेकिन यह निश्चित तौर से आज मानने लगा है कि कोई शरणार्थियों को हम जाकर वहां से लाये हों–आज कोई भी व्यक्ति किसी को उसका घर चाहे उसकी झोंपड़ी ही हो यह कहे कि यहां से हटकर पड़ौस के गांव में जाना है, पसन्द नहीं करेगा, तो एक करोड़ आदमी वहां से भागकर यहां आते हैं वे खुद नहीं आते हैं। तो संसार पर ऐसी घटनाएं आज असर कर रही हैं और वे जान गये है कि पाकिस्तान वहां पर क्या कर रहा है और क्या नहीं कर रहा है। तो कहने का तात्पर्य यह है कि हमें इस समस्या के बारे में यह मानकर चलना चाहिए कि पाकिस्तान आसानी से इस बात को मान जाय ऐसे आसार नजर नहीं आ रहे हैं। जो याह्याखां अपने लाखों आदमियों को कत्ल करा सकता है, लाखों की तादाद में लोगों को बेघरबार करके यहां पर भेज सकता है, वह शेख मुजीबुर्रहमान को रिहा करके बंगला देश को स्वतन्त्र कर दे, यह बात आसानी से समझ में आती हैं। अब यह बात समझ में नहीं आती है तो उसका यह परिणाम यही होता है कि जैसा आम तौर पर डिक्टेटर्स किया करते हैं और डिक्टेटर्स यही करते हैं कि जब घर में फ्रस्ट्रेशन ज्यादा होने लगता है तो उस फ्रस्ट्रेशन को दूर करने के लिए वे पड़ौसी के साथ या दूसरे के साथ युद्ध छेड़ देते हैं। आज पाकिस्तान की जो तैयारी है उससे यही मालूम पड़ता है। मैं नहीं जानता कि उनके सलाहकार क्या सलाह देते होंगे और क्या नहीं। हमारा यही मकसद है कि पाकिस्तान के साथ बात अगर करवाई जाय तो वह हिन्दुस्तान के वजाय बंगला देश के साथ करवाई जाय। मैं समझता हूं कि यह 600 करोड़ का सवाल नहीं है या 70 करोड़ का सवाल नहीं है। राजस्थान की जनता को और भारत की जनता को इससे कहीं ज्यादा आर्थिक बोझ या दूसरा किसी प्रकार का बोझ उठाने की तैयारी रखना चाहिये। बजाय इसके कि हम यह कल्पना करें कि बंगला देश की समस्या हिन्दुस्तान और पाकिस्तान बैठकर तय करें तो दोनों के बात करने का प्रश्न खड़ा नहीं होता है। हमारा प्रश्न तो यह है कि शरणार्थी यहां से जाने चाहिए और मैं इस बात से सहमत नहीं हू कि थोड़े बहुत जाना शुरु हो जायं यहीं फैसला हो जाय। यह सवाल खड़ा नहीं होता है कि थोड़े बहुत जायं यानी क्या हिन्दुस्तान लावारिस मुल्क है कि जहां पर कोई भी कितने ही इधर से उधर भेजे जायं। चूंकि वे यहां आ गये हैं इसलिए उनकी जिम्मेदारी को उठाने के लिए वजन उठाकर चलना चाहिए। तो, अध्यक्ष महोदय, आने वाले दिनों में नहीं जानता आने वाले महीने कहे जायं या आने वाले दिन कहे जायं, ज्यादा उपयुक्त होगा आने वाले दिन कहें। आने वाले दिन इस देश के लिए काफी कष्ट के दिन होंगे। तो यह बात निश्चित है, आज चाहे बंगला देश को जो मान्यता दे सकते हैं। चाहे और कोई बात हो, सारे देश की खुली भावना यह है कि बंगला देश की जो आकांक्षाएं हैं, उनकी पूर्ति होनी चाहिये। जो उन्होंने कुर्बानी

(श्री मोहनलाल सुखाड़िया)

की है, वह खाली नहीं जानी चाहिये। मैं समझता हूं कि देश को मान्यता कैसे दी जाये या कैसे नहीं दी जाय यह भारत सरकार पर छोड़ देना चाहिये। भारत सरकार ने अभी तक जो कदम उठाये हैं, बंगला देश की मुक्ति सेनानी जो खुद लड़ रहे हैं, मैं समझता हूं कि वह खुद वाकिफ हैं। वह क्यों समझते हैं, मैं इस चर्चा में नहीं पड़ना चाहता हूं।

इतना और निवेदन करना चाहता हूं कि राजस्थान की सीमाओं के बारे में अभी जयपुर से आने वाले माननीय सदस्य ने जो भाषण दिया, उस भाषण से कहीं इस प्रकार की भ्रान्ति न फैले कि हमारे बोर्डर पर रहने वाले जो व्यक्ति हैं, उन पर अविश्वास करने का प्रश्न है। 1965 में, माननीय सदस्य भी जानते हैं कई स्थानों पर बिना किसी भेद-भाव के हिन्दुस्तान की फौजों की उन्होंने मदद की है। मै इस बात को कहूं तो यह उचित नहीं होगा। मेरी निश्चित तौर से मान्यता है कि राजस्थान की सीमाओं पर, देश की सीमाओं पर जहां भी इस प्रकार की स्थिति पैदा होगी, उसका मुकाबला भारत के नागरिक बिना किसी प्रकार का भेद-भाव विभाग में रखकर, सब मिलकर सहयोग देंगे।

मैं मुख्यमंत्री महोदय से निवेदन करूंगा, उन्होंने जो कदम उठाये होंगे, मुझे जानकारी नहीं है, लेकिन मैं कहना चाहूंगा कि पंचायतों और दूसरी नान आफिशियल युनिटस हैं, उनका भी ज्यादा से ज्यादा सहयोग और मदद ली जा सकती है। उनकी मदद ली जानी चाहिए तो ज्यादा अच्छा होगा। देश के अन्दर जो कीमतें बढ़ रही हैं, मैं उम्मीद करके चलता हूं, कि देश के अन्दर इमरजेंसी डिक्लेयर होती है और उस अवसर पर कीमतें बढ़ती हैं तो मुझे भरोसा है कि अगर कोई ऐसा करता है तो आप पूरी सख्ती से अमल करेंगे। क्योंकि इस प्रकार की हालत अगर पैदा हो तो बहुत से ऐसे स्टेप्स उठाने होंगे। मैं इस बात से भी सहमत हूं कि सीमा पर रहने वालों का जो एग्रीकल्चर प्रोडक्शन है, ऐसे मौके पर जब उनके सामने एक बहुत ही बड़ा संकट है, इस मौके पर आर्थिक नुकसान न हो पाये। इसके बारे में हमें ध्यान रखकर चलना होगा। धन्यवाद।

श्री मत्थीसिंह (भरतपुर): अध्यक्ष महोदय, भारत पाकिस्ताक का जो आज तनाव है, उसके सम्बन्ध में वर्तमान मुख्यमन्त्री महोदय, और दूसरे भूतपूर्व मुख्यमन्त्रीजी के भाषण सुनें। इस सदन से बाहर भारत की प्रधान मन्त्री, प्रतिरक्षामन्त्री और दूसरे मन्त्रियों के भाषण हम नित्य सुनते रहते हैं। मैं आप के माध्यम से जानना चाहता हूं कि आखिर वह कौन सी वजह है जो आज तनाव हमारी सीमाओं पर नजर आता है। इससे पहले भी तनाव हुये हैं पहिले व इस समय के तनाव में भिन्नता क्या है? यह भिन्नता मुक्तिवाहिनी ने दी है। जिसके कारण याहियाखां ने नर संहार किया है। इस देश में ऐसे मनीषी थे, महात्मा थे जो कि यह मानते थे कि इस देश में दो राष्ट्रों का सिद्धान्त नहीं माना जाना चाहिए। लेकिन उस वक्त इस देश में कुछ व्यक्ति ऐसे भी थे जिन्होंने कि शासन सम्भालने के लिए बंटवारा स्वीकार किया। हिन्दुस्तान और पाकिस्तान का बंटवारा स्वीकार किया है। वही हमारी भूल थी जिसके कारण आज तक हम खमियाजा

(श्री नत्थीसिंह)

भुगत रहे हैं। 1947 में महात्मा गांधी ने कहा था कि हिन्दुस्तान का बंटवारा नहीं होगा अगर होगा तो मेरी लाश पर होगा। लेकिन तात्कालिक परिस्थितियों के कारण महात्मा जी को मौन रहना पड़ा। 1950 में डा. राममनोहर ने कहा था कि पूर्वी बंगाल या तो पश्चिम पाकिस्तान का उपनिवेश बनकर रह जायगा, या बंगला देश आजाद होकर रहेगा वह भविष्यवाणी आज सत्य सिद्ध हो रही है। बंगला देश के लोगों ने स्वीकार किया है कि हम आर्थिक तानाशाही में नहीं रहेंगे। किसी भी प्रकार अपने को उपनिवेश स्वीकार नहीं करेंगे। अध्यक्ष महोदय, उसी का यह फल है।

(3.25 म. प.)

(श्री रामनारायण चौधरी, उपाध्यक्ष, पदासीन)

यह तनाव इसी कारण आया है। सबसे पहले पाकिस्तान ने हमला किया। काश्मीर और जम्मू में उसने हमला किया। उस तनाव का आधार घृणा थी। वह आधार अब तक बराबर बना हुआ था। दो राष्ट्रों का आधार, मजहब बनाया जाये, इस आधार को हमारी भारत सरकार भी नष्ट नहीं कर पाई। उस आधार को किसने नष्ट किया? अगर किसी ने किया है तो बंगला देश के स्वतन्त्रता सेनानियों ने किया है। अब का तनाव घृणा के आधार पर नहीं है। जो तनाव धर्म के आधार पर था, उसको चुनौती बंगला देश के लोगों ने दी है। उन पश्चिमी इलाकों में जिनको हम सिन्ध, और सीमा प्रान्त के नाम से जानते हैं. उन में इस सब की प्रतिक्रिया हुई है। उपाध्यक्ष महोदय, अगर भारत सरकार उस समय मान्यता दे देती तो शायद यह विश्व जनमत स्वयं ही जाग्रत होता। उपाध्यक्ष महोदय, आज हमारे देश पर शरणार्थियों की समस्या है। अगर इस सत्य को पहचाना होता तो नहीं होतो। ये आजादी की लड़ाई लड़ने वाले मानव जिन्होंने चुनाव के दौरान, पूर्वी बंगाल के चुनाव में यह मत अभिव्यक्त किया था कि हम उपनिवेश बन कर नहीं रहेंगे। 6 शर्तों को मुजीबुर्रहमान ने रखा था। याहिया खां उनको स्वायत्त शासन भी देने के लिए तैयार नहीं हुआ था। आज बंगला देश में नरसंहार हुआ है, मुजीब साहब जेल में सड़ते रहे हैं, लेकिन बंगला देश को स्वीकार नहीं किया गया। हमें चाहिए था कि जो हमारा पड़ोसी देश है, उसको हम तुरन्त मान्यता देते और बंगला देश को सहायता देते। जिन सिद्धान्तों के लिए वह लड़ रहे हैं, उनके लिए उनको सहायता देते। लेकिन सरकार वहां चूकी। इसमें हम कहते हैं कि संयम से चूक हुई। मैं इस बात को मानने के लिए तैयार नहीं हूं। यह संयम की बात नहीं है। मुख्य मंत्री जी ने कहा, रक्षा मंत्री जो भी कहते रहे हैं–हम, यदि युद्ध हुआ तो पाकिस्तान की जमीन पर जाकर लड़ेंगे। यह बात कहने की नहीं है, अगर करने की होती तो ज्यादा अच्छा होता। हमारा देश और दुनियां दो तीन बातों को याद रखे हुए हैं। एक बात यह याद रखे हुए है कि हिन्दुस्तान के प्रधान मन्त्री ने जब चीन का हमला हुआ तो यह कहा था कि एक इंच जमीन भी हम दुश्मन के कब्जे में रहने नहीं देंगे और तब तक कोई बात करने का प्रश्न उठता नहीं है,

(श्री नत्थीसिंह)

जब तक कि एक एक इंच जमीन हम वापिस नहीं ले लें। लेकिन आज देख रहे हैं माओ की एक मुस्कराहट पर चीन से सम्बन्ध सुधारने की बात कहते हैं। हम भूल गये प्रधान मंत्री का वह वचन कि जब तक एक एक इंच जमीन वापिस नहीं आयेगी तब तक चीन से बात नहीं होगी। जिस समय लाल बहादुर शास्त्री ब्रिटेन जा रहे थे कच्छ के मामले में, उस समय उन्होंने कहा था कि किसी तरह भी, कच्छ पर समझौता हो या न हो, एक इंच जमीन भी नहीं देंगे। लेकिन हमने देखा है कि वह भी उस वचन से मुकरे। उसके बाद में ताशकन्द के अन्दर हमने देखा कि जैसे कोई थानेदार दो व्यक्तियों को बैठाकर कुछ कहे तो उसको मानना पड़ता है, वही हुआ। हम उसको अपनी उदारता कहते हैं। हम कहते हैं कि टीथवाल, हाजीपीर और कारगिल–यह चौकियां उदारता से दी हैं। यह चौकियां उदारता से नहीं दीं, बल्कि मजबूरी से दीं, दब कर दीं। नतीजा यह हुआ कि हिन्दुस्तान का प्रधान मंत्री इस शर्मनाक समझौते के कारण वापिस नहीं आया, उसने कुर्बानी दे दी। देश के लोग यह सब जानते हैं। इसलिए किस तरह करने की बात है उस पर विचार किया जाय। यह बात कहने के बजाय कि हम पाकिस्तान की जमीन पर लड़ेंगे, मैं चाहता हूं कि इस बात को करके दिखायें। कहने से न मनोबल बढ़ता है, न दूसरों का मनोबल गिरता है।

आज एक बात जो सबसे जरूरी है वह यह है, आप कहते है, लड़ाई होगी। जिस वक्त मान्यता नहीं दी थी, इस सदन ने मान्यता देने के लिए प्रस्ताव पारित किया था मान्यता देने के लिए उस समय देश एक था, और सबका विचार एक था। उस समय यह भी विचार था कि दूसरे देशों पर क्या प्रभाव पड़ेगा। इसके साथ-साथ यह विचार भी था, दूसरे देशों के प्रभाव के साथ-साथ हम हमारी आर्थिक हालत के पहलू पर भी विचार कर रहे थे। लेकिन, उपाध्यक्ष महोदय, जब हिन्दुस्तान-पाकिस्तान की लड़ाई चली, केवल 23 दिन युद्ध चला, उसमें कुल 73 करोड़ रुपया खर्च हुआ था। लेकिन आज पाकिस्तान ने अघोषित युद्ध शुरू कर रखा है और हमारी जमीन पर एक करोड़ शरणार्थी आ चुके हैं तो एक महीने में 75 करोड़ से 90 करोड़ तक का खर्चा कर रहे हैं। यदि हमारे ऊपर युद्ध थोप दिया गया तो हम कैसे मुकाबला करना चाहते हैं, जनता को कैसे तैयार करना चाहते हैं इसके लिए बुनियादी तौर पर अन्दर जाना पड़ेगा कि हम चाहते क्या हैं?

इस देश और पाकिस्तान के साथ सम्बन्धों के बारे में पाकिस्तान के साथ बातचीत करने का प्रश्न नहीं है, लेकिन पाकिस्तान और हिन्दुस्तान की जनता की हालत एक है। जिस प्रकार गरीब का शोषण हिन्दुस्तान में होता है उसी प्रकार गरीब का शोषण पाकिस्तान में भी होता है। इस सम्बन्ध में हमें सोचना चाहिए कि इन दोनों देशों की गरीब जनता है उसका शोषण चालू है, वह शोषण खत्म नहीं हो रहा है इसलिए ही बंगला देश की जनता संघर्ष कर रही है। वहां शोषण हो रहा था इसलिए वहां के युवक खड़े हुए। हमारे देश में शोषण

(श्री नत्थीसिंह)

से मुक्त करने की प्रवृत्ति बढ़ी है, जो बढ़ना शुरू हुई है, इसको और आगे बढ़ायें। इससे पहले हम अपने उद्देश्य में भी कामयाब नहीं हो सकते हैं। हम कहते हैं हमारे सत्ताइस मंत्री विदेश गये, प्रधान मंत्री विदेश गई। हमारे मुख्य मंत्रीजी विदेशों में होकर आये हैं। अभी कह रहे थे विदेशों में बहुत से लोग, जो पाकिस्तान में इस्लामी हुकूमत होने की बात कही जाती है, उसको मान्यता नहीं देते हैं। मुझे खेद के साथ कहना पड़ता है, अरब देशों ने, हमारे तथाकथित साथी देशों ने सहानुभूति प्रकट तो की है लेकिन पाकिस्तान के अन्दर जो हिन्दू-मुसलमान सभी बंगालियों के ऊपर अत्याचार हो रहा है इसकी कोई निन्दा नहीं की। जो तटस्थ राष्ट्र के नाम से पुकारे जाते हैं और जिन्हें तटस्थ राष्ट्र कहते रहे हैं उनमें से किसी ने बंगला देश के अन्दर भयंकर नरसंहार के लिए सैनिक तानाशाही की भर्त्सना की है? किसी ने नहीं की है। क्या यही जनमत बनाया है? आज कहते हैं कि इतने देशों के अन्दर प्रधान मंत्री गई, लेकिन क्या मिला? केवल देशों ने कहा, याह्याखां के देश को चिट्ठी लिखेंगे। दो देशों के सिवाय, जो पहले से ही बंगला देश की समस्या को समझे हुए थे, जिनकी बंगला देश में हो रहे नर-संहार से पीड़ित लोगों के साथ सहानुभूति थी, और किसी देश से बंगला देश को सहानुभूति नहीं मिली। किसी ने नहीं माना। वह समझते हैं केवल चिट्ठी लिख कर बंगला देश की समस्या हल हो जायगी। इससे समझते हैं कि विश्व का जनमत बदला है? यह गलत है। विश्व का जनमत आने जाने से नहीं बदलता है, अन्दर की ताकत पैदा करने से बदलता है। चीन को राष्ट्र संघ में मान्यता मिली, वह इसलिए कि उसने आर्थिक तौर पर अपने आपको मजबूत बनाया। आर्थिक तौर पर अपने को मजबूत बनाने के बाद ही उसे मान्यता देनी पड़ी। चीन के विदेश मंत्री या चीन के किसी मंत्री ने देशों का दौरा नहीं किया। उसके बाद भी तमाम देशों में होड़ लगी जिन्हें अमेरिका सैनिक मदद देता है, और दूसरी मदद देता है, उसके बावजूद भी चीन को संयुक्त राष्ट्र संघ में जगह देने के लिए और फारमोसा को हटाने के लिए अमेरिका को हराया। यह अपने देश के अन्दर ताकत पैदा करने का ही नतीजा है। अपने देश के अन्दर ताकत पैदा न करें और यह कहें कि हमें इन देशों से सहायता मिल जाय—यह गलत है। अभी भूतपूर्व मुख्यमंत्री कह रहे थे, पाकिस्तान की सैनिक सज्जा उसके खुद के बल पर नहीं है, उसको अनेक देश सैनिक सहायता देते हैं, आर्थिक सहायता देते हैं। लेकिन मैं इस बात को नहीं भूल सकता, उपाध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान को विश्व के तेरह देशों ने आर्थिक और सैनिक मदद दी है तो हिन्दुस्तान को 64 देशों ने आर्थिक मदद दी है। लेकिन उसके बावजूद हम आर्थिक तौर पर अपने को मजबूत नहीं कर पाये हैं। हम इस बात को कह कर संतुष्ट होना चाहते हैं कि निक्सन प्रशासन कहता है कि जो अब तक समझौते हुए है इनके बाद पाकिस्तान को सैनिक सहायता नहीं दी जायगी। यह प्रधान मंत्री के वहां जाने का प्रभाव है? गलत बात है। निक्सन प्रशासन, विश्व के उन देशों को, जो अमे-

(श्री नत्थीसिंह)

रिका की सहायता पर पले हैं, जिनमें पाकिस्तान भी एक है, शिक्षा देना चाहता है कि मेरी सहायता के बाद भी चीन के पक्ष में मतदान क्यों किया ? उन्हें एक भभकी और घुड़की देने के लिए वह ऐसी बात कहता है। आज भी उसका दिल और दिमाग साफ नहीं है। वह चाहता है कि हिन्दुस्तान-पाकिस्तान लड़ते रहें और दोनों के दोनों कमजोर होते रहें।

आज कहते है,हमारे साथी भी हैं दुनियां में और इसमें, जो हिन्दुस्तान और रूस की सन्धि हुई है उसका बड़ा जिक्र किया जा रहा है। बड़ी चर्चा की जाती है भारत-रूस की सन्धि की। मैं पूछना चाहता हूं, भारत-रूस सन्धि के बाद आज की तारीख तक, जब से सन्धि हुई, बंगला देश को बंगला देश कहा ? बंगला देश, पूर्वी बंगाल भी नहीं बल्कि पूर्वी पाकिस्तान कह कर पुकारा गया। अल्जीरिया के साथ में जो विज्ञप्ति निकली रूस की, उसमें भी उसे पूर्वी पाकिस्तान कह कर पुकारा गया। उसमें कहा गया, पाकिस्तान की अखण्डता के हामी हैं। हम नहीं कहते, पाकिस्तान टुकड़े टुकड़े हो जाये, लेकिन उपनिवेशवाद की नीति पर चल रहे याह्या खां, और उसकी सैनिक सरकार, उससे चाहते हैं, बंगला देश की आजादी की लड़ाई लड़ रहे हैं वह निश्चित रूप से कि बंगला देश स्वतंत्र हो, और अपनी भूमि की और देश की जनता की स्वतंत्रता की वह रक्षा करें। लेकिन हम आकांक्षा कर रहे हैं, बंगला देश आजाद होकर रहेगा और दूसरी तरफ डिप्लोमेसी के नाम पर कहते रहें–बंगला देश याह्या खाँ के अधीनस्थ है और पाकिस्तान का एक भाग है। यह दो बातें एक साथ नहीं चल सकती हैं। देश के मनोबल को पूर्ण रूप से अभिव्यक्ति देने के लिए यह साफ करना होगा, बंगला देश की आजादी के लक्ष्य को उस देश की जनता ने रखा है उसका हिन्दुस्तान हामी है और बंगला देश की आजादी के लिए, जिस तरह से मुजीब ने कहा है, आवामी लीग ने कहा है, वही बात नहीं बल्कि उससे भी आगे जाकर बात कहने की बात है। यह नहीं कि एक सांस में एक बात कहें और दूसरी सांस में दूसरी बात कहें। एक बात और कही है सन्धि के अन्दर दोनों देशों ने, जिस देश की जमीन पर दुश्मन देश कब्जा करेगा तब जाकर वह मदद करेगा। मै पूछना चाहता हूं, क्या रूस पर कोई देश कब्जा करने जा रहा है ? आज अमेरिका की हिम्मत है कि रूस से लड़ाई लड़े ? चीन की हिम्मत है कि रूस से लड़ाई लड़े ? तो रूस और भारत की सन्धि हो रही है, अब किसकी वह भारत को आंशका है। अब रूस के दोनों मित्र देश हैं, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान। यह ठीक है कि मनोवैज्ञानिक असर हुआ होगा और पाकिस्तान को दुबारा सोचने के लिए मजबूर होना पड़ेगा हिन्दुस्तान पर हमला तुरन्त करे या नहीं, लेकिन सन्धि को आधार मानकर तमाम आगे की कार्यवाहियों के अन्दर उसके इर्द-गिर्द घूमें तो उससे काम चलने वाला नहीं है। इसलिए जरूरत है कि हिन्दुस्तान के आजादी पसन्द लोग और बंगला देश के आजादी पसन्द लोग एक जुट हो सकें इसकी कोशिश करें। इसमें किसी तरह झिझक होती है, संकोच होता है, तो हमें शंका होती है कि जिस तरह टीथवाल हाजीपीर और कारगिल का दर्रा दे दिया,

(श्री नत्थीसिंह)

जिस प्रकार कच्छ में घुटने टेक दिये, कहीं उसी प्रकार समय आने पर, विश्व के राष्ट्रों के दबाव पड़ने पर, बंगला देश की जनता को अपने हाल पर नहीं छोड़ दें ? इसलिए बंगला देश की सरकार को तुरन्त मान्यता देना आवश्यक है ।

तो, उपाध्यक्ष महोदय, मेरा पहला निवेदन यह है कि जो कि बहुत ही इम्पोर्टेन्ट है। वह यह है कि भारत सरकार अविलम्ब बङ्गला देश को मान्यता दे और उसे सभी प्रकार की सहायता दें, चाहे पैसे की, चाहे फौज की हो, चाहे वो आर्म्स और एम्यूनिशन्स की हो, जिससे कि बङ्गला देश अपनी आजादी को कायम रख सके। उपाध्यक्ष महोदय, आज तक बङ्गला देश को मान्यता नहीं दी गई है और इस मामले को अधर में लटकाया हुआ है। इसलिए मैं सदन के माननीय सदस्यों की तरफ मै मुख्य मन्त्री महोदय से निवेदन करूंगा, कि वो इस बात को प्रधान मन्त्री तक पहुंचाये कि बङ्गला देश को तुरन्त मान्यता दी जानी चाहिये। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं, उपाध्यक्ष महोदय, यह सिद्धान्त का सवाल है, यह अपने अपने राष्ट्र के स्वार्थ का सवाल है, उसके लिए भारत वर्ष के लिए जरूरी है कि वह बङ्गला देश को मान्यता दे ।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे एक बात और निवेदन करना चाहता हूं कि जब उत्तरी वियतनाम और दक्षिणी वियतनाम का मामला आया, उस वक्त किसी देश ने किसी को नहीं पूछा । उत्तरी वियतनाम को जब रूस ने और चीन ने मान्यता दी, और भी देशों ने मान्यता दी, उस वक्त किसी भी देश ने पूछा ? उसी प्रकार हमें भी अपने आन्तरिक मामलों में किसी को पूछने का सवाल नहीं। हमें तुरन्त बङ्गला देश को मान्यता देकर उसे मदद देकर पाकिस्तान को वहां से हटाना होगा और यहां पर जो शरणार्थियों के लिए व्यवस्था की गयी उन्हें वापिस उनके देश में पहुंचाना होगा। आज हमारी सीमा पर इधर पाकिस्तान सेना जमाये बैठा हुआ है, उधर उपाध्यक्ष महोदय, चीन हमारे हिस्से पर कब्जा किये हुए पहले ही बैठा है और हमारी सीमा पर फौजों का मजमा चीन का लगा हुआ है। माओ मुस्करा रहा है हमारी तरफ, उपाध्यक्ष महोदय, राजस्थान के मुख्यमन्त्री जी कहते हैं कि हमारी सीमा प्रान्तों के लोगों का मनोबल ऊंचा है लोगों में साहस है वो तो ठीक है। उपाध्यक्ष महोदय, जब जब भी हमारे यहां मौका आया, चाहे सन 62 में हो, चाहे सन् 65 हो, हमारे देश की जनता ने एक जुट होकर मुकाबला किया। हम तो आज भी कहते हैं कि हम तैयार हैं। दूसरी बात जो मैं निवेदन करना चाहूंगा वह यह है कि आज जो पाकिस्तान और बङ्गला देश की लड़ाई है, वह उनकी आन्तरिक लड़ाई नहीं है, यह लड़ाई है, उपाध्यक्ष महोदय, सिद्धान्त की। आज लड़ाई है याह्याखां की उपनिवेशवादी नीति की और देश की आजादी के लिए बङ्गला देश की। यह तो सिद्धान्त की बात होगी हमें उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ना होगा और बङ्गला देश के लोगों को हर तरफ से याह्या खां की उपनिवेशवादी नीति को खतम करना होगा। हमें सिर्फ बातें नहीं करनी होंगी। हमें उसे हर तरह से सही तरीके से मदद करना होगा, एलानिया कह कर मदद करना होगा और याह्याखां को सबक

(श्री नत्थीसिंह)

सिखाना होगा। उपाध्यक्ष महोदय, अगर शुरु में ही जब याह्याखां के उपनिवेशवादी नीति के खिलाफ बङ्गला देश ने आवाज उठाई थी उसी वक्त अगर हमने उसकी मदद करनी होती तो आज जो दस लाख बङ्गला देश वासियों का नरसंहार बङ्गला देश में हुआ वह नहीं होता, और जो भारत सरकार की प्रधान मन्त्री कह रही है कि आज 90 लाख रिफ्यूजी बङ्गला देश के आ गये हैं, वो नहीं आ पाते और हमारे देश के गरीब लोगों पर टैक्स लगाकर जो धन उन पर लगाया जा रहा है वह नहीं लगता, और आज बङ्गला देश आजाद हो गया होता। उपाध्यक्ष महोदय, मैं युद्ध की अनिवार्यता की आशंका रखता हूं आज वैचारिक स्तर, सैद्धान्तिक स्तर पर क्योंकि उसके बिना इसका हल नहीं। आप जब तक बङ्गला देश को मान्यता देकर उसकी मदद करके याह्याखां की, उपनिवेशवाद कायम करने की कोशिश करने वाली फौज को, वहां से हटाकर इन्हीं रिफ्यूजी लोगों को वहां नहीं बसायेंगे। उपाध्यक्ष महोदय, इनका खर्चा हम पर पड़ता रहेगा इसलिए इसके लिए हमें मुजीब की मुक्ति वाहिनी फौजों की मदद करके बङ्गला देश को हर हालत में आजाद कराना चाहिये। उपाध्यक्ष महोदय, यह कांग्रेस सरकार की हमेशा ढिलमिल नीति रही है, वह बातें तो समाजवाद की करती है पर हमारे देश में पूंजीपतियों को पनपा रही है। आज टैक्स लग रहा सरकार की तरफ से गरीबों पर और पूंजीपति लोग करोड़ों रुपये ब्लेक मनी से पैदा कर रहे हैं। आज, उपाध्यक्ष महोदय, देश की सीमा पर खतरा है किन्तु पूंजीपति लोग बेतहाशा मुनाफा ले रहे हैं। चीजों की प्राइसेज बढ़ रही हैं। उन्हें सरकार रोक नहीं सकती, भ्रष्टाचार के खिलाफ घोषणायें की जाती हैं पर इस देश में भ्रष्टाचार पनप रहा है, कोई कार्यवाही किसी ने खिलाफ जो भ्रष्टाचारी है नहीं होती। आज भारत की प्रधान मंत्री ने जब इलेक्शन लड़ा तो एक नारा दिया था गरीबी हटाओ और कहा कि मैं समाजवाद लाऊंगी, गरीब और अमीर को बराबर कर दूंगी, गरीब-अमीर का भेद-भाव मिटा दूंगी, वह आज कुछ नहीं कर सकी हैं। उन्होंने कहा था एम्प्लायमेन्ट के लिये रास्ते खुलेंगे पर आज बेरोजगारी ऐसी है उपाध्यक्ष महोदय, कि जनता परेशान है। सरकार भ्रष्टाचार मिटाने की घोषणायें करती हैं, वो भ्रष्टाचार तो मिटा क्या सकेगी आज जब, उपाध्यक्ष महोदय, जब पूंजीपतियों ने सुना कि देश में लड़ाई हो सकती है तो बाजार से उन्होंने मिट्टी का तेल गायब कर दिया है आज मिट्टी के तेल के लिये लाइनें लगनी शुरू हो गयी हैं। लोगों को मिट्टी का तेल नहीं मिलता है, लोगों ने इस पर भी मुनाफा कमाना शुरू कर दिया है और ब्लेक शुरू कर दिया है। इसलिये, उपाध्यक्ष महोदय, हमारे लिये दोनों तरफ से सचेत होना पड़ेगा, एक तो सीमा पर पाकिस्तान और चीन से और देश में इन मुनाफाखोरों से और पूंजीपतियों से जो देश की गरीब जनता का गला घोट रहे हैं। ये सरकार भ्रष्टाचार क्या मिटायेगी जो सरकार रेजगारी की प्राबलम को नहीं मिटा सकती? तो, उपाध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन यह है कि ये पूंजीपति भी देश शत्रु हैं, इनसे भी निपटना होगा। लेकिन

(श्री नत्थीसिंह)

उपाध्यक्ष महोदय, देश की प्रधानमंत्री जो समाजवाद का नारा देती है यह सिर्फ राजनैतिक फायदा उठाने के लिये देती है और जब कभी उनसे वापिस सवाल करते हैं तो जनता को कभी यह कहा जाता है कि हमारे सामने उस वक्त कश्मीर की प्रॉब्लम आगयी, और कभी पाकिस्तान की बातें की जाती हैं कभी चीन की बातें की जाती हैं और इस तरह से समाजवाद का थोथा नारा दिया जाता है, और जनता के लिये कुछ नहीं किया जाता। अभी इलेक्शन के वक्त में प्रधान मंत्री ने गरीबी हटाओ का नारा दिया, बेरोजगारी खत्म करने का नारा दिया था, असमानता खत्म करने का नारा दिया था तो अभी गरीबी तो हटायी गयी नहीं बल्कि हिन्दुस्तान की जनता पर 70 करोड का टैक्स और लगा दिया। उपाध्यक्ष महोदय, यह टैक्स तो लगाना चाहिये था पूंजीपतियों पर ताकि कुछ समानता आती और गरीबों पर टैक्स का बोझा नही पड़ता। आज हमारे देश के पूंजीपति भी, उपाध्यक्ष महोदय, उतने ही दुश्मन हैं जितने कि बंगला देश की मुक्ति-वाहिनी फौजों की दुश्मन याह्याखां की फौजें, आज हमारा केवल वोही दुश्मन नहीं है जो किसी डी.आई.जी. की अटेची उठाकर ले आया। इसलिये हमें आज जरूरत है समाज में असमानता मिटाने की, बेरोजगारी हटाने की, महंगाई हटाने की, ताकि देश की जनता को राहत मिले।

बाड़मेर से आने वाले माननीय सदस्य ने कहा कि मैंने बाड़मेर जिले का दौरा किया है और साथ में जो सीमा पाकिस्तान से लगी हुई है उनका दौरा किया, मुझे ऐसा महसूस हुआ कि लोगों का मनोबल ऊंचा है, गंगानगर के लोग खेती कर रहे हैं, फसल खड़ी हैं तो, उपाध्यक्ष महोदय, मेरा आपके द्वारा राज्य सरकार से निवेदन है कि मिलिट्री मूवमेन्ट के कारण उनको जो क्षति हो उन्हें सरकार द्वारा पूरी की जाय और फसल जो वहां अभी खड़ी है उसकी खरीद की योजना होनी चाहिये, उनका बीमा होना चाहिये और उनकी खरीद की जिम्मेदारी सरकार की होनी चाहिये, ताकि उन इलाकों के काश्तकारों को अपनी फसल का भय नहीं रहे। अपने मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि मैंने जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, गंगानगर के जिले का दौरा किया और वहां के लोगों का मनोबल बहुत ऊंचा है, ऐसा बताया है। जहां जहां हमारे मुख्यमंत्रीजी ने भाषण दिया है कि इन्दिराजी ने समाजवाद का नारा दिया है और कहाकि भ्रष्टाचार मैं मिटा कर रहूंगी। मैं मुख्यमंत्रीजी से पूछना चाहता हूं आज जब इतने महीने हो गए हैं आपको सत्ता में आये हुए उस वक्त तो आपने बड़ी लम्बी लम्बी घोषणायें की थीं भ्रष्टाचार मिटाने की और यह कहा था कि या तो मैं रहूंगा या भ्रष्टाचार ही रहेगा तो मुख्य मंत्रीजी आप भी कायम हैं और भ्रष्टाचार की भी कमी नहीं है...

मुख्य मंत्री (श्री बरकतुल्लाखां) : मैंने मिटाने का थोड़े ही कहा था मैंने तो कहा कि भ्रष्टाचार मिटाने की कोशिश करूंगा यह कहा था।

श्री नत्थीसिंह : आपको तो साढ़े सात महीने मिले हैं देख लेंगे इतने समय में आप कितना भ्रष्टाचार को मिटायेंगे ?

एक माननीय सदस्य : मुख्य मंत्रीजी को मैंने 3–4 चिठ्ठियां लिखीं पर उन्होंने भ्रष्टाचारी अधिकारियों के खिलाफ कोई एक्शन नहीं लिया है। 3–4 महीनों में तो कोई भ्रष्टाचार खत्म नहीं हुआ है।

श्री विजयसिंह (मकराना) : मुख्य मन्त्रीजी आपकी कितनी चलती है वो बताऊं। आपसे जो मैंने दो आर्डर कराये वो आज तक उन्हें नहीं मिले हैं। अब आप देख लीजिये कि भ्रष्ट अधिकारियों के खिलाफ आपके यहां कितनी कार्यवाही होती है।

श्री नत्थीसिंह : इसलिए, उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि पाकिस्तान की नीति हमेशा से ही जब से यह बना है, सन् 47 से ही उपनिवेशवादी रही है और अगर इस नीति को खतम नहीं किया तो भारत के लिए हितकर नहीं है। ये बातें तो ठीक है कि जनता का मनोबल कितना ऊंचा है। (समय-समाप्ति-सूचक घन्टी)

इसी प्रकार उपाध्यक्ष महोदय, तिब्बत वाले मामले में हमने ढील दी जिसका नतीजा यह हुआ कि चीन ने उस पर कब्जा कर लिया और अब वह हमारी सीमा पर कब्जा किये बैठे हुए हैं। इसलिए हमें सत्यनिष्ठा से एक जुट होकर बंगला देश को मदद करनी चाहिए ताकि हमारे देश को सुरक्षा कायम रहे और बंगला देश की प्रॉब्लम खतम हो जाये और इसके लिए हमें सोच समझ कर कदम उठाने चाहिए। इस देश में, उपाध्यक्ष महोदय, दो धारायें लगातार चली हैं–एक धारा तो यह कि हम अपने को राज्य में कायम रखते चलें। इस प्रकार की रोज मर्रा की योजना बना कर चलें। इसीलिए 47 में पाकिस्तान मान लिया। हिन्दुस्तान पर, जो आकार में भी बड़ा रहेगा, हमारा राज है। तिब्बत इसलिए जाने दिया कि चीन से हमारी दोस्ती रहे। हाजी पीर दर्रा इसलिए छोड़ दिया कि रूस से हमारी दोस्ती रहे। अमेरिका से नाराजगी नहीं लेना चाहते। वह आकर कहता है कि सारे झगड़े को छोड़ो बंगला देश के और शरणार्थियों को बसाने के लिए हमसे मदद ले लो और इसको खतम करो। उनको यहां बसा दो। दूसरी धारा यहां चली कि मानवता के जीवन के मूल्यों में हमारे विचारों में परिवर्तन आये। मानव मानव सब एक हैं। मानव मानव का शोषण न करे। पाकिस्तान पहली विचारधारा के कारण बना। अतीत हमें बताता है कि हम इस प्रकार की विचार धारा अपना कर दबे हैं और यही स्थिति रही तो फिर दब जावेंगे। जनता के सामने ठीक रूप में राय रखनी चाहिए। हमारी फौजी ताकत पहले से बढ़ी है, अच्छी है। सेना का हौंसला बुलन्द है और जनता का भी हौंसला बुलन्द है। सब उनके पीछे हैं। सब पार्टीज इस माने में एक हैं। विशेषकर सोशियेलिस्ट पार्टी जो हमेशा इस बात को कहती रही है और इस बात की पूर्ण हामी रही है कि हमारे देश की सीमा सुरक्षित रहे और देश में शोषण बन्द हो। हम हर तरीके से तैयार हैं मदद करने के लिए। आपकी तैयारी क्या है? जिन तथ्यों की ओर मैंने इशारा किया है वे असली दुश्मन हैं। आपकी हिम्मत नहीं है दोनों मोर्चों पर लड़ाई लड़ने की तब तक आप कुछ नहीं कर सकते।

(श्री नत्थीसिंह)

दो तीन सुझाव आपकी मार्फत, उपाध्यक्ष महोदय, मैं सरकार को देना चाहता हूं। मुख्य मन्त्रीजी ने बार बार कहा कि बहुत लड़ाई लड़ चुके हैं कुछ डिक्लेयर्ड और कुछ अनडिक्लेयर्ड। हमने बार बार कहा है कि 18 वर्ष से लेकर 30 वर्ष तक के नौजवान को अनिवार्य रूप से फौजी शिक्षा दें और सीमा के पास के लोग हैं उनको अच्छे हथियार दें। हम बारबार क्यों भूल जाते हैं? लेकिन आपकी शासन चलाने की तबियत रही है वह रोजमर्रा की योजना के आधार पर रही है। चीनी—पाकिस्तान के हमले के बाद इसको पुनर्गठित करेंगे, लेकिन कहां चले गए? लड़ाई खत्म हो गयी, समझौता हो गया, कुछ देशों ने दबाया हमारी सारी योजना हवा हो गयी। जब नया खतरा आता है तो हम नयी तैयारी करते हैं। इसको बदला जाना चाहिये। योजनाबद्ध तरीके से रेग्यूलर जनता की फौजों की तैयारी करनी चाहिये।

इसके साथ साथ हम कहना चाहते हैं कि आपने सीमा से लगे इलाके में बोर्डर कमिश्नर बना दिया वहां के नागरिकों आश्वस्त करने के लिये। हमारा मन अभी नहीं माना है, राजस्थान के लोग आश्वस्त नहीं हो पाये हैं कि आप दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर काम करेंगे। यह उत्तराधिकार में बीमारी आपको मिली है। लेकिन आपने क्या कदम उठाये हैं? पंचायत और स्वायत्त शासन संस्थाओं को ठीक करना चाहते हैं तो दलगत राजनीति से ऊपर उठ कर आपको आगे आना पड़ेगा और उसके लिये कदम उठाने पड़ेंगे।

इसके साथ-साथ एक बात और कहना चाहता हूं कि हमने यह मान लिया है कि इस देश के साथ जो समस्यायें उठ खड़ी हुई हैं पाकिस्तान पर हमला करेंगे, पाकिस्तान की जनता के साथ हमारी कोई लड़ाई नहीं है। जगजीवनरामजी जब भी बोले हैं उन्होंने यह कभी नहीं कहा। पाकिस्तान की जनता भी सदियों से दबी रही हैं। आज पंजाब में भी पाकिस्तान के भाई तैयार हैं। सब की सहानुभूति है। सैनिक तानाशाहों से घृणा करते है। यदि लड़ाई हैं तो सैनिक तानाशाहों से है। दूसरे देश भी दबाना चाहते हैं। चीन से हम भुगत चुके हैं। जनता को यदि हम संगठित करने की और उठाने की क्षमता रखते हैं तो हमको चाहिये कि किसी के दबाव में न आवें। पूरे एशिया में एक लड़ाई और होगी उसको आपको समझना चाहिये। और उसके लिये आपको कदम उठाने पड़ेंगे। क्या एशिया और अफ्रीका का नेतृत्व चीन करे? हिन्दुस्तान भी यह क्षमता नहीं रखता है क्या? चीन पाकिस्तान की मदद करने की बात करता है। उसकी पृष्ठ भूमि में यह चीज है। यदि हम इसको नजरअन्दाज करके चलेंगे तो अपने आपको हम धोखा देकर चलेंगे। जो पीडित हैं उनके दिल और दिमाग को साथ लेकर चलें। उसको अवसर मिला है। बंगला देश में जो लड़ाई लड़ी जा रही है उसको पीठ न दिखायें। अब अवसर नहीं खोना चाहिये वरना बहुत गड़बड़ हो जावेगी। मुख्य मंत्रीजी, शिमला में कान्फ्रेन्स हुई। आपके विदेश मंत्री सरदार स्वर्णसिंह से चार सूत्री प्रोग्राम

(श्री नत्थीसिंह)

रखा। चार विकल्प हैं जिनके आधार पर बात हो सकती है बंगला देश पर। बंगला देश की जनता उन चार विकल्पों के विपरीत है। जो जनता आज लड़ाई लड़ रही है वह इसके विपरीत है। यह समझौतावादी वृत्ति चल रही है उसके प्रति हम सजग हैं। यदि सजग नहीं रहे तो जनता के दिल और दिमाग से आप वंचित हो जावेंगे और उसका आप विश्वास खो देंगे। केवल रोजमर्रा की राजनीति के आधार पर, अपने राज्य को चलाने के आधार पर बंगला देश को जनता की आजादी से कम की कोई बात करेंगे नहीं। कहते रहते हैं मुजीब साहब से बात करें, अवामी लीग से बात करें। दिसम्बर के महीने में एक और मौका ऐसा आ सकता है। जो लोग कहते हैं कि पाकिस्तान का आंतरिक मामला है, एक बार चुनाव हो गये कुछ लोगों को अयोग्य घोषित कर दिया दूसरी दफा निर्विरोध चुन कर आ गये इसलिए हमारा अन्दरूनी मामला है, उनके पास कोई जवाब नहीं होगा, उन्हीं लोगों के पास जवाब होगा कहेंगे कि सैनिकवाद का किसी प्रकार से पाकिस्तान में कायम रखा जाय। समझौता केवल, अवामी लीग ने जैसा घोषित किया है, बहुमत के प्रतिनिधि, मुजीब के साथ ही हो सकता था पर अब वक्त नहीं रह गया है। इतना भयंकर नर संहार कर चुकने के बाद अब समझौते का प्रश्न ही समाप्त हो गया है। अब तो बंगला देश आजाद होकर रहेगा। और है····

इस तथ्य को मान्यता देकर ही हम इस बंगला देश के सेनानियों के साथ एक कदम होकर आगे चल सकते हैं। इससे कम पर नहीं। मुझे आशा है हमारे कदम इसी दिशा में बढ़ेंगे। इसमें सारे देश की जनता सरकार के साथ है। बंगला देश के स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ है। बंगला देश के साथ है। जनतन्त्र के साथ है। जनतन्त्र का तानाशाह से कोई समझौता अब नहीं हो सकता जिसने जाति विनाश कर डाला है, इतिहास में क्रूरतम से क्रूरतम नर संहार कर डाला है। सारा संसार बंगला देश के स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ है।

श्री उपाध्यक्ष : श्री गोकुल प्रसाद शर्मा।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा (बीकानेर) : उपाध्यक्ष महोदय।

श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़): उपाध्यक्ष महोदय, पहले विरोधी पक्ष के लोगों को सुना जाय।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : नाम मेरा लिया है। बोलने दीजिये।

श्री दौलतराम सारण : हमारी पार्टी की संख्या के अनुपात से जितना समय देना चाहिए था, नहीं दिया गया है। यह बहुत गलत चीज है। आप को खुद ही सतर्क होकर यह सब देखना चाहिए।

श्री मदनसिंह (दांता रामगढ़) : कांग्रेस दल के दो व्यक्ति बोल चुके हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : एक बोला है अभी।

श्री मनोहरसिंह मेहता (मांडलगढ़) : समय सबके लिए बान्ध दें। किसी को डेढ दो घन्टा मिल जाता है किसी को थोड़ा भी समय नहीं मिला इसलिए यह शिकायत होती है।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : महारावल लक्ष्मणसिंहजी, भैरोंसिंह जी, नत्थीसिंहजी, तीन उधर से बोल चुके हैं। अब इधर भी बोलने दीजिए। आपने कोई ठेका ले रखा है क्या ?

श्री उपाध्यक्ष : सीमावर्ती क्षेत्र से सम्बन्ध है, उन्हें बोलने दिया जावे।

मेरा ख्याल है गोकुलप्रसादजी बोर्डर एरिया से सम्बन्धित हैं उनका भाषण पहले हो जावेगा तो बाद वालों को मदद मिलेगी।

श्री मदनसिंह : यह तो कोई क्राइटेरिया नहीं हो सकता।

श्री दौलतराम सारण : हमारी आपत्ति है इस पर। इस सम्बन्ध में हमारा एडजोर्नमेन्ट मोशन है। हमने यह लड़ाई लड़ कर सदन का समय बढ़वाया है और आज एक दिन इसके लिए कायम किया यह कोई सरकारी दल ने नहीं रखवाया है। वे बोर्डर के होने का दावा कर सकते हैं तो क्या हम नहीं हैं ?

श्री मदनसिंह दांता : आपको समय का निर्णय तो करना ही पड़ेगा।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : सोढ़ाजी, आप बिराज जाओ।

श्री नत्थीसिंह : ये सोढ़ाजी थोड़े ही हैं।

श्री उपाध्यक्ष : बद्रीप्रसादजी बी. के. डी. के, फर्स्ट, गोकुलप्रसादजी पीछे।

श्री बद्रीप्रसाद (बानसूर) : उपाध्यक्षजी''

श्री उपाध्यक्ष : समय का खयाल रख कर।

श्री दौलतराम सारण : पांच बजने आये, तब आसन को समय का खयाल आया। जब लोग दो दो घन्टे तक बोल गये, तब समय का खयाल नहीं आया।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता : (श्री गोकुलप्रसादजी की तरफ देखते हुए) पहले गोकुलप्रसादजी बोल लें, फिर मैं बोल लूंगा। वे नाराज न हों।

श्री मदनसिंह : आप दो की लड़ाई में मैं बोल लेता हूं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : आपने मुझे आज्ञा दी मैं बोलने खड़ा हुआ हूं।

श्री दौलतराम सारण : मुझे आपत्ति है उपाध्यक्ष महोदय, इस पर। हमारा एडजोर्नमेन्ट मोशन है। हमने सरकार से और सदन से लड़ कर समय लिया है। हमें समय नहीं देकर आप दूसरों को देना चाह रहे हैं। चार बजने वाले हैं तो इस तरह से आप अवान्तर रूप से दूसरों से हमें लड़ाना चाहते हैं और कहते हैं समय अधिक हो गया समय का ध्यान रखा जावे। मैं चाहता हूं मेरी पार्टी के लीडर को उचित समय दिया जाय।

श्री उपाध्यक्ष : मैंने तो बोलने से रोका नहीं है।

श्री दौलतराम सारण : बिलकुल।

श्री मदनसिंह : कोई एक तो शुरू कर दें।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : आप आदेश दें न, कौन बोलेगा ?

श्री उपाध्यक्ष : श्री बद्रीप्रसाद ।

श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता (बानसूर) : उपाध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की समस्या दिन पर दिन उलझती जा रही है और मैं समझता हूं कि अब हम इस सीमा तक पहुंच गये हैं कि कोई न कोई उपाय इसे सुलझाने का निकलने वाला है।

वास्तव में तो जब से हिन्दुस्तान से अलग होकर पाकिस्तान का जन्म हुआ वह द्वेष और घृणा पर आधारित था। अंग्रेजों ने अपनी, भेदभाव की नीति के कारण इसका निर्माण किया।

पर एक मुश्किल इसमें और आ गई। जहां भारत में प्रारम्भ से जनतन्त्र पनपता चला गया, वहां पाकिस्तान के जन्म के कुछ दिनों बाद से ही डिक्टेटरशिप और वह भी फौजी डिक्टेटरशिप प्रारम्भ हो गई। डिक्टेटरशिप तो और मुल्कों में भी है। रूस और चीन में भी है। पर इनमें पार्टी की डिक्टेटरशिप है, फौजी नहीं।

फौजी डिक्टेटरशिप की दुनिया में एक ही पालिसी रहती है, सिकन्दर, हिटलर, मुसोलिनी से लेकर याह्याखां तक कि वे अपने देश में जनतन्त्र की भावना को ही दबाये रखने के लिये, मानव की स्वतन्त्र रहने की और अपने भावों की, विचारों की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति की जो इच्छाएं होती हैं, उनको दबाये रखने के लिये एक ही तरह का तरीका अख्तियार करते रहे हैं कि वे किसी न किसी बहाने अपने आसपास के देशों के साथ युद्ध छेड़ते रहे हैं। हिटलर ने यही किया, मुसोलिनी और तोजो ने यही किया।

पर इस पाकिस्तानी डिक्टेटर ने एक गलती, अपनी चली आ रही परम्परा में, यह की कि पाकिस्तान की जनता को किसी तरह जनतन्त्र के भुलावे में डाले रखने के लिये आम चुनावों का वादा कर लिया। वह भी इस विचार से कि चुनावों में वे अपने मन पसन्द के लोगों को ही चुनवा कर ले आयेंगे। इस इरादे से चुनाव करा दिये। पर चुनावों का नतीजा बड़ा भयंकर निकला। अपनी पार्टी के लोगों की अपने मन पसन्द के आदमियों को जिता कर ले आने की उनकी कोशिश नाकामयाब ही नहीं हुई, बुरी तरह से फेल हो गई। याह्या खां को अपनी डिक्टेटरशिप के लिये इससे खतरा नजर आया।

इसके बाद इस चुनाव के नतीजों के झूठलाने के लिये और अपनी कुर्सी बनाये रखने के लिये जिस प्रकार का नर संहार और जाति विनाश इस डिक्टेटर ने किया उसके सामने आज तक के दुनिया के सब डिक्टेटर फीके पड़ गये, सब तोबा कर गये।

जनतन्त्र में जनता कि भावना की कद्र करने की भावना याह्या खां में थी ही नहीं चुनाव तो एक धोखा था। जनता को भुलावे में डालने के लिए एक षडयन्त्र था, पर संयोग से अपने षडयन्त्र में वे स्वयं फंस गये, उनकी भावना पहले भी जनता को दबा कर अपना गुलाम बना कर रखने की थी, आज भी वही है। आज पूर्वी बंगाल में भयंकर

(श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता)

असन्तोष है, जनता अपने अधिकारों के लिये जीवन मृत्यु का भयंकर युद्ध कर रही है। अपनी आजादी को प्राप्त करने के लिये हर बलिदान करने को तैयार होकर खड़ी हो गई है। मैं निवेदन कर देना चाहता हूं कि जब एक मुल्क जीवन मृत्यु की परवाह किये बगैर एक आदमी की तरह तन कर खड़ा हो जाता है तो उसकी आजादी को दुनिया की कोई ताकत रोक नहीं सकती। देश कितना ही कमजोर है, आजादी की लड़ाई इतिहास साक्षी है, जनता ने ही लड़ी है, इन कमजोरों और सताये हुए लोगों ने ही लड़ी है। वह लड़ाई कभी नाकामयाब नहीं हुई। चाहे सामने दुश्मन कितना ही बड़ा हो।

आज बंगला देश के लिये वही समय आ गया है। काफी कुर्बानियां दे चुका है। मैं विश्वास करता हूं कि बंगला देश निकट भविष्य में ही अपनी स्वतन्त्रता की लड़ाई में कामयाब होगा। वहां प्रजातन्त्र कायम होगा। तानाशाही धराशायी हो जायेगी। पाकिस्तान की इस समस्या के उलझाव में अमेरिका ने भी मदद दी। उपाध्यक्ष महोदय, अभी मैंने एक किताब पढ़ी अंग्रेजों के जमाने की। वह एक सी. आई. डी. आफिसर थे उन्होंने लिखी कि जब अंग्रेजों को मालुम हुआ कि हिन्दुस्तान आजाद होने जा रहा है तो चर्चिल के आर्डर्स थे कि हिन्दुस्तान में विध्वंस फैलाने के लिये एक बड़ा जाल रचा गया। वह बड़ी इन्ट्रेस्टिंग किताब है और उसमें उन्होंने सारा प्लान बनाया हिन्दुस्तान के अन्दर करोड़ों रुपया खर्च किया कि हिन्दुस्तान अगर आजाद हो जाये तो भी हिन्दुस्तान के आजाद होने के बाद भी हिन्दुस्तान की जनता में विध्वंस पैदा हो जाय और अंग्रेजों को वापिस बुला लें। इसके लिए उन्होंने हिन्दुस्तान के बहुत से मुसलमान नेताओं को तैयार किया। हैदराबाद में उस समय जो नवाब थे उनको तैयार किया और सी. आई. डी. के जरिये बहुत बड़ा जाल फैलाया और जब हिन्दुस्तान आजाद हुआ तो आजाद होते ही नोआखाली में और इस तरह की घटनायें घटी। उस किताब में उपाध्यक्ष महोदय, बहुत बढ़िया हाल दिया है। इस तरह से अंग्रेजों ने सारी बातें की थी और यह सारी चीजें इसलिये की थीं कि आजाद होने के बाद भी हिन्दुस्तान को जब भी आवश्यकता महसूस हो तो हम वापिस आ जायें। तो अंग्रेजों की मजबूरी थी और वे हिन्दुस्तान नहीं छोड़ना चाहते थे। वे पहले भी और आज भी चाहते हैं कि पाकिस्तान को मजबूत बनाया जाये और उपाध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान की आजादी को ये लोग आज दिन तक भी गले नहीं उतार सके हैं।

उपाध्यक्ष महोदय, हिन्दुस्तान के ऊपर सन् 65 में पाकिस्तान का हमला हुआ और बी.बी.सी. रेडियो ने फौरन खबर दी कि पाकिस्तान ने हमला नहीं किया बल्कि हिन्दुस्तान ने किया है। हमारी प्राइम मिनिस्टर जाये या कोई भी जाये इंगलैण्ड वाले समझते हैं कि अभी भी हिन्दुस्तान हमारे अधिकार में है और इसीलिये पाकिस्तान को मजबूत करने की बात वह सदा सोचता रहता है।

दूसरे चीन और अमेरिका की बात रही। अमेरिका का हाल तो ऐसा है कि जैसे

(श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता)

पंचायतों में सरपंच और उसके आदमी तो सब अच्छे और दूसरे लोग बुरे। विधान सभा में भी यही हाल है कि कांग्रेस में बैठे हुए सब अच्छे और अपोजीशन में जो बैठे हैं उनकी कोई बात सुनने वाला नहीं है। इसी तरह से उपाध्यक्ष महोदय, यू. एन. ओ. का हाल है जो अमेरिका और इंगलैण्ड के साथ रहे वह तो अच्छे और उनको तो सब तरह की मदद देते हैं और जो उनके साथ नहीं, जो उनके दोस्त नहीं वह सब बुरे हैं। इसी बात को सामने रख कर पाकिस्तान को तो हर तरह की मदद और हिन्दुस्तान, चूंकि किसी गुट में नहीं है इसलिये हिन्दुस्तान के साथ वे मदद करने को तैयार नहीं हैं। यह उसूल की बात है कि हिन्दुस्तान चाहे प्रजातन्त्र की बात करे या स्वतन्त्रता की बात करे या कितनी भी अच्छी बात करे हमारी कोई सुनने वाला नहीं है। जहां उनका स्वार्थ टकराता है, जो उनके दोस्त हैं वह तो अच्छे हैं और चाहे वे कितना भी बड़ा अपराध कर दें सब माफ है और जो उनके गुट में नहीं है, उनकी दोस्ती में नहीं है वह सब चाहें कितने भी अच्छे हों जैसे हिन्दुस्तान है, वह उसको मदद देने के लिये कभी तैयार नहीं हैं। ऊपर से तो कहते हैं कि हम मदद नहीं दे रहे हैं लेकिन अन्दर से सब मदद दे रहे हैं। अमेरिका के गुट का है पाकिस्तान इसलीए यह मदद करते हैं।

अब चीन का हाल यह है कि तिब्बत की आजादी का सवाल पैदा हुआ तो दलाई लामा को हमने मदद दी तो पहले तो चीनी भाई भाई थे और अब वे नाराज हो गये और अब अब कभी पाकिस्तान की बात होती है तो चीन पाकिस्तान का साथ देने वाला है। बंगला देश की बात आई तो उन्होंने कहा कि हम तो पाकिस्तान के साथ हैं और वे हिन्दुस्तान को बरबाद करने की चाल चल रहे हैं। उपाध्यक्ष महोदय, यह बात ठीक है कि बंगला देश आजाद होगा। लेकिन अब हमारे पास क्या रास्ता रह गया है। हमारे भारत में कोई बता रहा था कि 1 करोड़ के आसपास या 96 लाख शरणार्थी आ गये। ये आखिर रहेंगे कहां? आखिर, मजबूर होकर बंगला देश को आजाद कराने की बात हमको कहनी पड़ेगी और उसको आजाद कराना पड़ेगा। चाहे हम उनकी आजादी को मान लें लेकिन इस तरह की हालात है कि जैसे मुक्ति फौज के छापामार लड़ाई लड़ रहे हैं उससे यह मालूम होता है कि समस्या हल होने वाली है और तानाशाह खत्म होने वाला है। मेरे कहने का मतलब यह है कि समस्या का हल जरूर खोजना पड़ेगा। हमारी प्राइम मिनिस्टर ने भी कहा कि हम तो बड़े मजबूर हैं, हमारे पास एक करोड़ आदमी आ गये और हमारे ऊपर 3 करोड़ रोज का खर्चा है और वास्तव में देखा जाये तो 5 करोड़ रोज का खर्चा हो रहा है। हम तरक्की करना चाहते हैं और गरीबी दूर करना चाहते हैं। यह करना तो दूर रहा बल्कि हम पाकिस्तान की गरीबी दूर कर रहे हैं। इस लिए उपाध्यक्ष महोदय, दोनों तरफ से मजबूरी हो रही है। पाकिस्तान तो अपनी जनता को दबाने के लिए कि हिन्दुस्तान हमारे ऊपर जुल्म कर रहा है और हमारे से लड़ाई छेड़ना चाहता है और वह समस्या

(श्री बद्रीप्रसाद गुप्ता)

को और उलझाना चाहता है और जो हमारे पास शरणार्थी समस्या है उसका हल करने के लिए हमारे पास सिवाय लड़ाई करने के और कोई दूसरा चारा नहीं है। पाकिस्तान इस बात को कभी मानने वाला नहीं है इसलिए मैं समझता हूं कि यह बड़ी जटिल समस्या है। हमारी आजादी को कायम रखने का सवाल है और यदि हम सब लोग एक मन से भारत सरकार और राजस्थान सरकार का साथ दें तो कोई शक नहीं है कि इस समस्या का हल नहीं हो। इसके अलावा और भी समस्या पैदा होने वाली है जैसे मंहगाई है और दूसरी समस्या हैं उनको हल करके जनता का मनोबल बनाने के लिए और अपनी फौजों को कामयाब बनाने के लिए पाकिस्तान का रास्ता दिखाने के लिए हम सब को एक जुट होकर इस समस्या का हल करना चाहिए, यही मेरा कहना है।

श्री उपाध्यक्ष: श्री गोकुलप्रसाद शर्मा !

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा (बीकानेर) : उपाध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान की जो शुरूआत हुई वह ऐसे गलत उसूलों पर हुई है कि मुसलमानों ने तय किया कि हम अपने धर्म के नाम पर अपना देश बनायें और हिन्दुस्तान के बहुत से हिस्से ऐसे थे जिन्होंने कह दिया कि हमें धर्म के नाम पर देश नहीं बनाना है बल्कि सिद्धान्त के नाम पर बनाना है। हिन्दुस्तान वह देश बना जो कि सिद्धांत के ऊपर बना और धर्म-निर्पेक्ष राज्य बना। लेकिन धर्म का जनून जिनको चढ़ा था उन्होंने हल्ला किया और पाकिस्तान के नाम से देश अलग बनाया। धर्म किसी को खाने के लिए नहीं देता।

(श्री विजयसिंह, सभापति, पदासीन)
(4-25 म.प.)

पूर्वी बंगाल वालों ने धर्म से यह तय किया कि पाकिस्तान में हम जायेंगे और यह बड़ी आमदनी का हिस्सा है और इससे काफी पैसा बढ़ेगा और बड़े ठाठ-बाट से रहेंगे और पूर्वी बंगाल में आदमी ज्यादा हैं उन्होंने यह सोचा था कि सारा बंगाल हमारे हाथ में आ जायेगा इस लालच से वे उस रास्ते पर चले गये लेकिन बाद में पता चला कि सारी सत्ता पश्चिमी पाकिस्तान वालों के हाथ में है और वे सिर्फ हमें लूट रहे हैं तो जिस समय पाकिस्तान बना था तो ये शेख मुजीबुर्रहमान पाकिस्तान बनाने वालों में थे, जिन्ना के साथ थे, सोहरावर्दी के साथ थे। उसके बाद जब पता चला कि उनका शोषण हो रहा है, उनके यहां भुखमरी हो रही है और पंजाब वाले मौज कर रहे हैं तो उन्हें अकल आई और पाकिस्तान के खिलाफ उन्होंने विद्रोह किया आर्थिक नीति को लेकर उन्होंने वर्षों से लड़ाई लड़ी और उसका नतीजा यह हुआ कि फौजी शासन को चुनाव कराने पड़े और चुनाव में बहुमत आया अवामी दल का और वे चुनाव कराये थे फौजी शासन ने इसलिए बेईमानी का तो सवाल ही नहीं उठता बहुमत से जब राज उनके हाथ में आने लगा तो फिर उनको पता लगा, पंजाबियों को पता लगा, फौजी हुक्मरानों को पता

(श्री गोकुलप्रसाद शर्मा)

लगा कि किसी तरह से हमारे हाथ से हुकूमत चली जाएगी तो उन्होंने जुलुम ढाना शुरू किया। आज तो उनके उसूलों की हार हुई है। जो धर्म के नाम पर राज्य बनाने का उन्होंने उसूल बनाया था उसकी हार हुई है और जिस मजहब के नाम पर पाकिस्तान बना था उस के सिद्धांत की हार हुई है और जो धर्म निरपेक्षता की नीति थी उसकी जीत हुई है। आज वे धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत को मानने को तैयार हुये हैं। उन्होंने धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत को मान्यता दी है और इसी धर्म निरपेक्षता के सिद्धांत को मान्यता देने के कारण हमें सोचना चाहिये क्योंकि हमारे उसूलों को उन्होंने माना है, पूर्वी बंगाल के लोगों ने जिसको आज हम बंगला देश कहते हैं और अपने आपको बंगला देश के नाम से अपने आपको घोषित किया है तो हमारी यह जिम्मेदारी है कि हमारे उन उसूलों को जो उन्होंने माना है, आज जो भूले हुए अपने घर वापिस आये हैं, देर से आए दुरुस्त आए, तो उनके लिए हमने क्या किया ? सहानुभूति तो काफी दे रहे हैं लेकिन मैं यह कहना चाहूंगा कि कुछ सहयोग पूरा नहीं दे पा रहे हैं। पाकिस्तान के फौजियों ने जिस प्रकार से बंगला देश में हत्यायें की हैं यह किसी से छिपा नहीं है। बारबार इसको दोहराया जाता है, यहां पर भी दोहराया गया है और अखबारों में भी रोज पढ़ते हैं। इन पाकिस्तान के हुकुमरानों ने जैसे अत्याचार किए हैं वैसे शायद इतिहास में कहीं पर भी ढूंढ़े नहीं मिलेंगे और ये अत्याचार भी किस लिए, धर्म के नाम पर कि हम अपने धर्म का राज्य बनाये रखेंगे। दूसरी तरफ इस धर्म के सिद्धांत को नहीं मानने के कारण लोग अत्याचार सह रहे हैं। जिन बातों को लेकर आज पाकिस्तान में झगड़े हो रहे हैं आज हमारे यहां पर भी हम उसी तरह से झगड़े फैलाना चाहते हैं। आज हम भी उसी पद चिन्हों पर चलना चाहते हैं। हमारे देश में भी और हमारी सीमाओं में भी इसी तरह का खतरा पैदा करना चाहते हैं और इस तरह की अफवाहें फैला रहे हैं कि जैसे मुस्लिम लीगी फैलाया करते थे। जो साम्प्रदायिकता को जमाने की चेष्टा कर रहे हैं। आज मान लो कुछ अफसरों ने तटस्थता से चुनाव में भाग लिया, तो सभापति महोदय, आज यह मौका आया है कि चूंकि तुम तटस्थ रहे, हमारा साथ नहीं दिया तो तुम बेईमान हो, निकालो इनको बाहर। ये अधिकारी बुरे हैं और ये अधिकारी चोर हैं। तो अधिकारी चोर हैं तो ये भी तो आपके ही लोगों में से हैं। राज की नौकरी में तो डेढ दो लाख आदमी हैं तो आप में से ही हर सौ आदमियों में से 1–2 लोग सरकारी नौकरी में हैं तो ये भी तो अपने में से ही हैं। अब यह क्या बात हो गई कि क्योंकि हमारा राजनैतिक साथ नहीं दिया इसलिए मैं इसका विरोध करता हूं। वहां के कुछ लोगों के लिए साम्प्रदायिक होने का नाम लेते हैं कि इन्होंने पाकिस्तान का सपोर्ट किया, आज वह पाकिस्तान के जासूस हैं, उन्होंने पाकिस्तान को पहले भी खबरें दी, आज भी खबरें दे रहे हैं, ऐसे वर्ग के लोग हैं, इस तरह की कई बातें हमारे सामने कही गई। इन बातों को कहने में भी एक धर्म विशेष के लोगों का जिक्र किया गया। पाकिस्तान से

(श्री गोकुलप्रसाद शर्मा)

तस्करी करते हैं तो क्या धर्म विशेष के लोग ही तस्करी करते हैं। उनका नाम तो ले लिया लेकिन उन शेख लोगों का नाम नहीं लिया जो बाड़मेर में तस्करी करते हैं। इन तस्करों में आज एक जाति विशेष का नाम लेते हैं जिनके पास पैसा नहीं है, जिनके पास खाने को नहीं है। उन लोगों का मजहब चूंकि हमारे मजहब से नहीं मिलता इसलिए हम उनके बारे में बात करते हैं और इस तरह से जिस आधार पर पाकिस्तान में लड़ाई हुई उन्हीं पद चिन्हों पर हम भी चलना चाहते हैं। हम पाकिस्तान से सबक लें कि पाकिस्तान हम से सबक ले। हम पाकिस्तान से क्या यह सबक लें कि जो अत्याचार हिन्दुओं पर वहां हुए वही अत्याचार यहां मुसलमानों पर करें और इस तरह से जिस प्रकार की लड़ाई वहां पर हुई वैसी ही लड़ाई यहां पर भी हो जाय। पाकिस्तान ने हमसे सबक लिया कि धर्म निरपेक्षता की नीति ही ठीक है। पाकिस्तान का बहुमत आज हमारा उसूल मानता है। आज हम कहते हैं कि याह्याखां हम से सबक ले, क्या सबक लेगा वह। हम उनको कहते हैं कि हमारे यहां अल्पमत के लोग हैं, मैं अल्पमत या बहुमत में विश्वास नहीं करता, यह बात मेरे दिमाग में नहीं है, लेकिन जो उस धर्म को मानने वाले थोड़े लोग हैं उन पर हम आक्षेप करना चाहते हैं। पीर पगारों का नाम लिया जनसंघ के माननीय नेता ने कि वह बेईमान है। पीर पगारों उनके एक धर्म गुरु हैं जिनके प्रति लोगों की मान्यता है। गुरुजी की भी मान्यता है और आर. एस. एस. के बहुत सारे लोग उनको मानते हैं, बहुत बड़ी मान्यता है उनकी, हजारों लोग उनके पास जाते हैं। वल्लभ सम्प्रदाय के महाराज हैं उनकी मान्यता है। जगद्गुरु शंकराचार्य हैं, उनकी मान्यता है। हजारों उनके अनुयायी है। उनकी तो इतनी मान्यता है कि जब वे जमीन पर चलते हैं तो धरती पर पांव नहीं रखते, उनके आगे लाल कपड़ा बिछाया जाता है जिस पर वे चलते हैं। अपने अपने धर्म की मान्यता है। यह वही पीर पगारों हैं जो पाकिस्तान में रहते थे और उनके अनुयायी, उनके धर्म को मानने वाले यहां रहते हैं। तो इसमें क्या बात हो गई। अरब में मक्का मदीना है और उसको मानने वाले यहां पर रहते हैं दुनियां में और जगहों पर भी रहते हैं तो इसमें क्या बात हुई। क्या पीर पगारों को मानने वाले इस देश में नहीं रहेंगे? जो पीर पगारों को मानने वाले इस देश में रह गए हैं तो क्या उनको यहां से निकाल दें? यहां से हटा दें? हमने एक तरह की अफवाह फैलाना शुरू कर दिया। आज हम भी उन्हीं पद चिन्हों पर चलना····

श्री कृष्णकुमार गोयल (कोट): क्या माननीय सदस्य यह बतायेंगे कि पीर पगारों ने सन् 65 के पाकिस्तानी आक्रमण के समय यह एलान किया था कि उनके समर्थक पाकिस्तान का समर्थन करें और पाकिस्तान का साथ दें। आपने जो पीर पगारों की तुलना अन्य धर्माचार्यों के साथ की तो क्या इन धर्माचार्यों में से किसी ने भी अपने अनुयायियों को यह कहा है कि तुम पाकिस्तान का समर्थन करो? आप वोटों के पीछे किस प्रकार से अंधे होते जा रहे हैं····

(श्री कृष्णकुमार गोयल)

(शोरगुल)

आप जानते नहीं हैं कि पीर पगारों कौन हैं और अपने धर्म गुरुओं से उनकी तुलना करते जा रहे हैं ?

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : आप भी कुछ नहीं जानते हैं। पाकिस्तान बनने के बाद पीर पगारों के जो अनुयायी थे वे सीमा पर आए और ...

श्री भगवानदास शास्त्री (अजमेर पश्चिम) : वे धर्म सम्प्रदाय के गुरु नहीं हैं, वह डाका डालने वाले गिरोह के सरदार हैं।

(शोरगुल)

(कई माननीय सदस्य एक साथ बोलते रहे)

श्री सभापति : अंकित न हो।

श्री भगवानदास शास्त्री : × × ×

श्री आलमअली (फतेहपुर) : इस प्रकार के डाका डालने वाले गिरोह के सरदार के साथ हमारे धर्म गुरुओं की बात कही जाएगी तो हम कभी बरदाश्त नहीं करेंगे।

(शोरगुल)

श्री भगवानदास शास्त्री : मेरे कहने का मतलब यह है कि जो गिरोह का सरदार है, पीर पगारों किसी सम्प्रदाय का गुरु नहीं है। उत्तर सिंध की तरफ जो जाति मिलती है उनके वह शिष्य हैं। जो कुछ भी काम करवाए जाते हैं उनका आधा हिस्सा वे लेते हैं......

(शोरगुल)

श्री शिवचरणसिंह (महुआ) : यह दोनों गलत कह रहे हैं। पीर पगारों को तो मरे हुए समय हो गया है। उनके अलग अलग सम्प्रदाय हैं।

श्री भगवानदास शास्त्री : पीर पगारों का तो, जो ओरीजिनल पीर पगारों था उसका तो अपहरण हो गया....

(शोरगुल)

(कई माननीय सदस्य एक साथ बोलते रहे)

श्री सभापति : अंकित न हो।

(शोरगुल)

कई माननीय सदस्य : × × ×

श्री सभापति : कुछ भी अंकित न हो।

कई माननीय सदस्य : × × ×

श्री यशवन्तसिंह नाहर (बनेड़ा) : मुझे तो कुछ नहीं बोलना है मैं तो यही कह रहा हूँ कि जब माननीय सदस्य बोल रहे हैं तो उनको बोलने दें, आपका मौका आए तब आप कह दें। पीर पगारों के ऊपर सदन में पाकिस्तान और हिन्दुस्तान का युद्ध हो रहा है और आप दोनों उसी में लड़ रहे हैं।

मेजर श्री फतेहसिंह (ब्यावर) : पीर पगारों के बारे में जितना हादी साहब जानते हैं उतना दूसरा कोई नहीं जानता।

× × × अध्यक्ष पीठ के आदेशानुसार अंकित नहीं किया गया।

श्री खेतसिंह (शेरगढ़) : यह कौन से पीर पगारों आ गए ?

श्री सभापति : आप कौन से पीर पगारों से कम हैं ।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मैं यह निवेदन कर रहा था हम यह नहीं चाहते कि हमारे यहां पर भी पाकिस्तान की तरह से धर्म के नाम पर युद्ध चले और उनके लिए यह कहा जाय कि ये व्यक्ति और इस धर्म के लोग हमारे यहां देश के खिलाफ जासूसी करते हैं अगर यहां के लोग जासूसी करते हैं तो जासूस पकड़े गये हैं । वे सब मानते हैं । दूसरे देश के आये हैं, तो पकड़े गये हैं, मेरे देश के निवासियों का क्या है इसमें । हमें तो धर्म निरपेक्षता बचानी है । मैं आपके द्वारा यह निवेदन करना चाहता हूं हम उन पाकिस्तानियों के पद चिन्हों पर न चलें । हम तो यह समझें कि हम सारे हिन्दुस्तान के रहने वाले हैं । जैसे अभी जनसंघ के नेता ने कहा देश हित में सारा काम होना चाहिये । तस्कर व्यापारी बहुत से पकड़े जाते हैं । गरीब लोग करोड़पति हो गये तस्करी व्यापार करते करते । तस्करी का नाम ले लिया है, मैं एक अर्ज कर दूं मेरे शहर की बात करता हूं जहां का मैं निवासी हूं, एक जासूस पकड़ा गया–4–5 दिन पहले ही पकड़ा गया है । वह कई वर्षों से यहां रहता था और बड़े पागलपन की तरह रहता था । यूं हाथ ऊंचा किया करता था । वह दो दुकानों पर बैठा रहता था । एक तो अखबार वाले की दुकान के नीचे और दूसरे शराब की दुकान के नीचे । वर्षों से वहां बैठता था । सरकार की ऐजेन्सी उसे नहीं पकड़ सकी । कोई सेना का एक कमान्डर था उसने शिकायत की तब पकड़ा गया । अब उसको कौन खाना देता था, कौन क्या देता था, ये सब बातें हैं लेकिन कहने का मतलब यह है कि इस पर सरकार की निगाह नहीं थी । सरकार की निगाह कहां जाती है जहां दो मोहल्लों में झगड़ा हो जाय और एक अल्पमत वाले हों और दूसरे बहुमत वाले हों, तो सरकार की ऐजेन्सी रिपोर्ट करेगी उस 150 रु. पाने वाले क्लर्क की या किसी गरीब चपरासी की । उसके खिलाफ रिपोर्ट होगी, किसी सेठ साहूकार पर सरकार की नजर नहीं जायगी और उस बेचारे गरीब क्लर्क या चपरासी को बाहर भिजवा देगी । मैं दो–तीन साल से बराबर लिख रहा हूं कि यह गरीब आदमी है–इन गरीब मुसलमानों को मत सताओ । आप इनकी जांच करावो, लेकिन कोई जांच नहीं की जाती है । जो सवा सौ की नौकरी करता है, सरकार उसको सताती है और उसको बीकानेर से उदयपुर भेज देती है लेकिन वह दो हजार रुपया महीना पाने वाला जो वर्षों से रह रहा है उसको गवर्नमेंट नहीं भेज सकती है । इस मामले में गवर्नमेंट की नीति बहुत खराब है । सीमा पर जो ठेले चलाते हैं उनको आप जासूस कहते हैं । आप उनको क्यों नहीं कहते हैं जिनके पास करोड़ों रुपया है । दो हजार रुपया पाने वाला तो यहां रह गया और एक गरीब को भगा दिया । सरकार की पुलिस इन्टेलिजेन्सी पर हम

(श्री गोकुल प्रसाद शर्मा)

करोड़ों रुपया खर्च करते हैं लेकिन कुछ नहीं होता है। जो बेचारा गरीब जोर से बोल देगा तो सरकार की ऐजेन्सी कह देगी वह पाकिस्तानी एजेन्ट है। कोई अफसर किसी से नाराज हो गया एक एस. डी. एम. नाराज हो गये एक व्यक्ति से तो उन्होंने उसके खिलाफ कलेक्टर को चिट्ठी लिख दी कि यह व्यक्ति पाकिस्तान का ऐजेन्ट है, जांच नहीं की, कुछ नहीं किया और उसको भेज दिया। इस तरह हम एक रास्ते से दूसरे रास्ते पर चले जायेंगे और जो हमारा धर्म निरपेक्ष राज्य है, उसको भूल जायेंगे। अगर लीग वाला रास्ता पकड़ रखा और इसमें तो मुझे कुछ सांठ-गांठ लगती है ताकि उनके पद चिन्हों पर चल रहे हैं। वह कह दें जो सही है। धर्म के नाम पर राजनीतिक पार्टी चलाना चाहते हैं। राजनैतिक पार्टियों के करने से अगर आप सरकारी अधिकारियों का ट्रांसफर करते हैं तो यह ठीक है। फिर हमारी वही हालत होगी जो पाकिस्तान की है। यहां राज्य चलेगा तो सारे देश का एक चलेगा। अगर धर्म घुस गया तो एक प्रान्त के आकर बैठ जायेंगे। मेरे यहां मान लो बंगाली चला-देंगे तो फिर बिहारी कहेंगे हम भी स्वतन्त्र होना चाहते हैं। इसलिये अगर धर्म के नाम पर चलाया तो ठीक नहीं है। हमें यह सबक लेना चाहिये जो धर्म के नाम पर राज्य करना चाहते हैं वे सोच लें। धर्म के नाम पर उनको सीधे से धर्म-निरपेक्ष पर आ जाना चाहिये।

(समय समाप्ति सूचक घन्टी)

बार बार हम अल्पमत वालों के खिलाफ बोलते जाते हैं तब पाकिस्तान उनको बहकाता जाता है–पाकिस्तान इसलिये कि हम अगर हमला करेंगे तो 65 की लड़ाई हम जानते हैं कोई नहीं बोलेगा। दो-चार आदमी बताने चले गये होंगे तो बाबा हमारे हिन्दुस्तान के ज्यादा गये होंगे। मुसलमान भी बिक जाते हैं तो हिन्दू भी बिक जाते हैं . . .

श्री भगवानदास शास्त्री : एम. एल. ए. भी बिक गये हैं।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : इस तरह के लोग रहते हैं उन पर क्यों चलें। हमें तो हमारी देश रक्षा के लिए सेना ने जो काम किया है और जो करने जा रही है और जो उनके हौंसले बुलन्द हैं उनके मनोबल को ऊंचा करने के लिये विचार करना चाहिये।

(समय-समाप्ति-सूचक घन्टी)

जनता का मनोबल कैसे ऊंचा हो। कुछ की मान्यता है सीमा क्षेत्र खाली कर देने चाहिये। सीमा खाली कर देने से तो श्रीमन् भगदड़ मच जायगी। सीमा अगर 5–7 मील से भी खाली हो जाय तो सीमा खाली करके कहां जायेंगे, 10 मील और 10 मील की सीमा खाली कर दें तो कहां जायेंगे 15 मील और जब 15 मील पर सीमा खाली कर जायेंगे तो 15 मील वाले कहेंगे ये सीमा खाली करके आये हैं तो अपन भी सीमा से आगे चलो। इस तरह कितने माइल तक आप सीमा खाली करायेंगे। सबका विचार यही होगा कि ये लोग खाली करके आये हैं तो हम भी खाली करके चलें। इसलिये यह विचार ठीक नहीं है। इन्दिरा की पालिसी खराब

(श्री गोकुल प्रसाद शर्मा)

करने के लिये सीमा खाली करें सीमा खाली इसलिये करना चाहते हैं ताकि राज्य सफल न हो जाय। मैं कहता हूं सीमा पर से एक आदमी को खाली कराने की जरूरत नहीं है। उनके मनोबल को ऊंचा करें। आप जिस तरह यहां आराम से रहते हैं सीमा के लिए कुछ और सोचें। आप यह सोचें कि 10 मील तक उनसे कोई लगान नहीं लिया जाय। उनके यहां हास्पिटल और डाक्टर हों। उनकी सुविधा का हर इन्तजाम वहां हो। उनके लिये सड़कें बनाई जांय। उनके खाने-पीने की चीजें सस्ती मिलें, जैसे कश्मीर में मिलती हैं। कश्मीर में हर चीज सस्ती मिलती है। जिस प्रकार पंजाब सरकार ने लगान बन्द किया है, हरियाणा की सरकार ने लगान बन्द किया है। तो राजस्थान को क्या शर्म आती है? वह क्या हिन्दुस्तान से बाहर की चीज है? पंजाब में जिस तरह की सहूलियतें दी हैं वैसे दें। इसलिये मेरा निवेदन है सीमा वाले पूरी ताकत के साथ वहां रहें और खूब अच्छी तरह से रहें। और आप बड़े मेहरबान हैं तो मैंने बताया है कि आप लगान बन्द करिये। आप पानी का इन्तजाम करिये। आज वहां पर पानी की व्यवस्था नहीं है। तो ट्यूबवेल खुदवा कर वहां की जमीन में सिंचाई करवाइये ताकि वहां का आर्थिक तन्त्र मजबूत हो सके। इस प्रकार की मदद आप दें ताकि लोगों का मनोबल ऊंचा उठ सके।

श्री सभापति : आपने काफी समय ले लिया है। अब आप समाप्त करें।

श्री गोकुलप्रसाद शर्मा : मेरा एक ही निवेदन है कि बंगला देश के लोगों को, बहुत बरसों के बाद अपने घर आ गये हैं, वे अब सही रास्ते पर आ गये हैं और हम जितना सहयोग उनको दे सकें उनको दें ताकि उनको सफलता मिले और बंगला देश कायम हो इस पर हमारी ताकत लगनी चाहिये। यह बात देश के अन्दर साफ हो गई है कि मुस्लिम लीग ने इस देश के अन्दर मजहब के नाम पर जो देश बनाया था, यहां भी मजहब के नाम पर बनाने का इरादा छोड़ दें।

श्री सभापति : मदनसिंह।

श्री मदनसिंह (दांता रामगढ़) : सभापति महोदय, आज स्थिति ऐसी है कि हिन्दुस्तान और पाकिस्तान की फौजें किसी भी क्षण आपस में लड़ सकती हैं और उस क्षण में, उस मौके पर हम विधान सभा के अन्दर बैठ कर एडवाइज देने में लगे हुए हैं तो हमारा इस प्रकार का दृष्टिकोण अच्छा नहीं है। पोलिसी डिक्लेअर हो चुकी है और कोई दिन या किसी भी सेकेण्ड में लड़ाई छिड़ सकती है। अब यहां पर किसी पार्टी के सम्बन्ध में कुछ कहें, सीमाओं के सम्बन्ध में कुछ कहें जैसा कि अभी गोकुलप्रसादजी कह रहे थे कि यह पलो नहीं हुआ यह नहीं हुआ और सीमा खाली नहीं करनी चाहिये तो सीमा खाली कराने का काम अब फौजों के हाथ में है। यह अब न हमारे हाथ की बात है न इस विधान सभा के हाथ की बात

(श्री भैरव सिंह)

है, यह न मुख्यमंत्री के सोचने की बात है और न इन्दिराजी के सोचने की बात है। यहां पर हंसने के लिये कोई बात कही जा रही है तो बात अलग है। परन्तु मैं यह कहना चाहता हूं कि इस वक्त सीमाओं पर हमारी फौजों को पूरे अधिकार इन्दिराजी ने दे रखे हैं ! कब कहां क्या किया जाये, क्या होना चाहिये यह उनके अधिकार में है। पोलिसी अब डिक्लेअर हो चुकी है। अब तो यह सोचना है कि नागरिकों की सुरक्षा किस तरह से होनी चाहिये। बम्बार्डमेंट जोधपुर में होता है, बीकानेर में होता है, तो उसके लिये हम अच्छा से अच्छा मोर्चा बनायें, इस पर सुझाव न देते हुए कोई भ्रष्टाचार की बात कर रहा है, कोई क्या बात कह रहा है, यह सुन कर मुझे ताज्जुब होता है। मुझे यहां पर अभी यह सुनकर भी ताज्जुब हुआ कि जो भूतपूर्व मुख्य मंत्री थे और जो प्रिजेन्ट मुख्य मन्त्री हैं उन्होंने दो भिन्न भिन्न बातें कहीं। वे दोनों पालिसी मैटर पर दो दो बातें बोले। बरकत साहब ने कहा, याहियां खां समझौते की बात करना चाहता है। उधर जो पहले मुख्य मन्त्री थे उन्होंने कहा, नहीं अब ऐसी कोई स्टेज नहीं है। इससे मुझे भ्रम होता है कि दोनों में से कौन सही है ? पाकिस्तान दबा हुआ है। पाकिस्तान के डिक्टेटर हम से बात करना चाहते हैं। सुखाडिया जी ने कहा अब कोई बात का विचार नहीं करना चाहिए। इसलिये इन दोनों में से कौन सही होना चाहिये। सुखाड़ियाजी जब मुख्य मन्त्री थे तब उन्होंने मेरा विरोध किया था, मेरी प्रोसीडिंग्स को लेकर। मैंने मान्यता के प्रश्न पर उस वक्त कहा था कि मान्यता अभी नहीं देनी चाहिये और सोच समझ कर देनी चाहिये। यही तो मैंने उस समय कहा था। अब चीफ मिनिस्ट्री से उतरते ही उनको ख्याल आ गया कि जो कुछ तय हो चुका है, उसके अन्दर कुछ भी चेन्ज नहीं होना चाहिये। यह वाजिब नहीं है। यह हमारा स्तर नहीं है। राजस्थान विधान सभा की बात हिन्दुस्तान के हर अखबार में जायेगी तो पाकिस्तान के लोग क्या सोचेंगे। यहां पर कहा गया कि मुसलमानों के साथ अन्याय हो रहा है, गरीब मुसलमान के साथ अन्याय हो रहा है। यह आज कहने की बात नहीं है। इसलिये मैं यह कहता हूं कि यह साबित हो चुका है कि पाकिस्तान का नागरिक हिन्दुस्तान के नागरिक, मुसलमान नागरिक की तरह आजाद नहीं है। जो आजादी और तरक्की के साधन हिन्दुस्तान में हैं वह पाकिस्तान में नहीं है। अब तो हमारा काम यह है कि हिन्दुस्तान के हिन्दू और मुसलमान भाइयों के बीच मिल जुल कर एक ऐसी परिस्थिति, वातावरण बनावें कि इस देश की जो नीति निर्धारित हो गई है उसमें वे सहयोग देसकें और हमारे हर प्रकार के कार्य से सेना का मनोबल ऊंचा उठे। अब हमें यह देखना है कि नागरिक, फौजी जो हुक्म है उसका पालन करें। फौजी हुक्म हो कि बीड़ी, सिगरेट न पीवें, चार दिनों तक रोशनी न हो तो हमको यह करना चाहिये। इस मुकाबले को स्वीकार करेंगे तो हमारी फौजे जीत सकती हैं। फौज ने

(श्री मदन सिंह)

जो कुछ भी आदेश दिया है, या पालिसी निर्धारित की है उसके स्थान पर हम सोचें कि जोधपुर के सिनेमा हाल में रोशनी हो जाये तो क्या हर्ज है, तो इससे नुकसान होगा। मैं समझता हूं कि पोलिसी मैटर तय हो चुका है, युद्ध के लिये दोनों की फौजे तैयार हैं और कभी भी लड़ाई हो सकती हैं उस समय पोलिसी मैटर को लेकर या और किसी पार्टी के ऊपर छींटाकशी करें तो यह न्यायोचित बात नहीं है। हमें यह प्रण लेकर जाना है कि हमारा जो विधान सभाई क्षेत्र है वहां जाकर हम लोगों को तैयार करें सिविल डिफेन्स के लिये। हम बोर्डर पर भी जा सकते हैं अपने पार्टी के दल बल को लेकर और जो फौजी आदेश हमको मिले हैं उन आदेशों को जनता में प्रचारित करें क्योंकि लड़ाई के टाईम में टेलिफोन कट जाते हैं। हम स्काउट रनर जैसी गार्ड को तैयार करें। ऐसी योजना बनती है तो वह कोई योजना हैं बाकी बातें हंसी की है। यह तय हो चुका है। अब हम अपने घर को छोड़कर बंगलो को छोड़कर अपने अपने क्षेत्रों में जायें और अपने अपने क्षेत्र के हिन्दु मुस्लिम, जाट, सिख, राजपूत सब की यूनिटों के लियें काम करें। चाहें अपनी फौजें तेज हो सकती हैं परन्तु यह नहीं हो सकता है कि पाकिस्तान का कोई हवाई जहाज हमारे यहां पर नहीं आ सकता है। लड़ाई के अन्दर डेस्ट्रक्शन तो होगा। मुझे जो अनुभव है उसके आधार पर मैं यहां पर कहना चाहता हूं और उसके आधार पर हमें जनता को ट्रेंड करना चाहिये। जब इंग्लैंड पर हमला हुआ था तो चर्चिल ने एक एक अन्डे के लिये अपने देशवासियों को हुक्म दिया था। वहां पर हुक्म से एक अन्डे से ज्यादा नहीं मिलता था। इंग्लैंड की जनता ने एक अन्डा खाया। यदि हमें अपने खाने पीने को चीजें, पेट्रोल, अपनी गाड़ी मोटर को छोड़ना पड़े तो छोड़ना चाहिये। यह देश के लिये त्याग करना चाहिये। सरकारी मशीनरी की, मोटरों की जितनी जरूरत है वह भी इसके लिये तैयारी करें। यही देश की ताकत है। इसका प्रभाव पड़ेगा। आज हम पाकिस्तान से लड़ने के लिये तैयार हैं और आपस में यहां पर छींटाकशी भी कर रहे हैं इससे जनता का और सेना का मनोबल नहीं बढ़ेगा। इसलिये मेरा कहना यह है कि आज अपने अपने क्षेत्र में सब ही कमान्डर है। मुख्य मन्त्री से मिल कर हमें तय कर लेना चाहिये और हिन्दू मुस्लिम की एक एक क्षेत्र से एक ही आवाज आनी चाहिये कि एग्रेसर का हिम्मत से मुकाबला करेंगे। इस तरह से आप करते हैं तो ठीक है हम इसके लिये तैयार हैं। बाकी तो ये बीस वर्ष इसी प्रकार रोते रोते निकाल दिये हैं।

श्री सभापति : श्री रामानन्द अग्रवाल।

श्री लादूराम सुलानियां (फागी) : सभापति महोदय, एक जानकारी चाहता हूं मैंने कल शिड्यूल्ड कास्ट और ट्राइब्स की रिपोर्ट पर बहस के समय एक मुद्दा उठाया था महिला सदन के सम्बन्ध में, उस पर यह उत्तर मिला था कि आज उसका उत्तर दिया जावेगा।

श्री सभापति : आर्डर प्लीज।

श्री लादूराम मुलासिया : सभापति महोदय, आज विधान सभा की कार्यवाही समाप्त होने के पूर्व राज्य सरकार की ओर से इसका उत्तर दिलाया जाये । इसलिये मैं आपसे निवेदन करूंगा कि उत्तर दिलाया जाये ।

श्री सभापति : आप बिराजिये ।

श्री रामानन्द अग्रवाल ।

श्री रामानन्द अग्रवाल (अलवर) : सभापति महोदय, पाकिस्तान द्वारा सारे देश पर आक्रमण का खतरा और विशेष तौर से हमारी सीमाओं पर पाकिस्तान की सेनाओं के जमाव के कारण जो स्थिति पैदा हुई है, उसकी सुरक्षा के सम्बन्ध में हम इस सदन में विचार कर रहे हैं । सभापतिजी जो भी विभिन्न दलों के नेताओं ने यहां पर विचार व्यक्त किये हैं उसमें इस बात पर तो कोई मतभेद नजर नहीं आता है, सब एक मत हैं कि हमें पाकिस्तान के किसी भी आक्रमण का पूरी ताकत से सब मतभेद भुलाकर मुकाबला करके उसको हरा देना चाहिये । यह भी आत्मविश्वास हम में महसूस होता है, हमारी जनता में भी, हमारे सैनिकों में भी और हमारी सरकार में भी कि पाकिस्तान अगर हमारे पर हमला करेगा तो उसको मुंहतोड़ जबाब दिया जायगा । सभापति महोदय, परन्तु इस एकता के होते हुए भी आज इस युद्ध का, इस आक्रमण का मुकाबला हमें क्यों करना पड़ रहा है ? यह स्थिति क्यों पैदा हो रही है ? यह स्थिति हमें कहां ले जायेगी ? इस युद्ध में हमारा लक्ष्य क्या होगा ? इस बारे में दृष्टिकोणों में कुछ भिन्नता है । सभापति महोदय, मैं यह महसूस करता हूं कि आज हमारे सामने इस पाकिस्तान ने, बंगला देश में जो स्थिति पैदा की उसके कारण एक करोड़ रिफ-यूजीज हमारे यहां आये जिन पर लगभग दो करोड़ रुपया हमको रोज मर्रा खर्च करना पड़ रहा है । हमारी आर्थिक स्थिति पर जबरदस्त इसका बोझ पड़ रहा है । निश्चित रूप से यह एक बहुत बड़ी समस्या है हमारे सामने । परन्तु इस बंगला देश की समस्या को उठाया या इस समस्या को मुख्य रूप से पहचानना, केवल मात्र वही समस्या नहीं है, और उसको मैं मुख्य समस्या नहीं समझता हूं । हमारे सामने मुख्य समस्या यह है कि आज हमारे पड़ौस में एक देश की जनता अपनी आजादी के लिये लड़ रही है, अत्याचार के खिलाफ लड़ रही है, डिक्टेटरशाही के खिलाफ लड़ रही है सेक्यूलेरिज्म के लिये लड़ रही है, एक सोशियल प्रोग्राम के लिए लड़ रही है, हम उस देश की जनता के अरमानों के अन्दर उसका साथ देना चाहते हैं, सहयोग देना चाहते हैं, खुले मैदान में भी जाकर उसका साथ देना चाहते है । हम यह चाहते हैं कि उनकी मुश्किल में हमको मुश्किल भी उठानी पड़े तो कोई परवाह नहीं । हम मुश्किल उठायेंगे । अगर एबीसीनिया में मदद के लिए जा सकते है, अगर स्पेन की जनता के साथ लड़ाई में जा सकते हैं, अगर वियटनाम के लोगों की मदद के लिए जा सकते है, तो बंगला देश तो अपना पड़ोसी देश है जो कि अपनी आजादी के लिए लड़ रहा है, उसके लिये अगर मुश्किल भी उठानी पड़े तो परवाह नहीं । हम देखेंगे

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

कि हम अपनी पूरी ताकत लगा दें इस बात के लिए कि हम देख रहे हैं कि हमारे पड़ोस के लोग आजादी के लिए लड़ रहे हैं, इन्सानियत के लिए लड़ रहे हैं, सेक्यूलेरिज्म के लिए लड़ रहे हैं, प्रजातन्त्र के लिए लड़ रहे हैं तो दुनिया के बड़े देशों की ताकत उसको दबा नहीं सकती। सभापति महोदय, मैं समझता हूं यह दृष्टिकोण हमारे देश के लिए नया नहीं है। यह दृष्टिकोण कुछ लोगों के लिए नया हो सकता है जिन्होंने इस प्रकार की लड़ाइयों को गलत माना है, दूसरे देशों के मामलों में हस्तक्षेप माना है या जिन्होंने वियतनाम की जनता की लड़ाई में मदद करना अमेरिका को नाराज करना माना है, जबरदस्ती दूसरों के मामले में घुसना माना है लेकिन हिन्दुस्तान की जनता ने इस बात के लिए, इन उसूलों के लिए इस बात की परवाह नहीं की कि कौन नाराज होता है और कौन खुश होता है, बल्कि उसूलो के लिए हमने हमेशा आवाज बुलन्द की है और उनकी मदद की है चाहे कुछ हद तक मदद कर पाये हों, लेकिन हमेशा मदद की है। इसी उसूल के लिए और इसी सिद्धान्त की स्थापना के लिए आज मैं समझता हूं कि हम इन बंगलादेश के सवाल में मदद कर रहे हैं, मदद करना चाहते हैं उसको कामयाब बनाना चाहते हैं। यह एक मुख्य समस्या है, और उसके लिए साफ तौर पर मैं कहना चाहता हूं इसमें छिपाने की बात नहीं है। बंगला देश के अन्दर वहां की जनता जिन्होंने अपनी मेजोरिटी हासिल की है कुल पाकिस्तान का 56 पर्सेन्ट आबादी का हिस्सा है वहां उन्होंने प्रबल बहुमत हासिल किया है। उनको याहिया खां की हुकूमत ट्रान्सफर आफ पावर करने से इन्कार किया हम डेमोक्रेसी को फालो करते हैं और सही तौर से कान्स्टीट्यूशनल गवर्नमेंट वहां पर जिन्होंने बहुमत प्राप्त किया उनकी गवर्नमेंट होती। इसलिए हम उनकी मदद कर रहे हैं। इसको हम किन्हीं के मामले में मदाखलत नहीं समझते हैं, मगर उसूलों के लिए सहयोग देना उसको समझते हैं।

तो इसलिए, सभापति महोदय, मैं यह कहना चाहूंगा कि आज इस मामले में दुनिया के अन्दर जब भी ऐसे सवाल आते हैं तो दो कैम्प बने हुए हैं, दो कैम्प बने हुए हैं और आज भी आप देखेंगे कि इस सवाल के ऊपर उसी तरीके से जो लोग उपनिवेशवाद के खिलाफ लड़ रहे हैं, जो लोग समाजवाद के लिए लड़ रहे हैं वे लोग एक तरफ हैं, चाहे वियतनाम का सवाल हो चाहे अल्जेरिया का सवाल हो चाहे बंगला देश का सवाल आया है। दूसरी ओर वह सब एक तरफ हैं जो कि साम्राज्यवादी कोलोनियेलिस्ट हैं, जो दुनिया में अपना प्रभाव जमाकर अपने कन्धे के नीचे उनको रखना चाहते हैं, वे एक तरफ खड़े होते हैं। और इस तरह से मैं यह निवेदन करना चाहता हूं, सभापति महोदय,......

श्री सभापति : आर्डर प्लीज। टाइम।

श्री बरकतुल्ला खां (मुख्य मंत्री) : जब तक यह डिबेट खत्म न हो तब तक का समय बढ़ा दिया जाय।

श्री सभापति : सदन की अनुमति से सदन का समय जब तक यह डिबेट समाप्त न हो जाय तब तक के लिए बढ़ाया जाता है।

श्री रामानन्द अग्रवाल : तो इसलिए आज हम यदि दुनियां की तरफ, दुनियां के देशों की तरफ देखें तो हम दुनियां से अलग होकर नहीं रह सकते हैं और न रह कर अपनी समस्याएं हल कर सकते हैं और न दुनियां से सही काम करा सकते हैं। मुझे आश्चर्य यह हुआ जब कि एक दल के नेता ने यह कहा कि हमें दुनियां की परवाह नहीं करना चाहिए। सारी दुनियां खिलाफ हो जाय इस बात की चिन्ता नहीं होनी चाहिए और अकेले ही इस प्रकार के कदम उठा लें या उठा लेने चाहिए। मैं यह समझता हूं कि हम इस दुनियां में रह रहे हैं, इस अन्तर्राष्ट्रीय दुनियां में रह रहे हैं। उस सारी दुनियां के बारे में हम यह नतीजा निकाल कर चलें कि सारी दुनियां स्वार्थी है किसी उसूल पर नहीं चलती है कोई भी देश नहीं चलता है। मेरे खयाल से यह दुरुस्त बात नहीं होगी यह सही बात नहीं होगी। जो देश जिस प्रकार का रुख लेते रहे हैं उनको हमें समझना चाहिए और पहचानना चाहिए। जब हमारी आजादी की लड़ाई अंग्रेजों के खिलाफ, ऐम्पीरियेलिज्म के खिलाफ तो अंग्रेजों ने हर तरीके से यह चाहा जाते हुए कि हमको दो हिस्सों में बांट दें और इस तरह से रखें कि किसी तरह से उनका पंजा जमा रहे। काश्मीर का सवाल आया तो अमेरिका ने हमारी मुखालफत की अमेरिका ने कहां पर हमारा साथ दिया लेकिन ख्रुश्चेव ने कहा था कि मैं पड़ोस में खड़ा हूं जब भी जरूरत पड़े आवाज लगा कर बुला लेना और उसने साथ दिया। सिक्योरिटी कौन्सिल में जब हिन्दुस्तान गया तो अमेरिका ने जिस तरह से सेबोटेज करके पाकिस्तान के हक में फैसला कराने की कोशिश की तो सोवियत रूस ने वीटो का इस्तेमाल किया। इधर गोआ का प्रश्न आया तो गोआ को मिलाने के लिए अंग्रेज और अमेरिकन्स बहुत खिलाफ थे और उन्होंने इसको एग्रेशन कहा और सिक्योरिटी कौन्सिल के अन्दर इस मामले को ले जाने की कोशिश की लेकिन सोवियत यूनियन ने हमारा साथ दिया और कहा कि इम्पीरियेलिस्टों ने जबरदस्ती इसको दबाया हुआ है। हम इन चीजों को भूल नहीं सकते। जब बंगला देश का सवाल आया तो क्या हम यह नहीं देख रहे हैं कि अमेरिका और इंगलैन्ड वही रुख ले रहे हैं उसी तरीके का रुख ले रहे हैं वही इम्पीरियेलिस्टिक रुख ले रहे हैं। आज सोवियत रूस सन्धि के रूप में हमारी मदद कर रहा है। भारत और सोवियत रूस के बीच सन्धि के रूप में हमारी दोस्ती गाढ़ी हुई है चाहे कुछ हम और दुनियां इसके लिए कह दें। मुझे आश्चर्य हुआ कि कुछ पार्टियों ने कहा था कि हिन्दुस्तान ऐसी नीति पर चला कि कोई उसका साथी नहीं है और जब दोस्त साथ आ गया और रियेलिस्टिक सन्धि हो गई साथी दोस्त बिल्कुल सामने नजर आ गया कान्स्टीट्यूशनल तरीके से तो फिर यह कहने लगे कि हमने गुट-निरपेक्षता का नाता छोड़ दी। यह एक अजीब बात है। मैं समझता हूं कि यह समझना पड़ेगा। जो लोग कोशिश करते हैं, सुपर पावर के नाम से अमेरिका और यू. एस. एस. आर., दोनों को एक पैमाने पर लाने की वे जनता को गुमराह करना चाहते हैं। तो मैं कहूंगा कि हिन्दुस्तान जैसा भी है, आज इम्पीरियलिज्म के खिलाफ लड़ रहा है। सोवियत यूनियन ने डिक्लेयर किया है कि दुनियां में

(श्री रामानन्द अग्रवाल)
कहीं भी कोलोनिज्म के खिलाफ लड़ाई होगी, हम साथ देंगे। वह आज साथ दे रहा है। अगर हम दोस्त और दुश्मन को समझकर आगे नहीं चलेंगे तो दुनियां में हम आगे नहीं बढ़ सकेंगे। इम्पीरियलिज्म के खिलाफ समाजवादी देशों के नेतृत्व में आज एक जेहाद खड़ा हो रहा है। हम भी इस जेहाद में उनके साथ हैं और वे हमारे साथी हैं।

श्री मदनसिंह : ताशकन्द समझौते में रूस ने कैसी मदद दी ?

श्री रामानन्द अग्रवाल : सभापति महोदय, हमको बड़ा दुख है कि हमारे देश के दो टुकड़े होकर हिन्दुस्तान पाकिस्तान बना। लेकिन जब यह बन गया तो हम यह कैसे कह सकते हैं कि हम पाकिस्तान को क्रश कर देंगे। पाकिस्तान का नामोनिशान मिटा देंगे। हमारी फारेन पालिसी क्या है? अगर कोई यह समझे कि हम पाकिस्तान को नेस्तनाबूद कर देना चाहते हैं, तो यह समझना गलत है। हमारा इरादा पाकिस्तान को नेस्तनाबूद करने या अपने देश में मिलाने का नहीं है। हम बंगला देश को आजाद कराने में मदद कर रहे हैं। अपनी लड़ाई वह खुद लड़ रहे हैं। उन्हें खुद लड़ना भी चाहिए। जो यह समझते हैं कि हमें अपनी फौजें भेज देनी चाहिए थी उनको मुक्त करा देना चाहिए था उनका दृष्टिकोण मैं सही नहीं मानता। जिन्हें इतिहास का पता है, वह जानते हैं कि ऐसी फौजें मुक्ति फौज नहीं बनी हैं। आकूपेशन फौज बनी हैं। यह वह कह रहे हैं जो कि पाकिस्तान बनने के बाद भी अखण्ड हिन्दुस्तान का नारा लगाते हैं। कान्फीडरेशन यूनियन सब की स्वेच्छा से आपस में मिलाकर बनने की कोई बात करता है तो उसका मैं स्वागत करूंगा। लेकिन कोई यह कहे कि हम मिलेटरी की ताकत पर पाकिस्तान को बरबाद कर देंगे, खत्म कर देंगे। मैं समझता हूँ कि हिन्दुस्तान की जनता का यह इरादा कभी नहीं हो सकता है और कोई इस दिशा में अगर कोशिश करेगा तो वह इस देश का दोस्त नहीं हो सकता है। वह देश की राजनीति को दूसरी तरफ ले जाएगा जो याहियाखां को मददगार होगी।

श्री मदनसिंह : यह तो इन्दिराजी कह रही हैं कि कोई हिस्सा पकड़ लेने के बाद हम हटेंगी नहीं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : कोई भी कह रहा हो। आज इस प्रकार के भाषण दिये गये हैं। कहा गया है कि हम पेशावर तक चले जायेंगे। वापिस नहीं आयेंगे। सियालकोट तक चले जायेंगे। सभापपि महोदय, हमारा इन्टरनेशनल बोर्डर तय किया गया है। वह इण्टरनेशनल बोर्डर, एक्सेप्टेड बार्डर है। उनको वायोलेट करने का मैं समझता हूँ कि हिन्दुस्तान की सरकार का कोई इरादा नहीं है। हिन्दुस्तान की जनता का नहीं है। लेकिन जो लोग यहां ऐसा कह रहे हैं वे दरअसल पाकिस्तान की मदद कर रहे हैं क्योंकि पाकिस्तान भी आज वही प्रचार कर रहा है।

श्री सभापति : वह तो राजा महाराजाओं के खिलाफ भी हुआ था, जिसका आप प्रचार कर रहे हैं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : यह कहा जाता है ईस्ट पाकिस्तान को बरबाद करना चाहते हैं। पाकिस्तान यह प्रचार कर रहा है। मैं निवेदन करना चाहता हूँ, सभापति महोदय, रक्षा मंत्रीजी ने भी इसी प्रकार का भाषण दिया है और हमारे मुख्य मन्त्रीजी ने भी उसे रिपीट किया है। कहा गया है कि अबकी बार हम वापिस नहीं आयेंगे। हम सियालकोट और पेशावर तक जायेंगे। इस प्रकार की गलत फहमी फैलाने का कार्य याहियाखां के हाथों को मजबूत करता है। बंगला देश की लड़ाई को मजबूत नहीं करता है। बंगला देश की लड़ाई को कमजोर करता है। इस प्रकार के स्लोगन में हम नहीं पड़े। गुमराह न हों। इसके खिलाफ बहुत ही ध्यान रखने की जरूरत है। निगरानी रखनी चाहिए।

(समय समाप्ति सूचक घण्टी)

सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि थोड़ा समय तो और चाहूँगा। मैं कल इसीलिए नहीं बोला था कि इस अवसर पर बोलूंगा।

श्री सभापति : फरमाइये आप। समस्या है सीमा की, उस पर आप कुछ नहीं कह रहे हैं। इण्टरनेशनल क्या है, वह बोल रहे हैं।

श्री रामानन्द अग्रवाल : मैं वही कह रहा हूँ। एक क्वेश्चन कोट किया गया था कि पाकिस्तान बार बार हमारे ऊपर हमला करता है। उसका जवाब यह दिया गया था कि पाकिस्तान को यह पता है कि हिन्दुस्तान में कुछ लोग ऐसे हैं जो उससे हमदर्दी रखते हैं। नाम बताया नहीं गया था लेकिन साफ तौर से उनका इशारा मुसलमानों की तरफ था। उसका जवाब बंगला देश के अन्दर लड़ाई ने बताया है। यह नेशनलिज्म है जो रिलीजन से बड़ी ताकत है। उस समय सेक्युलरिज्म के लिए बंगला देश के लोग लड़ रहे हैं। जिन लोगों के दिमाग में इस प्रकार की गलत फहमी है, मुसलमानों में भी है। अगर हम जनता में सही अप्रोच करें तो इस कम्प्लैक्स को निकाल सकते हैं और दूसरे लोगों को भी भ्रम है, उसे भी निकाल सकते हैं। मैं इस बात को नहीं मानता हूँ कि कोई व्यक्ति जो किसी खास रिलीजन को मानता है वह पोलिटिक्स भी उसी रिलीजन की मानेगा। उनका नेता पीर पगारो, उनका रिलिजियस नेता रह सकता है लेकिन उनका पोलिटिकल नेता भी है, यह मैं नहीं मानता हूँ। पोप भी पहले पोलिटिकल और टेम्पोरल हैड था। आखिर लोगों ने रिनान्स कर दिया। रिलीजियस आधार पर लड़ाई हुई। आज बंगला देश क्या बता रहा है? इस्लाम की रट नहीं चली। उनके साथ जो सुलूक किया, उन्होंने वह महसूस किया है और जो दूसरा फेक्टर है, वह इम्पार्टेन्ट है। इसलिए मैं समझता हूँ कि आज भी यही दृष्टिकोण हैं, यद्यपि हमारे दोस्त, जो इस बात को बहुत कहा करते थे, उसको उन्होंने सीमित अवश्य किया है और तमाम मुसलमानों की बात न रख कर उन्होंने पीर पगारो तक ही बात को सीमित रखा है, लेकिन दिशा वही है, जब मौका आ जाय तो वह और आगे बढ़ जाय, और मौका अपाकून न देखें तो थोड़ी सीमित बात कहें। मैं कहूंगा, मेरे दोस्त अपने सोचने के तरीके को बदलें, बुनियादी तौर पर विचार करने

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

की कोशिश करें वरना वह सही दिशा में सोच नहीं पायेंगे। यह विचार ऐसे ही लोगों के हमारे देश में हैं कि मुक्तिवाहिनी को क्यों हथियार दिये जायं ? यह मुसलमान हैं, इन्हें हथियार देंगे तो फिर हिन्दुस्तान के खिलाफ लड़ाई छेड़ेंगे। इस प्रकार के विचार कुछ लोगों ने दिये हैं, फिर क्यों न हिन्दुस्तान की फौज को वहां भेजा जाय ? सांप को दूध क्यों पिला रहे हो ? इस प्रकार के ख्याल देश में रखे जा रहे हैं। किसे मदद दे रहे हो यह तो हमला करने वाले हैं ? इनको हथियार दोगे तो कल को यही हमला कर देंगे। इसलिए वहां जाकर फौज अधिकार कर ले और अपनी पपेट गवर्नमेन्ट, जो अपने कहने पर चले, बना लें। मैं कहता हूं कि यह अरमान जो रखते हैं अपने दिल में वह खुले तौर पर आयें। ऐसे लोग याह्या खां के दोस्त हैं। और वह आइडियालोजी याह्या खां की पेश करते हैं। यह भी बात कही गई, क्या जरूरत है पाकिस्तान से लड़ाई लड़ने की। हमारे विरोधी दल के नेता ने कहा, बात वही की वही है, बात वही है पाकिस्तान कमजोर है, कैसे हमला कर सकता है। मतलब यह कि तुम हमला करोगे Silence is more eloquent than Speech उन्होंने यह भी कहा, यह नेगेटिव एटीट्यूड क्यों अपनाते हो, बात क्यों नहीं करते। मतलब यह है कि हिन्दुस्तान पाकिस्तान से बात चलाने जाय। हर देश ने इस बात को माना है कि यह सवाल पाकिस्तान और पाकिस्तान के दूसरे भाग के बीच में है। भले ही हिन्दुस्तान मदद कर रहा है लेकिन फैसला वही करेंगे। मैं इस बात को मानने वाला हूं। हम चाहते हैं और समझते हैं कि बंगला देश की जनता आजाद होना चाहती है, बंगला देश की जनता अपनी हुकूमत बनाना चाहती है। बनायेगी। चाहे अमेरिका कितना ही चाहे फिर भी आखिरी फैसला करने का अधिकार उनको है। अगर वहां की जनता उससे कम के अन्दर फैसला कर ले तो मुझे अधिकार नहीं है कि मैं कहूं, मैं इस फैसले को नहीं मानता। अपने देश के बारे में फैसला करने का उनका अधिकार है। मैं निवेदन करना चाहता हूं, सभापति महोदय, आज यह कहा जाय, पाकिस्तान लड़ना चाहे यह उसकी मजाल नहीं है, या यह कि नेगेटिव एटीट्यूड अपनाने की बात क्यों करते हो, या यह कि बोर्डर को सील कर दिया जाय। यह तीनों ही बातें निक्सन ने भी कहीं हैं। उसने यह कहा कि बोर्डर पर आब्जर्वर भेज दिये जायं। मतलब यह कि बोर्डर को सील कर दिया जाय और जो एक करोड़ शरणार्थी यहां आ गये हैं या ज्यादा आ गये हैं वह यहीं रहें और हम उनकी मदद नहीं कर सकें, और बोर्डर को सील करके जो मुक्तिवाहिनी की सहायता हिन्दुस्तान के लोग कर रहे हैं वह बन्द करके याह्याखां की फौज मुक्तिवाहिनी के लोगों को चुन चुन कर मारे और हम यह कहें, यह लोग मुसलमान हैं, मर जायं कुछ भी हो। मैं समझता हूं यह दृष्टिकोण इस समस्या को केवल, रिफ्यूजी आ गये हैं, इस हद तक समझने की जरूरत नहीं है। इसमें व्यापक दृष्टिकोण नहीं है और इस समस्या को कोई बड़े देश हल करने में मदद नहीं करेंगे। सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा, आज अमेरिका अवामी लीग में फूट डाल कर कुछ मैम्बर्स को खरीद कर

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

इस बात की कोशिश में हैं कि कुछ हिस्से के अन्दर उनके कहने पर एक मिली-जुली कोई गवर्नमेंट बना ले। इसलिए आगे बंगला देश में, मैं समझता हूं मुजीबुर्रहमान और अवामी लीग के लोग थोड़ा आगे बढ़ गये हैं, वहां पर कार्डीनेशन कमेटी बन गई है, जो इस अन्तरिम गवर्नमेंट को एडवाइस कर रही है। लेकिन आज बंगला देश की जनता कोई ऐसे फैसले को मानने को तैयार नहीं है। जो लोग वाग लड़ रहे हैं, याह्या खां की फौज का मुकाबला कर रहे हैं, अगर किसी ने भी इस प्रकार का फैसला किया तो लोग और वहां की जनता इस बात को स्वीकार नहीं करने वाली है जिससे कि बंगला देश की इज्जत को बेच दिया जाय या उसके उसूलों को बेच दिया जाय। इसलिए आज हमारे सामने बहुत बड़ा और सीधा सवाल है, हथियार से, हर तरीके से उनकी पूरी मदद करनी है। उनकी आजादी की लड़ाई में जो कुछ भी मदद दे सकते हैं, हम मदद दें उनको। आज उन्होंने हवाई जहाज खरीदे हैं। आज उन्होंने एन्टी-एअर-क्राफ्ट गन खरीदी हैं। अभी खबर है कि नेवी आने वाली है। हम भी जितना दे सकते हैं वह दें, पैसा दें, पीछे दे सकें तो पीछे ले लें, वरना माफ कर दें। जो भी मदद दे सकते हैं वह पूरी तरह से मदद देनी चाहिए ताकि उनकी वार आफ इंडिपेंडेंस पूरी तरह से कामयाब हो। सभापति महोदय, मैं निवेदन करूंगा कि आज हम लोग, जो सिविलियन हैं, हमारी क्या जिम्मेदारी है। मेरा यह ख्याल है कि आज के जमाने में लड़ाई केवल फौज नहीं लड़ सकती है यद्यपि फौज बहुत बड़ा और मुख्य रोल अदा करती है, लेकिन आज लड़ाई केवल फौज नहीं लड़ती, आज लड़ाई गवर्नमेंट ही नहीं लड़ती, आज लड़ाई जनता लड़ती है। और जनता ही लड़ाई को कामयाब बनाती है। यह दृष्टिकोण भारत सरकार का और राजस्थान सरकार का भी बहुत क्लीअर होना चाहिए।

श्री बरकतुल्ला खां : है।

श्री रामानंद अग्रवाल : जितना फ्रन्ट मजबूत हो, उतना ही जनता का मनोबल मजबूत होना चाहिये। वह भी किन्हीं पालिसी किन्ही बुनियाद के ऊपर करना चाहते हैं। हम अपनी राजकीय शक्ति का प्रयोग किसके खिलाफ और किसके फेवर में करना चाहते हैं। पीपुल का सहयोग लेना चाहते हैं या एन्टी-सोशल एलीमेन्ट का असहयोग लेकर करना चाहते हैं यह अहम और महत्वपूर्ण सवाल है। सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहूंगा इस सम्बन्ध में हम मानते हैं कि हमारी पार्टी यह मानती है कि रिफ्यूजी की हेल्प के लिये हमें बहुत बड़े धन की आवश्यकता है। हम यह भी मानते हैं यदि लड़ाई हुई तो हमें डिफेन्स के लिये बहुत बड़े धन की आवश्यकता पड़ेगी और सरकार उसको टैक्स के द्वारा रेज करेगी तो कम्युनिस्ट पार्टी उसका सहयोग करेगी लेकिन हमारी यह मान्यता है कि वह पैसा धनिक वर्ग से आना चाहिए।

एक माननीय सदस्य : लूटो।

श्री रामानंद अग्रवाल : वही लोग एफोर्ड कर सकते हैं, उनसे यह आना चाहिए,

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

जो गरीब हैं, मेहनतकश हैं, और मध्यम वर्ग के लोग हैं वह पहले से ही दबे हुए हैं, उनके ऊपर वह बोझ नहीं आना चाहिए। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है, केन्द्रीय सरकार ने सत्तर करोड़ का टैक्स लगाया है और पंजाब सरकार ने भी डिक्लेअर किया है और राजस्थान सरकार भी कुछ सोच रही है, मैं निवेदन करना चाहता हूँ कि चाहे पोस्टल रेट्स को बढ़ायें, या थर्ड क्लास का किराया बढ़ायें–इससे पूअर क्लास अफेक्ट होती है। इसलिए आप इस तरह से बढ़ायें कि इंडस्ट्रियलिस्ट्स और कैपिटलिस्ट्स को प्रेस करके आप जो पैसा नहीं लेना चाहते हैं, उनसे आप लें। मेरा निवेदन है कि यह पीपुल वार चलाने का तरीका नहीं है, जनता से सहयोग लेने का तरीका नहीं है। आपने : राजस्थान में वेकेन्ट प्लाट्स के ऊपर राजस्थान में टैक्स लगाया लेकिन आपने उसको वसूल नहीं किया। 1954 में पास किया वह कानून, उसके अनुसार आप वसूली करें तो एक करोड़ से ज्यादा वसूली हो सकती है। मैं कहना चाहता हूँ कि रिफ्यूजी के लिए पैसा इकट्ठा करें, एक करोड़ प्लाट वालों से, प्रोपर्टी होल्डर्स से वसूल करें, बड़े बड़े लैंड लार्ड्स और लार्ज प्रोपर्टी वाले लोग हैं उनसे आप यह लीजिये, उनसे पैसा लें। लेकिन आपके लिए ऐसा करना मुमकिन नहीं होगा क्योंकि आप उन्हें नाराज नहीं करना चाहते हैं, पालिटिकल पालिसी की वजह से और गरीब के ऊपर बोझ डालना चाहते हैं। यह पीपुल सहयोग लेने का तरीका नहीं है, इसके कारण से रिजेंटमेंट होगा और इसका विरोध होगा, इसका भयंकर विरोध होगा। अन्त में मैं . . .

श्री सभापति : अन्त में निवेदन कर दीजिये अब आप।

श्री रामानन्द अग्रवाल : मैं निवेदन करना चाहता हूं, जबकि लड़ाई सिर्फ गवर्नमेंट या फौज लड़ती है तो ब्यूरोक्रेसी बेलगाम बन जाती है, पुलिस बेलगाम बन जाती है। यह तरीका ब्रिटिशर्स का लड़ाई लड़ने का था क्योंकि वह रेस्पान्सिबल नहीं थे जनता के प्रति। आज कोड आफ कन्डक्ट और बिहेविअर आज के स्कूलों में पढ़े पुलिस आफिसर्स, आई.ए.एस. और आई.पी.एस. आफिसर्स का नहीं है, यह इस बेंट आफ माइन्ड के नहीं हैं। मैं कहना चाहता हूं कि ब्यूरोक्रेटिक सेट अप को रेस्पान्सिबल टू दी पीपुल बनायें। इस मामले में आपने एडवाइजरी कमेटी बनाई है, डिस्ट्रिक्ट एडवाइजरी कमेटी बनाई हैं। इसकी सलाह की बुनियाद पर सारे के सारे प्रशासन को काम करना चाहिये। यह नहीं कि पुलिस आफिसर बेलगाम बन कर चाहे जिसको पकड़ लें, यह अन्देशा है, इसको पकड़ लिया और कहा कि यह बाड़मेर से आया हुआ है। एस.पी. यह अलवर के बारे में जानता हूं यह सच है या नहीं, यह न देखे और एडवाइजरी कमेटी जो कहे वह बात न हो यह बात नहीं चलेगी इस तरह की बात आज देखने में आ रही है। हमें कहा जाता है, इस तरह की कोई बात मत कहें, हम कहें तो वह कहते हैं, एक्सक्यूज मी, मैं कुछ भी कर सकता हूं। मैं समझता हूं कि पुलिस को इस बात को कह दें कि वह बुनियादी चीज बिहेविअर में लाये तभी जनता का पूरा कोऑपरेशन मिल पायगा।

(श्री रामानन्द अग्रवाल)

सभापति महोदय, मैं दूसरी बात जो आपको निवेदन करना चाहता हूं वह है प्राइसेज के बारे में, आज प्राइसेज दिन ब दिन बढ़ती जा रही हैं इसका फायदा एण्टी-सोशियल एक्टीवीटी करने वाले उठा रहे हैं। इसलिए सभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि जो लोग इस नाजुक वक्त में जब देश के ऊपर खतरा है इस तरह की एण्टी-सोशियल एक्टीविटी कर रहे हैं, उन्हें दण्ड दिया जाना चाहिये। आज हमारे देश में जो दूसरी बात है वह लोगों में एक वर्ग सम्प्रदायिकता फैला रहे हैं। हिन्दु मुस्लिम की भावना फैला रहे हैं। यह कहा जा रहा है कि याह्याखां की नीति हिन्दुओं को वहां से निकालने की है और देश में साम्प्रदायिकता, इस प्रकार का एक खास वर्ग फैला रहा है, उसे खत्म किया जाना चाहिये। बंगला देश एक आजाद देश है और उसमें हिन्दु मुस्लिम की भावना से हमें नहीं लेना है, उसकी हमें एक देश समझ कर मदद करनी चाहिये। हमें उसे सहयोग देना चाहिये। इस प्रकार की जो साम्प्रदायिक भावना फैला रहे हैं, उन्हें दन्ड दिया जाना चाहिये। आज बंगला देश के लोग अपनी आजादी के लिए लड़ाई लड़ रहे हैं, हम उन्हें मान्यता देकर हर तरह से फौज से, धन से, हर तरह के एम्यूनिशन्स देकर मदद करनी चाहिये। आज अगर कोई कहे कि हम लड़ाई चाहते हैं तो कोई बात नहीं है हम लडाई नहीं चाहते हैं पर और कोई देश हमारे देश की सीमा पर फौज लाकर खड़ी करें, हमें धमकाने की कोशिश करे, हमारी देश की जमीन पर कब्जा करना चाहें, तो हम उसको मुंह तोड़ जवाब देंगे। मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं सभापति महोदय, बंगला देश आजाद होकर रहेगा।

श्री जगन्नाथ पटेल : सभापति महोदय, अभी जो सदन में मुख्य मन्त्री जी ने जो भाषण दिया था उससे मुझ में भी जोश आ गया है कि मैं भी देश के लिए लड़ूं और यहां खड़ा होकर बोलने से क्या।

श्री सभापति महोदय : आर्डर प्लीज, आर्डर प्लीज।

श्री रामानन्द अग्रवाल : इस तरह जो सदन में प्रस्ताव बंगला देश के बारे में रखा था उसका समर्थन करता हूं और एक बार और मैं, सभापति महोदय, आपके मारफत, निवेदन करूंगा कि माननीय मुख्य मन्त्रीजी प्रधान मन्त्री जी से सदन के सदस्यों की बंगला देश को मान्यता देने के बारे में अनुरोध करें।

(समय समाप्ति सूचक घण्टी)

और बंगला देश जो कि आजाद देश है, उसको मान्यता दे और पाकिस्तान को वहां से हटाने के लिए भारत सरकार उसकी मदद करे। इतना कह कर मैं अपना भाषण समाप्त करता हूं।

श्री सभापति : श्री वृद्धिचन्द जैन।

श्री मदनसिंह : मैंने जब 5 महीने पहले यह कहा था कि यह इन्टरनेशनल मामला है तो उस वक्त कम्यूनिस्ट सदस्य चिढ़ गये थे, अब यह चैन्ज कैसे आया ?

श्री सभापति : श्री वृद्धिचन्द जैन।

श्री वृद्धिचन्द जैन (बाड़मेर) : सभापति महोदय, आज सदन में बंगला देश के बारे

(श्री वृद्धिचन्द जैन)

में चर्चा हो रही है। अभी अलवर से आने वाले माननीय सदस्य ने अपने विचार व्यक्त किये हैं उस प्रस्ताव का समर्थन करते हुए कुछ निवेदन करना चाहूंगा। सभापति महोदय, आज बंगला देश के नागरिक अपने देश की आजादी के लिये लड़ रहे हैं, वहां पाकिस्तान की फौजों द्वारा नर संहार हो रहा है, मुक्ति वाहिनी की फौजें अपने देश को आजाद कराने के लिये संघर्ष कर रही हैं, और वहां युद्ध हो रहा है और इसके परिणाम स्वरूप आज भारत में करीब एक करोड़ के शरणार्थी आ गये हैं, यह हमारे सामने बड़ी विकट समस्या है। एक तो यह कि हमारा देश सिक्यूलर स्टेट है और वह धर्म निरपेक्षता में विश्वास करता है। इसलिये जो हमारे देश में शरणार्थी आये हैं, चाहे वे मुसलमान हैं, चाहे वे हिन्दू हैं, कोई भी हैं वे आये हैं उनका हम स्वागत करते हैं। यह एक बहुत महत्वपूर्ण मामला है। अभी इस सदन में कुछ जनसंघ के माननीय सदस्यों ने खास तौर से यह चार्ज लगाया है कि पाकिस्तान सरकार वहां से हिन्दुओं को निकाल रही है और यहां मुसलमानों के साथ अभी हमदर्दी है और जिस तरह पाकिस्तान हिन्दुओं के साथ आज जो बंगला में नर संहार कर रहा है उसके बदले में हमें भी पाकिस्तान के खिलाफ कार्यवाही करनी चाहिये और जनसंघी नेताओं के भाषण से तो यह मालूम होता है इसे बदले की भावना से काम कर देना चाहिये। सभापति महोदय, मैं आपसे निवेदन करना चाहूंगा कि यह तो फिलासौफी का प्रश्न है, क्योंकि हमारी देश की नीति धर्मनिरपेक्षता पर निर्भर है। जनसंघ की भी यह फिलासोफी है कि बंगला देश को मान्यता देकर पाकिस्तान की फौजों को वहां से खतम करके बंगला को आजाद करा लिया जाय और बाद में बंगला देश को भारत से मिला लिया जाय। ऐसी उनकी भावना यह मैं उनके भाषण से समझ पाया हूं।

श्री भैरोंसिंह : ये आप गलत कह रहे हैं, मैंने यह नहीं कहा कि बंगला देश को भारत में मिला लिया जाय।

श्री मदनसिंह : माननीय सभापति महोदय, ये पार्टी फीलिंग ला रहे हैं।

श्री सभापति : आर्डर प्लीज।

श्री भैरोंसिंह : यह गलत बात कह रहे हैं, माननीय सभापति महोदय।

श्री वृद्धिचन्द जैन : सभापति महोदय, मैंने कोई गलत बात नहीं कही है, मैं तो फिलासोफी की बात कर रहा हूं। मैंने तो यह कहा कि उनकी भावना से ऐसा पता लगता है कि वो ऐसा चाहते हैं। इसलिये मुझे स्पष्ट कहना पड़ा कि ऐसी फिलासोफी जनसंघ की है, यह तो उनकी नीति है . . .

श्री भैरोंसिंह : सभापति महोदय, मेरा निवेदन है कि यह बात गलत कही गयी है।

श्री सभापति : माननीय सदस्य, स्थान ग्रहण करें। श्री वृद्धिचन्द जैन आप बोलिये।

श्री वृद्धिचन्द जैन : सभापति महोदय, बंगला देश को मान्यता देना या देने में देर करना, धर्मनिरपेक्षता की नीति में क्या फर्क ला सकता है ?

श्री मदनसिंह दांता : सभापति महोदय, ये कांग्रेस सरकार खतम होगी और पाकिस्तान भी खतम होगा।

श्री वृद्धिचन्द जैन : सभापति महोदय, मैं निवेदन करना चाहता हूं कि मैं अभी थोड़े दिन पहले बोर्डर की सीमा पर दौरा करने गया था। मैंने वहां देखा कि जहां जहां मैं गया बाड़मेर से आगे जहां पाकिस्तान की सीमा हिन्दुस्तान से लगती है, रायसर, गढरारोढ आदि क्षेत्र में मैंने देखा कि वहां की जनता का मनोबल बहुत ही ऊंचा है। हमने यह भी देखा कि दोनों तरफ भारत और पाक सीमाओं पर, फौजें तैनात हैं। वहां लोग अपने सामान्य काम काज कर रहे हैं। किसान खेती कर रहे हैं। फसल तैयार है कटने को, पर वहां इस टेन्सन की वजह से मिलिट्री का आना जाना रहता है और इस तरह से फसल के खराब होने का खतरा है, दूसरा यह भी खतरा है कि अगर लड़ाई शुरू हो जाती है, तो फसल नष्ट हो जायेगी, इसलिये वहां का काश्तकार चिन्तित है। गढरारोढ में लोग अपनी फसलें काट रहे थे यह भी हमने देखा, पर जैसा कि मैंने आपसे निवेदन किया कि मिलिट्री के आने जाने से वहां के काश्तकारों को फसलें काटने में कठिनाई होती है। इसके लिये मैं सरकार से निवेदन करूंगा कि वहां के काश्तकारों को नुकसान नहीं हो और काश्तकारों को, उनकी फसलों का उचित मूल्य प्राप्त हो, इसके लिये राज्य सरकार को चाहिये वे क्राप्स की कीमत को ऐसेस करके किसानों को उनकी कीमत दे दें। पहले भी सभापति महोदय, सन् 65 में इस प्रकार भारत पाक युद्ध के दौरान में राजस्थान सरकार से निवेदन किया था उस लड़ाई में बाड़मेर और गढरारोड के सीमा पर काश्तकारों की फसलें खराब हो गयी और उन्हें नुकसान हुआ। उस वक्त भी मैंने राज्य सरकार से यह अनुरोध किया था कि राज्य सरकार उन्हें कम्पेनसेसन दें। पर राजस्थान सरकार ने उन्हें कम्पेनसेशन नहीं दिया। इसलिये अब जो मिलिट्री की वजह से जो नुकसान हुआ है उसके लिये क्राप्स का ऐसेसमेन्ट करके कम्पेन्सेशन देने की घोषणा करनी चाहिये। खास तौर से गढरारोड के आस पास के इलाके के लिये। दूसरा सभापति महोदय, मेरा निवेदन यह है कि जो कम्पेनसेशन की जो बात मैंने कही है उसके लिये ऐसेसमेन्ट के लिये जिलाधीश को आदेश दिये जायं कि वो इसके बारे में कार्यवाही करें और काश्तकारों को जल्दी से जल्दी कम्पेनसेशन मिल जाय। दूसरी बात जो मैं निवेदन और करना चाहूँगा वह खास तौर से है बन्दूकों के बारे में,

5.28 म. प.

(श्री रामनारायण चौधरी, उपाध्यक्ष पदासीन)

बन्दूकों के बारे में उपाध्यक्ष महोदय, मेरा यह निवेदन है कि जो बन्दूकें सरकार द्वारा दी जायं उसे ध्यान से देना चाहिये क्योंकि सन् 55 में भी जब बन्दूकें दी गयी थीं तो उस क्षेत्र में उनका काफी दुरुपयोग हुआ था। लोगों का इसमें एक्सप्लोइटेशन किया गया और लोगों को बहुत ही परेशानी हुई थी। उपाध्यक्ष महोदय, उस वक्त लोगों से फोर्सड लेवर लिया गया था इसलिये इस तरफ भी मेरा आपसे निवेदन है कि अब

(श्री वृद्धिचन्द जैन)
लोगों का एक्सप्लाईटेशन नहीं किया जाय और समाज के जो पिछड़े लोग हैं, उनसे फोर्स्ड लेबर नहीं लिया जाना चाहिये और बन्दूकें देने के लिये मेरा सुझाव यह है कि उपाध्यक्ष महोदय, एक कमेटी बनायी जाय। एक एडवाईजरी कमेटी बनायी जाय उसका एम. एल. ए. मेम्बर होना चाहिये और जिन्हें वह एडवाईजरी कमेटी आदेश दे उन्हें ही बन्दूकें मिलनी चाहिये। ये उस एडवाईजरी कमेटी का डिसक्रिशन होना चाहिये।

श्री मोहनलाल मोदी (नीम का थाना): उस एडवाईजरी कमेटी के कौन मेम्बर होंगे वह क्या करेंगी ?

श्री **वृद्धिचन्द जैन**: उस एडवाईजरी कमेटी की डिस्ट्रिक्ट कौन्सिल होगी और वह ही फैसला करेगी कि किसको बन्दूक देना चाहिये और किसको नहीं। उपाध्यक्ष महोदय, सन् 65 में जब मैंने दौरा किया तो सीमावर्ती क्षेत्रों में मुझे अनुभव हुआ कि बन्दूकों का दुरुपयोग हुआ है। इसलिये अब अगर बन्दूकें दी जायें तो सोच समझ कर दी जायें और जिनको दी जाय बन्दूकें, उनकों ट्रेनिंग दी जाय। यदि बन्दूक दी और ट्रेनिंग नहीं दी तो उसका मिसयूज होता है और वह उसका उपयोग नहीं कर सकते। इसलिए ट्रेनिंग की भी व्यवस्था होनी चाहिये। मैं यह जानना चाहता हूं कि जिस प्रकार से पाकिस्तान ने मुजाहिदों की फौज बनाई, हमको भी उन लोगों को, जिनको बन्दूकें दे रहे हैं या दूसरों को, होमगार्ड की ट्रेनिंग देकर, जो देश के प्रति वफादार हों, उनको ट्रेनिंग देकर, उन पर डिस्प्लिन रख कर, इस प्रकार की रक्षा पंक्ति बनानी चाहिये। जो बन्दूकें रखते हैं, वे किसी के अनुशासन में नहीं हैं। कोड आफ कन्डक्ट में नहीं आते हैं। अनुचित तरीके अपनाते हैं और कन्ट्रोल नहीं होता है तो मिसयूज होता है। इसका ध्यान रखा जाय।

तीसरी चीज जो मैं इस अवसर पर कहना चाहता हूं वह है स्पाइज के बारे में। स्पाइज हिन्दू भी होते हैं और मुसलमान भी। यह दृष्टिकोण नहीं रखना चाहिये कि बोर्डर के मुसलमान हैं वे अधिकांश स्पाई हैं। अगर पाकिस्तान गवर्नमेंट स्पाइज को मुकर्रर करती है तो हिन्दूज को करती है। इसीलिए करते हैं कि उस पर शक पैदा न हो और वह अच्छी तरह से इन्फोर्मेशन गेदर करके दे सकता है। पैसे के कारण बहुत से हिन्दूज इस प्रकार का काम कर लेते हैं। सी. आई. डी. के बारे में मेरा एक मत रहा है। एस. पी. रैंक के रखते हैं वे अच्छे हैं।

श्री **भैरोंसिंह**: चुनाव स्थगित हो जावेंगे। उनको खुशामद क्यों कर रहे हैं ?

श्री वृद्धिचन्द जैन: सी. आई. डी. रोंग इन्फोर्मेशन देकर इस प्रकार की चीज बना देते हैं कि गलत को सही और सही को गलत। मैं इस प्रकार के व्यक्ति के विरुद्ध, जो देश के प्रति वफादार नहीं हैं और गद्दार हैं, सख्त से सख्त कदम उठाने का हामी हूं, मैं इसका पक्ष का नहीं हूं उनके प्रति कदम न उठाये जायं। स्मगलर्स हिन्दू और मुसलमान दोनों में ही हैं। जयपुर से आने वाले माननीय सदस्य ने जैसलमेर के प्रमुख का नाम बताया। इलेक्शन था तो श्री

(श्री वृद्धिचन्द जैन)
भैरोंसिंह के साथ कई स्मगलर और डेकोइट्स थे।

श्री भैरोंसिंह : नाम बताओ।

श्री वृद्धिचन्द जैन : डेकोईट्स भी थे और स्मगलर्स भी थे।

एक माननीय सदस्य : नाम बताओ ?

श्री वृद्धिचन्द जैन : नाम की लिस्ट भी है।

श्री परसराम मदेरणा (राजस्व मंत्री): क्या माननीय सदस्य यह कह रहे हैं कि जैसलमेर के प्रमुख इस प्रकार की कार्यवाही में हिस्सा लेते हैं ? मेरी यह जानकारी है कि जैसलमेर के प्रमुख स्मगलिंग में पार्टिसिपेट नहीं करते हैं। वे देश के प्रति उतने ही वफादार हैं जितने कि प्रधान मन्त्री और हिन्दुस्तान के नेता।

श्री वृद्धिचन्द जैन : जो मदेरणा साहब ने विचार प्रकट किये हैं मैं भी उसको मानता हूं चुनाव विरोध में होते हैं और विचारधारा में विरोध हो सकता है। भोपालसिंह जी कांग्रेस में 15 साल से काम कर रहे हैं उनको स्मगलर बता देते हैं।

श्री विजय सिंह : माननीय सदस्य, अमृत नाहटा का वक्तव्य हुआ उससे क्या इफेक्ट हुआ हिन्दुस्तान पाकिस्तान के रिलेशन्स पर ? स्टेटमेंट दें।

श्री वृद्धिचन्दजैन : माननीय मुख्य मंत्री जी ने और मोहनलालजी सुखाड़िया ने स्टेटमेंट दे दिये हैं जो दोनों बड़ी हस्तियों ने स्टेटमेंट दे दिये तो मैं क्या स्टेटमेन्ट दूं। इसलिए कि चीफ मिनिस्टर ने स्टेटमेन्ट दे दिया और पहले वाले चीफ मिनिस्टर ने स्थिति स्पष्ट कर दी अब मैं इस पर क्या एड करूं।

श्री भैरोंसिंह : चीफ मिनिस्टर्स से, दोनों ने स्टेटमेन्ट दिये वह तो सही है।

श्री वृद्धिचन्द जैन : सही है यही नहीं, बल्कि उनके स्टेटमेन्ट ओथोन्टिक हैं और वह गवर्नमेन्ट की सही पोजीशन बताते हैं।

श्री भैरोंसिंह : आप अमृत नाहटा की बात नहीं मानते हैं ?

श्री वृद्धिचन्द जैन : उन सीमावर्ती गांवों में अकाल छाया हुआ है। बाड़मेर के 852 गांवों में से 400 गावों में फेमीन कन्डीशन्स हैं। इसी प्रकार से बीकानेर और जैसलमेर के गांवों में भी है। इन क्षेत्रों के मनोबल को ऊंचा करने के लिए जल्दी से जल्दी फेमीन डिक्लेयर किया जाय। राजस्थान सरकार अगर इन्ट्रेस्ट नहीं लेगी और अभी से कदम नहीं उठायेगी और उन लोगों को मदद नहीं मिली तो आज उनका मनोबल ऊंचा है उसमें फर्क पड़ सकता है। उसकी जिम्मेदारी राजस्थान सरकार की होगी। राजस्थान सरकार की वित्तीय स्थिति अच्छी नहीं है। इसके लिए अभी से केन्द्रीय सरकार को मूव कर देना चाहिये। और जो सहायता लेनी है वह अभी से कोशिश करके लेनी चाहिये। अगर मदद नहीं ली और उनको मदद नहीं पहुँचाई और ऐसी स्थिति हो गई कि युद्ध हो गया तो विकट परिस्थितियां पैदा हो सकती हैं इसलिये राजस्थान गवर्नमेंट को यही निवेदन है कि फेमीन कन्डीशन्स की पूरी जानकारी करके फेमीन रिलीफ वर्क्स जल्दी से जल्दी खोले जावें और

(श्री वृद्धिचन्द जैन)

लोगों की मदद करें ताकि उनका मोरल मेन्टेन रहे। इन्हीं शब्दों के साथ, जो वक्तव्य चीफ मिनिस्टर साहब ने दिया है उसको सपोर्ट करता हूँ और मैं यह चाहता हूँ कि बंगला देश की जो समस्या है वह जल्दी से जल्दी हल हो और वह आजाद हो और मुजीबुर्रहमान पाकिस्तान के प्रधान मंत्री बने और उनकी जनता की समस्या हल हो।

श्री उपाध्यक्ष : मेजर फतहसिंह।

मेजर फतहसिंह (ब्यावर) : उपाध्यक्ष महोदय, मैंने पिछले द्वितीय महायुद्ध में भारतीय सेना में एक अधिकारी के तौर पर काम किया था और मुझे अराकान औपरेशन्स में भी भाग लेने का अवसर मिला था। एक भूतपूर्व सैनिक अधिकारी की हैसियत से इस अवसर पर मैं भी कुछ कहना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

माननीय मुख्य मंत्री महोदय ने यह बात कही कि अगर युद्ध होता है तो पाकिस्तान के क्षेत्र में होगा इसका तो मैं स्वागत करता हूं और मैं उन्हें बधाई देता हूं। मैं यह समझता हूँ कि हमारी सरकार ने अपनी पहले की गलती को दुरुस्त किया है। 1965 में पाकिस्तान के साथ जो संघर्ष हुआ था। हमारे भारतीय सेनाओं के कई अधिकारियों से मुझे मिलने का अवसर प्राप्त हुआ था। उन्होंने कहा था कि 1965 के संघर्ष में हमारी सेना पर प्रतिबन्ध लगा दिया था कि तुम इससे आगे नहीं बढ़ोगे। खास तौर से लाहोर आता है। सेना को यह आदेश था कि लाहौर पर कब्जा नहीं करोगे। इससे सेना में बड़ी निराशा उत्पन्न हुई। इस बात का आज वाद-विवाद चल रहा है कि पाकिस्तान के क्षेत्र में युद्ध होगा और उस इलाके पर हमारा कब्जा हो जावेगा उसका क्या होगा ? माननीय रामानन्दजी अग्रवाल अभी कह रहे थे जिस क्षेत्र पर हमारा अधिकार हो जाता है वह पाकिस्तान का है। हमको छोड़ना पड़ेगा। मैं इसमें दो विचार रखता हूँ। एक बात से तो मैं सहमत हूँ कि उस क्षेत्र से जहां पर कि काश्मीर में पाकिस्तान का अभी अधिकार है, अगर उस क्षेत्र पर हमारा अधिकार होता है तो वहां से हमारी सेनाएं वापिस नहीं हटनी चाहिये।

लेकिन जो इन्टरनैशनल बोर्डर से दूसरे आगे के क्षेत्रों में हमारी सेनाएं बढ़ती हैं तो वहां से तो आखिर हमें हटना ही चाहिये। अन्त में समझौता होगा, ट्रीटी होगी, सन्धि होगी तो हमें हटना ही पड़ेगा क्योंकि वह हिस्सा हमारा नहीं है। लेकिन यह कह कर मैं सैनिकों की भावना व्यक्त कर रहा हूं।

अभी माननीय भैरोंसिंहजी ने भी कहा था कि काश्मीर के कई क्षेत्रों से जैसे कि टिथवाल, हाजी पीर का दर्रा और कारगिल वगैरह से हमारे सैनिकों को पीछे हटना पड़ा तो उससे सैनिकों का मनोबल गिरा। उसमें फरक आया। उनकी यह भावना थी कि आखिर हमने अपने ही देश के एक हिस्से को लेने के लिये इतनी कुरबानी की, इतना त्याग किया, बलिदान किया वह व्यर्थ क्यों किया गया ? अगर बलिदान इस तरह से व्यर्थ जाता है तो हम क्यों लड़ें ! इस बात को भी सरकार को ध्यान में रखना चाहिये।

(श्री मेजर फतहसिंह)

माननीय मुख्य मन्त्री ने कहा कि हम लड़ाई नहीं चाहते। मैं समझ नहीं पाया इसका मतलब! आखिर पाकिस्तान के साथ हमने तो लड़ाई नहीं छेड़ी है। लेकिन पाकिस्तान ने हमारे खिलाफ एक तरह की अनडिक्लेअर्ड वार तो घोषित कर ही दी है। इसको नजर अन्दाज क्यों करना चाहते हैं? जब कि उन्होंने एक करोड़ के करीब अपने नागरिकों को मारपीट करके हमारे देश में धकेल दिया है और उन एक करोड़ से हमारी आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही है। एक आदमी पर 3 रुपया रोज के हिसाब से खर्च कर रहे हैं तो इस तरह से तीन करोड़ रुपया रोज खर्च कर रहे हैं तो इससे तो हमारी कमर ही टूटती जा रही है। वैसे ही हम बहुत गरीब देश के लोग हैं। तो क्या यह पाकिस्तान का एक तरह से अनडिक्लेअर्ड हमला हमारे देश पर नहीं है?

इसलिए यह कहना कि हम लड़ाई नहीं चाहते, यह गलत है। लड़ाई तो हमारे दुश्मन ने प्रारम्भ करदी है। हमें तो अब लड़ना ही होगा और इस हमले को विफल करना ही होगा। ऐसी स्थिति में तो जो पुरुषार्थहीन व्यक्ति ही ऐसी बात कह सकता है। यह नपुंसकत्व की बात है।

जब ऐसी बातों पर हम सोचते हैं तो अभी दो चार दिन पहले भुट्टो साहब ने एक वक्तव्य दिया। मैं उसकी ओर आपका ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। भुट्टो साहब ने कहा कि यदि युद्ध होगा पाकिस्तान का हिन्दुस्तान के साथ तो सिन्धु और गंगा का पानी भी खून से लाल हो जावेगा।

हिन्दुस्तान एक बड़ा देश होने के नाते पहले सिन्धु तक पहुंचने का साहस कर भी सकता है और ऐसी बात अगर हिन्दुस्तान चाहे तो कह सकता है, पर एक छोटा देश होते हुए पाकिस्तान भी इतना साहस करता है कि वह गंगा तक पहुंच जावेगा। गंगा तक पहुंचने का मतलब है हरिद्वार तक पहुंचना और सारे पंजाब को अधिकार में करते हुए हरिद्वार तक पहुंच जाना। अगर ऐसी बात होती है तो यह हमारे लिये बहुत दुर्भाग्य की बातें होगी। इसके लिए देश को तैयार होना है।

उपाध्यक्ष महोदय, मैं इस भूमिका में नहीं जाना चाहता कि हमारे देश ने अब तक बंगला देश को मान्यता नहीं देकर गलती की अथवा नहीं की।

श्री भगवान सहाय शास्त्री (अजमेर पश्चिम): अभी तक तो मान्यता नहीं दी।

श्री मेजर फतेह सिंह: इस बारे में दो विचारधारायें चल रही हैं। एक कहती है कि मान्यता दी जानी चाहिये थी और 25 मार्च को ही, जिस दिन कि पाकिस्तानी फोजों ने बंगालियों पर बर्बरतापूर्वक कत्ले-आम करने का अभियान चलाया, बंगाली जाति विनाश का चक्र चलाया, उसी दिन हमारी फौजों को बंगला देश को आजाद कराने के लिये बंगला देश में कूच कर देना चाहिये था। दूसरी विचार धारा कहती है कि कूच नहीं करके उस समय हमने ठीक ही किया। अब विश्व जनमत बना है जिससे बंगला देश के मुक्ति सेनानियों को नैतिक बल मिला है।

(मेजर फतेहसिंह)

तो ये दो विचारधारायें चल रही हैं। मैं इसमें नहीं जाना चाहता कि कौन सही है और कौन गलत है। मैं भी अपने विचार व्यक्त कर देता। पर दो चार दिन पहले मुझे पिछले विश्व युद्ध के बारे में चर्चिल के संस्मरणों को पढ़ने का अवसर मिला।

13 मई 1940 को जब कि हाउस आफ कामन्स में बहस चल रही थी और इस बात पर विचार हो रहा था कि इङ्गलैंड को इस तरह से जिन नेताओं ने कमजोर बनाया है उनको दण्ड दिया जाय। उनको इस सबके लिए दोषी ठहराया जावे। उस अवसर पर चर्चिल ने जो शब्द कहे थे मैं उनको यहां उद्धत करता हूं :

"If the present sits in judgement on the past, it will lose the future."

अर्थात् : अगर हम वर्तमान कार्य कलापों पर ही निर्णय देने बैठते हैं तो वहां भविष्य को भी खो देंगे। इसलिये मैं इसमें नहीं जाना चाहता। मैं तो चाहता हूं कि :

बीती त हि बिसार दे।
आगे की सुधि लेहि॥

तो वही हमें सोचना है। जो हो चुका, वह तो हो चुका, हमें तो अब यह विचार करना है कि अब हमें क्या करना चाहिये।

आप जानते हैं, हम जानते हैं, सारा देश जानता है कि हमारी पूर्वी और पश्चिछमी दोनों सीमाओं पर पाकिस्तान की और हमारी फौजे मोर्चा लिये आमने सामने डटी हुई खड़ी है। कोई नहीं कह सकता कि कब क्या हो जाय। बारूद का ढेर एकत्रित हो गया है। चिनगारी लगने की देर है। भूतपूर्व मुख्य मंत्री मोहनलालजी सुखाड़िया ने सही बात भी कही थी, जिससे मैं भी सहमत हूं, कि आने वाले कुछ दिन बड़े निर्णायक होने वाले हैं, युद्ध अवश्यंभावी है, ऐसा प्रतीत होता है। यह बात वे और मैं ही नहीं, सेना के बड़े बड़े अधिकारीगण भी कह रहे हैं। इसलिये समय आ गया है जब कि हमें अपना कर्तव्य करना है।

श्रीमान् मैंने मुख्य मंत्री महोदय के वक्तव्य को सुना। आप जानते हैं कि देश बड़ी नाजुक घड़ी से गुजर रहा है। इस पृष्ठ भूमि में उनका वक्तव्य प्रेरणादायक नहीं लगा। इससे हमारा उत्साह और मनोबल ऊंचा नहीं हुआ। जब मैं ऐसी बात कहता हूं तो मुझे 15 मई 40 की बात याद आती है, जब मैं बम्बई में सर्विस करता था और सेना में सेकण्ड लेफ्टीनेन्ट था। उस समय विश्वयुद्ध हो रहा था जर्मनी और जापान से युद्ध में इंगलैण्ड फंसा हुआ था। उस समय हाउस आफ कामन्स में इस युद्ध की चर्चा के दौरान चर्चिल ने जो शब्द कहे, मैं उन शब्दों को यहां उद्धृत करता हूं :

"I have nothing to offer but blood, toil tears and sweat. Come let us tgo forward together with our united stiength."

अर्थात मैं तुम्हें खून, परिश्रम, आंसू और पसीने के अलावा और कुछ नहीं दे सकता आओ हम संगठित होकर आगे बढ़ें।

(मेजर फतहसिंह)

तो ऐसे अवसर पर हमारे मुख्य मन्त्री का वक्तव्य भी इसी तरह का कुछ प्रभावोत्पादक और प्रेरणादायक होना चाहिये था। सरकार क्या करना चाहती है और जनता से क्या चाहती है यह बताना चाहिये था। पर उन्होंने यह नहीं बताया।

श्रीमान् इंगलैण्ड में नेलसन एक बड़ा नेवल कमाण्डर था। उन्होंने एक बार कहा था "who dies if England lives, and who lives if England dies"

मैं भी वही कहना चाहता हूं इस अवसर पर कि भारत मरता है तो कौन रहता है और अगर भारत रहता है तो कौन मरता है। तो हमें अपने देश को अपने भारत को रखने के लिये अपना सर्वस्व तक बलिदान करने को तैयार रहना चाहिये।

श्री **मनोहरसिंह** मेहता (मांडलगढ़): बहुत अच्छा बहुत अच्छा कहा।

श्री मेजर फतेहसिंह: इस अवसर पर मैं एक बात कहना चाहता हूं। मैं भारतीय सेना का 11 साढ़े ग्यारह वर्ष तक एक अधिकारी रह चुका हूं। मैं 55 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हूं। मेरा एक मात्र पुत्र जो है वह भी सेना में फ्लाइंग आफीसर है। लेकिन कौन मरता अगर भारत रहता है तो कौन मरता है। ऐसी स्थिति में मैं अपनी भी सेवाएं सरकार को अर्पित करता हूं।

सरकार जिस तरह चाहे उसका उपयोग करे।

श्रीमन् इस अवसर पर हमारा क्या कर्तव्य होता है इस पर भी हमें कुछ विचार करना चाहिये।

मैं दो चार बातें बताना चाहूंगा। हमारी सरकार का यह कर्त्तव्य है कि वह जनता को हर त्याग और बलिदान के लिये तैयार करे। इसके लिये लेखकों और कवियों का भी हर तरह से सहयोग प्राप्त किया जाय।

जैसा माननीय रामानन्दजी ने कहा कि आजकल युद्ध केवल सैनिक मोर्चों पर ही नहीं लड़ा जाता बल्कि हर स्तर पर फैक्ट्री कारखाना खालि नगरों और शहरों में भी लड़ा जाता है। इसलिये हमें हर फैक्टरी, कारखाना खेत आदि मोर्चों पर भी एक मन से जुट जाना चाहिये और अधिक से अधिक उत्पादन करना चाहिये। रात दिन इस उत्पादन के काम में जुट जाना चाहिये।

साथ ही एक बात और कहना चाहूंगा कि आज जब देश में युद्ध की स्थिति पैदा हो गई है तो हम सभी प्रकार के आन्दोलनों को समाप्त कर दें और तुरन्त कर दें। उत्पादन बढाने और निर्माणकारी कार्यों में लग जावें।

(हीयर हीयर की ध्वनि)

जो आज विद्यार्थियों के भी आन्दोलन चल रहे हैं जयपुर में जोधपुर में और देश के अन्य स्थानों पर भी वे भी समाप्त कर दिये जाने चाहिये। अजमेर में भी अलग से यूनीवर्सिटी कायम करने के लिये आन्दोलन चल रहा है वह भी तुरन्त बन्द हो जाना चाहिये। हालांकि ये भी और जितने भी आन्दोलल हैं उनके प्रति हमारी पूर्ण सहानुभूति है। लेकिन यह वक्त

(श्री मेजर फतहसिंह)

उन सबसे भी बड़ा आ गया है। जब कि हम अपनी शक्ति का अपव्यय इन आन्दोलनों में न करके उत्पादन बढ़ाने में निर्माणकारी कामों में करें। मुझे इस वक्त अमेरिका के स्वर्गीय राष्ट्रपति कैनेडी की एक बात याद आती है जब वे पहली बार चुनाव में जीत कर आये थे। तब उन्होंने जनता के नाम एक सन्देश में कहा :

"Ask not what the nation can do for you but ask what you can do for the nation."

अर्थात यह मत पूछो कि राष्ट्र अथवा सरकार हमारे लिए क्या कर सकती है लेकिन अपने आपको यह पूछो कि तुम राष्ट्र अथवा सरकार के लिए क्या कर सकते हो।

एक बात मैं और कहना चाहता हूं, शायद इस सम्बन्ध मे इडजोर्नमेंट मोशन के भी नोटिसेस दिये गये थे, कि जब से लड़ाई की चर्चा सुनी है तब से जो आवश्यक वस्तुएं हैं उनकी कीमतें बढ़ने लगी हैं। तो सरकार का यह कर्तव्य हो जाता है कि ऐसे कठोर कदम उठाये जायं जिनके अन्तर्गत दिन प्रतिदिन काम में आने वाली वस्तुओं की कीमतों पर नियंत्रण रखा जा सके और मुनाफाखोर, ब्लेक मार्केटियर्स, चोर बाजारी करने वाले ये तो इन्तजार ही कर रहे हैं कि कब लड़ाई छिड़े और हमें इस तरह के असामाजिक कार्यों से लाभ उठाने का मौका तो मिले। तो यह सरकार इस सम्बन्ध में अपने उत्तरदायित्व को निभायेगी इसका मुझे पूरा विश्वास है।

श्रीमान, माननीय मुख्य मन्त्री महोदय ने कहा कि उन्होंने हर एक कलेक्टर को आदेश दिये हैं कि वह सब सैनिकों को पत्र लिखें कि हम तुम्हारे परिवार की देखभाल कर रहे हैं। अपने आप में यह घोषणा अच्छी है। विचार अच्छे तो हैं लेकिन इस सरकार की कथनी और करनी में अन्तर है। मैं आपको एक बात याद दिलाना चाहता हूं कि इस सदन से मैं क्षमा भी चाहूंगा कि अजमेर में एक सोलजर्स रेस्ट हाउस है। दो साल से उस सोल्जर्स रेस्ट हाउस के बहुत बड़े भाग पर सप्लाई विभाग का दफ्तर चल रहा है और जूनियर कमिशन्ड आफिसर्स के लिए एक कमरा है आराम करने का और ठहरने का, वहां पर भी उनका दफ्तर लगा हुआ है। मैंने गत दो अधिवेशनों में इसके बावत चर्चा की, माननीय खेतसिंहजी से भी मिला लेकिन उन्होंने कोई कार्यवाही नहीं की। राजस्थान सोल्जर्स बोर्ड के सदस्य हैं माननीय ओला जी उनसे भी कहा कि आप भी कुछ करो नहीं तो मुझे वहां पर भूख हड़ताल पर बैठना पड़ेगा।

श्री शीशराम ओला (खेतड़ी) : हमने इसके लिए कहा।

श्री फतहसिंह : आपने कहा लेकिन असर नहीं हुआ। इसलिए मैं कहना चाहता हूं कि सरकार की करनी केवल धोखामात्र है जो साधारण बात नहीं कर सकती वह क्या कल्याण की बात करेगी, मेरी समझ में नहीं आता।

जहां तक सैनिकों के कल्याण के कामों का प्रश्न है मेरा सुझाव है कि हर तहसील में और हर जिले में एक समिति का गठन किया जाये और उस समिति का यह कर्तव्य

(मेजर फतहसिंह)

हो कि जो सैनिक, इस समय सेवा में है, उनके परिवार वालों को, उनकी पत्नियों को और उनके वृद्ध माता-पिताओं को कष्ट हो, तो उनसे सम्पर्क करें और उनके कष्टों का निवारण करें।

दूसरी बात मैं यह बताना चाहता हूं कि सन् 65 का जो पाकिस्तान के साथ संघर्ष हुआ उस समय ब्यावर में तो हमने किया भी था कि जो सैनिक हैं, गरीब हैं उनको हमें आर्थिक सहायता भी देनी चाहिये और उनके बच्चों को कपड़े वगैरह भी देने का प्रबन्ध करना चाहिये, इससे उनका मोरल ऊंचा होगा।

एक बात मैं और कहना चाहता हूं कि यह ब्लेक आउट का अभ्यास जयपुर और जोधपुर वगैरह में हो रहा है।

श्री उपाध्यक्ष : समय का भी ध्यान रखें माननीय सदस्य। बोलने वाले माननीय सदस्य बहुत हैं।

श्री फतहसिंह : अगर आप यह सोचते हैं कि मैं इरेंलेवेन्ट बोलता हूं तो I would prefer to sit down

श्री उपाध्यक्ष : आप रिलेवेन्ट बोल रहे हैं लेकिन बोलने वाले बहुत हैं।

श्री फतहसिंह : I will take only three minutes.

मेरा कहना यह है कि यह ब्लेक आउट सब जगह होने चाहिए। अजमेर और ब्यावर में भी होने चाहिए क्योंकि मैं यह बात बता देना चाहता हूं कि अब की जो पाकिस्तान के साथ युद्ध हुआ तो बहुत शार्ट टाइम होगा। पाकिस्तान कभी लम्बे संघर्ष में हिन्दुस्तान का मुकाबला नहीं कर सकता इसलिए पाकिस्तान का लक्ष्य होगा कि जो बड़े बड़े शहर हैं जैसे ब्यावर है, अजमेर है, जयपुर है वहां तक भी वह अपने मिराज और बाम्बर्स वगैरह को भेजेगा ताकि जनता का मोरल डाउन हो। तो इसके ऊपर भी गवर्नमेन्ट को सोचना चाहिए और सबसे बड़ा सवाल है जो फौजी वहां पर हैं, मोर्चे पर खड़े हुए हैं संघर्ष की सूरत में उनके कल्याण का ध्यान आयगा और ब्लड ट्रान्सफ्यूजन की आवश्यकता होगी उसके लिए अभी से ब्लड बैंक में ब्लड इकट्ठा करना चाहिए।

एक बात जो सबसे महत्वपूर्ण आपसे कहनी है वह यह है कि अपने अपने क्षेत्र में चाहे वह पंचायत का हो, म्युनिसिपैलिटी का हो उसके अन्दर पड़ने वाली सब रेल्वे लाइनें, रेल्वे पुल या सड़कों के भी पुल वगैरह की सुरक्षा और ज्यादा जिम्मेदारियां वहां की ग्राम पंचायतें और म्युनिसिपैलिटीज़ का भी देंगे तो हम सरकार के ऊपर जो भार हैं उसको कम कर सकेंगे।

एक सबसे बड़ी बात यह है जो कि हमारा पाकिस्तान के साथ संघर्ष होता है उसको जीतने के लिए बहुत आवश्यक है। कोलम्बिया यूनिवर्सिटी में हमारी प्रधान मंत्री का भाषण हुआ और अभी दो चार दिन पहले उन्होंने ठीक ही कहा था कि चाहे सारे चीन और अमेरिका की सेना हो उनसे भी हम नहीं डरते। तो मुझे भी प्रेसीडेन्ट इब्राहीम लिंकन की बात याद आती है जब कि सिविल वार चल रही थी तो उन्होंने एक भाषण दिया था:

Page No 138

(मेजर फ़तहसिह)

"At what point shall we expect the approach of danger. By what means shall we fortify against it ? Shall we expect some trans-Atlantic military giant to step the ocean and crush us at a blow ? Never. All the armies of Europe, Asia and Africa combined could not by force take a drink from the Ohio or make a track on the Blue Ridge in the trial of strength of a thousand years. At what point then shall we expect the approach of danger ? I answer, if the danger ever comes, it will spring up from amongst ourselves, it will not come from abroad. We shall be its own author and finisher. As a nation of free men we must either live through all times or die by suicide."

इसलिए माननीय उपाध्यक्ष महोदय, मैं भी यह कहना चाहता हूं कि हिन्दुस्तान को अमेरिका, चीन और पाकिस्तान की कोई सेना की शक्ति हमको दबा और डरा नहीं सकती। अगर हमको कोई डर है तो हमारी परस्पर व्यक्तिगत कमजोरी से डर है याने हम सब राजनैतिक मतभेदों को भुलाकर, एक होकर, आगे चलें और हम साम्प्रदायिक सद्भावनाओं को लेकर आगे चले, तो हमारी अवश्य युद्ध की हालत में विजय होगी। मुझे इस में कोई शक नहीं लगता। मैं, उपाध्यक्ष महोदय आपने जो समय बोलने के लिए दिया उसके लिए आपका बहुत आभारी हूं।

श्री सभापति : श्री खेतसिंह (अनुपस्थित) श्री शंकरलाल ।

श्री शंकरलाल (जैतारण) : उपाध्यक्ष महोदय, सीमा के सम्बन्ध में माननीय मुख्य मंत्रीजी ने जो वक्तव्य दिया है और उस पर जो चर्चा हुई मैं समझता हूं कि उस चर्चा के अन्दर जो मुद्दे उठाए गए हैं उन्हें मुद्दों को दुबारा यहां नहीं उठाया जाना चाहिए और मैं यहां उठाऊंगा भी नहीं। उन्हीं मुद्दों पर यहां चर्चा करना आवश्यक नहीं है।

उपाध्यक्ष महोदय, यह बात तो सही है कि हमारे संविधान के अन्तर्गत हमारी विधान सभा में इस प्रकार की चर्चा करने का अधिकार जो है वह सीमित है क्योंकि जो भी हमारी सीमा सुरक्षा के प्रश्न हैं वह मुख्यतः हमारी केन्द्रीय सरकार और हमारी पार्लियामेंट का विषय है और इसीलिए हमें इसके ऊपर चर्चा करने समय बहुत ही सीमित रूप में विचार करना पड़ता है । फिर भी कई माननीय सदस्यों ने कई प्रकार के विचार हमारे सामने रखे हैं। मैं यह निवेदन करना चाहूंगा कि मुख्यतः जो जड़ है, जो स्थिति हमारे सामने पैदा हुई हैं, उसमें पहला प्रश्न है मानवता का, लोकतंत्र का और तानाशाही का। जो पाकिस्तान के अन्दर, बंगला देश का प्रश्न उठा वह मुख्यतः एक लोकतंत्र और एक सैनिक शासन के बीच का एक विवाद है और उसके अन्दर केवल हिन्दुस्तान ही नहीं लेकिन विश्व के अन्दर जितने भी राष्ट्र हैं, उन सबका कर्त्तव्य है, जो भी लोकतंत्र में विश्वास करने वाले राष्ट्र हैं, उनको बंगला देश की आवाज को जिसके अन्तर्गत पूर्वी बंगाल ने शेख मुजीबुर्रहमान को बहुमत से जिताया और लोकतंत्र में जिस चीज का फैसला किया, उस लोकतंत्र

(श्री शंकरलाल)

को जो वहां के तानाशाह याह्याखां दवाना चाहते हैं, उस लोकतंत्र की जो हत्या करना चाहते हैं, उसके लिए सारे विश्व के राष्ट्रों का कर्त्तव्य है कि वह लोकतंत्र और तानाशाह के बीच में जो विवाद है उस में लोकतंत्र का साथ दें, अगर लोकतंत्र में विश्वास करते हैं। लेकिन बड़ा खेद है और हमारी प्रधान मंत्री ने भी अभी अपनी विदेशों की यात्रा के समय इस बात को, इस विचारधारा को दोहराया है। लेकिन जहां तक हिन्दुस्तान का प्रश्न है वह दूसरे प्रश्नों से भी ज्यादा महत्व का इसलिए हो जाता है, क्योंकि एक तो भौगोलिक दृष्टि है, जो भौगोलिक कारण हैं वह इस प्रकार के हैं कि पाकिस्तान और हिन्दुस्तान जो बने तो एक तरफ पश्चिमी पाकिस्तान और दूसरी तरफ पूर्वी पाकिस्तान है। यह दोनों बहुत दूर दूर हैं भौगोलिक दृष्टि से पास पास नहीं हैं। पाकिस्तान का निर्माण धर्म के नाम पर हुआ पाकिस्तान का इस प्रकार का निर्माण इसलिए नहीं हुआ कि भौगोलिक दृष्टि से इस पर प्रशासन ठीक ढंग से हो सकता था या इकोनोमिक दृष्टि से ठीक बैठता था लेकिन इसका निर्माण जो हुआ वह निर्माण धर्म के नाम पर हुआ और इसीलिए बंगला देश से आवाज उठी और इस पर जनता ने जो निर्णय दिया उससे स्पष्ट होता है कि धर्म के नाम पर जिस देश की जड़ होती है वह खोखली होती है और धर्म के नाम पर किसी राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सकता है और इसीलिए श्री याह्या खां ने जो कहा कि पाकिस्तान का निर्माण और उसका अस्तित्व जो एक मुसलमान और एक धर्म के नाम पर हुआ वह मैं समझता हूं कि प्रायः खत्म हो चुका है क्योंकि वहां की जनता ने उस चीज के खिलाफ आवाज उठाई है। पूर्वी बंगाल की जनता ने आवाज उठाई और इसीलिए हम इस नतीजे पर पहुंचे कि चाहे कोई देश हो, वह धर्म के नाम पर नहीं टिक सकता।

रहा प्रश्न भारत का। बंगाल की और दूसरे हिस्से की सीमा जो है वह हमारे से लगी हुई है। पूर्वी बंगाल के अन्दर अत्याचार हुए और उसके परिणाम स्वरूप जब वहां से एक करोड़ आदमी, एक करोड़ शरणार्थी हमारे देश में आए, तो मैं तो यह समझता हूं कि इन शरणार्थियों का आना ही एक प्रकार का हमारे पर आक्रमण है, उपाध्यक्ष महोदय, एक प्रकार का अग्रेशन है। इसलिए यह मानना कि अभी तक पाकिस्तान ने हमारे पर हमला नहीं किया है मैं समझता हूँ कि वह बात वास्तविकता से परे है। वास्तव में हमारे देश के ऊपर पाकिस्तान ने आक्रमण कर दिया है। क्योंकि जब उसने एक करोड़ शरणार्थी हमारी सीमा में धकेल दिए तो यह स्थिति आ गई है। हमें भारत सरकार से और मुख्य मंत्रीजी को कह देना चाहिए और व्यक्तिगत तौर से मैं माननीय सदस्यों से यह निवेदन करूंगा कि हमारी राय, इस सदन की राय यह होनी चाहिए कि इमरजेंसी की स्थिति हमारे देश में बन चुकी है, क्योंकि संविधान के अन्तर्गत जो हमारे आर्टिकल 352 है, जिसके अन्तर्गत इमरजेंसी डिक्लेयर की जाती है और उसके अन्दर जो स्थिति सामने आती है, वह स्थिति इस वक्त हमारे सामने है। क्योंकि हमारा जो आर्टिकल 352 है वह इस प्रकार है:

"If the President is satisfied that a grave emergency exists whereby the security of India

(श्री शंकरलाल)

or of any part of the territory thereof is threatened, whether by war or external aggression or internal disturaance, he may, by proclamation, make a declaration to that effect."

आज हमारे यहां ग्रेव इमरजेंसी एग्जिस्ट हो गई है क्योंकि हमारे यहां ये जो शरणार्थी आए हैं, ये एडीशनल एग्रेशन के रूप में आए हैं। इसलिए उपाध्यक्ष महोदय, मैं तो यह निवेदन करूंगा कि भारत सरकार को इस स्थिति को इस प्रकार से जल्दी से जल्दी समझ लेना चाहिए और इमरजेंसी हमारे यहां डिक्लेयर करना चाहिए, ये एक करोड़ शरणार्थी जल्दी से जल्दी इस प्रकार वापिस अपने देश को लौट सकें उसके लिए सख्त कदम उठाना चाहिए। हम वार नहीं चाहते हैं और वार करना नहीं चाहते, लेकिन जो हमारे सामने आर्थिक वार शुरू कर दी गई है उसको देखना पड़ेगा और इन शरणार्थियों को वापिस अपने देश में पहुंचाने के लिए, वहां की राजनैतिक स्थिति को देखना ही पड़ेगा। वहां की राजनैतिक स्थिति को ठीक से बैठाने के लिए आपसी बातचीत जरूरी हैं लेकिन याहयाखां फौजी तानाशाह, इसके लिए तैयार नहीं होते हैं तो इस समस्या के समाधान के लिए हमें युद्ध भी करना पड़ेगा। हम सच्चाई पर हैं और सही रास्ते पर हैं। यह हमारे घर में, जो इस प्रकार से एक करोड़ मनुष्यों को धकेल दिया गया है उनके वापिस जाने के लिए कदम न उठायें यह उचित नहीं है। हम यह कहते रहें कि हम लड़ाई नहीं लड़ना चाहते हैं तो मैं समझता हूँ कि यह सही बात नहीं है। आज स्थिति इस प्रकार की पैदा हो गई है कि हिन्दुस्तान अपनी रक्षा के लिए लड़ाई लड़े। स्थिति इतनी गम्भीर हो गई है कि अब इसको आगे बढ़ने नहीं दिया जाना चाहिए। हमारे प्रधान मंत्रीजी की विदेश यात्रा के बाद आज जो जनमत बना है, उसकी भी यह मांग है और दूसरे विदेशी राष्ट्रों ने भी इस समस्या को समझा है। इसलिए अब हमें इस बात की मांग करनी चाहिए कि इमरजेंसी डिक्लेअर करें और इस समस्या को सुलझायें।

दूसरा, उपाध्यक्ष महोदय, हम जो चुने हुए प्रतिनिधि हैं और हमारी जनता के जो दूसरे नुमाइन्दें हैं उनका क्या कर्त्तव्य है? इस बारे में बहुत कुछ कहा जा सकता है कि हमें सरकार से कन्धा मिला कर काम करना चाहिए। मैं इस बात के लिए उन विरोधी नेताओं को, विरोधी पार्टियों को और सदन के माननीय सदस्यों को धन्यवाद देता हूं जिन्होंने इस बात की घोषणा की है कि राष्ट्र पर संकट आने पर एक मत होकर, कन्धा से कन्धा मिला कर, राष्ट्र के लिए काम करेंगे। लेकिन हमें इसको कार्य रूप में परिणत करना होगा और इसके लिए कार्य करना चाहिए। अगर इमरजेंसी डिक्लेयर करने में देर भी हो तो भी हमें तो यह मान कर चलना चाहिए कि देश में गम्भीर स्थिति है और इसलिए हमें अपने क्षेत्र के अन्दर और राज्य के अलग अलग क्षेत्रों के अन्दर, जैसा कि हमारे भूतपूर्व मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि जो पंचायतें हैं, पंचायत समितियां हैं, वहां की जिला परिषदें हैं, दूसरी नगरपालिकाएं हैं, इन सब को एक्टीवाईज करना चाहिए, सरकार ने इसके लिए कुछ कदम भी उठाए हैं। अभी मुख्य मंत्रीजी ने भी कहा था कि जनता के सहयोग

Page No 141

(श्री शंकर लाल)

के लिए नागरिक समितियां बनाई गई हैं। पाली जिले के बारे में मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं। पाली जिले में कमेटी बनने की बात सुनी थी, इत्तिला भी आई थी कि वहां पर कमेटी बनी है लेकिन अभी तक कोई मीटिंग नहीं हुई है। केवल कमेटियों के निर्माण से कुछ नहीं होने वाला है, हमें कुछ एक्टीविटी स्टार्ट करनी पड़ेगी और गांव गांव के स्तर पर एक प्रकार का प्रेरणादायक वातावरण होना चाहिए जिस प्रकार अभी माननीय सदस्य फतहसिंहजी ने कहा कि प्ररणादायक कार्य होने चाहिए तो वह प्रेरणादायक कार्य हमको इण्टरनली हमारे क्षेत्र में स्टार्ट करना चाहिए और हमें बता देना चाहिए कि हमारी जनता और हम लोग हर स्थिति का सामना करने के लिए तैयार हैं।

रहा प्रश्न यह कि जो चीजों के भाव बढ़ते हैं और दूसरी समस्यायें आती हैं तो मैं समझता हूं कि उनका हल इमरजेंसी डिक्लेअर होने से ही नहीं होगा। क्योंकि इमरजेंसी डिक्लेयर होने से भी प्राईजेज कण्ट्रोल होने वाली नहीं है, बढ़ते हुए भाव रुकने वाले नहीं है आज जो काला बाजारी है, ब्लेक मार्केटियर्स हैं, जो काला धन को कमाने वाले हैं उन्होंने अपनी योजना बना रखी है और उस पर काम कर रहे हैं। आज भी प्राइजेज बढ़ती जा रही है। इसलिए हमें इस बात को अभी से देखना है और देख कर इमरजेंसी में जिस प्रकार से कार्य होना चाहिए उसी प्रकार के कार्यों को अभी से स्टार्ट कर देना चाहिए और जो हमारे मुख्य मंत्री जी ने भाषण दिया है उसका मैं पूर्ण समर्थन करता हुआ इस बात के लिये निवेदन करूंगा कि जिस प्रकार से एक उत्साह के साथ सीमा का दौरा कर के जवानों का मनोबल ऊंचा किया है, वहां की जनता का मनोबल ऊंचा देखा है, उसको बढ़ाने के लिये जिस प्रकार का भाषण दिया है और जिस प्रकार की बात आज विधान सभा में कही है, उसको आगे बढ़ाने के लिये सभी पार्टियों का सहयोग आगे आना चाहिये। सभी लोग तैयार हैं और इस प्रकार से इस प्रोग्राम को आगे बढ़ावें जिससे आगे आने वाले इतिहास के अन्दर राजस्थान अपनी एक अनोखा उदाहरण देश और दुनिया के सामने पेश कर सके कि राजस्थान की विभिन्न पार्टियों ने मिल कर के इस प्रकार का कार्यक्रम बनाया है, इस प्रकार से सामुदायिक रूप से मिलकर पाकिस्तान को मुंहतोड जवाब दिया है, जो विश्व के अन्दर एक इतिहास की चीज बन गया है ।

इतना ही मैं निवेदन करना चाहूंगा।

श्री उपाध्यक्ष : मनोहरसिंह मेहता ।

श्री मनोहरसिंह मेहता (माण्डलगढ) : उपाध्यक्ष जी, धर्म के नाम पर पाकिस्तान बना, नफरत, हिंसा, और फूट फाट मची और बंगला देश में चुनाव हुआ उससे लोकतन्त्र प्रकट हुआ और भाईचारा, प्रेमपाठ और धर्मनिरपेक्षता निकली । लेकिन याह्या खां ने बजाय राज्य सौंपने के लाखों आदमियों को गोलियों

(6.13 म. प.)

(श्री निरंजननाथ आचार्य अध्यक्ष, पदासीन)

से भून डाला और एक करोड आदिमियों को भारत में भेजा । भारत ने पूर्व संस्कृति का परिचय देते हुए और हमारे पडौसियों को हमारे यहां प्यार के साथ रखा । यह भारत ने सबूत दे दिया है । अब एक करोड आदमियों का मतलब 3 करोड का रोजाना खर्च होना

(श्री मनोहरसिंह मेहता)

इतना होते हुए भी हम उनको मौत के मुंह में नहीं भेजना चाहते । हमें उनकी मदद करना हैं । यह कदापि नहीं है कि हम बंगला देश की मदद कर रहे हैं बल्कि हम तो लोकतन्त्र की मदद कर रहे हैं । धर्म निरपेक्षता का अगर हमारा सिद्धांत है, अगर हम चाहते हैं कि लोकतन्त्र जिन्दा रहे तो हमें जीवन की कुर्बानी देनी होगी । हमें हर प्रकार का संकट सह कर उनकी पूरी मदद करनी होगी । यह सोचना है कि लडाई शुरू हो गई है और एक करोड़ आदमियों को भेजने के लिये एक तरह से हमें उनके साथ युद्ध करना होगा । इसके लिये हमको एक होना होगा । एक कैसे हो सकते हैं ? मुंह में राम बगल में छुरी । कांग्रेस वाले चाहते हैं कि हमें इसका फायदा हो, विरोधी चाहते हैं कि हमें इस का फायदा मिले और निर्दलीय भी चाहते हैं इसका उनको फायदा मिले । ऐसा करना है तो आप चुनाव की बात छोडिये । आप सब को मिल कर देश को सर्वोपरि समझ कर चलना है । तब ही जाकर के एका हो सकता है । चुनाव युद्ध के मैदान में नहीं होता है । जो अपना हित कर रहे हैं वे बेईमानी कर रहे हैं, वह गद्दार हैं । कचहरी के काम में रिश्वत चलती है तो उससे बढ़कर नीचा और गद्दारी का और कोई काम नहीं हो सकता है । अगर कोई एम. एल. ए., एम. पी. अपने कर्तव्य का पालन नहीं करता है तो वह सच्चे मायने में देशद्रोही है । सारा मैदान युद्ध का मैदान है और हरेक को अपने अपने काम को निहारना होगा, देखना होगा कि हम ऐसा कोई काम नहीं कर रहे हैं जिससे युद्ध में कोई खतरा पैदा होगा ।

अध्यक्ष जी, मैंने दो दफा निवेदन किया और फिर निवेदन करना चाहता हूं कि भारत के लिये वह घडी उपस्थित होगई है जो बाबर ने युद्ध के मैदान में महसूस की थी । युद्ध के मैदान में ही उसने शराब को छोडा था··

श्री अध्यक्ष : मैं सोच ही रहा था कि आप इस विषय पर कब आ रहे हैं ।

श्री मनोहरसिंह मेहता : आप देख लीजिये उसका परिणाम, सारे हिन्दुस्तान में मुगल साम्राज्य स्थापित हो गया परन्तु औरंगजेब के पोतों ने सुरा और सुन्दरी में अपने आपको डुबोकर मुगल साम्राज्य का पतन कर दिया । मैंने यहां पर हमारे मुख्य मंत्रीजी का भाषण सुना, बडा आनन्द आया क्यों कि दिल से उनके शब्द निकल रहे थे, लेकिन एक तरफ वे पाकिस्तान को ललकार रहे हैं, दूसरी तरफ बोतलें खुल रही हैं । अंग्रेजी शराब के ठेके यहां पर दिये जा रहे हैं यह आजकल रोजाना अखबारों में देखने को आरहा है । आप क्या सोचते हैं? क्या सचमुच ही शराब को जारी रखेंगे ? आपकी इस अंग्रेजी शराब को कौन पीता है ? बडे बडे लोग पीते हैं । अंग्रेजी शराब को जारी रखकर आप क्या करना चाहते हैं ?

श्री अध्यक्ष : विषय पर ही बोलें माननीय सदस्य ।

श्री मनोहरसिंह मेहता : यह विषय पर ही बोल रहा हूं । इसलिये मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि कृपा करके आप अब भी संभलें । बंगला देश हर हालत में बनेगा । इसके लिये मैं आपसे निवेदन करना चाहता हूं कि–

आफत में आवे घेर सुणतो पेली दोड ।
सकल सगा में ऊसगो, हे सागे सिर मोड ।।

क्या हम लोग सिरमोर बनाना चाहते हैं ? अगर सिरमोर बनना है, लोकतंत्र की रक्षा

(श्री मनोहरसिंह मेहता)
करना है, तो हम को सब को एक होकर त्याग, तपस्या का मार्ग अपना कर उस पर चलना होगा ।

श्री अध्यक्ष : अब आप समाप्त करें ।

श्री **मनोहरसिंह मेहता** : लेकिन एक तरफ मुझे महाराणा प्रताप का स्मरण हो आता है । आजादी खतरे में थी. उन्होंने घास की रोटी खाई, दर दर की ठोकरें खाई और हम संकट की घडी में हैं और यहां पर हम 6 लाख की गाडियां खरीद कर रहे हैं । यह दु:ख की बात है । मुझे पीडा होती है यह देख कर कि यह क्या हो रहा है । कहा जाता है कि बाहर से मेहमान आयेंगे उनके लिये हैं । घर सारु मेहमान, मेहमान सारु घर नहीं । अगर मेरे घर में चने हैं तो चने ही खिलाऊंगा । कृष्ण ने सुदामा के सूखे चावल प्रेम से खाये थे । इसलिये यह 6 लाख की गाडी खरीद कर बहुत बुरा काम किया है । इस हिन्दुस्तान के ऊपर इसका बुरा असर पडा है । राजस्थान हमेशा त्याग, तपस्या और बलिदान में आगे रहा है । हमें हिन्दुस्तान का मार्ग दर्शन करना है और एक होकर पूर्ण कुर्बानी के लिये तैयार रहता है । अध्यक्ष महोदय, आपकी मार्फ में मुख्य मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहता हूं कि मेरा देश के लिये पूर्ण रूप से उनको समर्पण है । आप जहां चाहें, जैसा चाहें मेरा उपयोग कर सकते हैं । धन्यवाद ।

श्री **अध्यक्ष** : मुख्य मंत्री महोदय ।

(शोरगुल)

श्री **बालसिंह सोढा** (जैसलमेर) : अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी मार्फत मुख्य मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहता हूं ....

श्री **अध्यक्ष** : पहले गाडिया ।

श्री **शिवचरण सिंह** (महुआ) : उस पक्ष से काफी सदस्य बोल चुके हैं ।

श्री **देवीदत्त गाडिया** (बारां) : जैसलमेर के माननीय सदस्य को पहले समय दिया जाना चाहिये ।

श्री **अध्यक्ष** : मैं चाहता हूं कि संक्षेप में बोलें ।

श्री **जगन्नाथ पटेल** (टोडा रायसिंह) : अध्यक्षजी ..

श्री **अध्यक्ष** : आप बोलें न बोलें आपको समय अवश्य दूंगा ।

श्री **बालसिंह सोढा** ।

श्री **बालसिंह सोढा** (जैसलमेर) : अध्यक्ष महोदय, सदन में सीमाओं पर मंडराये संकट पर मुख्य मंत्री महोदय ने एक वक्तव्य यहां पर दिया है और उसको लेकर कुछ नेताओं ने पालिसी मेटर पर भाषण दिये हैं और अपनी नीतियां बतायी । मैं आज इस संकट की घडी में जो तजुर्बा कर पाया हूं और मेरे क्षेत्र की समस्याओं और राज्य की नीतियों पर कुछ तथ्यों के आधार पर इस सदन का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं ।

अध्यक्ष महोदय, आज हमारी सेनायें हमारी सीमाओं पर हैं और जैसा कि मुख्य मंत्रीजी ने कहा है हमारी पाकिस्तान के साथ 644 मील लम्बी सीमा है जिसमें से 300 मील की सीमा जैसलमेर जिले की है । जैसलमेर जिले की सीमा पर पाकिस्तान के पांच डिस्ट्रिक्ट्स पडते हैं, बहरामपुरा, रहीयामपुर, फरोपुर, सांगरा और गाटोडा । आज मैं

(श्री बालसिंह सोढा)

सेनाओं के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता हूं। परन्तु जो सेना पाकिस्तान की सीमा पर है उसको बताना चाहता हूं। 88 ब्रिगेड का हेड क्वार्टर रहीयामपुर था, उसमें से तीन आरमी ब्रिगेड सीमा पर है और इसी तरह से एक डिवीजन पूर्ण रूप से राजस्थान की सीमा घेरे हुए है। मैं अपनी सेनाओं के बारे में कुछ नहीं कहूंगा। मैं इस सदन का ध्यान इस ओर आकर्षित करना चाहूंगा कि केवल सेनाओं के भरोसे राजस्थान सरकार और कोई सहयोग नहीं देगी तो मैं यह महसूस करता हूं कि देश को कुछ क्षति हो सकती है। माननीय मुख्य मंत्रीजी ने कहा कि हमने सेना को पूर्ण सहयोग दिया। मैं इसमें कोई दो राय नहीं रखता कि माननीय मुख्य मंत्रीजी आतुर नहीं हैं सेना को सहयोग देने के लिये, परन्तु जैसा कि मैंने महसूस किया आज राजनीति से ऊपर उठकर हमारी राज्य सरकार कुछ सोच नहीं पा रही है। एक छोटा सा मुद्दा हो सकता है कि 65 में कुछ राइफल्स के इन्सीडेंट हुए हैं। यह व्यक्ति विशेष के इन्सीडेन्टस हो सकते हैं परन्तु उस मुद्दे को लेकर यह कहा जाय कि सीमा के नागरिकों को राइफल्स नहीं दी जाय, उनका बहुत दुरुपयोग होगा, ठीक नहीं है। दूसरी तरफ पाकिस्तान है और पाकिस्तान हर नागरिक को जबरदस्ती लाइसेन्स राइफल्स दे रहा है और हमारी तरफ की सीमा पर रहने वाले किसी भी नागरिक को राइफल देने में अविश्वास व्यक्त करें तो यह मेरे खयाल से ठीक नहीं होगा।

इस तरह से जहां तक राजस्थान का सवाल है जैसलमेर की 300 मील लम्बी सीमा है हमारी सेना जो वहां पर है वह सक्षम है पाकिस्तान का सामना करने के लिये, परन्तु जो अभाव हम महसूस कर रहे हैं वह यह है कि × × ×

श्री **अध्यक्ष** : यह भी न कहें तो अच्छा हो। आप माननीय मुख्य मंत्रीजी से मिलकर कह दें मैं इसको एक्सपन्ज कर रहा हूं। खुद आप बात कर लें तो अच्छा है।

श्री **बालसिंह सोढा** : इसीलिये तो मुझे दुःख हुआ कि आज पार्टी के हिसाब से, चुनाव के हिसाब से, वे सोच रहे हैं। माननीय मुख्य मंत्रीजी के वहां मैं गया और उनके सेक्रेटरी को नोट कराया कि मैं माननीय मुख्य मंत्री जी से मिलना चाहता हूं, मुझे टाइम दिया जाय, मगर मुझे टाइम तक नहीं दिया गया।

श्री **गिरधारीलाल व्यास** : गलत है।

श्री **बालसिंह सोढा** : गलत बात नहीं है, श्रीमान्, मैं सोच-विचार कर आपके सामने कह रहा हूं और सच्चाई से कह रहा हूं।

श्री **विजयसिंह** (मकराना) : सच्चाई कटु होती है।

श्री **गिरधारीलाल व्यास** : यह गलत है माननीय मुख्य मंत्रीजी आप से मिलने से कभी इन्कार नहीं हो सकते हैं।

श्री **देवीदत्त गाडिया** (बारां) : आप थे क्या वहां पर जो ×××करते हो।

×××माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार शब्द कार्य विवरण के निकाले गये।

श्री गिरधारीलाल व्यास : तुम हो ×××

श्री अध्यक्ष : ××× शब्द एक्सपंन्ज किये जायें।

श्री शिवचरण सिंह (महुआ) : आप [×××]

श्री देवीदत्त गाड़िया : आप सुखाड़िया जी के थे अब क्या हालत हुई है ?

श्री शिवचरण सिंह: आप तो अभी भी [×] रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : आर्डर प्लीज

श्री बालसिंह सोढ़ा : माननीय मुख्य मंत्री जी सीमा पर गये थे और सैनिकों से मिले थे, हो सकता है कि उनको टाइम नहीं मिला हो। उसके बाद वे 5 दिन तक का रहे लेकिन एक भी विरोधी दल के कार्यकर्ता से मिले थे क्या ? अब यह सहयोग की बात है तो हमें तो देश के लिये सहयोग देना ही है। अगर भारत नहीं रहेगा तो कौन रहेगा इसलिये हमें तो कुछ नहीं परन्तु जहां पर सहयोग की बात आती है राज्य सरकार सहयोग लेना नहीं चाहता।

साम्प्रदायिकता को तो आज आप लोग बढावा दे रहे हो और सेक्यूलर होने की बात कहते हैं लेकिन हम से बढकर आप सेक्यूलर नहीं हैं। हमने तो पीढियां मुसलमानों के साथ गुजारी हैं। मुसलमान हमारे लिये मरे हैं और हम उनके लिये मरे हैं। खेद है कि आप एक राजनैतिक षडयंत्र रच रहे हैं हमारे लिये। श्री गंगाराम जी साथ बैठकर वक्तव्य देते हैं कि मुसलमानों की मस्जिद गिरा रहे हैं। बड़ा खेद है। हम बरसों से सीमा पर रह रहे हैं। और आजादी के बाद में कई जगहों पर झगड़े हुए हैं परन्तु हिन्दू-मुसलमानों के झगडे वहां पर नहीं हुए हैं। हो सकता है कि कुछ गैर जिम्मेदार आदमी हों। वह व्यक्ति विशेष होते हैं। उसके लिये राज्य सरकार को व्यवस्था करनी चाहिये, परन्तु आज जो सीमा पर आपने मिनिस्टर्स नियुक्त कर रखे हैं, वे प्रशासन को पैरेलाईज कर रहे हैं, अपने राजनैतिक फायदे के लिये। मैं इसका विरोध करता हूं। या तो आप यह कहदें कि जब तक सीमा पर तनाव है, एस. डी. ओ. और कलेक्टर की जरूरत नहीं है। सीमा पर यह खर्चा क्यों हो रहा है। कलेक्टर को आप कुछ नहीं करने देते हैं।....

एक माननीय सदस्य : मना कौन करता है ?

श्री बालसिंह सोढ़ा : मना तो आप जैसे पहुंच जाते हैं नेता लोग और कहते हैं कि फलां आदमी मेरा कहा नहीं करता है।

एक माननीय सदस्य : मंत्रियों का काम तो मंत्री ही करेंगे। मंत्री का काम तो कलेक्टर नहीं करेगा।

श्री देवीदत्त गाडिया : राजनैतिक स्वार्थ-सिद्धि करते हैं।

श्री विजय सिंह : आप लोग मंत्री का काम नहीं करते थे इसलिये आपको हटाया है।

××× माननीय अध्यक्ष महोदय के आदेशानुसार शब्द कार्य विवरण से निकाले गये

श्री मनोहरसिंह मेहता : कई मंत्रियों ने समाजवाद का चोला पहन रखा है। आप कहें तो दो मंत्रियों की मैं पोल खोल सकता हूं।

श्री बालसिंह सोढा : हमारे वहां पर एक जाट होस्टल है और एक राजपूत होस्टल है उनके स्टूडेन्टस में टंटा हो गया। पार्टी के फायदे के लिये जाट और राजपूतों में झगडा कराते हैं। इस संकट के समय में तो झगडा नहीं करना चाहिये इतना भी नहीं सोचते हैं। इस संकट के समय तो उसको भूल जायं...

श्री मनोहरसिंह मेहता : बिल्कुल ठीक बात है।

श्री अध्यक्ष : आप दाद न दें।

श्री बालसिंह सोढा : दो चीजें मैंने महसूस की हैं। सत्य कटु होता है। किसी में खटक होगई हो परन्तु यह समय नहीं है कि आप छोटी मोटी बातों को लेकर बैठ जायें। हमारे यहां हिन्दू-मुसलमानों में आजादी के बाद झगडे नहीं हुए। अब हों तो उसके जिम्मेदार आप हैं। आप साम्प्रदाकियता छोड दें इस प्रकार कह कर हमारे यहां पर साम्प्रदायिकता फैला रहे हैं।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

तो मैं यह बताना चाहता हूं कि जैसलमेर की सीमा 308 मील की है और वहां पर पुलिस पर्याप्त नहीं है, उसकी संख्या कम है। आज तक 10 तारीख तक कोई एडिशनल फोर्स वहां पर नहीं भेजी गई है। सिविल एडमिनिस्ट्रेशन के लिये संकट के समय कुछ एक्सट्रा काम करना पडता है। वहां पर बोर्डर पर जो थाने हैं उनका क्षेत्र बहुत बडा है। आज तक उनके पास कोई व्हीकल नहीं है, कोई इन्सीडेंट हो जाता है तो उसके लिये यह पर्याप्त नहीं है। मैं आपके माध्यम से राज्य सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि गत 20 दिनों के अन्दर वहां पर 5-6 छुट-पुट घटनायें हो चुकी हैं। पाकिस्तान से मुजाहिद, चाहे डेकायट्स हों, वे पांच बार हिन्दुस्तान में आये हैं और 1 होमगार्ड का ऊंट ले गये हैं, और दूसरे 11 ऊंट ले गये हैं, परन्तु हम उनका कुछ नहीं पकड सके। इससे जनता में डिमोरेलाइजेशन होता है कि हम सक्षम नहीं हैं। अगर कोई पाकिस्तानी हिन्दुस्तान में आकर चला जाय तो उससे यह लगता है कि कुछ कमी है सीमा लम्बी है पर क्षेत्र भी लम्बा है। आज वहां पर पेय जल का संकट है। मैं कहता हूं कि आप प्राथमिकता सेना को दें, परन्तु सेना को भी बहुत दूर से पानी ले जाना पडता है, और इसके लिये राज्य सरकार की व्यवस्था नहीं है। राज्य सरकार ने एक रिंग भेजा है एक महिने में रिंग भेजा है तो इससे क्या अन्दाजा लगाया जाय। 6-6 महीने के बाद में आर्डर दें यह व्यवस्था है? तो दो तीन रिंग और भेजने चाहिये। बोर्डर रोड्स पर सेना के लिये कभी भी किसी भी रोड पर पानी की व्यवस्था की जरूरत हो सकती है। जो आज तक की व्यवस्था है वह सन्तोष जनक नहीं है।

जहां तक सिविल डिफेन्स का सवाल है आज जैसलमेर में एक भी नागरिक सूचना केन्द्र नहीं है...

श्री विजयसिंह : वेरी बैंड।

श्री बालसिंह सोढा : प्रशासन को नागरिकों को अपनी बात कहने के लिये कोई जरिया नहीं है सिवाय भोंपू घुमाने के।

श्री विजयसिंह : वह यहां भी मौजूद है।

Page No 147

श्री बाल सिंह सोढा : कुछ डाक्टर्स की उपस्थिति हुई है परन्तु जैसलमेर के डी.एम. एण्ड एच. ओ. का हैड क्वार्टर जो है वो बाडमेर है। वहां से कन्ट्रोल होता है तो समय पर मेडिसिन्स नहीं मिलती हैं। इस संकट के समय इन मुद्दों पर सोचना है।

(समय-समाप्ति-सूचक घंटी)

एक यह भी है आज जैसलमेर के 200 गांवों में लगातार अकाल पड रहा है। वहां पर पेय जल की व्यवस्था नहीं है। जो प्रोग्राम शुरू होना चाहिये वह भी नहीं हुआ। इसका नतीजा नेचुरली यह होता है कि जनता पानी के अभाव में गांवों को छोड रही है। सीमा सुरक्षा की दृष्टि से भी मैं यह महसूस करता हूं कि जैसलमेर का एक गांव भी इस व्यवस्था के कारण खाली होता है तो वह देश हित में नहीं है। तो अध्यक्ष महोदय, मैं आपके माध्यम से माननीय मुख्य मंत्रीजी का इस ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं कि साम्प्रदायिकता-विरोधी वात करने का यह वक्त नहीं है। आप साम्प्रदायिकता विरोध की आड में साम्प्रदायिकता का जहर फैला रहे हैं।

श्री अध्यक्ष : अब समाप्त करदें।

श्री बाल सिंह सोढा : आज तक जो स्टेटमेंट दिया तो क्या किया। जिस वक्त सहयोग की आवश्यकता है वहां आप राजनैतिक बातें करते हैं।

मैं यह तो आपको विश्वास दिलाता हूं कि जैसलमेर की जनता हर समय देश के लिये तैयार है, परन्तु जो कुछ छोटी-मोटी बातें हैं इनके लिये राज्य सरकार का सहयोग होना चाहिये। यदि देश की सुरक्षा होगी तो आपकी कुर्सी भी रहेगी नहीं तो यों ही मिट जाओगे।

कई माननीय सदस्य : अध्यक्ष महोदय...

श्री अध्यक्ष : मैं यह चाहता हूं कि इसको यहीं पर समाप्त किया जाय। अगर आप (कांग्रेस पक्ष) इस बात में सहयोग दें तो मैं उधर से सहयोग ले लूंगा और मुख्य मंत्री जी से निवेदन करूंगा

श्री भैरोंसिंह : हमारी तरफ से बन्द करदे हैं।

श्री अध्यक्ष : माननीय मुख्य मंत्रीजी।

श्री बरकतुल्ला खां (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, मैं इस सदन का और सदन के दलों के नेताओं का बहुत आभारी हूं, जो उन्होंने मुझे सुझाव दिये उनके लिये। उससे ज्यादा और आभारी हूं कि उन्होंने मुझे साफ कहा कि देश की आजादी का जहां तक सवाल है हमारे आपस के अन्दर कोई मतभेद नहीं है। मैं इसके लिये भी आभारी हूं कि जो मैंने अपील की थी उस अपील को माना। मैंने भी यही कहा था कि जहां तक राजनैतिक मतभेद हैं वह अलग हो सकते हैं, लेकिन जहां तक देश का सवाल है, सीमा का सवाल है, कोई भी ऐसी वात नहीं हो सकती है।

आज सबसे पहले उसूल जो सामने आरहा है वह बांगला देश का है। बांगला देश के प्रश्न पर जो चीज सामने आरही है वह आरही है मान्यता। मान्यता देना ज्यादा जरूरी है या उन लोगों की मदद करना जरूरी है यह सोचना पड़ेगा। मान्यता एक फार्मल एक्ट होता है, लेकिन जो उसूल की चीज है, वह यह है कि जो बांगला देश के सिपाही हैं और उनकी मुक्ति-वाहिनी है, उसको जो दुनिया से मदद मिल रही है, वह पहुंचा रहे हैं, जो सहायता कर

(श्री बरकतुल्ला खां)

सकते हैं वह सहायता करते रहें, और मैं समझता हूं आप माननीय अध्यक्ष, इस बात को मानेंगे कि किसी की आजादी को कोई मुफ्त में नहीं दी जा सकती है। आजादी के लिये जद्दो-जहद करना पड़ता है, आजादी के लिये लड़ना पड़ता है, आजादी के लिये खून बहाना पड़ता है। आज बांगला देश के लोग इस बात के लिये तैयार हैं और वे अपना खून बहा रहे हैं, और वे अपनी कीमत पूरी अदा कर रहे हैं। लेकिन यदि आज के दिन यदि हम अपनी फौज के अन्दर भेजते हैं तो उसका मतलब यह होता है कि उनकी आजादी की लड़ाई आजादी की लड़ाई नहीं रहेगी। यह भी समझना चाहिये कि आज जो वे लोग लड़ रहे हैं औरजिस गुरिल्ला टेक्टिक्स से वे लोग लड़ रहे हैं, वह पाकिस्तानी फौज को कमजोर करने के लिये बहुत काफी है। यह मैं भी मानता हूं कि हमारी फौजें जायेंगी तो बांगला देश के कुछ लोगों के मन के अन्दर क्या यह ख्याल पैदा नहीं होगा कि हम हमला करना चाहते हैं और उनको अपने प्रोटेक्शन में लेना चाहते हैं ? हमारे खिलाफ पाकिस्तान का हमेशा प्रचार यही रहा है, चाहे वह नेपाल में रहा हो, चाहे वह लंका में रहा हो, चाहे वह बर्मा में रहा हो। पाकिस्तान ने हमेशा इस बात की कोशिश की है कि वह दुनिया को यह बताये कि जब भारत मजबूत हो जायगा तो हमारी आजादी खतरे में होगी। हम पाकिस्तान के हाथों में कतई खेलने को तैयार नहीं हैं। जो बांगला देश और हमारे देश के हित में होगा वह चीज हम करना चाहते हैं।

इसी के साथ-साथ मैं यह भी अर्ज करना चाहता हूं कि हमारे देश की परम्परा अपनी जगह पर दुनिया के और देशों में मुश्किल से होगी। हमने दुनिया में कभी किसी पर हमला नहीं किया। पाकिस्तान ने इस बात को बराबर कहा है और विदेशी लोगों से कहता रहा है कि तिब्बत पर जो अंग्रेजों ने हमला किया था तो हिन्दुस्तानी फौज थी, बर्मा पर हमला किया तो हिन्दुस्तानी फौज थी, ईस्ट अफ्रीका पर हमला किया तो हिन्दुस्तानी फौज थी। जो हमले अंग्रेजों ने किये उसको पाकिस्तान किस तरह से डेपिक्ट कर रहा है हम जानते हैं हमारा मन जानता है, हमारा दिल जानता है कि हिन्दुस्तान कभी भी इम्पीरियलिज्म की ओर नहीं गया, और उसकी फौज ने इस बात की कोशिश की है कि जो हमारे मोरल और ह्यूमन वेल्यूज हैं उनको हम मेन्टेन करते चलें। हमारे देश ने इस बात की कोशिश की है कि इन्सान को एक मुकाम पर पहुंचना है, लेकिन उस मुकाम के अन्त तक पहुंचना है तो मेन एण्ड मीन्स दोनों ठीक होना जरूरी है। इमूमोरल मीन्स को लेकर मोरल हैड पर नहीं पहुंच सकते हैं। हो सकता है कि कुछ लोगों को इस बारे में गलत-फहमी हो, जैसा कि मैंने कहा, फिर मैं रिपीट करूंगा कि पाकिस्तान पर हम हमला नहीं करना चाहते हैं। हमारी पालिसी, हमारी नीति, कभी भी यह नहीं रही है कि हम पाकिस्तान पर हमला करें, लेकिन यह सही बात है कि आज जब पाकिस्तान हमला करेगा और जिस सेक्टर पर करेगा तो उस सेक्टर तक ही महदूद नहीं रहेंगे। जब लड़ाई होगी तो पूरी लड़ाई होगी पाकिस्तान चाहे कुछ भी कर ले। लड़ाई में छोटे मोटे अप्स एण्ड डाऊन्स आ सकते हैं लेकिन आखिर के अंदर विजय हमारी होगी इस बात को मानकर चल सकते हैं।

मैं इस बात में विश्वास रखता हूं कि जो

(श्री बरकतुल्ला खां)

हमारे फौजी है वे लोग आजाद देश को हवा खाये हुये हैं और जो आजाद देश के फौजी हैं और हमारा मोरल पूअर नहीं है। आक्रमण के खिलाफ जो सबसे ज्यादा ताकत रखते हैं वह देश के लोग रखते हैं। देश के लोगों का उन पर भरोसा है और उनको देश के लोगों पर भरोसा है। और उनका विश्वास देश के लोगों पर अगर होगा तो पाकिस्तान क्या पाकिस्तान के साथ और भी छुटभय्या आजायें तो भी हम उनका मुकाबला करने को तयार हैं।

लेकिन एक चीज की तरफ मैं जरूर ध्यान दिलाना चाहता हूं और वह यह है कि हमारी जो विदेशी नीति थी उसके बारे में आम तौर से गलतफहमी रही है। कुछ लोग आज की जगह से उस विदेश नीति को मिलाते हैं। उसूल की बात यह है कि जिस वक्त हमारा देश आजाद हो गया उस वक्त दो मेजर पावर थीं—एक रूस और एक अमेरिका, और वे दोनों इस बात की कोशिश कर रहे थे कि किसी न किसी तरह से देश को अपने केम्प में ले आयें और अपने सेटे-लाइट बनायें और उनको बना कर उनकी मेजर पालिसी के डिसीजन्स जो हैं वे वाशिंगटन में लिये जायें या और किसी केपिटल में लिये जायं। हमने इस बात को माना कि हमने जो आजादी ली है वह किसी के गिरवी नहीं रखना है। हमारी फारेन पालिसी का यह एम नहीं था कि कोई दोस्त बने या दुश्मन बने, हमारा एम यह था कि जैसे जैसे मसले सामने आयेंगे उसी तरीके से उनके मेरिट्स पर हम जवाब देंगे। हमारा यह डिटरमिनेशन है कि डिसीज़न दूसरे हमें बना कर देवें उस पर नहीं चल सकते हैं। हम अपनी आजादी हर तरीके से एसेट करना चाहते हैं, और यह सही है कि जो कोल्ड वार का वातावरण था उसमें हमारे देश ने एक बहुत अहम रोल प्ले किया है। और अगर आज कोई यह कहे, चाहे कोई माने या न मान तो एक दफा जब कि रूस और अमेरिका लड़ाई के बहुत करीब आ गये थे और जब बातचीत बन्द हो गई थी तो हमारे जरिये यह हुआ। यह भी मैं जानता हूं और आप भी जानते हैं कि किसी देश के अन्दर, अपनी विदेशी नीति जो है, वह किसी के कहने पर नहीं चल सकती है। वह विदेश नीति जो है देश के सम टोटल एक्स्प्रेशन की नीति होती है। उसके अन्दर डिफेन्स मिनिस्टर शामिल होता है उसके अन्दर आम पालिसी शामिल होती है, हमारा जो सोशियल इको-नोमिक फार्म है वह भी शामिल होता है। इस तरह से जब अफ्रीका और एशिया में चारों तरफ यह हो रहा था कि एक तरफ तो आजाद हो गये और दूसरी तरफ गुलाम बना लिये गये थे हमारे देश ने बड़ा एफर्ट किया है कि एफ्रोएशियन कन्ट्रीज के अन्दर सेल्फ-कान्फीडेन्स दिया और आत्म विश्वास दिया कि आजाद रह सकते हैं और किसी की दस्तन्दाजी में चलने की जरूरत नहीं है। आज अफ्रीका और एशिया का बड़ा हिस्सा जो एक दूसरे केम्प में नहीं गया उसका मूल कारण यह था कि हमने जो नान-एलाइन्मेंट की पालिसी को एक्सेप्ट किया। जब नान एलाइनमेंट की पालिसी को एक्सेप्ट किया तो नान-एलाइनमेंट का मतलब न्यूट्रेलिटी नहीं था। यह पूरे जमाने में देखिये—न्यूट्रेलिटी और नान-एलाइनमेंट का फर्क है नान–एलाइनमेंट का मतलब है जो चीज

(श्री बरकतुल्ला खां)

सामने आयेगी हमारे, उस पर मैरिट पर सोचगे और सोच कर फैसला करेंगे। इसलिये यह अभी हुआ तो हमने बराबर कहा, चाहे जो कुछ हो जाय, हम स्विटजरलैंड की तरह से न्यूट्रल होना नहीं चाहेंगे और नान-एलाइन रह कर, जो भी सब्जेक्ट हमारे सामने आयगा उस पर मैरिट पर फैसला करेंगे। इसलिये जब जब जरूरत पड़ी, और देशों ने, लोगों ने कहा कि तुमने इन देशों को सपोर्ट किया था, जब कि वह अब इस देश को सपोर्ट नहीं करते हैं। नान-एलाइनमेंट के अन्दर हम एलाइन नहीं हो जाते हैं, नान-एलाइन रह कर किसी कैम्प में नहीं रहते हैं। हमने रूस के लिये कहा है अमेरिका के लिये भी कहा है। और नान-एलाइनमेंट का पालन इस हद तक करते हैं कि अब जब किसिंगर और अमेरिका के प्रेसीडेंट निक्सन चीन को मूव कर रहे हैं और पहले जब चीन ने हम पर हमला किया था तब भी हमने यू. एन. ओ. में इस प्रश्न को रखा था कि चीन को मेम्बरशिप मिलनी चाहिये, सिक्योरिटी कौंसिल में उसे सीट मिलनी चाहिये। हमारी जो पालिसी है उस पर चलते हुए हम अफीका और लैटिन अमेरिका के साथियों को आजादी की हवा देना चाहते हैं। इसलिये यह समझे बिना कहें कि फलां देश के ऊपर विपत्ति पड़ी थी तब हम बोले, तो वह अब क्यों नहीं बोलते। तो रेसीप्रोकल बेसिस पर हम नहीं बोले थे, मुहायदा हमने नहीं किया था, कोई वायदा हमने नहीं किया था। हम समझते हैं, जो राइटेस्ट काज है, उसको हर जगह हम सपोर्ट करेंगे। हम यह भी मानते हैं, दुनियां के अन्दर जो ईमानदार लोग हैं, जिनके सामने हम राइटेस्ट काज रखेंगे, तो वह हमारी मदद करेंगे। यह बात सही है कि दुनियां के लोगों ने आज सपोर्ट नहीं किया है फिर भी लोगों के मन में बात आई है लोगों ने सोचा है और इस्लामी ब्लाक, जिसका पाकिस्तान ने जिक्र किया था, वह इस्लामिक ब्लाक ब्रेक हो रहा है वह बेपर्दा हो रहा है। अल्टीमेटली मार्डन वर्ड में असेंसियल ह्यूमन वेल्यूज प्रिवेल करती हैं, दूसरी वल्यूज को प्रोजेक्ट नहीं कर सकते हैं। हमारा जो देश है इसके अन्दर अन एम्प्लायमेंट है, गरीबी है, बेकारी है, भुखमरी है इसलिये केवल आर्मामेंट पर नहीं जा सकते। हमें पाकिस्तान ने मजबूर किया कि हम अपने डिफेन्स को बढाते चलें। शुरू में हम आजाद हुए थे यदि उस वक्त इम्पीरियलिस्टिक मैथड होता, थिंकिग होती या इरादा होता कि किसी देश पर हमला करेंगे तो हम 350 करोड़ का बजट नहीं रखते। बार बार पाकिस्तान ने हमला किया, उसमें यह टेंडेंसी आ गई है कि दूसरे देशों में जाकर भीख मांग लाये। यह बात भी सही है कि हमें अमेरिका ने कहा, सीटो, नाटो में आ जाओ, हम मदद करेंगे। डलेस ने यह आफर दी थी। लेकिन हम जानते हैं कि आजादी को सस्ते दामों में बेच दिया तो अल्टीमेटली वही होगा जो दूसरे देशों में हुआ, डेमोक्रेसी आहिस्ता आहिस्ता मर जायगी। आज के दिन हमारी फारेन पालिसी ने रिजल्ट दिये हैं, हण्ड्रेड पर्सेंट रिजल्ट तो किसी देश की फॉरेन पालिसी ने नहीं दिये हैं, चाहे अमेरिका की हो, चाहे रूस की हो। तो हण्ड्रेड पर्सेंट रिजल्ट नहीं दिये हैं, जरूर टेन्जिबल रिजल्ट दिये हैं। मैं समझता हूं, रूस के साथ सन्धि हुई है उसने एक बात बताई, एक हमारा दोस्त है। वह दोस्ती की सन्धि है, लड़ाई की सन्धि नहीं है–यह बात साफ है, लेकिन आज के दिन अगर हमें कुछ भी जरूरत

(श्री बरकतुल्ला खां)

पड़ती हैं और जब जब जरूरत पड़ेगी तो रूस ने कहा था, हम पड़ौस में बैठे हैं, जब चाहो आवाज़ दे लो। काश्मीर में ब्रिटेन और अमेरिका ने कोशिश की, हमारे देश को अग्रेसर ब्राण्ड किया जाय, उस वक्त रूस काम आया, उसका ही वह वीटो था जिसने सिक्योरिटी कौंसिल में मदद की। तो हम इन कैम्पों से दूर रह कर अपनी तरह से अपनी पालिसी को चलाना चाहते हैं और आज जो फारेन पालिसी है वह डिफेन्स के लिये ओरियन्ट की गई है। हमारी पालिसी जो है उसका डिफेन्स और कन्ट्री की नीड्स को सर्व करे—इस तरह से ओरियेंटेशन हुआ है और इस कारण से आहिस्ता आहिस्ता दूसरे देशों में कांशस आई है, बंगला देश की प्राब्लम पाकिस्तान की है—यह कांशस आई है, बंगला देश से एक करोड़ आदमी निकाले गये हैं—यह कांशस आई है। जो अमेरिका की होस्टाइल प्रेस थी, जो बराबर इस के खिलाफ लिखती रही, चाहे टाइम्स हो, चाहे लाइफ हो, चाहे वाशिंगटन पोस्ट हो, जो बराबर हिन्दुस्तान के खिलाफ वातावरण बनाये रखते थे, उनकी पहली मर्तबा व्यूज चैंज हुए हैं, सण्डे टाइम्स के चैंज हुए हैं। यह कन्सोलिडेटेड एफर्टस से चैंज हुए हैं, आन देअर ओन नहीं हुए हैं। हमने उन के सामने फेक्ट्स रखे हैं, उन्होंने उन फेक्ट्स को वेरीफाई किया है और सेटिसफाईड होने के बाद इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि बंगला देश में जो बर्बरता इस जमाने में हुई है ऐसी इससे पहले किसी जमाने में नहीं हुई है।

राजस्थान का सवाल है, मैं ज्यादा डिटेल्स में नहीं जाते हुए यह निवेदन करना चाहता हूं, पूरे बोर्डर पर डिफेंस के लिए पूरी सरकार जागरूक है। मैं यह भी विश्वास दिलाता हूं, मैं हर जगह जहां बोला हूं, जहां गया हूं, मैंने कभी भी इस दौरान में पार्टी का व्यू पाइन्ट नहीं रखा है। मैं जहां भी गया हूं, मैंने इस बात की कोशिश की है, हम पार्टीज की मदों को भूल कर सबसे मिलें, सबसे अपील करें और जैसा जैसलमेर से आये हुए माननीय सदस्य बता रहे थे, मैं यह कहूंगा, सीमा पर से सीधा मैं आया, पब्लिक मीटिंग में गया और थोड़ी देर रुक कर खाना खाकर वापिस आ गया····

श्री विजयसिंह : किसी से नहीं मिले ?

श्री बरकतुल्ला खां : जो आये, उनसे मिला।

श्री विजयसिंह : यह भी वहां गये थे।

श्री बरकतुल्ला खां : देखिये, आप वहां मौजूद होते तो मैं जरूर बात कर लेता।

श्री बालसिंह सोढा : मैं विवाद में नहीं पड़ना चाहता, आप अपने सेक्रेट्री से बात कर लें।

श्री अध्यक्ष : आगे चलिये।

श्री विजयसिंह : खत्म हो गई बात।

श्री बरकतुल्ला खां : बोर्डर डिस्ट्रिक्ट में आर्म, हथियार देने का सवाल है, मैं सभी लोगों को देना चाहता हूं। मैं राइफल, गन को स्टेटस सिम्बल नहीं बनाना चाहता हूं। मैं चाहता हूं कि हथियार उनके हाथ में जायं जो उनका इस्तेमाल कर सकते हैं। हथियार सबके हाथ में जाने चाहिये, राजस्थान के सारे लोग हैं, सबके सब को मिलने चाहिये

(श्री बरकतुल्ला खां)
और जहां तक मेरी कोशिश रही है, मैंने ध्यान रखा है सबको हथियार मिलें·····

श्री विजयसिंह : वेरी गुड ।

श्री बरकतुल्ला खां : पानी का सवाल आया। जिन लोगों ने कहा, जितनी मांग की, उसके हिसाब से इन्तजाम कर दिया है····

श्री देवीदत्त गाडिया : हथियार क्यों छीने ?

श्री बरकतुल्ला खां : जितने वाटर टैंकर मांगे उतने दे दिये जितने मांगे वह दे दिये हैं। मैं बता रहा हूं, ऐसी बात नहीं है। आज के दिन जितनी तैयारी है, उसमें हमने सिविल एडमिनिस्ट्रेशन को गिअर अप किया है, एडीशनल कलेक्टर लगाये हैं, पुलिस का जितना इन्तजाम कर सकते हैं वह कर रहेहैं। इतनी बड़ी सीमा को सिविल एडमिनिस्ट्रेशन से जितना अटेच कर सकते हैं वह कर रहे हैं और राजस्थान के लिये जितना पासिबल है उतनी पुलिस को भेज रहे हैं, आर. ए. सी. को भेज रहे हैं। इतना ख्याल रखना पड़ेगा कि सारे राजस्थान में ला एण्ड आर्डर की सिचुएशन बनी हुई है वह रहे। इस बात का ध्यान रखना पड़ेगा, सिविल एडमिनिस्ट्रेशन ठीक चलता रहे, रेगुलर वे में चलता रहे। सिविल एडमिनिस्ट्रेशन का लेप्स हो गया तो सारी तैयारी खत्म हो जायगी। इसलिये मैं यह निवेदन करूंगा, माननीय अध्यक्ष, हमारी ओर से पूरी कोशिश की है, और जो माननीय सदस्य बोर्डर पर गये हैं उन्होंने देखा है और हर आफिसर अपनी जगह पर एलर्ट है। मंत्रियों को खास तौर से वहां पर भेजा था, उसकी वजह थी, वैसे कोई अपना घर छोड़ कर नहीं जाना चाहता, परेशानी की हालत में नहीं रहना चाहता, वह इसलिये किया था कि सीनियर आफिसर्स से बात करनी पड़े, डिसीजन लेना पड़े, और बिना एप्रूवल के लेनी पड़े तो मंत्रियों के हाथ में शक्ति है, वह आन द स्पाट डिसीजन ले लें, लोएस्ट लेवल पर वह डिसीजन लेना पासीबल हो जो हाइएस्ट लेवल पर पासिबल हो सकता है और आर्म्ड फोर्स की नीड को मीट आउट किया जाय। इसके लिये हमने पूरी कोशिश की है।

आखिर में मैं सभी महानुभावों को विश्वास दिलाता हूं कि जो भी आज पाकिस्तान की तैयारी है उसके मुकाबले में हमारी भी तैयारी है। यह भी विश्वास दिला सकता हूं, कोई इसमें ऐसी बात नहीं है कि हम एग्रेसर हों। यह डिफेन्स की नीड है। अगर कोई हमारे देश पर हमला करता है तो हम उसे पीछे धकेलें। कोई भी सैंसेबल आदमी यह बात नहीं कह सकता कि मेरे घर में लड़ाई होनी चाहिये। दूसरा लड़ने आये तो कोशिश यह होती है कि उसको धकेल कर, उसको उस के घर तक ले जायें, सरहद तक ले जायें, बाहर ले जायें क्योंकि लड़ाई के अन्दर, जिस भूमि पर होती है, वहां तकलीफ पैदा होती है। जहां तक सिविलियन का ताल्लुक है, मैं विश्वास दिलाता हूं, जो जनता बोर्डर पर है वह पूरी तरह से कोआपरेट कर रही है, सरकार के साथ में कोआपरेट कर रही है। लोगों ने कहा है, जब जरूरत हो, आप बता दीजिये, हम पीछे आने को तैयार हैं। जब आर्मी चाहेगी तब ही इन्तजाम कर लिया जायेगा।

(श्री बरकतुल्लाखां)

इसके साथ साथ केवल एक और निवेदन करना चाहूंगा, आज के दिन राजस्थान और गवर्नमेंट का आपने उत्साह बढ़ाया है। माननीय अध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्यगण को मैं अपनी ओर से इसके लिये बधाई देता हूं और जो कोऑपरेशन मुझे दिया है, उसके लिये मैं धन्यवाद देता हूं और यह विश्वास लेकर चलता हूं, आप और हम सब मिल कर इस मुकाबले के अन्दर जो सख्त से सख्त इम्तहान हमें देना है, वह हम हौसले और साहस के साथ देंगे। यह मान कर चलिये कि थोड़ी बहुत चित्त-पुट हो सकती है, आखिर में जीत हमारी होने वाली है।

श्री जगन्नाथ: अध्यक्ष महोदय, बरकतुल्ला जी, एक मिनिट ......

श्री अध्यक्ष : सदन की कार्यवाही ......

श्री जगन्नाथ : (अश्रव्य)

श्री अध्यक्ष : कल प्रातः काल 11 बजे तक के लिये स्थगित की जाती है। (तदनन्तर सदन की कार्यवाही सायंकाल 6 बज कर 50 मिनिट पर शनिवार दिनांक 13-11-71 के प्रातः 11 बजे तक के लिये स्थगित हुई)।

परिशिष्ट 1

(ता. प्र. सं. 44 की सूची)

(1) गुडे हुमा-शाव, सेली, मूली, बटमाल तथा अन्य नजदीक 15 ग्रामों के लिये जल योजना की सर्वे की जा रही है।

(2) अचलपुर, भादवाल, लालपुर तथा अन्य नजदीक के लगभग 10 गांवों की क्षेत्रीय योजना बनाई जावेगी।

(3) सांकल, सरनान, गुदान, पलारी, कुडा, दांता आदि 10 गांवों की क्षेत्रीय योजना बनाई जावेगी।

उपरोक्त योजनाओं के लिये चूंकि अभी तक पेय योग्य पानी के स्रोत की उपलब्धि नहीं हो पाई है अतः योजनायें नहीं बनाई जा सकी राजस्थान भूजल मंडल, व भारतीय भू-सर्वेक्षण विभाग द्वारा किये गये सर्वेक्षण के आधार पर नये स्रोतों की खोज की जा रही है।

परिशिष्ट 2

(ता. प्र. सं. 47 की सूची)

सूची वृक्षों के अनाधिकृत कटान की

23 व 14 अक्टूबर, 1971 को हरे काटे गये वृक्ष।

1.	धोकड़े के वृक्ष	3418
2.	खैर के वक्ष	33
3.	खेजड़ा के वक्ष	27
	कुल ..	3478

परिशिष्ट 3

(ता. प्र. सं. 48 की सूची)

सूची खर्चा जो सहायता रोड्स पर सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा निम्न वर्षों में राजस्थान में व्यय की गई :

नाम वर्ष	व्यय धनराशी
1968-69	रु. 7,45,60,652/–
1969-70	रु. 38,25,18,877/–
1970-71	रु. 19,36,65,642/–

सूची ब

S. No.	Name of work	Expr, 69-70	70-71 Upto Sept., 1970
1	2	3	4
	TONK TEHSIL		
1.	Boarkhandi to Sitarampura	51297.67	..
2.	Radiwas to Idgah	14281.61	28637.64
3.	Malpura gate to Kakraj Ghat	10965.51	46650.16
4.	Tonk to Bamore Banetha via Bxmore	51301.22	190005.40
5.	Tonk to Omvia Sonwa Banjari	266508.44	286992.86
6.	Galod to Naner	657.30	41728.88
7.	Nathari to Ranoli	104687.16	..
8.	Mainowas to Modiyaia	30239.49	..
9.	Tonk Vajirpur Lainpalri Rd.	...	55797.81
10.	C. D. work of Latif Ganj	..	32662.31
11.	Bara Kuwa to Dhanna Talai	...	61613.69
12.	Gandhi park to Police line	...	48654.82
13.	Patel statu to Kothi Natamam	...	46704.14
14.	Gainta to Hamirpur via Dodwari	...	46933.29
	TEHSIL NEWAI		
1.	Gunsi to Raholi	63282.60	66703.63
2.	Chaninpura to Dutwas	110207.30	...
3.	Jhalai to Behad	5823.38	...
4.	Peeplu to Baroni	19374.10	...
	TEHSIL ALIGARH		
1.	Uniara to Nagar	127404.00	...
2.	Uniara to Indergarh	54396.91	...

Page No 157

1	2	3	4
3.	Aligarh to Chauth Ka Barwara	45222.31	..
4.	Kakor to Nagar	148944.77	..
5.	Dhikolia to Banetha	68860.97	..
	TEHSIL DEOLI		
1.	Santhali to Rajmahal	237694.20	
2.	Dalta to Raj Mahal	68569.09	..
3.	Panwar to Sanwatgarh	36512.00	..
4.	Dhaneholi to Rajkot	177879.27	..
5.	Bharni to Dhunwa	13394.94	..
6.	Chan Sakhana Banjari Rd.	59179.24	..
7.	Malera to Hisampur	362958.25	..
8.	Duni to Naga	218254.10	..
9.	Duni to Anwa	74148.67	..
	TEHSIL TODARAISINGH		
1.	Todaraisingh to Malpura	135199.05	56957.77
2.	Todaraisingh to Dabarcumba	18550.36	..
3.	Todaraisingh to Botunda	175440.74	—
4.	Todaraisingh to Modiyala	74148.67	..
5.	Hamirpur to Modiyla	53667.69	..
6.	Kripal Bhenru to Hamirpur	52667.28	6509.49
7.	Bhansu to Panwalia	162869.45	..
8.	Sanwaria to More Datob	70444.14	..
9.	Hamirpur to Ratwai Road	..	20027.70
	TEHSIL MALPURA		
1.	Pachewar to Chosala	34466.39	2418.32
2.	Diggi to Pachewar	11154.32	36041.31
3.	Nagar to Pachewar	85703.83	38409.11
4.	Palri to Madawari	14880.59	..
5.	Lambaharisingh to Thiara	110612.76	..
6.	Kalmanda to Naner	10734.45	..
7.	Lambaharsingh to Nagar	69537.61	..
8.	Malpura to Kekari	172654.38	..
9.	Tordi to Kalmanda	83619.58	14262.67
10.	Malpura to Ghati	40147.78	..
11.	Tekari to Mandolai	13372.57	..
12.	Rupahli to Reendolia	127371.61	..
13.	Chandsen to Bhanwanpura	1630.10	..
14.	Malpura to Rindli	..	

परिशिष्ट 4

(समयाभाव के कारण समय पर न लिये जाने वाले तारांकित प्रश्नोत्तर)

पुलिस अधिकारियों के विरुद्ध भ्रष्टाचार के मामले

49. श्री प्रेमसिंह सिंघवी—क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि राजस्थान में पुलिस सेवा के आई. पी. एस. व आर. पी. एस. रेंक के अधिकारियों के खिलाफ भ्रष्टाचार की शिकायतें जनता द्वारा समय समय पर की गई हैं ?

(2) यदि हां, तो कौन कौन से अधिकारियों के खिलाफ ऐसी शिकायतें सरकार के पास मौजूद हैं ?

उत्तर

(1) जी हां, इस विभाग में कुल 34 मामले पुलिस अधीक्षक एवं पुलिस उप अधीक्षकगण के विरुद्ध प्राप्त हुए जिन पर कार्यवाही हो रही है।

(2) वांछित सूचना संलग्न है।

अपराध अनुसंधानान्तर्गत है :—

क्र. सं.	दोषी का नाम व पद
(1)	श्री नाथूराम उप अधीक्षक पुलिस, भीनमाल जिला जालौर।

जिनमें प्राथमिक जांच हो रही है:—

(2) मेजर श्री वेद प्रकाश राजवंशी, उप-अधीक्षक आदेशक, होम गार्डस ट्रैनिंग सेन्टर, जयपुर।

(3) श्री शिवकुमार उप-अधीक्षक आरक्षी, झुंझुनूं।

(4) श्री बसंत कुमार पारीक, उप-अधीक्षक पुलिस, बालोतरा।

(5) श्री कन्हैयालाल सर्किल आफीसर, मेड़ता।

(6) श्री मानसिंह, उप अधीक्षक पुलिस, अजमेर।

(7) श्री भूरमल जैन, उप अधीक्षक, आरक्षी, बारां।

(8) श्री विरेन्द्र बुरतरिया, उप–अधीक्षक पुलिस एवं अन्य थाना ब्यावर जिला अजमेर।

(9) श्री जय प्रकाश त्यागी, वृत्त अधिकारी, भीलवाड़ा।

(10) श्री पारस सिंह उप-अधीक्षक आरक्षी, आमेर।

(11) श्री हरी सिंह गुप्ता, उप–अधीक्षक आरक्षी, व थानेदार शिवपुरा जिला पाली।

(12) श्री के. एल. गोदरा, उप–अधीक्षक पुलिस, छबड़ा।

(13) श्री जी. एस. पटवारी, उप-अधीक्षक पुलिस एवं उप निदेशक, फलोदी।

(14) श्री भंवर सिंह, डीवाई. एस. पी. कालन्दरी जिला सिरोही।

(15) श्री सुख सिंह उप-अधीक्षक आरक्षी, एवं अन्य जिला सवाई माधोपुर।

(16) श्री इन्द्र सिंह, उप-अधीक्षक आरक्षी, बारां जिला कोटा।

(17) श्री पन्ने सिंह, पुलिस अधीक्षक, अजमेर।

क्र.सं.	दोषी का नाम व पद
(18)	श्री के. के. सिंह अपर अधीक्षक आरक्षी सीकर ।
(19)	श्री चन्द्र सिंह, अपर अधीक्षक आरक्षी एवं अन्य, मासल पुर ।
(20)	श्री नाथू राम, उप अधीक्षक आरक्षी, बालोतरा ।
(21)	श्री सेनी उप अधीक्षक आरक्षी, सांभर व अन्य ।
(22)	श्री मुखराम शर्मा, सी. ओ., दोसा।
(23)	श्री गनपत सिंह, उप अधीक्षक आरक्षी व थानेदार, नागोर ।
(24)	श्री के. एल. सेनी, उप अधीक्षक आरक्षी, भरतपुर ।
(25)	श्री लादूसिंह, पुलिस अधीक्षक, कोटा।
(26)	श्री के. एल. सेनी, उप अधीक्षक पुलिस, डीग ।

जिन पर विभागीय जांच चल रही है:–

क्र.सं.	दोषी का नाम व पद
(27)	श्री जमील अहमद काजी, उप अधीक्षक पुलिस, अजमेर ।
(28)	श्री बैसाखा सिंह अपर अधीक्षक पुलिस, जोधपुर ।
(29)	श्री बंसत कुमार पारीक, उप अधीक्षक, बालोतरा ।
(30)	श्री अनूप चन्द, उप अधीक्षक, सरोलिया
(31)	श्री कृपाल सिंह डीवाई. एस. पी. मोहनगढ, जैसलमेर ।
(32)	श्री राम सिंह, उप अधीक्षक पुलिस, बीकानेर ।
(33)	श्री के. एल. गुप्ता, आई. पी. एस., सिरोही ।

न्यायालय में विचाराधीन हैं:–

(34) श्री जी. डी. चडा, आई. पी. एस. भू. पू. पुलिस अधीक्षक, भरतपुर ।

संयुक्त शिक्षा निदेशक के पद पर पदोन्नति

50. श्री देवीदत्त गाडिया (बारां)– क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:–

(1) क्या यह सही है कि श्री भंवर लाल कुरावत, संयुक्त शिक्षा निदेशक, अजमेर वृत्त जयपुर को राज्य सेवा में बहुत जूनियर होते हुवे भी उन्हें अन्य जेष्ठतम अधिकारियों के दावों को नजरअन्दाज कर उप शिक्षा निदेशक के पद से पदोन्नत किया गया है ? क्या सर्व श्री त्रिवेदी (उपनिदेशक, उदयपुर) तथा डा. गोपाल कृष्ण श्री कुरावत से काफी वरिष्ठ हैं ? यदि हां, तो श्री कुरावत को पदोन्नत किये जाने के क्या कारण हैं ?

(2) क्या यह सही है कि डा. गोपाल कृष्ण जो 1962 से उप शिक्षा निदेशक के पद पर कार्य कर रहे है ने इस संबंध में एक याचिका राजस्थान उच्च न्यायालय में दायर की थी और न्यायालय ने उनके पक्ष में फैसला दिया है और श्री कुरावत को हटाने के लिये सरकार को आदेश दिये हैं ? क्या इस निर्णय को हुये 10 माह हो चुके हैं लेकिन सरकार ने तद्विषयक कार्यवाही नहीं की है और नहीं सर्वोच्च न्यायालय में अपील की है ?

(3) क्या यह सही है कि जिस समय श्री कुरावत, उप निदेशक, जोधपुर के पद पर आसीन थे, उनके विरुद्ध अध्यापकों आदि के स्थानान्तरण के मामलों में भ्रष्टाचार पूर्ण

(शिक्षा मंत्री)

तरीके अपनाने एवं नियुक्तियों में अनियमितता बरतने के आरोप लगाये गये थे और विभाग द्वारा शिकायतें सही पाने पर इनको शिक्षा निदेशालय, बीकानेर (मुख्यालय) में तब्दील किया गया और विभागीय अनुशासनिक कार्यवाही की गयी? यदि हां, तो ऐसे अधिकारी को पदोन्नत कर संयुक्त निदेशक, अजमेर, जयपुर के पद पर पदस्थापित करने का क्या कारण है ?

(4) क्या यह सही है कि इनके इस पद पर आने के पश्चात् अध्यापकों के स्थिरीकरण, कालातीत दावों तथा पेंशन के मामलों के निपटाने के संबन्ध में आशातीत प्रगति नहीं हुई, है और अध्यापक संघ द्वारा बार बार निवेदन करने के बावजूद यह इस ओर बिलकुल निष्क्रिय है क्या नये पद पर आने के पश्चात् भी इनके विरुद्ध नियुक्तियों में अनियमितता बरतने तथा स्थानान्तरण के मामलों में रिश्वत लेने संबंधी शिकायतें की गयी हैं ? यदि हां तो इनके विरुद्ध क्या कार्यवाही की गयी है ? क्या सरकार न्यायालय के निर्णय, विभाग के मामलों में निष्क्रिय एवं उदासीन रहने, भ्रष्टाचार पूर्ण एवं अनियमित कार्यवाहियों को दृष्टिगत कर एवं अध्यापकों की बहबूदी के लिये ऐसे अधिकारी को तुरन्त पदावनत कर अन्यत्र पदस्थापित करने का विचार रखती है ?

उत्तर

(1) जी नहीं । श्री कुरावत की पदोन्नति राजस्थान शिक्षा सेवा नियम 27 के अन्तर्गत वरिष्ठतानुसार की गई हैं ।

(2) जी हां । डॉ. गोपाल कृष्ण को उच्च न्यायालय के निर्णय के अनुसार पदोन्नति एवं वरिष्ठता दी जा चुकी हैं । इस निर्णय में श्री कुरावत को हटाने का कोई आदेश नहीं हैं ।

(3) जी नहीं । श्री कुरावत के विरुद्ध भ्रष्टाचार एवं अनियमितता संबंधी शिकायत नहीं हैं और न इनके खिलाफ कोई अनुशासनात्मक कार्यवाही चल रही है । इनका पदस्थापन संयुक्त निदेशक, अजमेर-जयपुर के पद पर प्रशासनिक दृष्टि से किया गया हैं ।

(4) जी नहीं । न्यायालय के निर्णय में श्री कुरावत को पदावनत करने का कोई आदेश नहीं हैं ।

गोपालन एवं पशुपालन व्यवसाय करने वालों को सुविधायें

51. श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़)— क्या पशुपालन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि राजस्थान बहुसंख्यक निवासियों का मुख्य धंधा कृषि एवं पशुपालन है ?

(2) क्या राज्य सरकार पशुपालन अथवा गोपालन को उद्योग की श्रेणी में मानती है ? और औद्योगिक क्षेत्र में मिलने वाली सुविधायें गोपालन या पशुपालन का व्यवसाय करने वाले को भी देती है ? यदि, हां तो वे सुविधायें क्या है जो दी जाती हैं ? वे सुविधायें क्या हैं जो नहीं दी जा रही हैं और क्यों ?

(3) औद्योगिक क्षेत्र के लिये दी जाने वाली सुविधाओं पर राज्य सरकार प्रति वर्ष कितना व्यय करती है और गोपालन पशुपालन पर कितना ?

(श्री दौलतराम सारण)

(4) राज्य को इनसे प्रति वर्ष कितनी कितनी अलग अलग आय होती है ?

उत्तर

(1) जी हां ।

(2) पशु पालन उद्योग की श्रेणी में नहीं आता है । अतः अन्य प्रश्नों का उत्तर देने का प्रश्न ही नहीं रह जाता है ।

(3) औद्योगिक क्षेत्र के लिये दिये जाने वाली सुविधाओं पर होने वाले व्यय का विवरण उद्योग विभाग दे सकता है । गोपालन।पशु पालन पर पशु पालन विभाग का करीब 80 लाख रुपया प्रति वर्ष व्यय होता है ?

(4) राज्य में पशु पालन शीर्षक के अन्तर्गत प्रति वर्ष करीब 36 लाख रुपये की आय होती है । तालिका संलग्न है ।

पशु पालन विभाग को निम्न योजनाओं के माध्यम से प्रति वर्ष करीब 36 लाख रुपये की आमदनी होती है जो निम्न प्रकार से है:-

1.	पशु प्रजनन केन्द्र	3,50,000।-
2.	पशु मेले	12,00,000।-
3.	कुक्कुट पालन	3,00,000।-
4.	विविध	3,50,000।-
5.	मत्स्य	14,00,000।-

शिक्षा निरीक्षक अलवर के विरुद्ध शिकायतें

52. श्री गंगासहाय (कठूमर) : क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे:-

(1) क्या यह सही है कि निरीक्षक शालाएं अलवर के एक केस में हाजिर न होने के कारण मुंसिफ मजिस्ट्रेट अलवर ने 25) रुपया जुर्माना किया है ?

(2) क्या यह भी सही है कि एक चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी को मिडिल स्कूल बांबोली से मिडिल स्कूल नया बास में स्थानान्तरण किया गया है जब कि बांबोली स्कूल में बच्चों को पानी पिलाने तक को कोई दूसरा कर्मचारी नहीं है ?

(3) क्या यह भी सही है कि बांबोली से स्थानान्तरित कर्मचारी को निरीक्षक महोदय ने अपनी निजी कार का ड्राईवर बना रखा है और उसका वेतन सरकार देती है ?

(4) क्या यह भी सही है कि निरीक्षक महोदय ने अपने मकान पर जो फर्श, दरियां, बिजली का सामान, फर्नीचर आदि ले रखे हैं सब सरकारी स्कूलों से ले रखे हैं ? क्या वे इस समस्त सामान का कोई किराया देते हैं ?

(5) क्या यह भी सही है कि निरीक्षक महोदय ने अपनी कार खड़ी करने के लिये कोई गैरेज नहीं ले रखा है और वे अपनी कार सरकारी स्कूल में खड़ी करते हैं ? यदि हां, तो क्या इसका किराया वे सरकार को देते हैं ?

(6) क्या यह भी सही है कि जो लोग पहले जिला कार्यालय में डेपुटेशन पर थे उनका डेपुटेशन कैंसिल किया गया था ? यदि हां, तो फिर नये लोगों को डेपुटेशन पर लगाने की क्या आवश्यकता थी ?

(7) निरीक्षक शाला अलवर ने आज तक कितने डीटेल्ड इन्स्पेक्शन किये हैं क्या

(श्री गंगासहाय)
उनकी रिपोर्ट संबंधित उच्चाधिकारियों को भेजी गई है ? यदि हां, तो उन पर क्या कार्यवाही की गई है ?

(8) क्या किसी भी जिला अधिकारी को अपनी स्वयं की कार को यात्रा के काम में लाने के पूर्व जिला पूल अधिकारी से नोन एबेलेबिलिटी सर्टिफिकेट लेना अनिवार्य है ? यदि हां, तो क्या निरीक्षक अलवर ने इस संबंध का प्रमाण-पत्र अपनी कार यात्रा के उपभोग में लेने से पूर्व लिया था यदि नहीं, तो क्यों ?

उत्तर

(1) जी नहीं । श्री महेशचन्द्र भट्ट भूतपूर्व विद्यालय निरीक्षक, अलवर के (श्री हीरालाल शास्त्री द्वारा विभाग को धारा 80 सी. पी. सी. व दीवानी दावे के मामले में) पेशी पर दौरे पर होने के कारण उपस्थित नहीं होने पर 25) रु. हर्जे के जमा करवाये गये हैं ।

(2) जी नहीं ।

(3) जी नहीं ।

(4) जी नहीं । किराया देने का प्रश्न ही नहीं उठता ।

(5) यह सही नहीं है ।

(6) जी हां । नये लोगों को डेपूटेशन पर नहीं लगाया गया ।

(7) वर्तमान विद्यालय निरीक्षक द्वारा दिनांक 22-8-70 को अलवर चार्ज लेने के पश्चात् 28 डिटेल्ड इन्सपेक्शन किए गये हैं जिनकी रिपोर्ट संबंधित अधिकारियों को भेजी जा चुकी है ।

(8) जी हां । विद्यालय निरीक्षक, अलवर ने वांछित सर्टिफिकेट प्राप्त कर लिये थे ।

फोरेस्ट ब्लाक आमेटा में नाजायज काश्त के मामले

53. श्री रामप्रसाद बोहरा (झालरापाटन): क्या वन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है फोरेस्ट ब्लाक आमेटा जिला झालावाड़ में इस वर्ष नाजायज काश्त की गई है ? कितने बीघा में नाजायज खेती हुई ? इनके खिलाफ क्या कार्यवाही विभाग द्वारा की गई ?

(2) क्या यह सही है कि इस नाजायज काश्त की रिपोर्ट नाकेदारों या फारेस्ट गार्डों द्वारा समय पर दी जा चुकी थी परन्तु उच्च अधिकारियों द्वारा कार्यवाही नहीं की गई व क्यों ?

उत्तर

(1) जी हां । 43 बीघा में अवैध खेती हुई अपराधियों के विरुद्ध राजस्थान वन अधिनियम 1953 के अनुसार कार्यवाही की जाकर 7 मुआमले उप दण्ड नायक इकलेरा के न्यायालय में चालान किये जा चुके हैं शेष 5 में स्थानीय जांच जारी है ।

(2) जी नहीं । प्रश्न नहीं उठा ।

बूंदी में हायर सैकेण्डरी स्कूल की मांग

54. श्री केशरीसिंह हाडा (हिन्डोली): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि बूंदी में केवल एक ही हायर सेकेन्डरी स्कूल है और क्या

(श्री केशरीसिंह हाडा)
यह भी सत्य है कि छात्र संख्या अधिक होने के कारण यह 3 शिफ्ट में चलता है ?

(2) क्या इस स्कूल की छात्र संसद द्वारा सरकार के समक्ष मांगें प्रस्तुत की गई थी ? यदि हां, तो मांगों की प्रति सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

(3) क्या यह सत्य है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बूंदी के छात्रों द्वारा दिनांक 7-10-70 को अपनी मांगों को लेकर एक आन्दोलम छेड़ा गया था ?

(4) क्या यह सत्य है कि छात्र अपनी मांगों का एक ज्ञापन जिलाधीश बूंदी को दिनांक 8-10-70 को उनके निवासस्थान पर देने गये थे ? यदि हां, तो क्या जिलाधीश ने उनका ज्ञापन लिया अगर नहीं, तो क्यों नहीं ?

(5) क्या पुलिस द्वारा छात्रों पर लाठी चार्ज किया गया था ? यदि हां, तो किसके आदेश से तथा इससे कितने छात्रों को चोट आई ? क्या उनको बूंदी के चिकित्सालय में भर्ती कराया गया था ?

उत्तर

(1) जी हां। विद्यालय 2 शिफ्ट में चलता है।

(2) जी हां। मांगों की प्रति सदन की मेज पर रखदी गई हैं।

(3) जी हां।

(4) जी हां। जिलाधीश बूंदी ने ज्ञापन ले लिया था।

(5) जी हां, प्रथम श्रेणी दण्ड नायक की आज्ञा से हलका लाठीचार्ज हुआ था। इसकी यदि विशेष जानकारी चाहें तो गृह विभाग से प्रश्न पूछा जा सकता है।

मांगें निम्न प्रकार से हैं :—

1. जिला केन्द्र पर स्थित हायर सैकेण्डरी स्कूल होने से बाहर के विद्यार्थी छात्रों की सुविधाओं को मध्य नजर रखते हुए छात्रावास की अविलंब स्थापना हो।

2. वर्ष बीत गये, स्कूल भवन ज्यों का त्यों है, वो छात्र संख्या के अनुपात से काफी कम है, अतः विद्यालय भवन का विस्तार होना अतिआवश्यक है।

3. कैन्टीन (स्वस्थ एवं स्तर की) निर्मित की जावे।

4. बोटेनिकल गार्डन का अभाव दूर होना चाहिये।

5. सिनेमा के सामने वाली स्कूल की फाटक से स्कूल की बिल्डिंग तक सड़क खराब है। जो विद्यालय के मानस पर गन्दा असर डालती है।

6. वाचनालय और इन्डोर गेम्स के लिये अलग से कक्ष की स्थापना की जावे।

7. साईकिल स्टैंड टीन शेड का होना चाहिये, जिससे साईकिल गुम होने का खतरा समाप्त हो सके। गत वर्षों में कई साईकिलें विद्यालय भवन से गुम हो गई हैं।

8. फर्नीचर कम और जीर्ण अवस्था में है। इसलिये फर्नीचर की कमी का पूरा होना नितान्त आवश्यक है।

Page No 164

(शिक्षा मंत्री)

9. प्रयोगशाला में सामान की कमी की पूर्ती एवं प्रयोगशाला सहायक का प्रयोगों में सहायतार्थ एवं उन्हें कार्यालय के कार्यों से मुक्त करना जिससे प्रयोगशाला सुचारु रूप से चल सके। (भौतिक प्रयोगशाला में अक्सर कार्यालय का ही कार्य होता रहता है, जिससे प्रयोगशाला सुचारु रूप से नहीं चल पाती)।

रमेशचन्द्र मुवाल,
अध्यक्ष,
छात्र संघ,
राजकीय उच्चतर माध्यमिक,
बूंदी।

निदेशक द्वारा यात्रा

55. श्री दौलतराम सारण (डूंगरगढ़): क्या जन सम्पर्क मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) गत आम चुनाव के पश्चात् जन-सम्पर्क निदेशक ने किन-किन पत्रकारों और पत्रकार दलों के साथ कहां कहां कब कब यात्रा की? उन पत्रकारों की सूची और दौरे का व्यौरा सदन की मेज पर रखा जावे।

(2) उक्त अवधि में निदेशक ने कितनी बार दिल्ली की यात्रा रेल, हवाई जहाज और कार से की? इन यात्राओं में उनके साथ कौन कौन पत्रकार रहे? इन यात्राओं में कब कहां रात्रि विश्राम किया गया?

उत्तर

(1) निदेशक जन सम्पर्क द्वारा जो यात्रायें की जाती हैं उनमें कौन कौन पत्रकार रहे हैं इसका विवरण रखने की परम्परा नहीं है अतः गत आम चुनावों के पश्चात् निदेशक जन सम्पर्क ने किन किन पत्रकारों के साथ यात्रा की यह बताना संभव नहीं है।

(2) निदेशक द्वारा की गई दिल्ली की यात्राओं की सूची मय रात्रि विश्राम के संलग्न है। पत्रकारों के साथ जाने का विवरण अलग से नहीं रखा जाता।

श्री राजेन्द्र शंकर भट्ट, निदेशक जन सम्पर्क द्वारा 1967 से 1971 तक की गई यात्राओं सम्बन्धी सूचना :—

अवधि	विश्राम स्थल	रात्रि विश्राम कुल संख्या	साधन
1	2	3	4
22-1-67 से 26-1-67	दिल्ली	3	सरकारी वाहन
12-3-67 से 14-3-67	दिल्ली	1	"
19-3-67 से 22-3-67	दिल्ली	3	"
17-4-67 से 21-4-67	दिल्ली	3	"
6-7-67 से 10-7-67	दिल्ली	4	"
30-7-67 से 3-8-67	दिल्ली	4	"
16-9-67 से 21-9-67	दिल्ली	4	रेल द्वारा

1	2	3	4
20-10-67 से 22-10-67	दिल्ली	1	सरकारी वाहन
	अलवर	1	
2-11-67 से 5-11-67	दिल्ली	3	"
20-3-68 से 23-3-68	दिल्ली	2	रेल द्वारा
28-3-68 से 2-4-68	दिल्ली	5	सरकारी वाहन
28-5-68 से 2-6-68	दिल्ली	5	"
19-6-68 से 22-6-68	दिल्ली	3	प्राइवेट वाहन द्वारा
15-11-68 से 20-11-68	दिल्ली	4	सरकारी वाहन
7-2-68 से 12-2-68	दिल्ली	5	"
26-2-68 से 28-2-68	दिल्ली	2	"
11-10-68 से 16-10-68	दिल्ली	5	"
23-11-68 से 25-11-68	दिल्ली	2	रेल द्वारा
3-12-68 से 6-12-68	दिल्ली	3	"
19-12-68 से 22-12-68	दिल्ली	3	"
23-5-69 से 25-5-69	दिल्ली	2	"
17-4-69 से 19-4-69	दिल्ली	3	"
17-9-69 से 19-9-69	दिल्ली	2	सरकारी वाहन
22-11-69 से 24-11-69	दिल्ली	2	बस द्वारा
19-3-70 से 21-3-70	दिल्ली	2	सरकारी वाहन
27-3-70 से 31-3-70	दिल्ली	4	"
21-4-70 से 25-4-70	दिल्ली	4	"
28-5-70	दिल्ली	1	हवाई जहाज द्वारा
16-5-70 से 18-5-70	दिल्ली	2	बस द्वारा
16-6-70 से 22-6-70	दिल्ली	5	रेल व बस द्वारा
	अलवर	1	
4-7-70 से 7-7-70	दिल्ली	3	सरकारी वाहन
22-7-70 से 25-7-70	"	3	रेल द्वारा
30-7-70 से 1-8-70	"	2	"
13-8-70 से 16-8-70	दिल्ली	3	"
13-8-70 से 16-8-70	दिल्ली	3	"
27-9-70 से 1-10-70	दिल्ली	4	कार द्वारा
14-10-70 से 15-10-70	दिल्ली	1	रेल द्वारा
28-3-71 से 1-4-71	दिल्ली	4	कार द्वारा

1	2	3	4
10-12-71 से 13-12-71	दिल्ली	3	हवाई जहाज द्वारा
13-12-71	अलवर	1	रेल द्वारा
14-12-71	भरतपुर	1	सरकारी वाहन
30-4-71 से 4-5-71	दिल्ली	5	"
17-7-71 से 21-7-71	दिल्ली	4	रेल द्वारा
7-10-71 से 8-10-71	दिल्ली	1	"
7-11-71 से 10-11-71	दिल्ली	3	सरकारी वाहन

उक्त अवधि जनवरी, 67 से 11 मार्च 71 निदेशक ने दिल्ली यात्रा के दौरान कुल 132 रात्रियों को विश्राम किया इनमें दिनांक 21-10-67, 26-1-70, 13-11-71 को अलवर और दिनांक 14-12-71 को भरतपुर में तथा शेष रात्रियों का दिल्ली विश्राम रहा।

यूथ बोर्ड का गठन

56. श्री भीमसेन (लूनकरणसर): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

क्या राज्य सरकार राज्य में "यूथ बोर्ड गठन करने का इरादा रखती है ? अगर हां, तो इसके गठन में विलम्ब क्यों किया जा रहा है ?

उत्तर

राज्य में यूथ बोर्ड गठन करने का प्रश्न राज्य सरकार के विचाराधीन है।

पुस्ताकालय का कार्य करने वालों को विशेष वेतन

57. श्री फूलचन्द बाफणा (सुमेरपुर): क्या शिक्षा मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) राजस्थान के शिक्षा विभाग में किन किन पाठशालाओं में पुस्तकालय का कार्य करने वाले कर्मचारियों (अध्यापकों, उच्च लिपिकों) को विशेष वेतन (भत्ता) कितना कितना कितनी कितनी पुस्तकों पर दिया जाता है ?

(2) क्या उच्च माध्यमिक विद्यालयों में जहां अलग से पुस्तकालयाध्यक्ष का पद स्वीकृत नहीं है, वहां पुस्तकालय का कार्य करने वाले कर्मचारियों को विशेष भत्ता (वेतन) दिया जाता है ?

(3) (क) क्या उच्च माध्यमिक विद्यालयों में दिनांक 1-9-1968 से पहले पुस्तकालय का कार्य करने वाले कर्मचारियों को विशेष वेतन (भत्ता) दिया जाता था ?

(ख) यदि हां, तो 1-9-1968, के बाद क्यों बन्द किया गया जब कि प्राथमिक उच्च प्राथमिक, माध्यमिक व शिक्षक-प्रशिक्षण-विद्यालयों में आज भी दिया जाता है।

(4) (क) क्या सरकार अब उच्च माध्यमिक पाठशालाओं में जहां अलग से पुस्तकालयाध्यक्ष के स्वीकृत पद नहीं हैं

(श्री फूलचन्द बाफणा)
वहां पर पुस्तकालय का कार्य करने वाले कर्मचारियों को विशेष भत्ता (वेतन) देने का विचार रखती है ?

(ख) यदि हां, तो आदेश कब तक जारी कर दिये जायेंगे और यदि विशेष भत्ता नही दिया जायेगा, तो क्यों ?

(ग) सहायता प्राप्त (एडेड) स्कूलों के संबंध में उपर्युक्त संबंध में क्या कोई पृथक् नियम हैं ?

उत्तर

(1) पाठशालाओं में पुस्तकालय का कार्य करने वाले व्यक्तियों को निम्नानुसार विशेष वेतन दिया जाता है :—

नाम विद्यालय	पुस्तकों की संख्या	विशेष वेतन दर
एस.टी.सी.	5000	20—00
हाई स्कूल	3000	15—00
मिडिल स्कूल	1500	10—00

(2) उच्च माध्यमिक विद्यालयों में जहां पुस्तकालय या यू. डी. सी. कम लाइब्रेरियन के पद हैं वहां विशेष वेतन नहीं दिया जाता है। जहां यह पद नहीं है और अध्यापक पुस्तकालय का कार्य करते हैं उन्हें नियमानुसार विशेष वेतन दिया जाता है।

(3) (क) जी हां।

(ख) उच्च माध्यमिक विद्यालयों में पुस्तकालयाध्यक्ष या यू. डी. सी. कम लाइब्रेरियन के पद का प्रावधान है।

(4) (क) उत्तर प्रश्न के खण्ड 2 में निहित है।

(ख) प्रश्न ही नहीं उठता।

(ग) सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं पर वही नियम लागू होते हैं जो राजकीय विद्यालय पर लागू होते हैं।

मालपुरा डिविजन में सडक एवं भवन निर्माण कार्य पर व्यय।

58. श्री जगन्नाथ पटेल (टोडारायसिंह):— क्या सार्वजनिक निर्माण मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) टोंक जिले को वर्ष 1969-70 में सडक निर्माण व भवन निर्माण हेतु कितनी धन राशि आवंटन की गई ?

(2) उक्त राशि में से टोंक डिवीजन को कितनी तथा मालपुरा को कितनी कितनी दी गई ?

(3) मालपुरा डिवीजन में रखी गई राशि में से कितनी राशि मालपुरा क्षेत्र तथा कितनी टोडारायसिंह क्षेत्र में खर्च की गई ?

(4) उक्त वर्ष में दोनों क्षेत्रों में सडक व भवन निर्माण में क्या क्या कब कब कहां कहां पर कितनी कितनी राशि का कार्य करवाया गया तथा किस किस सडक पर कौन कौन सी मीलों पर क्या क्या काम कितनी कितनी राशि का किया गया ? दोनों क्षेत्रों का तुलनात्मक विवरण सदन की मेज पर रखने की कृपा करें।

(5) क्या यह भी सही है कि मालपुरा डिवीजन के लिये अलग से एक्स्ट्रा धनराशि निर्माण कार्य हेतु दी गई ? यदि हां, तो उक्त

(श्री जगनाथ पटेल)
राशि से किस किस जगह कितने कितने रुपयों का क्या क्या कार्य करवाया गया है ? सूची सदन की मेज पर रखें ।

उत्तर

(1) सडक निर्माण व भवन निर्माण हेतु क्रमशः 1,13,000 रुपया तथा 1,53,000 आवंटित किया गया है ।

(2) धनराशि आवंटन निर्माण विभाग के खण्डवार की जाती है ।

(3) मालपुरा में भवन निर्माण पर 42,077 रुपया व्यय किये गये हैं तथा टोडारायसिंह क्षेत्र पर कोई धनराशि व्यय नहीं की गई ।

(4) मालपुरा सब डिवीजन में भवन व पथ निर्माण पर निम्न खर्चा हुआ :—

1. मालपुरा क्षेत्र में भवन निर्माण हेतु :—

(क) मुन्सिफ मजिस्ट्रेट कोर्ट के पास शौचालय निर्माण पर 877.00 रु.

(ख) पुलिस आवास गृह–14,954.00

(स) रैफरल अस्पताल–26,246.00 रु.

2. टोडारायसिंह क्षेत्र में भवन निर्माण हेतु कोई खर्च नहीं हुआ । टोडारायसिंह में सडक के लिये अलग से खर्चे की जानकारी इसलिये संभव नहीं है कि जो भी सडकें इस क्षेत्र में हैं वो मालपुरा सब-डिवीजन में सम्मिलित हैं ।

(5) मालपुरा क्षेत्र के लिये पृथक् से धनराशि आवंटित नहीं की गई ।

रेंजर के विरुद्ध जांच

59. श्री कृष्ण कुमार गोयल (कोटा) : क्या वन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि रेंज जयपुर की नाका अजमेर पर बाहर से बकरी व ऊंट लाने वालों से रिश्वत लेने के संबंध में सतर्कता दल द्वारा जांच कराई गई थी ?

(2) क्या उक्त सतर्कता दल ने अपनी रिपोर्ट दे दी है ? अगर हां, तो प्रतिलिपि सदन के पटल पर रखने का कष्ट करें ।

(3) क्या यह सही है कि उक्त सतर्कता दल की रिपोर्ट के आधार पर कई कर्मचारियों का तबादला किया गया था अगर हां, तो किन किन का, वह कब कब कहां कहां ?

(4) क्या यह सही है कि रिपोर्ट में उल्लिखित दोषी कर्मचारियों के विरुद्ध विभागीय जांच कराई गई थी ? अगर हां, तो किस किस के विरुद्ध व उनका क्या परिणाम रहा ?

(5) क्या यह सही है कि प्रश्न के खंड (3) में वर्णित कुछ कर्मचारियों का वापस नाका अजमेर पर स्थानान्तर कर दिया गया है ? अगर हां, तो किस का कब व क्यों ?

उत्तर

(1) जी हां ।

(2) जी हां । विभागीय सतर्कता दल द्वारा जांच रिपोर्ट तारीख 24-12-69 को दी है । प्रतिलिपि सदन की मेज पर रख दी गई है ।

(वन मन्त्री)

(3) (क) श्री रिछपाल सिंह वन पाल नाका आमेर से सांगानेर दिनांक 21-4-70।

(ख) श्री सरदार खां वन रक्षक आमेर चौकी से जामडोली चौकी।

(ग) श्री जोरा राम वन रक्षक आमेर से बैराठ रेन्ज में दिनांक 29-12-69 को।

(4) जी हां। सर्व श्री रिछपाल सिंह वनपाल, सरदार खां, वन रक्षक एवं जोराराम वन रक्षक के विरुद्ध जांच कर उनकी दो वेतन वृद्धियां संचित प्रभाव रहित रोकने का दण्ड दिया गया।

(5) खण्ड (3) में वर्णित कर्मचारियों में से श्री रिछपाल सिंह वनपाल का स्थानान्तर दिनांक 29-7-70 को पुनः सांगानेर से आमेर उनके आमेर पदस्थापन स्थान पर दो वर्ष पूरे नहीं होने तथा उनकी माता की बीमारी को ध्यान में रखते हुए दिनांक 14-7-70 के आदेशानुसार किया गया था।

(सूची विस्तृत होने के कारण विधान सभा पुस्तकालय में रखी गई)

राजनैतिक पीडितों को सहायता

60. श्री मनोहर सिंह मेहता (मांडलगढ): क्या मुख्य मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे :—

(1) क्या यह सही है कि राजनैतिक पीडितों को जीवन निर्वाह के लिये हर माह धनराशि मिलती है?

(2) क्या यह भी सही है कि भीलवाडा जिले में कुछ राजनैतिक पीडित ऐसे भी हैं जिन्हें सरकार ने नकदी सहायता के बजाय नहरी जमीन दिलाई है?

(3) यदि हां, तो कुछ लोगों को नहरी जमीन दिलाने के क्या कारण है?

(4) क्या यह भी सही है कि जिन जिन को नकदी सहायता दी गई है उनकी मृत्यु के उपरान्त सहायता बन्द करदी जायगी? यदि हां, तो क्या फिर उन्हें जमीन दी गई है उनके स्वर्गवास के बाद उनसे भी जमीन ले ली जायेगी?

(5) क्या सरकार ने जिनको जमीन दी है उनसे जमीन लेकर उन्हें भी नकद के रूप में ही मासिक मदद देने के प्रश्न पर विचार करेगी ताकि जो अत्यन्त उत्तम जमीन उन्हें दी गई है वह खेतीहर भूमिहीनों को दी जा सके?

उत्तर

(1) राजनैतिक पीडितों को मासिक पेंशन देने के सम्बन्ध में नियम बने हुऐ हैं, उनके अनुसार पेंशन दी जाती है।

(2) जी हां।

(3) नियमों में प्रावधानानुसार नकदी व कृषि भूमि, दोनों ही दिये जा सकते हैं।

(4) जी हां, साधारणतया जिसको सहायता दी गई है उसकी मृत्यु के उपरान्त नकदी सहायता बन्द हो जाती है, किन्तु जमीन वापिस नहीं ली जाती हैं।

(5) ऐसा कोई प्रश्न अभी सरकार के विचाराधीन नहीं है।

Page No 170

परिशिष्ट 5

(अ. प्र. सं. 32 की सूची)

(क)

मंत्री, राज्यमंत्री एवं उपमंत्री गणों के टेलीफोन खर्चे की तालिका

अतारांकित विधान सभा प्रश्न सं. 3 (अता.) द्वारा श्री मनोहरसिंह मेहता, सदस्य, विधान सभा। (माह अप्रेल, 70 से जनवरी, 71 तक)

क्र. सं.	नाम मंत्री	वर्ष, 1970-71 का खर्चा अप्रेल, 70 से जनवरी, 71	पिछले वर्षों का खर्चा जो चालू वर्ष में बुक हुआ	योग
1	2	3	4	5
मंत्रीगण		रु.	रु.	रु.
1.	श्री मोहनलाल सुखाड़िया	12,525.40	4,818.20	17,343.60
2.	श्री मथुरादास माथुर	11,134.80	3,681.55	14,816.35
3.	श्री दामोदरलाल व्यास	16,173.40	4,172.35	20,345.75
4.	श्री रामकिशोर व्यास	12,467.31	3,055.25	15,522.56
5.	श्री हरिदेव जोशी	16,106.10	1,799.60	17,905.70
6.	श्री बृजसुन्दर शर्मा	10,299.95	2,896.40	13,196.35
7.	श्री परसराम मदेरणा	14,407.45	3,203.00	17,610.45
8.	श्री बरकतुल्ला खां	8,780.75	1,422.05	10,202.80
9.	श्री अमीनुद्दीन अहमद	9,987.60	1,322.40	12,310.00
10.	श्री नारायणसिंह मसूदा	5,686.55	6,307.90	11,994.45
11.	श्री शोभाराम	4,426.70	1,270.70	15,697.40
12.	श्री भीखाभाई	14,828.26	3,681.85	18,510.11
13.	श्री रामप्रसाद लड्ढा	15,862.95	3,222.50	19,085.45
14.	श्री अमृतलाल यादव	15,754.95	2,168.95	7,923.90
15.	श्री शिवचरण माथुर	12,709.50	1,537.75	14,247.25
राज्यमंत्री				
1.	श्री मनफूलसिंह	3,070.50	—	3,070.50
2.	श्रीमती सुमित्रासिंह	3,735.05	2,276.70	6,011.75
3.	श्री हीरालाल देवपुरा	9,093.85	414.90	9,508.75
4.	श्री जयकिशन शर्मा	7,815.10	2,340.30	10,155.40
5.	श्री बी. एन. जोशी	7,326.40	1,160.35	8,486.75

1	2	3	4	5
उप मंत्री गण :—				
1.	श्री रावधीरसिंह	11,944.90	3,030.75	14,975.65
2.	श्री गंगाराम चौधरी	16,151.75	3,879.25	20,031.00
3.	श्री खेतसिंह	6,301.60	738.05	7,039.65
4.	श्री रामदेवसिंह	9,607.65	1,080.40	10,688.05
5.	श्रीमती प्रभा मिश्रा	6,080.45	2,490.25	8,570.70
6.	श्री भीमसेन	10,031.65	1,761.75	11,793.40
7.	श्री हरिसिंह बेगू	7,715.35	450.90	8,166.25
8.	श्री माधोसिंह	14,029.70	2,863.30	16,893.00
9.	श्री प्रद्युम्नसिंह	6,608.35	1,206.85	7,815.80
10.	श्री शिवचरण सिंह	6,948.50	1,169.80	8,118.30
11.	श्री कन्हैयालाल पटेल	6,768.80	676.90	7,445.70
12.	श्री रामचरण	8,614.15	1,732.25	10,346.40
13.	श्री जसराज	5,973.45	3,016.75	8,990.20
14.	श्री समरथलाल	11,200.40	656.60	11,857.00
15.	श्री मुलकराज थिंद	3,437.00	6,766.20	10,203.20
16.	श्री बृज प्रकाश गोयल	6,671.20	2,173.20	8,844.40
17.	श्री गुरुदीपसिंह	229.20	1,378.45	1,607.65

(ख)

मंत्री, राज्य मंत्री, उपमंत्रियों द्वारा माह अप्रेल, 1970 से जनवरी, 1971 तक यात्रा भत्ता (दैनिक भत्ते सहित) बिलों में किये गये व्यय का विवरण ।

नाम मंत्रीगण	व्यय
1. श्री मोहनलाल सुखाड़िया	10199.32
2. श्री मथुरा दास माथुर	7890.72
3. श्री दामोदरलाल व्यास	1760.45
4. श्री हरिदेव जोशी	10013.21
5. श्री रामकिशोर व्यास	4613.83
6. श्री बरकतुल्ला खां	15052.63
7. श्री बृजसुन्दर शर्मा	21291.32
8. श्री परसराम मदेरणा	4336.69
9. श्री श्रमीनुद्दीन श्रहमद	10289.50
10. श्री नारायणसिंह मसूदा	6253.99
11. श्री शोभाराम	6237.36
12. श्री भीखाभाई	7512.51
13. श्री रामप्रसाद लढ्ढा	7079.30
14. श्री श्रमृतलाल यादव	9462.28
15. श्री शिवचरण माथुर	8095.11
राज्य मंत्री	
1. श्री मनफूलसिंह	4444.05
2. श्रीमती सुमित्रासिंह	4652.61
3. श्री हीरालाल देवपुरा	6769.13
4. श्री जयकिशन शर्मा	5356.54
5. श्री बी. एन. जोशी	4324.70
उपमंत्री	
1. श्री रावधीरसिंह	5450.44
2. श्री गंगाराम चौधरी	3718.00
3. श्री खेतसिंह	10712.26
4. श्री रामदेवसिंह	12671.53
5. श्रीमती प्रभा मिश्रा	9664.80
6. श्री भीमसेन	13783.19
7. श्री हरिसिंह बेगू	7498.58
8. श्री माधोसिंह	4465.82
9. श्री प्रद्युम्नसिंह	5546.61
10. श्री शिवचरणसिंह	7875.05
11. श्री कन्हैयालाल	6624.84
12. श्री राम चरण	14872.12
13. श्री समरथलाल	7527.41
14. श्री बृजप्रकाश गोयल	10742.22
15. श्री जसराज	16 076.20
16. श्री मुल्कराज थिंद	3211.08
17. श्री गुरुदीपसिंह	7533.59

शुद्धि-पत्र

(शुक्रवार, दिनांक 12 नवम्बर, 1971)

स्कम्भ सं. 1	पंक्ति संख्या 2		अशुद्ध 3	शुद्ध 4
3		4	व्यदस्था	व्यवस्था
6	शीर्ष		तारांकिन	तारांकित
8		16	पुर्जे	पुर्जे
23	अन्तिम से	1	पयोग	उपयोग
36	,,	11	श्री रामचन्द्र ग्रार्य	श्री रामचन्द्र आर्य
40		1	श्री देवीत्त गाड़िया	श्री देवीदत्त गाड़िया
44		14	सिस्टिभ	सिस्टम
44	अन्तिम से	2	प्रैलटिमेष्ट	प्रलटिमेन्ट
48		9	कार्यराही	कार्यवाही
48	अन्तिम से	1	सक	सकी
59		5	श्री मनोहरसिंह मेहता	श्री मनोहरसिंह महता
102	अन्तिम से 4 तथा 5 के मध्य		—	ध्यान आकर्षण प्रस्ताव
116		19	शर्स	शर्त
118	अन्तिम से	9	लागों	लोगों
120	,,	1	ते	तो
121	,,	10	जा	जो
122	,,	13	खड़ी हैं	खड़े हैं
122	,,	7	जनता	जानता
125	,,	13	वरगलया	वरगलाया
125	,,	9	दुनिया	दुनिया
130	,,	1	कुछु	कुछ
167		11	ट्रांसफस	ट्रांसफर्स
177	अन्तिम से	7	कंम्पस	कंम्प
177	,,	2	यहोदय	महोदय
209	,,	4	और है	
214	,,	8	कि	की
222		18	वूरे	बूरे
226	अन्तिम से	5	हिन्दुस्तात	हिन्दुस्तान
228	,,	8	गर्वमेन्ट	गवर्नमेंट
233	,,	14	प्रिजेन्ट	प्रजेन्ट
235	,,	4	लड़ई	लड़ाई
240		10	दुनिया	दुनियां
242	अन्तिम से	10	नाति	नाता
249		1	(श्री रापानन्द अग्रवाल)	(श्री रामानन्द अग्रवाल)
257		10	गढ़ारोठ	गढ़ारोड़

2.

1	2	3	4
265	3	लडाई	लड़ाई
266	19	श्री भगवाम सहाय शास्त्री	श्री भगवानदास शास्त्री
268	अन्तिम से 5	Tgo	go
268	„ 4	Stıength	Strength
268	„ 1	बडे	बड़े
270	2	विक र	विचार
270	12	खालि	खाली
270	अन्तिम से 2	आन्दोलल	आन्दोलन
271	„ 17	इडजोर्नमेंट	एडजोर्नमेंट
273	14	ऊचा	ऊंचा
274	10	ध्यगन	ध्यान
276	6	मुहीं	उन्हीं
282	14	मुंहतोड	मुंहतोड़
289	12	श्री बालसिंह सेढा	श्री बालसिंह सोढा
290	7	झगडे	झगड़े
294	2	श्री अयक्ष	श्री अध्यक्ष
294	5	ललूंगा	लेलूंगा
294	9	मुय्म मंत्री	मुख्य मंत्री
294	अन्तिम से 1	पहुचा	पहुंचा
296	11	हामरा	हमारा
311	10	श्री पारससिंह	श्री पारर्थसिंह
311	12	श्री के. एल. गोवरा	श्री के. एल. गोवारा